श्री मज्जगद्गुरु द्वाराचार्य श्री मलूकपीठाधीश्वर
श्री राजेन्द्र दास देवाचार्य

श्रीभक्तमाल

श्रीमद्भगवद्भक्तेभ्यो नमः
श्रीमद्गोस्वामी श्रीनाभाजी कृत

श्रीभक्तमाल

वैष्णवरत्न श्री प्रियादासजी कृत
(भक्तिरसबोधिनी टीका सहित)

श्री मलूक ग्रन्थागार
श्री मलूकपीठ, वंशीवट – श्रीधाम वृन्दावन

॥ श्रीमद्भागवद्भक्तेभ्यो नमः ॥

श्रीमद्गोस्वामी श्रीनाभाजी कृत

श्रीभक्तमाल

वैष्णवरत्न श्रीप्रियादास जी कृत

(भक्तिरसबोधिनी टीका सहित)

लाख बार हरि हरि कहै एक बार हरिदास।
श्री सीताराम प्रसन्न हों भाखैनाभादास॥

सम्पादक :

जगद्गुरु द्वाराचार्य श्री मलूकपीठाधीश्वर श्री राजेन्द्रदास देवाचार्य

प्रकाशक :

श्री मलूक ग्रन्थागार

श्री मलूक पीठ, वंशीवट, श्रीधाम वृन्दावन

मूल्य :

सम्पादक : जगद्गुरु द्वाराचार्य श्री मलूकपीठाधीश्वर
श्री राजेन्द्र दास देवाचार्य जी

प्रकाशक : श्री मलूकपीठ ग्रंथागार
श्री मलूकपीठ, वंशीवट, श्रीधाम वृन्दावन

तिथि : ऋषि पंचमी सम्वत् २०७४

संस्करण : द्वितिय

संख्या : ११००

मूल्य :

प्राप्ति स्थल : (1) श्री मलूक ग्रंथागार,
श्री मलूकपीठ, वंशीवट, श्रीधाम वृन्दावन

प्रिन्टर्स : शिवा प्रिंटेक (प्रा. लि.)
बवाना, दिल्ली

सनातन धर्म की अविच्छिन्न धारा प्राचीन काल से आज तक प्रवाहित हो रही है। भगवान कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास जी ने अवतार लेकर कालक्रम से धारणा शक्ति के क्षीण हो जाने पर, सौलभ्य की दृष्टि से एक वेद की चार सहिंतायें की। वेद के अंतिम भाग वेदान्त रूप उपनिषदों का अभिप्राय समझने को ब्रह्मसूत्र की रचना की, जन साधारण को वेदों का अभिप्राय समझाने तथा पुरूषार्थ चतुष्टय की सिद्धि के लिए महाभारत की रचना की। महाभारत की रचना करने पर भी उन्हें अपने अवतार प्रयोजन की सिद्धि, या कृतार्थता का अनुभव नहीं हो रहा था, तब देवर्षि नारद ने आकर श्रीमद्भागवत महापुराण की रचना को प्रेरित किया। श्रीमद्भागवत की रचना करके व्यास जी को कृतार्थता या शान्ति प्राप्त हुई। वास्तव में महापुरुषों के अवतार का प्रयोजन विश्वकल्याण होता है। श्रीमद्भागवत में प्रौज्झित कैतव परम धर्म अर्थात् निष्काम प्रेमाभक्ति का वर्णन है जिसके आश्रय लेने से "सद्योहृद्वरुद्धतेत्रकृतिभिः" अर्थात् श्रवण की उत्कण्ठा मात्र से भगवान हृदय में अवरुद्ध हो जाते है। भगवत् प्राप्ति ही मानव जीवन का परम प्रयोजन है। भगवान शुकदेव निर्गुण उपासना में परिनिष्ठित थे, फिर भी वे व्यास शिष्यों से 'बर्हापींडं नटवर वपुः' श्लोक सुनकर रूपमाधुरी और "अहोबकीयं" श्लोक से भगवान की उदारता को सुनकर 'उत्तमश्लोक लीलया गृहीत चेता' भगवान वेदव्यास के पास आये और परमहंस संहिता का अध्ययन किया–

हरेर्गुणाऽक्षिप्तमतिर्भगवान्बादरायणिः। अध्यगान्महदाख्यानं नित्यं विष्णुजनप्रियः।।

श्रीमद्भागवत का परम प्रयोजन ब्रह्माजी ने भी नारदजी को उपदेश करते समय यही बताया है–

यथा हरौ भगवते नृणां भक्तिर्भविष्यति। सर्वात्मन्यखिलाधारे इति संकल्प्य वर्णय।।

अतः नारदजी ने गेहे–गेहे जने–जने भक्ति की स्थापना की प्रतिज्ञा की। स्वयं ब्रह्माजी ही उस परम् प्रयोजन की सिद्धि के लिये अवतरित हुए। बाल्मीकि जी भी उसी प्रयोजन के लिए अवतरित हुए – कलि कुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीक तुलसी भयौ। उसी प्रयोजन से आचार्यों का अवतरण हुआ। उन्होनें उपनिषद् ब्रह्मसूत्र गीता पर अपने अपने भाष्य लिखकर अद्वैत, द्वैत, द्वैताद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि के द्वारा ब्रह्म जीव माया के स्वरूप का निर्वचन किया। इन आचार्यों ने अनीश्वरवादी बौद्ध और जैन के प्रभाव से पथभ्रष्ट जनता का मार्ग दर्शनकर संरक्षण किया।

कालान्तर में पश्चिम से मुगलों के आक्रमणों और उनके शासन से सनातन धर्म अत्याधिक बाधित हुआ। तब करुणावरुणालय सनातन धर्म के स्वरूप भगवान ने चैतन्य महाप्रभु, श्री कबीरदास, श्री तुलसीदास, श्री सूरदास, श्री मीराबाई, श्री नाभादास आदि भक्तों को भेजकर संकटग्रस्त भारतीय जनता को अवलम्बन दिया। मुगलकाल में समाज के पथ प्रदर्शक भी मुगलों के उत्पीड़न और प्रलोभन से प्रभावित हुये और उनके अनुसरण से जन साधारण भी प्रभावित हुआ। समाज में अनेक मनसुख सम्प्रदाय प्रगट हो गये। लोग उनका अनुसरण कर हिंसा का समर्थन करने लगे।

यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनाः। स सत्प्रमाणं कुरुते लोकस्त दनुवर्तते।।

तत्वनिष्ठ महापुरुषों के मर्यादा उल्लंघन को जन सामान्य कैसे समझ सकता है।

त्वत्पादपद्ममकरन्दजुणां मुनीनां, वर्त्मास्फुटं नृपशुभिर्ननु दुर्विभाव्यम्

इसी प्रेमपथ के रहस्य को सोदाहरण समझाने के लिये ही श्री नाभा गोस्वामी जी द्वारा भक्तमाल का अवतरण हुआ। श्री नाभा गोस्वामी जी ने वेदों का गाभा अर्थात् सार सर्वस्व भक्तभक्ति भगवन्त गुरु चतुर नाम वपु

एक के द्वैत, अद्वैत, द्वैताद्वैत, विशिष्टाद्वैत से अविरुद्ध, सार्वभौम का सद्यः कल्याण कारक "भक्त भक्ति भगवन्त गुरु" के चतुष्टय का सिद्वान्त प्रस्तुत किया। इस प्रकार "सबहिं सुलभ सब दिन सब देशा, सेवत सादर शमन कलेशा" भक्त की उपासना रूप भागवत के परम–प्रयोजन को सिद्ध किया।

वस्तुतः भागवत भक्तमाल ही है। दोनों का प्रयोजन एक है। आपद्ग्रस्त सनातन धर्म की जैसे तुलसीदास जी ने रामचरितमानस रचकर रक्षा की उसी प्रकार से सम्प्रदायों के बहुरूपों को एकता की डोरी में बाँधकर नाभा गोस्वामी जी ने किया। भक्तमाल महद् आकाश की ज्योत्स्ना में तारागणों के बीच विराजमान पूर्णचन्द्र श्री कृष्ण चन्द्र की शोभा संसार से पाप ताप का हरण कर रही है। भारतीय संस्कृति के प्राचीन काल से आज तक के स्वरूप का दिग्दर्शन कराने वाली भक्तमाल भारतीय संस्कृति का महाकोष है। उसकी उपादेयता आज की परिस्थितियों में और अधिक बढ़ गयी हैं, क्योंकि प्राचीन काल के समर्थ महापुरुषों का अनुकरण करना आज के असमर्थ साधकों को भले ही दुरुह हो पर भक्तमाल में आधुनिक, हमारे ही समान परिस्थितियों में रहने वाले भक्तों के चरित्रों का परम प्रयोजन जीवन में सुख शान्ति लाभपूर्वक परमात्मा की प्राप्ति है जो भक्ति से ही सम्भव है। उसके गूढ़ रहस्य को बिना भक्तमाल का आश्रय लिये नहीं समझा जा सकता। बिना भक्तमाल भक्ति रूप अति दूर है। यह भक्ति के रहस्य भक्तों के चरित्र से समझे जा सकते हैं। भगवान गीता में "तदात्मानं सृजाम्यहम्" कह कर आत्मानम् पद से अपने प्यारे भक्तों का संकेत करते हैं। भगवत प्राप्ति के सम्पूर्ण साधनों में भगवद् भक्ति सर्वाधिक सरल और उत्तम साधन है और उसकी सिद्धि श्री नाभागोस्वामी रचित श्री भक्तमाल के पठन, श्रवण, मनन से ही संभव है। इसमें नवधा, दशधा, प्रेमा, परा आदि भक्ति के स्वरूपों का ज्ञान, वैराग्य, तप, त्याग, शील, सदाचार, सत्य, अहिंसा, क्षमा, दया, समानता, अमानता आदि सद्गुणों का भक्तों की रहनी, सहनी, कहनी, भगवान के प्रति उनके दिव्य भाव एवं निष्ठा का सविशेष वर्णन हुआ है। साथ ही भगवान की भक्तवत्सलता, भक्तप्रियता, दयालुता, सौशील्य और भक्त सौलभ्य आदि गुणों का अति सुन्दर वर्णन है। विशेष रूप से भक्त परत्व का युक्तियुक्त वर्णन है। अतः धार्मिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, साहित्यिक सभी दृष्टियों से श्री भक्तमाल अनूठा ग्रन्थरत्न है।

भक्तमाल के रचियता श्री नाभा जी का जन्म माघ सुदी पंचमी विक्रम संवत १५८७ के लगभग हुआ। बाल्यकाल में ही आप श्री रामानन्दाचार्य परम्परा के श्री अग्रदेवाचार्य जी महाराज के कृपाभाजन हुये। जन्मान्ध बालक नारायणदास को सर्वप्रथम गुरुदेव का ही दर्शन हुआ।

गुरुस्थान गलताजी में, गुरु आज्ञा से सन्त सेवा करते–करते, उनका उच्छिष्ट प्रसाद पाकर आपको दिव्य दृष्टि की प्राप्ति हो गयी। जिससे आप गुरुदेव की मानसी सेवा का दर्शन और भक्त के डूबते हुये जहाज को बचाने में समर्थ हुए। उसी समय श्री अग्रदेवाचार्य जी ने इन्हें समर्थ जानकर भक्तों के सुयश वर्णन करने की आज्ञा और आशीर्वाद दिया। तदनुसार आपने समाधिस्थ होकर भक्त चरित्रों का दर्शनकर भक्तमाल की रचना की। भक्तमाल समाधिवाणी है अतः इसके छप्पय में गागर में सागर भरा है। उसकी सांकेतिक भाषा को समझना सहज नहीं था। अतः श्री नाभाजी ने अपने साकेत गमन के लगभग सौ वर्ष बाद श्री प्रियादास जी को दर्शन देकर श्री भक्तमाल पर छन्दोवद्ध टीका करने की आज्ञा दी। तदनुसार आपने मनहरण कवित्त छन्दों में भक्तिरस बोधिनी नाम की टीका की, जो यथार्थ में भक्तिरस का बोध कराती है। श्री प्रियादास जी के गुरुदेव श्रीमनोहरदासजी महाराज थे। आप श्री राधा रमण लाल जी के प्राकट्यकर्ता श्रीमद् गोपालभट्ट जी के चरणाश्रित श्रीनिवासाचार्य जी के शिष्य थे।

श्री भक्तमाल जी की टीका के सम्बन्ध में स्वयं प्रियादासजी ने कहा है "टीका अरु भूल नाम मूल जात सुनै जब"। उन्होनें स्वयं को टीकाकार नहीं माना है "नाभा जू कहाई याते प्रौढ़ि के सुनाई है।" पुनः "नाभाजू कौ अभिलाष पूरन लै कियौ मैं तौ" वस्तुतः" "टीका को चमत्कार जानौगे विचार मन" अर्थात् प्रियादास जी की भक्तिरसबोधिनी टीका अपने वैशिष्ट्य के कारण भक्तमाल का अभिन्न अंग बन गई है। अतः श्री नाभा जी के छप्पय तथा प्रियादास जी के मनहरन कवित्त दोनों को मिला कर भक्तमाल संज्ञा हुई है।

श्री भक्तमाल जी के मूल में १७ दोहे एवं १९७ छप्पय कुल २१४ छन्द है। भक्तिरसबोधिनी टीका के कवित्तों की संख्या ६३४ है। कुछ विद्वानों के मत में एकाध छन्द प्रक्षिप्त है।

श्रीभक्तमाल जी का अध्ययन, अध्यापन, समाजगायन कार्य श्री अयोध्या एवं श्री वृन्दावन में विशेष रूप से होता है। श्री टोपी कुंज वृन्दावन के बाबा श्री माधवदास जी "भक्तमाली" से अधिकांश भक्तिमालियों ने अध्ययन किया है। उनमें महामहिम श्री जगन्नाथ प्रसाद जी भक्तमाली श्री भक्तमाल जी के परम मर्मज्ञ थे। वे श्री भक्तमाल जी के मूर्तिमान स्वरूप थे। श्री सुदामादास जी और श्री नारायण दास जी "मामाजी" नेहनिधि आप ही के शिष्य थे। श्री गणेशदासजी कृत भक्तवल्लभा टिप्पणी को समाहत कर आपने भक्तमाल की पाठ्यपुस्तक की संज्ञा दी। पुनः जन–जन में श्री भक्तमाल जी के प्रचार प्रसार को लक्ष्य कर संत श्री सुदामादास जी को प्रेरित कर श्री गणेशदास जी को विस्तृत टीका करने को वृन्दावन बुलाया। सद्गुरुदेव भक्तमाली कृत श्री गणेशदासजी टीका एवं श्री रामेश्वरदास रामायणी की व्याख्या से यह ग्रन्थ चार खण्डों में सम्पन्न हुआ।

श्री भक्तमाल जी की रचना विक्रम संवत १६८० के लगभग गलतागादी जयपुर में हुई है। श्री प्रियादास जी ने मनहरण कवित्त छन्दों में भक्तिरसबोधिनी टीका फाल्गुन वदी सप्तमी वि. संवत १७६९ में पूर्ण की।

श्री भक्तमाल पाठ का आधार श्री गणेशदास भक्तमाली संपादित भक्तवल्लभा टिप्पणी है। मूल पाठ की प्रणाली में श्री भक्तमाल के छप्पयों की अंतिम तुक आदि में पढ़ी जाती है। यह प्राचीन परम्परा है। कुछ लोग कहते हैं कि यह तो केवल गायन को ललित बनाने के लिये है, पर ऐसा नहीं है। सन्त भीखा साहब आदि प्राचीन हिन्दी कवियों ने भी छप्पयों का निर्माण इसी ढंग से किया है कि अंत के चरण को प्रथम पढ़ना अनिवार्य है। जैसे बक्ता श्रोता को आरम्भ में ही सम्बोधित करता है न कि प्रसंग समाप्ति के पश्चात मू. छ. २६ "श्वेत द्वीप के दास जे श्रवण सुनौ तिनकी कथा" इसी प्रकार "प्रसाद अवज्ञा जान के पाणि तजौ एकै नृपति" इस चरण का सम्बन्ध हैं। "कहा कहौं बनाय" से है। इसी प्रकार मू. छ. ५४ 'वच्छ हरन'। मू. छ. ५१ में "आशै अगाध" का सम्बन्ध "श्री रंगनाथ" चरन से है। प्रायः अन्तिम चरण में ही भक्त का नाम और उनकी विशेषता आई है बिना उसके पढ़े क्रम नहीं बनेगा और न ही रस का आस्वादन होगा, अतः अंतिम चरण को आदि में ही पढ़ना चाहिए।

पाठ भेद या संख्या भेद को लेकर जो भी विचार हो, उसे नाभा जी के उदार दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर ही समझना चाहिए न कि साम्प्रदायिक पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण से। वैसे आदि काल से मूल २१४ छन्द तथा टीका ६३२ कवित्त प्रसिद्ध है। किसी प्रति में चरण चिह्न के चार कवित्त नहीं है। किसी ने दिग्विजयी के चार कवित्त श्री चैतन्य महाप्रभु के चरित्र में रखे हैं। समीक्षा करने पर उक्त चारों कवित्त श्री केशवकाश्मीरी के चरित्र में ही उचित प्रतीत होते हैं। इसी प्रकार चरण चिह्नों के चार कवित्त छोड़ने के सम्बन्ध में कोई तर्क नहीं दिया गया है। अतः उन्हें स्थान दिया गया है।

उपरोक्त समीक्षा के आधार पर श्री गणेशदास जी महाराज कृत भक्तवल्लभा टिप्पणी, जो संतों द्वारा मान्य है, उसी के पाठ का अनुसरण किया गया है। पाठ की सुविधा से सप्ताह परायण, नवाह्न परायण तथा मास परायण का भी संकेत दिया गया है।

श्री भक्तमाल के समाज गायन की तथा पाठ की प्राचीन परम्परा है उसकी उपादेयता को देखते हुए भक्तों के आग्रह से श्री मूल भक्तमाल तथा श्री प्रियादास जी की कवित्तमयी टीका का प्रकाशन श्री मलूकपीठ सेवा संस्थान से किया जा रहा है। आशा है कि पाठकगण संतुष्ट होकर भक्तभक्ति की सद्भावनायें प्रेषित करेंगे।

प्रार्थी

राजेन्द्र दास, मलूकपीठ वृन्दावन

सूची–पत्र

श्रीभगवतरसिकजी महाराज कृत –

श्रीभक्त–नामावली

हम सौं इन साधुन सौं पंगति।
जिनको नाम लेत दुख छूटत, सुख लूटत तिन संगति।।
मुख्य महन्त काम रति गनपति, अज महेश नारायण।
सुर नर असुर मुनी पक्षी पशु, जे हरि भक्त परायन।।
बाल्मिकी नारद अगस्त्य शुक, व्यास सूत कुल हीना।
शबरी स्वपच वशिष्ठ विदुर, विदुरानी प्रेम प्रबीना।।
गोपी गोप द्रोपदी कुन्ती, आदि पण्डवा ऊधो।
विष्णु स्वामी निम्बारक माधो, रामानुज मग सूधो।।
लालाचारज धनुर्दास, कूरेश भाव रस भीजे।
ज्ञानदेव गुरु शिष्य त्रिलोचन, पटतर को कहि दीजे।।
पद्मावती चरन को चारन, कवि जयदेव जसीलो।
चिन्तामनि चिद्रूप लखायो, विल्वमंगलहिं रसीलो।।
केशव भट्ट श्रीभट्ट नरायन, भट्ट गदाधर भट्टा।
विट्ठलनाथ वल्लभाचारज, ब्रज के गूजर जट्टा।।
नित्यानन्द अद्वैत महाप्रभु, शची सुवन चैतन्या।
भट्ट गुपाल रघुनाथ जीव अरु मधु गुसाँईं धन्या।।
रूप सनातन भज वृन्दावन, तजि दारा सुत सम्पति।
व्यास दास हरिवंश गुसाँईं, दिन दुलराई दम्पति।।
श्रीस्वामी हरिदास हमारे, विपुल विहारिनि दासी।
नागरि नवल माधुरी वल्लभ, नित्य विहार उपासी।।
तानसेन अकबर करमैती, मीरा करमाबाई।
रत्नावती मीर माधव, रसखानि रीति रस गाई।।
अग्रदास नाभादि सखी ये, सबै राम सीता की।
सूर मदनमोहन नरसी अलि, तस्कर नवनीता की।।

माधोदास गुसाँईं तुलसी, कृष्णदास परमानन्द।
विष्णुपुरी श्रीधर मधुसूदन, पीपा गुरु रामानन्द।।
अलि भगवान मुरारि रसिक, श्यामानन्द रंका बंका।
रामदास चीधर निष्किंचन, सम्हन भक्त निशंका।।
लाखा अंगद भक्त महाजन, गोविन्द नन्द प्रबोधा।
दास मुरारि प्रेमनिधि विट्ठल, दास मथुरिया योधा।।
लालमती सीता प्रभुता झाली, गोपाली बाई।
सुत विष दियौ पूजि सिलपिल्ले, भक्ति रसीली पाई।।
पृथीराज खेमाल चतुर्भुज, राम रसिक रस रासा।
आशकरन जयमल मधुकर नृप हरीदास जन दासा।।
सेना धना कबीरा नामा, कूबा सदन कसाई।
वारमुखी रैदास सभा में, सही न श्याम हँसाई।।
चित्रकेतु प्रह्लाद विभीषण, बलि ग्रह बाजैं बावन।
जामवन्त हनुमन्त गीध गुह, किये राम जे पावन।।
प्रीति प्रतीति प्रसाद साधु सौं, इन्हें इष्ट गुरु जानौं।
तजि ऐश्वर्य मरजाद वेद की, इनके हाथ बिकानौं।।
भूत भविष्य लोक चौदह में, भये होहिं हरि प्यारे।
तिन तिन सौं व्यवहार हमारो, अभिमानिन ते न्यारे।।
'भगवतरसिक' रसिक परिकर कर, सादर भोजन पावैं।
ऊँचो कुल आचार अनादर, देखि ध्यान नहिं लावैं।

प्रसाद–महिमा

यह दिव्य प्रसाद प्रिया–प्रिय को।
दरसत ही मन मोद बढ़ावत परसत पाप हरत हिय को।।
पावत परम प्रेम उपजावत भुलवत भाव पुरुष तिय को।
'भगवतरसिक' भावतो भूषण तिहि क्षण होत युगल जिय को।।

अथ श्रीवैष्णवदासजी कृत

श्रीभक्तमाल–माहात्म्य

–दोहा–

श्रीनारायनदास जी कृत भक्तन्ह की माल।
पुनि ताकी टीका करी प्रियादास सु रसाल।।
ताकौ साधुन के कहे कहौं महातम बानि।
लै ग्रन्थनि मत आधुनिक परिचै रस की खानि।।
भक्तन की महिमा कही कपिलदेव भगवान।
नारायण आधीन हैं मैं कह कहौं बखान।।
सब संसार सुआरसी जन महिमा प्रतिबिम्ब।
रति दृग बिन सूझै नहीं अन्धे को वह बिम्ब।।
वेद शास्त्र के श्रवण को अति फल हरि निरधार।
सो याके श्रोता अहें महिमा अगम अपार।।
भयौ चहै हरि पाँति को सुनै सोइ हरषाय।
तहाँ दोय इतिहास हैं सुनिये चित्त लगाय।।

–चौपाई–

प्रियादास जू के सुमित्र वर। श्रीगोवर्धननाथ नाम कर।।
ते श्रीभक्तमाल रंग छाये। पढ़ि साँभरि की रामति आये।।
मग में श्रीगोविन्ददेव जो। तिनके दर्शन को गमने सो।।
तहँ श्रीराधारमन पुजारी। हरिप्रिय रसिक अनन्य सु भारी।।
तिन तिनकौं राखो अटकाई। भक्तमाल सुनिवे के ताईं।।
होन लगी तहँ भक्त सुमाला। जहाँ विराजत गोविन्द लाला।।
जयपुर वासी सुनिवे आवैं। प्रेम मुदित ह्वै अश्रु बहावैं।।
कछु दिन बाँचि बन्द करि दीनी। श्रोतन ते निश्चय यह कीनी।।
साँभरि की रामति करि आऊँ। तब ही पूरी कथा सुनाऊँ।।
रामति गये बगदि फिरि आये। कथा कहन को फिरि बैठाये।।

कहँ तक भई सँभार सु नाहीं। श्रोता अरु वक्ता भ्रम माहीं।।
श्रीगोविन्ददेव विख्याता। कही पुजारी सौं यह बाता।।
श्रीरैदास भक्त की गाथा। भई कहो आगे अब नाथा।।

–दोहा–

सुनि सु पुजारी के दृगन पानी बह्यौ अपार।
याके श्रोता आप हैं यह कीनी निरधार।।

–चौपाई–

पुनि दूजौ इतिहास सुनौ अब। प्रियादास टीका कीनी जब।।
तब व्रज परिकरमा महँ आये। फिरत फिरत होड़ल जा छाये।।
लालदास तहँ रहे महन्ता। जनसेवी अनन्य रसवन्ता।।
सब समाज तिन रोकि सु लीनो। बाँचो भक्तमाल हठ कीनो।।
भक्तमाल तहँ होन सु लागी। सुनन लगे सब लोग सुभागी।।
इक दिन निसि तहँ आये चोरा। सबै वस्तु लीनी टकटोरा।।
ठाकुर हू को ते लै गये। हरि ही के ये कौतुक नये।।
प्रात भये सबही दुख छाये। प्रियादास हू अति अकुलाये।।
कही कथा न रसोई कीनी। महादुक्ख में मति अति भीनी।।
ठाकुर को ये चरित न प्यारे। ताते चोरन संग पधारे।।
श्रीमहन्त बोले कर जोरी। हम कहँ तजि ठाकुर गे चोरी।।
तुमहू त्याग करोगे जोपै। मेरी कुगति होयगी तोपै।।
ताते हरि इच्छा मन दीजै। कहिये कथा रसोई कीजै।।
प्रियादास बोले यों सुनहू। अब मैं कथा न कहिहौं कबहू।।
श्रीनाभा यों वचन उचारे। हरि को जन चरित्र ये प्यारे।।
सो. झूठी अब भई यहाँ ई। कथा त्याग हरि गये पराई।।

–दोहा–

यों कहिकै भूखे रहे काहुहिं परी न चैन।
सुपने चोरन ते कहैं ठाकुर जू यों बैन।।

–चौपाई–

मोहि जहाँ को तहँ करि आवौ। ना तर तुम बहुतै दुख पावौ।।
इक दुख भक्त रहे दुख माही। भक्तमाल पुनि सुनी सु नाहीं।।

दुहरे दुक्ख परे हैं हम पर। चौहर दुख डारूँगो तुम पर।।
सुनिकै चोर उठे अधराता। ठाकुर को लै हरषित गाता।।
गावत बजवत नाचत आये। संग सकल सामग्री लाये।।
प्रातःकाल होन नहिं पायो। समाचार द्विज एक सुनायो।।
चोर तिहारे ठाकुर ल्यावत। नाचत गावत बजवत आवत।।
सुनि सब साधु निपट हरषाये। करत कीरतन सनमुख धाये।।
सुधि–बुधि गई प्रेम में छाये। जाय परस्पर लपटत भाये।।
चोरहु कुछ कहि सकै न बतियाँ। दृग भरि आवत फाटत छतियाँ।।
आँसू पोंछत गद्गद बानी। सुपने की सब कथा बखानी।।
सुनि सबने अति ही सुख पायौ। प्रेम मग्न मन दुक्ख नसायौ।।
मन्दिर में प्रभु को पधरायौ। बहु मंगल उच्छव करवायौ।।
भक्तमाल की कथा सुहाई। नाम कीरतन सहित कहाई।।
याके श्रोता श्रीहरि अहहीं। पुनि–पुनि साधु प्रेमवश कहहीं।।

–दोहा–

हाथ कंकनहिं आरसी कहा दिखाये माहि।
हरि श्रोता बिन सबन के यों मन अटकत नाहिं।।

–चौपाई–

श्रोता वक्ता को फल जोई। कापै कहि आवत है सोई।।
जो लिखाय राखै उर मोहिं। अन्त समै हरि प्राप्ति कराहीं।।
तहाँ एक सुनिये इतिहासा। क्वौ जन प्रियदासा के पासा।।
आय कही मोहि देहु लिखाई। भक्तमाल सुन्दर सुखदाई।।
प्रियादास पूछी सुखरासा। कहन सुनन कछु है अभ्यासा।।
तिन कह मैं कछु कहि नहिं जानौ। सुनिवे हू की गति न पिछानौं।।
आपु कही तब करिहौं काहा। बात सुनाय दिखाई चाहा।।
महाराज मैं जग व्यौहारी। गृह कामन में अटक्यौ भारी।।
साधु संग को अवसर नाहीं। ताते मैं सोची मन माही।।
मरती बार हिये पर धरिहौं। इतने साधु संग उबरिहौं।।
सुनि यह बात नेत्र भरि आये। बहुत बड़ाई करि सुख छाये।।
ताको पोथी दई लिखाई। सो लै घर गवन्यौ सुख पाई।।

घर कारज में अटक्यौ भारी। आई ताहि मीच भयकारी।।
यम के दूतन आय दबायौ। दई त्रास अरु कण्ठ रुकायौ।।
बेटा पोते ढिंग बिललाता। नैन सैन दै कही सुबाता।।
भक्तमाल की पोथी लाई। मम छाती ते देहु लगाई।।
ते उठाये पोथी लै आये। धरि छाती पर अचरज छाये।।
धरतहिं यम के दूत भजे यों। सूरन के आगे कायर ज्यों।।
कण्ठ खुल्यौ नैननि जल ढार्‌यौ। हरे कृष्ण गोविन्द उचार्‌यौ।।
बहु भक्तन के दर्शन पायौ। हिये माँझ आनन्द समायौ।।
सुत हरषित सब पूछत बाता। कहा भयौ सो कहिये ताता।।
तिन कह यमदूतन दुख दीनौ। भक्तनि अब उबार मैं लीनो।।
नामदेव रैदास कबीरा। सेन धना पीपा अति धीरा।।
ठाढ़े सकल कहत है बाता। हमरे संग चलो अब ताता।।
सो मैं अब इनके संग जैहौं। यमदूतन के मुख न चितैहौं।।
यह कहि राम–कृष्ण उच्चारत। नैन मूँदि हरि को उर धारत।।
प्रान त्यागि हरि धाम सिधायौ। बेटन के उर अति सुख छायौ।।
तबते तिनने नेम करे हैं। अन्त समय उर ग्रन्थ धरे हैं।।
तिनको कुटुम वनहिं को आयौ। तिननि सबै यह चरित सुनायौ।।
सो हम लिखन कियो है सही। सब दिन भक्तनि महिमा रही।।
शेष महेश जासु गुन गावैं। तेऊ चरण रेणु मन लावैं।।
आपु ते अधिक दास को गावै। जन की महिमा कहि नहिं आवै।।
प्रियादास अति ही सुखकारी। भक्तमाल टीका विस्तारी।।
तिनकौ पौत्र परम रँग भीनौ। वैष्णवदास महातम् कीनौ।।

–दोहा–

श्री भक्तमाल की गंध को लेत भक्त अलि आय।
भेक विमुख ढिंगहीं बसैं रहे कीच लपटाय।।

।। इति भक्तमाल–माहात्मय सम्पूर्णम्।।
मिति माह वदी ६ संवत् १८८६ वृन्दावन

भक्त चतुष्टय लक्षण

भक्त भक्ति भगवन्त गुरु चतुर नाम वपु एक।
इनके पद वन्दन किये नाशहिं विघ्न अनेक।।

—भक्त—

तितिक्षवः कारुणिकाः सुहृदः सर्वदेहिनाम्।
अजातशत्रवः शान्ताः साधवः साधुभूषणाः।। १।।
मय्यनन्येन भावेन भक्तिं कुर्वन्ति ये दृढाम्।
मत्कृते त्यक्तकर्माणस्त्यक्तस्वजनबान्धवाः।। २।।
मदाश्रयाः कथा मृष्टाः शृण्वन्ति कथयन्ति च।
तपन्ति विविधास्तापा नैतान्मद्गतचेतसः ।। ३।।

—भक्ति—

अन्याभिलाषिता शून्यं ज्ञान कर्माद्यनावृतम्।
आनुकूल्येन कृष्णानुशीलनं भक्तिरुत्तमा।। ४।।
द्रुतस्य भगवद् धर्माद्धारा वाहिकतां गता।
सर्वेशे मनसो वृत्तिर्भक्तिरित्यभि धीयते।। ५।।
अनिमित्ता भागवती भक्तिः सिद्धेर्गरीयसी।
जरयत्याशु या कोशं निगीर्णमनलो यथा।। ६।।

—भगवन्त—

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः।
ज्ञान वैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा।। ७।।

उत्पत्तिं प्रलयंचैव भूतानामागतिं गतिम्।
वेत्तिविद्यामविद्यांच स वाच्यो भगवानिति।। ८।।
पोषणं भरणाधारं शरणं सर्वव्यापकम्।
कारुण्यं षड्भिः पूर्णो रामस्तु भगवान स्वयम्।। ६।।

—गुरु—

आचार्य मां विजानीयात् नावमन्येत् कर्हिचित्।
न मर्त्यबुद्ध्यासूयेत सर्वदेवमयो गुरूः।।१०।।
गु शब्दस्त्वन्धकारोऽस्ति रु शब्दस्तन्निरोधकः।
अन्धकार निरोधित्वात् गुरुरित्यभिधीयते।।११।।
तस्माद् गुरुं प्रपद्येत जिज्ञासु श्रेय उत्तमम्।
शाब्दे परे च निष्णातं ब्रह्मण्युपशमाश्रयम्।।१२।।

श्रीभक्तमाल–वन्दना

नमो नमो श्रीभक्त सुमाल।
जाके सुनत महातम नाशत, उर झलकत राधा नँदलाल।।
गद्गद स्वर पुलकत अंग अंगनि, लोचन बरषत अँसुवन जाल।
उतरि जात अभिमान व्याल विष, लेत जिवाय सुरस तिहिं काल।।
होत प्रीति हरि भक्तजनन सौं, लेत शीघ्र हठि चरण प्रछाल।
तजत कुसंग लेत सत् संगति, भाग जगत कोउ अद्भुत भाल।।
निसि वासर सोवत अरु जागत, रोम–रोम ह्वै करत निहाल।
श्रीअग्र–नारायणदास प्रिया प्रिय, प्रगटी जीवन रसिक रसाल।।

सन्त–वन्दना

वांछाकल्पतरुभ्यश्च, कृपासिन्धुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो, वैष्णवेभ्यो नमो नमः ।।

प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीक, व्यासाम्बरीषशुकशौनकभीष्मदाल्भ्यान्।
रुक्मांगदार्जुनवशिष्ठविभीषणादीन्, एतानहं परमभागवतान्नमामि।।

सन्त सरल चित जगत हित, जानि सुभाउ सनेहु।
बाल विनय सुनि करि कृपा, राम चरण रति देहु।।
वन्दौं सन्त समाज चित, हित अनहित नहिं कोय।
अंजलिगत शुभ सुमन जिमि, सम सुगन्ध कर दोय।।
बार बार पद वन्दौं, (श्री) नाभा आभा ऐन।
(जिन) काढ्यौ गाभा वेद को, भक्तमाल रस दैन।।
प्रियादास के पद कमल वन्दौं बारम्बार।
कीनि भक्तिरसबोधिनी टीका अति सुखसार।।

सन्त है अनन्त गुन अन्त कौन पावै जाकौ, जानै रतिवन्त कोऊ रीझै पहिचानिकै।
औगुन न दीठि परै देखत ही नैन भरै, ढरै पग ओर उर प्रेम भर आनिकै।।
जोपै घटि क्रिया कछु देखियत इन माँझ, करिलै विचार हरि ही की इच्छा मानिकै।
बालक सिंगारिकै निहारि नेहवती माता, देत जो दिठौना कारौ दीठि डर जानिकै।।

–(श्रीप्रियादास कृत अनन्यमोदिनी से)

पुण्यानिमान् परमभागवतान् स्मरामि

8-2

श्रीनाभाजी एवं सद्गुरुदेव श्रीअग्रदेवाचार्य जी महाराज

।। श्रीहरिः।।

।। श्रीमद्भगवद्भक्तेभ्यो नमः।।

श्रीभक्तमाल

।। श्रीप्रियादासजी कृत आज्ञानिरूपण मंगलाचरण।।

।। भक्तिरसबोधिनी टीका।।

मनहरन कवित्त

महाप्रभु श्रीकृष्ण–चैतन्य मनहरन जू के चरन कौ ध्यान मेरे नाम मुख गाइयै।
ताही समय नाभा जू ने आज्ञा दई, लई धारि, टीका विसतारि भक्तमाल की सुनाइयै।।
कीजिये कवित्त वन्द छन्द अति प्यारो लगै, जगै जग माँहि कहि वाणी बिरमाइयै।
जानौं निज मति, ऐपै सुन्यौं भागवत शुक द्रुमनि प्रवेश कियौ, ऐसेई कहाइयै।।१।।

टीका का नाम स्वरूप वर्णन

रची कविताई सुखदाई लागै निपट सुहाई औ सचाई पुनरुक्ति लै मिटाई है।
अक्षर मधुरताई अनुप्रास जमकाई, अति छबि छाई मोद झरी–सी लगाई है।।
काव्य की बड़ाई निज मुख न भलाई होति नाभा जू कहाई याते प्रौढ़िकै सुनाई है।
हृदै सरसाई जोपै सुनिये सदाई, यह 'भक्तिरसबोधिनी' सुनाम टीका गाई है।।२।।

श्रीभक्ति स्वरूप वर्णन

श्रद्धा ई फुलेल औ उबटनौ श्रवन कथा मैल अभिमान अंग–अंगनि छुड़ाइये।
मनन सुनीर अन्हवाइ 'अँगु छाइ' दया नवनि वसन पन सौंधो लै लगाइये।।
आभरन नाम हरि साधुसेवा कर्णफूल मानसी सुनथ संग अंजन बनाइये।
भक्ति महारानी कौ सिंगार चारु बीरी चाह रहै जो निहारि लहै लाल प्यारी गाइये।।३।।

श्रीभक्ति पंचरस वर्णन

शान्त दास्य सख्य वात्सल्य औ श्रृंगार चारु, पाँचौ रस सार विस्तार नीके गाये हैं।
टीका को चमत्कार जानौगे विचारि मन, इनके स्वरूप मैं अनूप लै दिखाये हैं।।
जिनके न अश्रुपात पुलकित गात कभूँ, तिनहूँ को भावसिन्धु बोरिकै छकाये हैं।
जोलौं रहैं दूर रहैं विमुखता पूर हियो, होय चूर–चूर नेकु श्रवण लगाये हैं।।४।।

भगवद् प्रियता

पंचरस सोई पंचरंग फूल थाके नीके, पीके पहिराइवे को रचिकै बनाई है।
वैजयन्ती दाम, भाववती अलि 'नाभा' नाम, लाई अभिराम स्याम मति ललचाई है।।
धारी उर प्यारी किहूँ करत न न्यारी, अहो ! देखौ गति न्यारी ढरि पायन कौं आई है।
भक्ति छबि भार ताते नमित शृंगार होत, होत वश लखै जोई याते जानि पाई है।।५।।

सत्संग प्रभाव वर्णन

भक्तितरु पौधा ताहि विघ्न डर छेरी हू, कौ, वारि दै विचार वारि सींच्यो सत्संग सौं।
लाग्योई बढ़न गोदा चहुँदिसि कढ़न सो, चढ़न आकाश यश फैल्यो बहुरंग सौं।।
सन्त उर आलवाल सोभित विसाल छाया, जियें जीव जाल ताप गये यों प्रसंग सौं।
देखौ बढ़वारि जाहि अजाहू की शंका हुती ताहि पेड़ बाँधे झूमें हाथी जीते जंग सौ।। ६।।

श्रीनाभाजी का वर्णन

जाको जो स्वरूप सो अनूप लै दिखाय दियो, कियो यों कवित्त पट मिहीं मध्य लाल है।
गुण पै अपार साधु कहैं आँक चारि ही में अर्थ विसतार कविराज टकसाल है।।
सुनि सन्त सभा झूमि रही अलि श्रेणी मानो घूमि रही कहैं यह कहा धौं रसाल है।
सुने हे "अगर" अब जाने मैं अगर सही चोवा भये नाभा सो सुगन्ध भक्तमाल है।। ७।।

श्रीभक्तमाल स्वरूप वर्णन

बड़े भक्तिमान निसिदिन गुनगान करें, हरैं जग पाप जाप हियो परिपूर है।
जानि सुखमानि हरि सन्त सनमान सचे, बचेऊ जगत रीति प्रीति जानी मूर है।।
तऊ दुराराध्य कोऊ कैसे कै अराधि सकै समझो न जात, मन कम्प भयो चूर है।
शोभित तिलक भाल, माल उर राजै ऐपै, बिना भक्तमाल भक्तिरूप अति दूर है।। ८।।

—≡मूल—मंगलाचरण≡—

—दोहा—

भक्त भक्ति भगवन्त गुरु चतुर नाम वपु एक।
इनके पद वन्दन किये नाशहिं विघ्न अनेक।।१।।

हरि गुरु दासनि सौं साँचो सोई भक्त सही, गही एक टेक फेरि उर ते न टरी है।
भक्तिरसरूप कौ स्वरूप यहै छवि सार चारु हरिनाम लेत अँसुवन झरी है।।
वही भगवन्त सन्त प्रीति को विचार करै, धरै दूरि ईशता हू पाण्डुन सौं करी है।
गुरु गुरुताई की सचाई लै दिखाई जहाँ गाई श्री पैहारी जू की रीति रँग भरी है।।६।।

मंगल आदि विचारि रह, वस्तु न और अनूप।
हरिजन को यश गावते, हरिजन मंगल रूप।।२।।
सन्तन निर्णय कियौ मथि, श्रुति पुराण इतिहास।
भजिवे को दोई सुघर, कै हरि कै हरिदास।।३।।
श्रीगुरु अग्रदेव आज्ञा दई, हरि भक्तन को यश गाव।
भवसागर के तरन कौ, नाहिन और उपाव।।४।।

आज्ञा—निरुपण

मानसी स्वरूप में लगे हैं अग्रदास जबै, करत बयार नाभा मधुर सँभार सौं।
चढ्यो हो जहाज पै जु शिष्य एक, आपदा में कर्‌यो ध्यान, खिंच्यो मन, छुट्‌यो रूपसार सौं।।
कहत समर्थ 'गयो वोहित बहुत दूरि, आओ छबि पूरि, फिर ढरौ ताही ढार सौं।'
लोचन उघारिकै निहारि, कह्यो 'बोल्यो कौन?' वही जौन पाल्यो सीथ दै—दै सकुँवार सौं।।

अचरज दयो नयो यहाँ लौं प्रवेश भयो, मन सुख छयो जान्यो सन्तन प्रभाव को।
आज्ञा तब दई यह भई तोपै साधु कृपा, उन्हीं को रूप गुन कहो हियै भाव को।।
बोल्यो कर जोरि याको पावत न ओर छोर, गाऊँ राम कृष्ण नहीं पाऊँ भक्तदाव को।
कही समुझाय वोइ हृदय आइ कहैं सब, जिन लै दिखाय दई सागर में नाव को।।११।।

श्रीनाभाजी की आदि अवस्था का वर्णन

हनुमान वंश ही में जनम प्रसिद्ध जाकों भयो, दृगहीन सो नवीन बात धारिये।
उमरि बरष पाँच मानिकै अकाल आँच, माता वन छोड़ि गई विपत्ति विचारिये।।
'कील्ह' औ 'अगर' ताहि डगर दरस दियौ, लियो यों अनाथ जानि पूछी सो उचारिये।
बड़े सिद्ध जल लै कमण्डलु सौं सींचे नैन, चैन भयो खुले चख जोरी को निहारिये।।१२।।

पाँय परि आँसू आये कृपा करि संग लाये, कील्ह आज्ञा पाइ मन्त्र अगर सुनायो है।
गलते प्रकट साधुसेवा सो विराजमान, जानि उनमानि ताही टहल लगायो है।।
चरन प्रछाल सन्त–सीथ सौं अनन्त प्रीति, जानी रसरीति ताते हृदय रँग छायो है।
भई बढ़वारि ताकौ पावै कौन पारावार, जैसो भक्तिरूप सो अनूप गिरा गायो है।।१३।।

।। छप्पय ।।

चौबीस अवतार

चौबीस रूप लीला रुचिर श्रीअग्रदास उर पद धरौ।।
जय जय मीन बराह कमठ नरहरि बलि बावन।
परशुराम रघुवीर कृष्ण कीरति जगपावन।।
बुद्ध कल्कि अरु व्यास पृथु हरि हंस मन्वन्तर।
यज्ञ रिषभ हयग्रीव ध्रुववरदैन धनवन्तर।।
बद्रीपति दत्त कपिलदेव सनकादिक करुणा करौ।
चौबीस रूप लीला रुचिर श्रीअग्रदास उर पद धरौ।।५।।

जिते अवतार सुखसागर न पारावार करैं विसतार लीला जीवन उधार कौं।
जाही रूप माँझ मन लागै जाको पागै तहीं, जागै हिय भाव वही पावै कौन पार कौं।।
सबही हैं नित्त ध्यान करत प्रकाशैं चित्त, जैसे रंक पावै वित्त जोपै जानै सार कौं।
केशनि कुटिलताई ऐसे मीन सुखदाई, अगर सुरीति भाई बसौ उर हार कौं।।१४।।

श्रीचरण–चिह्न

चरण–चिह्न रघुवीर के सन्तनि सदा सहायका।।
अंकुश, अम्बर, कुलिश, कमल, जव, धुजा, धेनुपद।
शंख, चक्र, स्वस्तीक, जम्बुफल, कलश, सुधाह्रद।।

(जप के समय ध्यान योग्य)
श्रीसीताराम चरण-चिह्नानि
भगवान् श्रीराम जी के चरण चिह्न
भगवती श्री सीताजी के चरण चिह्न
www.malookpeeth.com
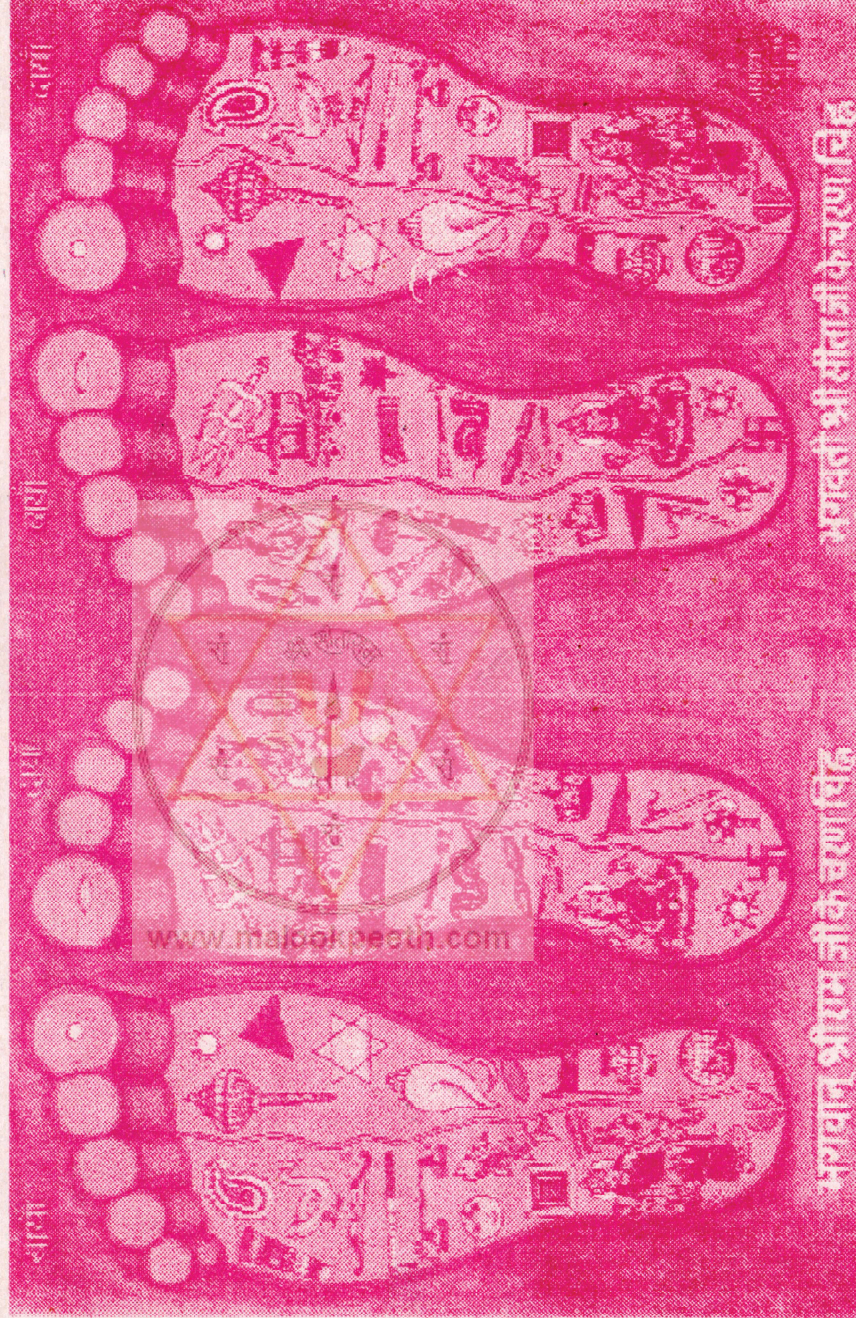
अर्द्धचन्द्र, षट्कोन, मीन, बिन्दु, ऊरधरेखा।
अष्टकोन, त्रैकोन, इन्द्रधनु, पुरुषविशेखा।।
सीतापति पद नित बसत एते मंगलदायका।
चरण–चिह्न रघुवीर के सन्तनि सदा सहायका।। ६।।

सन्तनि सहाय काज धारे नृपराज राम, चरन सरोजन में चिह्न सुखदाइये।
मन ही मतंग मतवारो हाथ आवै नाहिं, ताके लिये 'अंकुश' लै धार्यो हिये ध्याइये।।
शठता सतावै सीत ताही तें 'अम्बर' धर्यो, हर्यो जन सोक ध्यान कीन्हे सुख पाइये।
ऐसे ही कुलिश पाप पर्वत के फोरिवे को, भक्तिनिधि जोरिवे को 'कंज' मन ल्याइये।। १५।।

'जव' हेतु सुनो सदा दाता सिद्धि विद्या ही को, सुमति सुगति सुख सम्पति निवास है।
छिनु में सभीत होत कलि की कुचाल लखि 'ध्वजा' सो विशेष जानौ अभै को विसवास है।।
गोपद सो ह्वै हैं भवसागर सो नागर नर जोपै नैन हिय के लगावै, मिटै त्रास है।
कपट कुचाल माया बल सबै जीतिवे को, 'दर' को दरस कर जीत्यो अनायास है।। १६।।

कामहू निसाचर के मारिवे को 'चक्र' धार्यो, मंगल कल्याण हेतु 'स्वस्तिक' हूँ मानिये।
मंगलीक 'जम्बूफल' फल चारिहूँ को फल, कामना अनेक विधिपूर्ण नित ध्यानिये।।
'कलस' सुधा को सर भर्यो हरिभक्ति रस, नैनपुट पान कीजै जीजै मन आनिये।
भक्ति को बढ़ावै औ घटावै तीन तापहूँ को, 'अर्धचन्द्र' धारण ये कारण हूँ जानिये।। १७।।

विषया भुजंग बलमीक तन मांहि बसै, दास को न डसै याते यत्न अनुसर्यो है।
'अष्टकोन' 'षट्कोन' औ 'त्रिकोन' जन्त्र किये जिये जोई जानि जाके ध्यान उर भर्यो है।।
मीन बिन्दु रामचन्द्र कीन्ह्यो वशीकर्ण पायँ ताहि ते निकाय जन मन जात हर्यो है।
सागर संसार ताको पारावार पावे, नाहि 'उर्ध्वरेखा' दासन को सेतुबन्ध कर्यो है।। १८।।

धनु पद मांहि धर्यो हर्यो सोक ध्यानिन को, मानिन को मार्यो मान रावणादि साखिये।
'पुरुष विशेष' पदकमल बसायो राम, हेतु सुनो अभिराम स्याम अभिलाखिये।।
सूधो मन सूधी बैन सूधी करतूति सब ऐसो जन होय मेरो, याही के ज्यों राखिये।
जोपै बुधिवन्त रसवन्त रूप सम्पति में, करिले विचार निसिदिन मुख भाखिये।। १६।।

द्वादश महाभागवत

इनकी कृपा और पुनि समझैं द्वादश भक्त प्रधान।।
विधि नारद शंकर सनकादिक कपिलदेव मनुभूप।
नरहरिदास जनक भीषम बलि शुकमुनि धर्मस्वरूप।।

अन्तरंग अनुचर हरि जू के जो इनकौ यश गावैं।
आदि अन्त लौं मंगल तिनके श्रोता वक्ता पावैं।।
अजामेल परसंग यह निर्णय परमधर्म के जान।
इनकी कृपा और पुनि समझैं द्वादश भक्त प्रधान।। ७ ।।

श्रीशंकरजी

द्वादश प्रसिद्ध भक्तराज कथा भागवत, अति सुखदाई नानाविधि करि गाये है।
शिवजी की बात एक बहुधा न जानै कोऊ, सुनि रस सानै हियो भाव उरझाये है।।
सीता के वियोग राम विकल विपिन देखि, शंकर निपुन सती वचन सुनाये है।
कैसे ये प्रवीन ईश कौतुक नवीन देखौ, मनेहूँ करत अंग वैसे ही बनाये हैं।। २० ।।

सीता ही सो रूप वेश लेश हू न फेर फार, रामजी निहारि नेकु मन में न आई है।
तब फिरि आयकै सुनाय दई शंकर को, अति दुख पाय बहुविधि समुझाई है।।
इष्ट को स्वरूप धर्‌यो ताते तनु परिहर्‌यो, पर्‌यो बड़ो सोच मति अति भरमाई है।
ऐसे प्रभु भाव पगे पोथिन में जगमगे, लगे मोको प्यारे यह बात रीझि गाई है।। २१ ।।

चले जात मग उभै खेरे शिव दीठि परे, करे परनाम हिये भक्ति लागी प्यारी है।
पार्वती पूछें 'किये कौन को? जू ! कहौ मोसौं दीखत न जन कोऊ' तब सो उचारी है।।
बरष हजार दस बीते तहाँ भक्त भयो, नयो और ह्वैहैं दूजी ठौर बीते धारी है।
सुनिकै प्रभाव हरिदासनि सौं भाव बढ़्यो, रढ़्यो कैसे जात चढ़्यो रँग अति भारी है।। २२ ।।

अजामिलजी

धर्‌यौ पितु मातु नाम अजामेल साँचो भयो, भयो अजामेल तिया छूटी शुभ जात की।
कियो मदपान सो सयान गहि दूरि डार्‌यो, गार्‌यो तनु वाहीं सौं जो कीन्हौं लैकै पातकी।।
करि परिहास काहू दुष्ट ने पठाये साधु, आये घर देखि बुद्धि आई गई सातकी।
सेवा करि सावधान सन्तन रिझाय लियो, नारायन नाम धरो गर्भ बाल बातकी।। २३ ।।

आइ गयो काल मोहजाल में लपटि रह्यो, महा विकराल यमदूत सो दिखाइये।
वही सुत नारायन नाम जो कृपा कै दियो, लियो सो पुकारि सुर आरत सुनाइये।।
सुनत ही पारषद आये ताही ठौर दौर, तोरि डारे पाश कह्यो धर्म समुझाइये।
हारे लै बिडारे जाइ पति पै पुकारे कही, 'सुनो वजमारे ! मति जावो हरि गाइये'।। २४ ।।

मास परायण प्रथम विश्राम

षोडश पारषद

मो चित्तवृत्ति नित तहँ रहौ जहँ नारायण पारषद।।
विष्वक्सेन जय विजय प्रबल, बल मंगलकारी।
नन्द सुनन्द सुभद्र, भद्र जग आमयहारी।।
चण्ड प्रचण्ड विनीत, कुमुद कुमुदाक्ष करुणालय।
शील सुशील सुषेन, भावभक्तन प्रतिपालय।।
लक्ष्मीपति प्रीणन प्रवीन भजनानन्द भक्तनि सुहृद।
मो चित्तवृत्ति नित तहँ रहौ जहँ नारायण पारषद।। ८।।

पारषद मुख्य कहे सोरह सुभाव सिद्ध, सेवा ही की ऋद्धि हिये राखी बहु जोरिकै।
श्रीपति नारायन के प्रीनन प्रवीन महा, ध्यान करै जन पालैं भाव दृग कोरिकै।।
सनकादि दियो शाप प्रेरिकै दिवायो आप, प्रगट ह्वै कह्यो पियो सुधा जिमि घोरिकै।
गही प्रतिकूलताई जोपै यही मन भाई, याते रीति हद गाई धरी रंग बोरिकै।। २५।।

श्रीहरिवल्लभजी

हरिवल्लभ सब प्राथौं जिन चरणरेणु आसा धरी।।
कमला गरुड़ सुनन्द, आदि षोडश प्रभु पद रति।
हनुमन्त जामवन्त सुग्रीव, विभीषण शबरी खगपति।।
ध्रुव उद्धव अम्बरीष, विदुर अक्रूर सुदामा।
चन्द्रहास चित्रकेतु ग्राह, गज पाण्डव नामा।।
कौषारव कुन्ती बधू पट ऐंचत लज्जा हरी।
हरिवल्लभ सब प्राथौं जिन चरणरेणु आसा धरी।। ९।।

हरि के जे वल्लभ हैं दुर्लभ भुवन माँझ, तिनही की पदरेणु आसा जिय करी है।
योगी यती तपी तासौं मेरो कछु काज नाहिं, प्रीति परतीति रीति मेरी मति हरी है।।
कमला गरुड़ जाम्बवान सुग्रीव आदि, सबै स्वादरूप कथा पोथिन में धरी है।
प्रभु सौं सचाई जग कीरति चलाई अति, मेरे मन भाई सुखदाई रस भरी है।। २६।।

श्रीहनुमानजी

रतन अपार क्षीरसागर उधार किये, लिये हितचायकै बनाय माला करी है।
सब सुख साज रघुनाथ महाराज जू को, भक्ति सौं विभीषन जू आनि भेंट धरी है।।
सभा ही की चाह अवगाह हनुमान गरे, डारि दई सुधि भई मति अरबरी है।
राम बिन काम कौन फोरि मनि दीन्हें डारि, खोलि त्वचा नाम ही दिखायो बुद्धि हरी है।।२७।।

श्रीविभीषणजी

भक्ति जो विभीषन की कहै ऐसो कौन जन, ऐपै कछू कही जाति सुनो चित लायकै।
चलत जहाज पर अटकि विचार कियो, कोऊ अंगहीन नर दियो लै बहायकै।।
जाय लग्यो टापू ताहि राक्षसनि गोद लियो, मोद भरि राजा पास गये किलकायकै।
देखत सिंहासन ते कूदि परे नैंन भरे, याही के आकार राम देखे भाग पायकै।। २८।।

रचिकै सिंहासन पै लै बैठायो ताही छन, राक्षसन रीझि देत मानि शुभ घरी है।
तऊ न प्रसन्न होत छन–छन छीन ज्योति, हूजिये कृपाल मति मेरी अति हरी है।।
चाहत मुखारविन्द अति ही आनन्द भरि, ढरकत नैन नीर टेकि ठाढ़ो छरी है।
करो सिन्धु पार मेरे यही सुखसार दियो, रतन अपार लाये वाही ठौर फिरी है।। २६।।

राम नाम लिखि सीस मध्य धरि दियो याको, यही जल पार करै भाव साँचो पायो है।
ताही ठौर बढ्यो मानो नयो और रूप भयो, गयो जो जहाज सोई फेरि करि आयो है।।
लियो पहिचानि पूछ्यो सब सो बखान कियो, हियो हुलसायो सुनि विनै कै चढ़ायो है।
पर्यो नीर कूदि नेकु माया ने प्रवेस कर्यो, हर्यो मन देखि रघुनाथ नाम भायो है।। ३०।।

श्रीशबरीजी

वन में रहति नाम सबरी कहत सब, चाहत टहल साधु तनु न्यूनताई है।
रजनी के शेष ऋषि आश्रम प्रवेस करि, लकरीन बोझ धरि आवै मनभाई है।।
न्हाइवे को मग झारि काँकरनि बीनि डारि, वेगि उठि जाइ नेकु देति न लखाई है।
उठत सँवारें कहै कौन धौं बुहारि गयो भयो, हिये सोच कोउ बड़ो सुखदाई है।। ३१।।

बड़ेई असंग वे मतंग रसरंग भरे, धरे देखि बोझ कह्यो 'कौन चोर आयो है'।
करै नित चोरी अहो ! गहो वाहि एक दिन, बिना पाये प्रीति वाकी मन भरमायो है।।
बैठे निसि चौकी देत शिष्य सब सावधान, आय गई, गहि लई, काँपै तनु नायो है।
देखत ही ऋषि जलधारा बही नैनन ते, बैनन सौं कह्यो जात कहा कछु पायो है।। ३२।।

डीठि हू न सोहीं होत मानि तन गोत छोत, परी जाय सोच सोत कैसे कै निकारिये।
भक्ति को प्रताप ऋषि जानत निपट नीके, कैऊ कोटि विप्रताई यापै वारि डारिये।।
दियो वास आश्रम में श्रवन में नाम दियो, कियो सुनि रोष सबै कीनी पाँति न्यारिये।
सबरी सौं कह्यो तुम राम दरसन करो, मैं तो परलोक जात आज्ञा प्रभु पारिये।। ३३।।

गुरु को वियोग हिये दारुन लै शोक दियो, जियो नहीं जात तऊ राम आसा लागी है।
न्हाइवे को घाट निसि जात ही बुहारि सब, भई यो अबार ऋषि देखि व्यथा पागी है।।
छुयो गयो नेकु कहूँ खीझत अनेक भाँति, करिकै विवेक गयो न्हान यह भागी है।
जल सो रुधिर भयो नाना कृमि भरि गयो, नयो पायो सोच तौहू जानै न अभागी है।। ३४।।

लावै वन बेर लागी राम की अवसेर फल, चाखै धरि राखै फिर मीठे उन जोग हैं।
मारग में जाइ रहै लोचन बिछाय, कभूँ आवैं रघुराइ दृग पावैं निज भोग है।।
ऐसे ही बहुत दिन बीते मग जोहत ही, आय गये औचक सो मिटे सब सोग हैं।
ऐपै तनु न्यूनताई आई सुधि छिपी जाय पूछैं, आप 'सबरी कहाँ?' ठाढ़े सब लोग हैं।। ३५।।

पूछि–पूछि आये तहाँ सबरी अस्थान जहाँ, 'कहाँ वह भागवती? देखौं दृग प्यासे हैं'।
आय गई आश्रम में जानिकै पधारे आप, दूर ही ते साष्टांग करी चख भासे हैं।।
रवकि उठाय लई विथा तनु दूरि गई, नई नीर झरी नैन परे प्रेम पासे हैं।
बैठे सुख पाइ फल खाइकै सराहबे वेई कौं कह्यौ कहा कहौं मेरे मग दुख नासे हैं।। ३६।।

करत हैं सोच सब ऋषि बैठे आश्रम में, जल को बिगार सो सुधार कैसे कीजिये।
आवत सुने हैं वन पन्थ रघुनाथ कहूँ, आवैं जब कहैं याको भेद कहि दीजिये।।
इतने ही माँझ सुनी 'सबरी के विराजे आन', गयो अभिमान चलो पग गहि लीजिये।
आये खुनसाय कही नीर कौ उपाय कहौ 'गहौ पग भीलिनी के' छुये स्वच्छ भीजिये।। ३७।।

श्रीजटायुजी

जानकी हरन कियो रावन मरन काज, सुनि सीता वानी खगराज दौर्‌यो आयो है।
बड़ी ये लड़ाई लीन्हीं देह वारि फेरि दीन्हीं, राखे प्रान राम मुख देखिवो सुहायो है।।
आये आपु गोद सीस धारि दृगधार सींच्यो, दई सुधि लई गति तनहूँ जरायो है।
दसरथवत मान कियो जल दान यह, अति सनमान निज रूप धाम पायो है।। ३८।।

श्रीअम्बरीषजी

अम्बरीष भक्त की जो रीस कोऊ करै और, बड़ो मति बौर किहूँ जान नहिं भाखिये।
दुरवासा ऋषि सीख सुनी नहीं कहूँ साधु, मानि अपराध सिर जटा खैंचि नाखिये।।

लई उपजाय कालकृत्या विकराल रूप, भूप महाधीर रह्यो ठाढ़ो अभिलाखिये।
चक्र दुख मानि लै कृशानु तेज राख करी, परी भीड़ ब्राह्मण को भागवत साखिये।। ३६।।

भाज्यो दिशा–दिशा सब लोक लोकपाल पास, गये नयो तेज चक्र चून किये डारे हैं।
ब्रह्मा शिव कही यह गही तुम टेव बुरी, दासनि को भेद नहीं जान्यो वेद धारे हैं।।
पहुँचे वैकुण्ठ जाय कह्यो दुख अकुलाय, 'हाय हाय राखौ प्रभु ! खरौ तन जारे हैं'।
'मैं तो हौं अधीन तीनि गुन को न मान मेरे, भक्तवात्सल्य गुन सबही को टारे हैं'।। ४०।।

मोको अति प्यारे साधु उनकी अगाध मति, कर्‌यो अपराध तुम सह्यो कैसे जात है।
धाम धन वाम सुत प्राण तनु त्याग करैं, ढरैं मेरी ओर निसि भोर मोसौं बात है।
मेरेउ न सन्त बिनु और कछु साँची कहौं, जाओ वाही ठौर जाते मिटै उतपात है।
बड़ेई दयाल सदा दीन प्रतिपाल करैं न्यूनता न धरैं कहूँ भक्ति गात–गात हैं।। ४१।।

ह्वै करि निरास ऋषि आयो नृप पास चल्यो, गर्व सौं उदास पग गहे दीन भाष्यो है।
राजा लाज मानि मृदु कहि सनमान कर्‌यो, ढर्‌यो चक्र ओर कर जोरि अभिलाष्यो है।।
भक्त निसकाम कभूँ कामना न चाहत हैं, चाहत हैं विप्र दुख दूरि करो चाख्यो है।
देखिकै विकलताई सदा सन्त सुखदाई, आई मन माँझ सब तेज ढाँक राख्यो है।। ४२।।

श्रीअम्बरीषजी की छोटी रानी

एक नृपसुता सुनि अम्बरीष भक्तिभाव, भयो हिये भाव ऐसो वर कर लीजियै।
पिता सौं निशंक ह्वैकें कही पति कियो मैं ही, विनय मानि मेरी वेगि चीठी लिख दीजियै।।
पाती लैके चल्यो विप्र छिप्र वही पुरी गयो, नयो चाव जान्यो ऐपै कैसे तिया धीजियै।
कहो तुम जाय रानी बैठीं सत आय मोकौं, बोल्यो न सुहाय प्रभुसेवा माँझ भीजियै।। ४३।।

कह्यो नृप सुता सौं जु कीजिये यतन कौन?, पौन जिमि गयो आयो काम नाहीं बिया कौ।
फेरिकै पठायो सुख पायो मैं तो जान्यों, वह बड़ो धर्मज्ञ वाके लोभ नाहीं तिया कौ।।
बोली अकुलाय मन भक्ति ही रिझाय लियो, कियो पति मुख नहीं देखौं और पिया कौ।
जायके निशंक यह बात तुम मेरी कहौ, चेरी जौ न करौ तौ पै लेवो पाप जिया कौ।। ४४।।

कही विप्र जाय सुनि चाय भहराय गये, दयो लै खड्ग 'यासौं फेरा फेरि लीजियैं'।
भयो जू विवाह उत्साह कहूँ मात नाहिं आई पुर अम्बरीष देखि छबि भीजियै।।
कह्यो 'नव मन्दिर में झारिकै बसेरो देवो, देवो राव भोग विभौ नाना सुख कीजियै।
पूरब जनम कोऊ मेरे भक्ति गन्ध हुती याते सनबन्ध पायो यहै मानि धीजियै'।। ४५।।

रजनी के शेष पति भौन में प्रवेस कियो, लियो प्रेम साथ ढिग मन्दिर के आइये।
बाहिरी टहल पात्र चौका करि रीझि रही, गही कौन जाय जामें होत ना लखाइये।।
आवत ही राजा देखि लगै न निमेष हूँ, कौन चोर आयो मेरी सेवा लै चुराइये।
देखी दिन तीनि फेरि चीन्हिकै प्रवीन कही, कि ऐसौ मन जौ पै प्रभु माथे पधराइये।। ४६ ।।

लई बात मानि मानो मन्त्र लै सुनायो कान, होत ही बिहान सेवा नीकी पधराई है।
करति सिंगार फिर आपु ही निहारि रहै, लहै नहीं पार दृग झरी सी लगाई है।।
भई बढ़वार राग भोग सौं अपार भाव, भक्ति विसतार रीति पुरी सब छाई है।
नृपहू सुनत अब लागि चोंप देखिवे की, आये ततकाल मति अति अकुलाई है।। ४७ ।।

हरे हरे पाँव धरैं पौरियानि मने करैं, खरे अरबरैं कब देखौं भागभरी को।
गये चलि मन्दिर लौं सुन्दरी न सुधि अंग, रंग भीजि रही दृग लाइ रही झरी को।।
बीन लै बजावै गावै लालन रिझावै त्यौं–त्यौं, अति मन भावै कहैं धन्य यह घरी को।
द्वार पै रह्यौ न जाय गये ढिग ललचाय, भई उठि ठाढ़ि देखि राजा गुरु हरि को।। ४८ ।।

वैसे ही बजाओ बीन ताननि नवीन लैकैं, झीन सुर कान परै जाति मति खोइये।
जैसे रंग भीजि रही कही सो न जात मोपै, ऐपै मन नैंन चैन कैसे करि गोइये।।
करिकै अलापचारी फेरिकै सँभारि तान, आइ गयो ध्यान रूप ताहि माँझ भोइये।
प्रीति रसरूप भई राति सब बीति गई, नई कछु रीति अहो! जामें नहिं सोइये।। ४९ ।।

बात सुनी रानी और राजा गये नई ठौर, भई सिरमौर अब कौन वाकी सर है।
हमहूँ लै सेवा करैं पति मति वश करैं, धरैं नित्य ध्यान विषय बुद्धि राखी धर है।।
सुनिकै प्रसन्न भये अति अम्बरीष ईश, लागी चोंप फैलि गई भक्ति घर–घर है।

बढ़ै दिन–दिन चाव ऐसोई प्रभाव कोई, पलटै सुभाव होत आनँद को भर है।। ५० ।।

श्रीविदुरानीजी

न्हात ही विदुर नारि अंगन पखारि करि, आइ गये द्वार कृष्ण बोलिकै सुनायो है।
सुनत ही स्वर सुधि डारी लै निदरि मानो, राख्यो मद भरि दौरि आनिकै चितायो है।।
डारि दियो पीत पट कटि लपटाय लियो, हियौ सकुचायो वेष वेगि ही बनायो है।
बैठी ढिग आइ केरा छीलि छीलिका खवाइ, आयो पति खीझियो दुख कोटि गुनो पायो है।। ५१ ।।

श्रीविदुरजी

प्रेम को विचारि आपु लागे फल सार दैन, चैन पायो हियो नारि बड़ी दुखदाई है।
बोले रीझि स्याम तुम कीनो बड़ो काम ऐपै, स्वाद अभिराम वैसी वस्तु मैं न पाई है।।

तिया सकुचाय कर काटि डारौं हाय प्रान–प्यारे को खवाई छीलि छीलिका न भाई है।
हित ही की बातें दोऊ पार पावैं नाहिं कोऊ, नीके कै लड़ावै सोई जानै यह गाई है ।।५२।।

मास परायण दूसरा विश्राम

श्रीसुदामाजी

बडो निसकाम सेर चूनहू न धाम ढिग, आई निज भाम प्रीति हरि सौं जनाई है।
सुनि सोच पर्‌यो हियो खरो अरबर्‌यो मन, गाढ़ो लैकै कर्‌यो 'बोल्यो हाँ जू सरसाई है'।।
'जावो एक बार वह वदन निहार आवो, जोपै कछु पावो लावो मोकौं सुखदाई है'।
कही भली बात सब लोक में कलंक ह्वै है, जानियत याही लिये कीन्हीं मित्रताई है।।५३।।

तिया सुनि कहै 'कृष्ण रूप क्यों न चहै? जाय दहै दुख आपही सो' वचन सुनाये है।
आई सुधि प्यारे की विचारे मति टारे तब, धारे पग मग झूमि द्वारावती आये हैं।।
देखिकै विभूति सुख उपज्यो अभूत कोऊ, चल्यो मुख माधुरी के लोचन तिसाये हैं।
डरपत हियो ड्योढ़ी लाँघि मन गाढ़ो कियो, लियो कर गहि चाह तहाँ पहुँचाये हैं।। ५४।।

देखो स्याम आयो मित्र चित्रवत् रहे नेकु, हित को चरित्र दौरि रोइ गरे लागे है।
मानो एक तन भयो लयो ऐसे लाइ छाती, नयो यह प्रेम छूटैं नाहिं अंग पागे हैं।
आई दुबराई सुधि मिलन छुटाई ताते, आने जल रानी पग धोये भाग जागे है।
सेज पधारइ गुरु चरचा चलाइ, सुखसागर बुड़ाइ आपु अति अनुरागे हैं।। ५५।।

चिउड़ा छिपाये काँख पूछैं कहा ल्याये मोकौं?, अति सकुचाये भूमि तकैं दृग भीजे हैं।
खैंचि लई गँठि मूँठि एक मुख माँझ दई, दूसरी हूँ लेत स्वाद पाइ आपु रीझे हैं।।
गह्यो कर रानी 'सुखसानी प्यारी वस्तु यहै, पावो बाँटि' मानो श्रीसुदामा प्रेम धीजे हैं।
श्याम जू विचारि दीनी सम्पति अपार, विदा भये, पै न जानी सार बिछुरनि छीजे है।। ४६।

आये निज ग्राम वह अति अभिराम भयो, नयो पुर द्वारका सौं देखि मति गई है।
तिया रँग भीनी संग सतनि सहेली लीनी, कीनी मनुहारि यों प्रतीति उर भई है।।
वहै हरि ध्यान रूपमाधुरी को पान तासौं, राखैं निज प्रान जाके प्रीति नित नई है।
भोग की न चाह ऐसे तनु निरवाह करैं, ढरैं सोई चाल सुखजाल रसमई हैं।। ५७।।

श्रीचन्द्रहासजी

हुतो नृप एक ताके सुत चन्द्रहास भयो, परी यों विपति धाई लाई और पुर है।
राजा कौ दिवान ताके रही घर आन बाल, आपने समान संग खेलै रसढुर है।।

भयो ब्रह्मभोज कोई ऐसोई संयोग बन्यो, आये वै कुमार जहाँ विप्रन को सुर है।
बोलि उठे सबै, 'तेरी सुता कौ जु पति यहै', हुवो चाहै जानी सुनि गयो लाज घुर है।। ५८।।

पर्‌यौ सोच भारी कहा करौं? यों विचारी अहो! सुता जो हमारी ताको पति ऐसो चाहियै।
डारौं याहि मार याको यहै है विचार तब, बोलि नीचजन कह्यौ मारौ हिय दाहियै।।
लैकै गये दूर देखि बाल छबि पूर, हम योनि परै धूर दुख ऐसो अवगाहियै।
बोले अकुलाय तोहि मारैंगे सहाय कौन? माँगौ एक बात जब कहौं तब बाहियै।। ५९।।

मानि लीन्हौं बोल वे कपोल मध्य गोल एक, गण्डकी को सुत काढि; सेवा नीकी कीनी है।
भयो तदाकार यों निहार सुख भार भरि, नैननि की कोर ही सौं आज्ञा बध दीनी है।।
गिरे मुरझाइ दया आइ कछु भाय भरे, ढरे प्रभु ओर मति आनन्द सौं भीनी है।
हुती छठी आँगुरी सो कटि लई दूषन हो, भूषन ही भयो जाइ कही साँचु चीन्ही है।। ६०।।

वहै देश भूमि में रहत लघु भूप और, और सुख सबै एक सुत चाह भारी है।
निकस्यौ विपिन आनि देखि याहि मोद मानि, कीन्हीं खग छाँह घिरी मृगी पाँति सारी है।।
दौरिकै निशंक लियो पाइ निधि रंक जियो, कियो मनभायो सो बँधायो श्री हु वारी है।
कोऊ दिन बीते नृप भये चित चीते दियो, राज को तिलक भावभक्ति विसतारी है।। ६१।।

रहै जाके देश सो नरेस कछु पावै नाहीं, बाँह बल जोरि दियो सचिव पठाइकै।
आयो घर जानि कियो अति सनमान सो, पिछान लियो वह बाल मारो छल छाइकै।।
दई लिखि चीठी जाओ मेरे सुत हाथ दीजै, कीजै वही बात जाको आयो लै लिखाइकै।
गये पुर पास बाग सेवा मति पागि करि, भरी दृग नीद नेकु सोयो सुख पाइकै।। ६२।।

खेलति सहेलिन सों आई वाहि बाग माँझ, करि अनुराग भई न्यारी देखि रीझी है।
पाग मधि पाती छबिमाती झुकि खैचि लई, बाँची खोलि लिख्यो विष देन पिता खीझी है।।
विषया सुनाम अभिराम दृग अंजन सौं, विषया बनाइ मनभाई रस भीजी है।
आइ मिली आलिन में लालन को ध्यान हिये, पिये मद मानो गृह आइ तब धीजी है।। ६३।।

उठ्यो चन्द्रहास जिहि पास लिख्यो लायो आयो, देखि मनभायो गाढ़े गरे सौं लगायो है।
दई कर पाती बात लिखी मो सुहाती बोलि, विप्र घरी एक माँझ ब्याह उघरायो है।।
करी ऐसी रीति डारे बड़े नृप जीति, श्री देत गई बीति चाव पार पै न पायो है।
आयो पिता नीच सुनि घूमि आई मीच मानो, वानौ लखि दूलह को शूल सरसायो है।। ६४।।

बैठ्यो लै इकान्त, 'सुत! करी कहा भ्रान्त यह?' कह्यो सो नितान्त कर पाती लै दिखाई है।
बाँचि आँच लागी 'मैं तो बड़ोई अभागी' ! ऐपै मारौं मति पागी बेटी राँड हू सुहाई है।।

बोलि नीच जाति बात कही तुम जावो मठ, आवै तहाँ कोऊ मारि डारौ मोहि भाई है।
चन्द्रहास जू सौं भाष्यो देवी पूजि आवो आज, मेरी कुल पूज सदा रीति चलि आई है।। ६५।।

चल्योई करन पूजा देशपति राजा कही, मेरे सुत नाहीं राज वाही को लै दीजिये।
सचिव सुवन सौं जु कह्यो तुम लावो जावो, पावो नहीं फेरि समय अब काम कीजिये।।
दौर्‌यौ सुख पाइ चाइ मग ही में लियो जाइ, दियो सो पठाइ नृप रंग माहिं भीजिये।
देवी अपमान ते न डरो सनमान करौं, जात मारि डार्‌यो यासों भाष्यो भूप लीजिये।। ६६।।

काहू आनि कही सुत तेरो मारो नीचनि ने, सींचन सरीर दृग नीर झरी लागी है।
चल्यो ततकाल देखि गिर्‌यो ह्वै विहाल, सीस पाथर सौं फोरि मर्‌यो ऐसो ही अभागी है।।
सुनि चन्द्रहास चलि वेगि मठ पास आये, ध्याये पग देवता के काटे अंग रागी है।
कह्यो तेरो द्वेषी याहि क्रोध करि मार्‌यो मैं ही, उठैं दोऊ दीजै दान जिये बड़भागी है।। ६७।।

कर्‌यो ऐसो राज सब देश भक्तराज कर्‌यो, ढिंग को समाज ताकी बात कहा भाखिये।
हरि–हरि नाम अभिराम धाम–धाम सुनें, और काम कामना न सेवा अभिलाखिये।।
काम क्रोध लोभ मद आदि लैके दूरि किये, जिये नृप पाइ ऐसो नैननि में राखिये।
कही जिती बात आदि अन्त लौं सुहाति हिये, पढ़ै उठि प्रात फल जैमिनि में साखिये।। ६८।।

श्रीमैत्रेयजी

कौषारव नाम सो बखान कियो नाभा जू ने मैत्रेय अभिराम ऋषि जानि लीजै बात में।
आज्ञा प्रभु दई जाहु विदुर है भक्त मेरौ करौ उपदेस रूप गुन ग्राम–गात में।।
चित्रकेतु प्रेमकेतु भागवत ख्यात जाते पलट्यो जनम प्रतिकूल फल घात में।
अक्रूर आदि ध्रुव भये सब भक्तभूप उद्धव से प्यारेन की ख्याति पात–पात में।। ६९।।

श्रीकुन्तीजी

कुन्ती करतूति ऐसी करै कौन भूतप्राणी, माँगति विपति जासौं भाजैं सब जन हैं।
देख्यो मुख चाहौं लाल ! देखे बिनु हिये शाल, हूजिये कृपाल नहीं दीजै वास वन है।।
देखि विकलाई प्रभु आँखि भरि आईं फेरि घर ही को लाई कृष्ण प्रान तन धन है।
श्रवन वियोग सुनि तनक न रह्यो गयो, भयो वपु न्यारो अहो ! यही साँचो पन है।। ७०।।

श्रीद्रौपदीजी

द्रोपदी सती की बात कहै ऐसो कौन पटु ? खैचत ही पट, पट कोटिगुने भये हैं।
'द्वारका के नाथ!' जब बोली तब साथ हुते द्वारका सौं फेरि आये भक्तवाणी नये है।।

गये दुर्वासा ऋषि वन में पठाये नीच धर्मपुत्र बोले विनय आवै पन लये हैं।
भोजन निवारि तिया आइ कही सोच पर्‌यो, चाहैं तनु त्याग्यो 'कह्यो कृष्ण कहूँ गये हैं'।।७१।।

सुन्यो भागवती को वचन भक्तिभाव भर्‌यो, कर्‌यो मन आये स्याम पूजे हिये काम है।
आवत ही कही मोहि भूख लागी देवो कछु, महा सकुचाये माँगै प्यारो नहीं धाम है।।
विश्व के भरनहार धरे हैं अहार अजू, हमसों दुरावो कही वानी अभिराम है।
लग्यो शाक पत्र पात्र जल संग पाइ गये, पूरन त्रिलोकी विप्र गिनै कौन नाम है।।७२।।

पद पंकज वन्दौं सदा, जिनके हरि नित उर बसैं।।
योगेश्वर श्रुतिदेव अंग मुचुकुन्द प्रियव्रत जेता।
पृथु परीक्षित शेष, सूत शौनक परचेता।।
सतरूपा त्रयसुता सुनीति सती सबही मन्दालस।
यज्ञपत्नि व्रजनारि, किये केशव अपने वश।।
ऐसे नर नारी जिते तिनहीं के गाऊँ जसैं।
पद पंकज वन्दौं सदा, जिनके हरि नित उर बसैं।। १०।।

श्रीश्रुतिदेवजी

जिनहीं के हरि नित उर बसैं तिनहीं के, पदरेनु चैन–दैन आभरन कीजियै।
योगेश्वर आदि रस स्वाद में प्रवीन महा, विप्र श्रुतिदेव ताकी बात कही दीजियै।।
आये हरि घर देखि गयो प्रेम भरि हियो, ऊँचो कर करि पट फेरि मति भीजियै।
जिते साधु संग तिन्हैं विनय न प्रसंग कियो, कियो उपदेश 'मोसौं बाढ़ पाँव लीजियै'।।७३।।

अंघ्री अम्बुज पांशु को, जनम जनम हौं जाचिहौं।।
प्राचीनबर्हि सत्यव्रत, रहूगण सगर भगीरथ।
बाल्मीकि मिथिलेश, गये जे जे गोविन्द पथ।।
रुक्मागंद हरिचन्द, भरत दधीचि उदारा।
सुरथ सुधन्वा शिविर, सुमति अति बलि की दारा।।
नील मोरध्वज ताम्रध्वज, अलरक कीरति राचिहौं।
अंघ्री अम्बुज पांशु को, जनम जनम हौं जाचिहौं।। ११।।

महर्षि श्रीबाल्मीकिजी

जन्म पुनि जन्म को न मेरे कछु सोच अहो ! सन्तपद कंज रेनु सीस पर धारिये।
पराचीनबर्हि आदि कथा परसिद्ध जग, उभै बालमीकि बात चित्त तैं न टारिये।।
भये भील संग भील ऋषि संग ऋषि भये, भये राम दरसन लीला विसतारिये।
जिन्हें जग गाय किहूँ सकै ना अघाय चाय भाय भरि हियो भरि नैन भरि ढारिये।। ७४।।

मास परायण तीसरा विश्राम

श्वपच श्रीबाल्मीकिजी

हुतो बालमीकि एक सुपच सुनाम ताको, श्याम लै प्रकट कियो भारत में गाइये।
पाण्डवन मध्य मुख्य धर्मपुत्र राजा आप, कीनो यज्ञ भारी ऋषि आये भूमि छाइये।।
ताको अनुभाव शुभ शंख सो प्रभाव कहै, जोपै नहीं बाजै तो अपूरनता आइये।
सोई बात भई वह बाज्यो नाहिं सोच पर्यौं, पूछैं प्रभु पास याकी न्यूनता बताइये।। ७५।।

बोले कृष्णदेव याको सुनो सब भेव, ऐपै नीके मानि लेव बात दुरी समुझाइये।
भागवत सन्त रसवन्त कोऊ जेंयो नाहिं, ऋषिन समूह भूमि चहुँदिसि छाइये।।
जोपै कहौ भक्त नाहीं, नाहीं कैसे कहौं गहौं, गाँस एक और कुल जाति सो बहाइये।
दासनि को दास अभिमान की न बास कहूँ, पूरन की आस तोपै ऐसो लै जिवाइये।। ७६।।

ऐसो हरिदासपुर आस–पास दीसै नाहिं, बास बिनु कोऊ लोक लोकन में पाइये।
तेरेई नगर माँझ निसिदिन भोर साँझ, आवै जाय ऐपै काहू बात न जनाइये।।
सुनि सब चौंकि परे भाव अचरज भरे, हरे मन नैंन अजू ! वेगि ही बताइये।
कहा नाम? कहाँ ठाम? जहाँ हम जाय देखैं, लेखैं करि भाग धाय पाँय लपटाइये।। ७७।।

जिते मेरे साधु कभूँ चाहैं न प्रकास भयौ, करौं जो प्रकास मानैं महा दुखदाइये।
मोको पर्यो सोच यज्ञपूरन की लोच हिये, लिये वाको नाम निजि ग्राम तजि जाइये।।
ऐसौ तुम कहौ जामें रहो न्यारे प्यारे ! सदा, हमहीं लिवाइ ल्याइ नीकें कै जिमाइये।
जावो बालमीकि घर बड़ो अवलीक साधु, कियो अपराध हम दियो जो बताइये।। ७८।।

अर्जुन और भीमसेन चलेई निमन्त्रन को, अन्तर उघारि कही भक्तिभाव दूर है।
पहुँचे भवन जाइ चहुँदिसि फिरि आइ, परे भूमि झूमि घर देख्यो छबि पूर है।।
आये नृपराजनि को देखि तजे काजनि को, लाजनि सौं काँपि–काँपि भयो मन चूर है।
पाँयनि को धारिये जू जूँठन को डारिये जू, पापग्रह टारिये जू कीजे भाग भूर है।। ७९।।

जूठनि लै डारौं सदा द्वार को बुहारौं नहीं, और कौं निहारौं अजू ! यही साँचोपन है।
कहो कहा? जेंवो कछू पाछे लै जिंवावो हमें, जानी गई रीति भक्तिभाव तुम तन है।

तबतौ लजानौ हिये कृष्ण पै रिसानौ नृप, चाहौ सोई ठानौ मेरे संग कोऊ जन है।
भोर ही पधारौ अब यही उर धारौ और, भूलि न विचारौ कही भली जोपै मन है।। ८०।।

कही सब रीति सुनि धर्मपुत्र प्रीति भई, करी लै रसोई कृष्ण द्रोपदी सिखाई है।
जेतिक प्रकार सब व्यंजन सुधारि करो, आजु तेरे हाथनि की होति सफलाई है।।
ल्याये जा लिवाय कहै 'बाहिर जिमाय देवो', कही प्रभु 'आपु ल्यावो अँक भरि भाई है'।
आनिकै बैठायो पाकशाल में रसाल ग्रास, लेत बाज्यो शंख हरि दण्ड की लगाई है।। ८१।।

'सीत–सीत प्रति क्यों न बाज्यो? कछु लाज्यो कहा' भक्ति को प्रभाव तैं न जानत यों जानिये।
बोल्यो अकुलाय 'जाय पूछिये जू द्रोपदी कौं, मेरो दोष नाहिं यह आपु मन आनिये।।
मानि साँच बात जातिबुद्धि आई देखि याहि, सबही मिलाई मेरी चातुरी बिहानिये।
पूँछे ते कही है बालमिकी 'मैं मिलायौं यातें आदि प्रभु पायो पाऊँ स्वाद उन मानिये'।। ८२।।

नवाह परायण प्रथम विश्राम

श्रीरुक्मांगदजी

रुक्मांगद बाग शुभ गन्ध फूल पागि रह्यो, करि अनुराग देवबधू लेन आवहीं।
रहि गई एक काँटो चुभ्यो पग बैंगन को, सुनि नृप माली पास आये सुख पावहीं।।
कहौ को उपाय स्वर्गलोक को पठाइ दीजै, 'करै एकादशी जल धरै कर जावहीं'।
व्रत को तो नाम यहि ग्राम कोऊ जानै नाहिं, 'कीनो हो अंजान काल्हि लावो गुन गावहीं'।।७३।।

फेरी नृप डौंड़ी सुनि बनिक की लौंड़ी, भूखी रही ही कनौड़ी निसि जागी उन मारियै।
राजा ढिंग आनि करि दियो व्रत दान गई, तिया यों उड़ानि निज लोक को पधारियै।।
महिमा अपार देखि भूप ने विचारी याको, कोउ अन्न खाय ताको बाँधि मारि डारियै।
याही के प्रभाव भावभक्ति विसतार भयो, नयो चोज सुनो सब पुरी लै उधारियै।। ८४।।

श्रीरुक्मांगदजी की पुत्री

एकादशी व्रत की सचाई लै दिखाई राजा, सुता की निकाई सुनौ नीके चित लाइकै।
पिता घर आयो पति भूख ने सतायो, अति माँगै तिया पास नहीं दियो यह भाइकै।।
आजु हरिवासर सो तासर न पूजै कोऊ, डर कहा मीच को यों मानी सुख पाइकै।
तजे उन प्रान पाये वेगि भगवान् वधू, हिये सरसान भई कह्यौं पन गाइकै।। ८५।।

टीका समुदाय की

सुनौ हरिचन्द कथा व्यथा बिन द्रव्य दियो, तथा नहीं राखी बेचि सुत तिया तन है।
सुरथ सुधन्वा जू सौं दोष के करत मरे, शंख औ लिखित विप्र भयो मैलो मन है।।

इन्द्र औ अगिन गये शिवि पै परीच्छा लेन, काटि दियो मास रीझि साँचो जान्यो पन है।
भरत दधीचि आदि भागवत बीच गाये, सबनि सुहाये जिन दियो तन धन है।। ८६ ।।

श्रीविन्ध्यावलीजी

विन्ध्याबली तिया–सी न देखी कहूँ तिया नैंन, बाँध्यो प्रभु पिया देखि कियो मन चौगुनौ।
करि अभिमान दान देन बैठ्यो तुमहीं को, कियो अपमान मैं तो मान्यौं सुख सौगुनौ।।
त्रिभुवन छीनि लिये दिये बैरी देवतान, प्रान मात्र रहे हरि आन्यो नहीं औगुनौ।
ऐसी भक्ति होय जोपै जागो रहो सोइ अहो ! रहो भव माँझ ऐपै लागै नहीं भौगुनौ।। ८७ ।।

श्रीमोरध्वजजी, श्रीताम्रध्वजजी

अर्जुन के गर्व भयो कृष्ण प्रभु जानि लियो, दियो रस भरी याहि रोग यों मिटाइयै।
मेरो एक भक्त आहि ताकौ लै दिखाऊँ ताहि, भये विप्र वृद्ध संग बाल चलि जाइयै।।
पहुँचत भाष्यो जाइ मोरध्वज राजा कहाँ, वेगि सुधि देवो काहू बात जा जनाइयै।
सेवा प्रभु करौं नेकु रहौ पाउँ धरौ जाइ, कहो तुम बैठौ कही आग–सी लगाइयै।। ८८ ।।

चले अनखाय पाँय गहि अटकाय जाय, नृप को सुनाय ततकाल दौरे आये हैं।
बड़ी कृपा करी आज फरी चाहबेलि मेरी, निपट नबेल फल पायो याते पाये है।।
दीजै आज्ञा मोहिं सोई कीजे सुख लीजे वही, पीजै वानी रस मेरे नैन लै सिराये हैं।
सुनि क्रोध गयो मोद भयो सो परीच्छा हिये, लिये चिंत चाव ऐसे वचन सुनाये है।। ८६ ।।

'देवे की प्रतिज्ञा करो' 'करी जू प्रतिज्ञा हम, जाहि भाँति सुख तुम्हें सोई मोको भाई है'।
'मिल्यो मग सिंह यहि बालक को खाये जात, कही खावो मोहिं नहीं यही सुखदाई है'।।
'काहू भाँति छोड़ो' नृप आधो जो सरीर आवै तौहि याहि तजौं कहि बात मो जनाई है।
बोलि उठी तिया 'अरधंगी मोहिं जाइ देवो' पुत्र कहै 'मोको लेवो और सुधि आई है'।। ६० ।।

सुनो एक बात 'सुत तिया लै करौंत गात चीरैं धीरैं भीरैं नाहिं' पीछे उन भाखिये।
कीन्ह्यो वाही भाँति अहो नासा लगि आयौ जब, ढर्‌यो दृग नीर भीर वाकर न चाखिये।।
चले अनखाय गहि पाँय सो सुनाये बैन, नैंन जल बाँयो अंग काम किहिं नाखिये।
सुनि भरि आयो हियो निज तनु श्याम कियो, दियो सुखरूप व्यथा गई अभिलाषिये।। ६१ ।।

मोपै तो दियो न जाइ निपट रिझाय लियो, तऊ रीझि दिये बिना मेरे हिये साल है।
माँगौ वर कोटि चोट बदलो न चूकत है, सूकत है मुख सुधि आये वही हाल है।।
बोल्यो भक्तराज तुम बड़े महाराज कोऊ, थोरोऊ करत काज मानौं कृत जाल है।
एक मोको दीजै दान दीयो जू बखानौ वेगि, साधु पै परीच्छा जनि करो कलिकाल है।। ८२ ।।

श्रीअलर्कजी

अलरक की कीरति में राँचौ नित साँचौ हिये, किये उपदेसहूँ न छूटै विषै वासना।
माता मन्दालसा की बड़ी यह प्रतिज्ञा सुनौ, आवै जो उदर माँझ फेरि गर्भ आस ना।।
पति को निहोरो ताते रह्यो छोटो कोरो ताको, लै गये निकासि मिलि काशी नृप शासना।
मुद्रिका उघारि और निहारि दत्तात्रेय जू को, भये भवपार करी प्रभु की उपासना।। ६३।।

तिन चरण धूरि मो भूरि सिर, जे जे हरिमाया तरे।।
रिभु इक्ष्वाकरु ऐल गाधि रघु रै गै शुचि शतधन्वा।
अमूरति अरु रन्तिदेव उतंग भूरि देवल वैवस्वत मान्वा।।
नहुष जजाति दिलीप, पुरु यदु गुह मान्धाता।
पिप्पल निमि भरद्वाज, दक्ष सरभंग संघाता।।
संजय समीक उत्तानपाद, याज्ञवल्क्य जस जग भरे।
तिन चरण धूरि मो भूरि सिर, जे जे हरिमाया तरे।। १२।।

श्रीरन्तिदेवजी

अहो ! रन्तिदेव नृप सन्त दुष्यन्त वंश, अति ही प्रशंस सो अकाशवृत्ति लई है।
भूखे को न देखि सकैं आवै सो उठाइ देत, नेतिं नहिं करैं भूखे देह छीन भई है।।
चालिस औ आठ दिन पाछे जल–अन्न आयो, दियो विप्र शूद्र नीच श्वान यह नई है।
हरि को निहारैं उन माँझ तब आये प्रभु, भाये जग दुख जिते भोगौं भक्ति छई है।। ८४।।

श्रीगुह निषादजी

भीलन को राजा गुह राम अभिराम प्रीति, भयो वनवास मिल्यो मारग में आइकै।
करौ यह राज जू विराजि सुख दीजै मोको, बोले चैनसाज तज्यौं आज्ञा पितु पाइकै।।
दारुन वियोग अकुलात दृग अश्रुपात, पाछे लोहू जात तब सकै कौन गाइकै।
रहै नैन मूँदि 'रघुनाथ बिन देखौं कहा?' अहा ! प्रेम रीति मेरे हिये रही छाइकै।। ६५।।

चौदह बरष पीछे आये रघुनाथ नाथ, साथ के जे भील कहैं आये प्रभु देखिये।
बोल्यो 'अब पाऊँ कहाँ होति न प्रतीति क्यो हू' प्रीति करि मिले राम कही मोको पेखिये।।
परसि पिछाने लपटाने सुखसागर समाने प्रान पाये मानो भाल भाग लेखिये।
प्रेम की जू बात क्यों हू वानी में समात नाहिं, अति अकुलात कह्यौ कैसे कै विशेखिये।। ६६।।

मास परायण चौथा विश्राम

निमि अरु नव योगेश्वरा पादत्राण की हौं शरण।।
कवि हरि करभाजन, भक्ति रतनाकर भारी।
अन्तरिक्ष अरु चमस, अनन्यता पधति उधारी।।
प्रबुध प्रेम की राशि, भूरिदा आबिर होता।
पिप्पल द्रुमिल प्रसिद्ध, भवाब्धि पार के पोता।।
जयन्ती नन्दन जगत के, त्रिविध ताप आमय हरण।
निमि अरु नव योगेश्वरा पादत्राण की हौं शरण।। १३।।

पद पराग करुणा करौ जे, नियन्ता नवधा भगति के।।
श्रवण परीक्षित सुमति, व्यास सावक सुकीरतन।
सुठि सुमिरन प्रह्लाद पृथु पूजा कमला चरनन मन।।
वन्दन सुफलकसुवन, दास्य दीपत्ति कपीश्वर।
सख्यत्वे पारत्थ, समर्पन आतम बलिधर।।
उपजीवी इन नाम के, एते त्राता अगति के।
पद पराग करुणा करो, जे नियन्ता नवधा भगति के।। १४।।

श्रीपरीक्षितजी

श्रवण रसिक कहूँ सुने न परीक्षित से, पानहू करत लागी कोटिगुनी प्यास है।
मुनि मन माँझ क्योहूँ आवत न ध्यावत हूँ, वहीं गर्भमध्य देखि आयो रूपरास है।।
कही शुकदेव जू सौं टेव मेरी लीजै जानि, प्रान लागे कथा नहीं तक्षक को त्रास है।
कीजिये परीच्छा उर आनी मतिसानी अहो ! वानी बिरमानी जहाँ जीवन निरास है।। ६५।।

परमहंस श्रीशुक्रदेवजी

गर्भ ते निकसि चले वन ही में कियो वास, व्यास से पिता को नहिं उत्तरहु दियो है।
दशम श्लोक सुनि गुनि मति हरि गई, लई नई रीति पढ़ि भागवत लियो है।
रूप गुन भरि सह्यो जात कैसे करि आये, सभा नृप ढरि भीज्यो प्रेमरस हियो है।
पूछे भक्तभूप ठौर–ठौर परे भौंर जाय, गाय उठे जबैं मानो रँग झर कियो है।। ६८।।

28-1
श्रवण
आत्मनिवेदन
कीर्तन
सख्य
स्मरण
www.malookpeeth.com
दास्य
भक्तिदेवी
वन्दन
पादसेवन
अर्चन
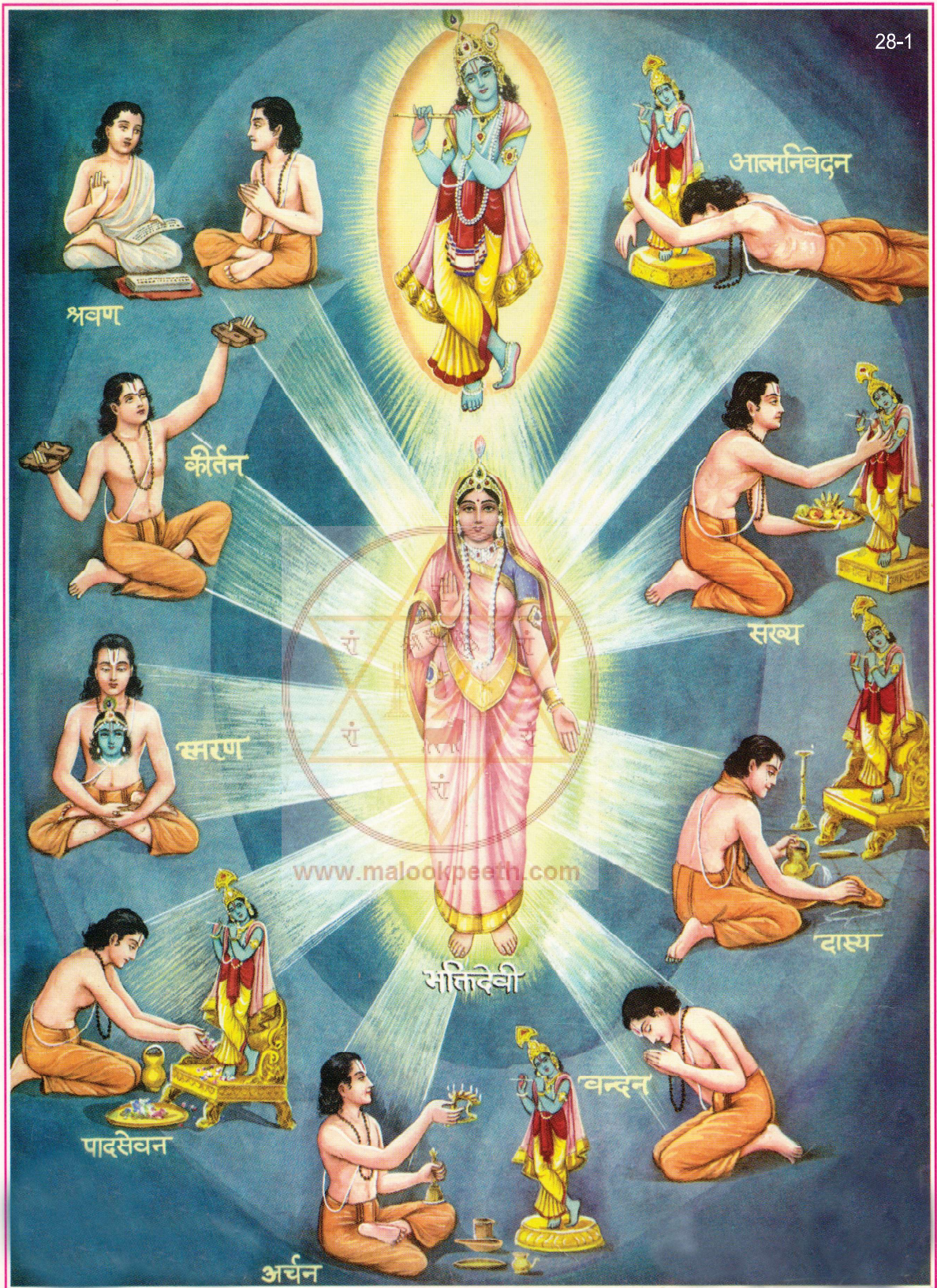
श्रीप्रह्लादजी

सुमिरन साँचो कियो लियो देखि सबही में, एक भगवान कैसे काटै तरवार है।
काटिवो खड्ग जल बोरिवो सकति जाकी, ताहि को निहारै चहुँओर सो अपार है।।
पूछे ते बतायो खम्भ तहाँ ही दिखायो रूप, प्रगट अनूप भक्त वानी ही सौं प्यार है।
दुष्ट डार्‌यो मारि गरे आँतै लई डारि तऊ, क्रोध को न पार कहा कियो यों विचार है।।९९।।

डरे शिव अज आदि देख्यौ नहीं क्रोध ऐसो, आवत न ढिग कोऊ लछिमीहूँ त्रास है।
तबतौ पठायो प्रह्लाद अहलाद महा, अहो ! भक्तिभाव पग्यो आयो प्रभु पास है।।
गोद में उठाइ लियो सीस पर हाथ दियो, हियो हुलसायो कही वानी विनयरास है।
आई जग दया लगि पर्‌यो श्रीनृसिंह जू को, अर्‌यो यों छुटावो कर्‌यो माया ज्ञान नास है।।१००।।

श्रीअक्रूरजी

चले अकरूर मधुपुरी ते बिसूर नैन, चली जलधारा कब देखौं छबि पूर को।
सगुन मनावैं एक देखिवोई भावै देह, सुधि बिसरावैं लोटै लखि पग धूर को।।
वन्दन प्रवीन चाह निपट नवीन भई, दई शुकदेव कहि जीवन की मूर को।
मिले राम कृष्ण झिले पाइकै मनोरथ को, हिले दृगरूप कियो हियो चूर–चूर को।।१०१।।

श्रीबलिजी

दियो सरबसु करि अति अनुराग बलि, पागि गयो हियो प्रह्लाद सुधि आई है।
गुरु भरमावैं नीति कहि समुझावैं बोल, उर में न आवै केती भीति उपजाई है।।
कह्यो जोई कियो साँचो भावपन लियो, अहो दियो डर हरिहूँ ने मति न चलाई है।
रीझे प्रभु रहे द्वार भये वश हारि मानी, श्रीशुक बखानी प्रीति रीति सोई गाई है।।१०२।।

सप्ताह परायण प्रथम विश्राम

श्रीभगवद् प्रसादनिष्ठ भक्त

हरि प्रसाद रस स्वाद के, भक्त इते परमान।।
शंकर शुक सनकादि, कपिल नारद हनुमाना।
विष्वक्सेन प्रह्लाद बलिर, भीषम जग जाना।।
अर्जुन ध्रुव अम्बरीष, विभीषण महिमा भारी।
अनुरागी अक्रूर, सदा उद्धव अधिकारी।।
भगवन्त भुक्त अवशिष्ट की, कीरति कहत सुजान।
हरि प्रसाद रस स्वाद के भक्त इते परमान।।१५।।

ध्याननिष्ठ भक्त

ध्यान चतुर्भुज चित धर्यो, तिन्हैं शरण हौं अनुसरौं।।
अगस्त्य पुलस्त्य पुलह, च्यवन वशिष्ठ सौभरि रिषि।
कर्दम अत्रि रिचीक, गर्ग गौतम सुव्यास शिषि।।
लोमश भृगु दालभ्य, अंगिरा शृंगि प्रकासी।
माण्डव्य विश्वामित्र, दुर्वासा सहस अठासी।।
जाबालि यमदग्नि मायादर्श कश्यप परवत पराशर पद रज धरौं।
ध्यान चतुर्भुज चित धर्यो तिन्हैं शरण हौं अनुसरौं।। १६।।

अठारह महापुराण

साधन साध्य सत्रह पुरान, फलरूपी श्रीभागवत।।
ब्रह्म विष्णु शिव लिंग, पद्म स्कन्द विस्तारा।
वामन मीन वाराह, अग्नि कूरम ऊदारा।।
गरुड़ नारदी भविष्य, ब्रह्मवैवर्त्त श्रवण शुचि।
मार्कण्डेय ब्रह्माण्ड कथा, नाना उपजै रुचि।।
परमधर्म श्रीमुख कथित, चतुःश्लोकी निगम सत।
साधन साध्य सत्रह पुरान फलरूपी श्रीभागवत।। १७।।

अठारह स्मृतियाँ

दश आठ स्मृति जिन उच्चरी, तिन पद सरसिज भाल मो।।
मनुस्मृति अत्रेय वैष्णवी हारीतक यामी।
याज्ञवल्क्य अंगिरा शनैश्चर साम्वर्तक नामी।।
कात्यायनि सांखल्य, गौतमी वासिष्ठी दाखी।
सुरगुरु आतातापि पराशर क्रतु मुनि भाखी।।
आशा पास उदारधी, परलोक लोक साधन सो।
दश आठ स्मृति जिन उच्चरी तिन पद सरसिज भाल मो।। १८।।

श्रीराम सचिव

पावैं भक्ति अनपायिनी जे, राम सचिव सुमिरन करैं।
धृष्टी विजय जयन्त, नीति पर शुचि सुविनीता।
राष्ट्र विवर्धन निपुण, सुराष्टर परम पुनीता।।
अशोक सदा आनन्द, धर्मपालक तत्ववेत्ता।
मन्त्रीवर्य सुमन्त्र, चतुर्जुग मन्त्री जेता।।
अनायास रघुपति प्रसन्न, भवसागर दुस्तर तरैं।
पावैं भक्ति अनपायिनी जे, राम सचिव सुमिरन करैं।।१६।।

श्रीराम सहचरवर्ग

शुभदृष्टि वृष्टि मो पर करौं, जे सहचर रघुवीर के।।
दिनकर सुत हरिराज, बालिवछ केसरि औरस।
दधिमुख द्विविद मयन्द, रिच्छपति सम को पौरस।।
उल्का सुभट सुषेन, दरीमुख कुमुद नील नल।
सरभ रु गवय गवांच्छ, पनस गन्धमादन अति बल।।
पद्म अठारह यूथपाल, रामकाज भट भीर के।
शुभदृष्टि वृष्टि मो पर करौ, जे सहचर रघुवीर के।। २०।।

नवों नन्दजी

ब्रज बड़े गोप पर्जन्य के, सुत नीके नव नन्द।।
धरानन्द ध्रुवनन्द, तृतीय उपनन्द सुनागर।
चतुर्थ तहाँ अभिनन्द, नन्द सुखसिन्धु उजागर।।
सुठि सुनन्द पशुपाल, निर्मल निश्चय अभिनन्दन।
कर्मा धर्मानन्द अनुज, वल्लभ जग वन्दन।।
आस पास वा बगर के, जहँ विहरत पशुप सुछन्द।
व्रज बड़े गोप पर्जन्य के, सुत नीके नव नन्द।। २१।।

समस्त ब्रजवासीगण

बाल वृद्ध नर नारि गोप, हौं अर्थी उन पाद रज।।
नन्द गोप उपनन्द, ध्रुव धरानन्द महरि जसोदा।
कीरतिदा वृषभानु, कुँअरि सहचरि मन मोदा।।
मधुमंगल सुबल, सुबाहु भोज अर्जुन श्रीदामा।
मण्डल ग्वाल अनेक, श्याम संगी बहुनामा।।
घोष निवासिन की कृपा, सुर नर बांछत आदि अज।
बाल वृद्ध नर नारि गोप हौं अर्थी उन पाद रज।। २२।।

श्रीकृष्णजी के षोडश सखा

व्रजराज सुवन संग सदन वन, अनुग सदा तत्पर रहैं।
रक्तक पत्रक और पत्रि, सबही मन भावैं।
मधुकण्ठौ मधुवर्त्त रसाल विशाल सुहावैं।।
प्रेमकन्द मकरन्द, सदा आनन्द चन्द्रहासा।
पयद बकुल रसदान, सारदा बुद्धि प्रकासा।।
सेवा समय विचारिकै, चारु चतुर चित की लहैं।
व्रजराज सुवन संग सदन बन अनुग सदा तत्पर रहैं।। २३।।

सप्तद्वीप के भक्त

सप्तद्वीप में दास जे, ते मेरे सिरताज।।
जम्बू और पलच्छ, सालमलि बहुत राजरिषि।
कुश पवित्र पुनि क्रौंच, कौन महिमा जानै लिषि।।
साक विपुल विस्तार, प्रसिध नामी अति पुहकर।
पर्वत लोकालोक, ओक टापू कंचनधर।।
हरिभृत्य बसत जे–जे जहाँ, तिनसौं नित प्रति काज।
सप्तद्वीप में दास जे ते मेरे सिरताज।। २४।।

जम्बूद्वीप के भक्त

मध्यदीप नवखण्ड में, भक्त जिते मम भूप।।
इलावर्त्त अधीस संकर्षन, अनुग सदाशिव।
रमनक मछ मनु दास, हिरण्य कूरम अर्जम इव।।
कुरु वराह भूभृत्य, वर्ष हरि सिंह प्रह्लादा।
किंपुरुष राम कपि, भरत नरायन बीना नादा।।
भद्राश्वग्रीवहय भद्रस्रव केतु काम कमला अनूप।
मध्यदीप नवखण्ड में, भक्त जिते मम भूप।। २५।।

श्वेतद्वीप के भक्त

श्वेतदीप में दास जे, श्रवण सुनौ तिनकी कथा।।
श्रीनारायण वदन निरन्तर ताही देखैं।
पलक परै जो बीच कोटि जमजातन लेखैं।।
तिनके दरशन काज गये तहँ वीणाधारी।
श्याम दई कर सैन उलटि अब नहिं अधिकारी।।
नारायण आख्यान दृढ़, तहँ प्रसंग नाहिन तथा।
श्वेतदीप में दास जे श्रवण सुनौ तिनकी कथा।। २६।।

श्वेतदीपवासी सदा रूप के उपासी गये, नारद विलासी उपदेस आसा लागी है।
दई प्रभु सैन जिनि आवो इहि ऐन दृग, देखैं सदा चैन मति गति अनुरागी है।।
फिरे दुख पाइ जाइ कही श्रीवैकुण्ठनाथ, साथ लिये चले लखो भक्ति अँग पागी है।
देख्यो एक सर खग रह्यो ध्यान धरि ऋषि, पूछैं कहो हरि कह्यो बड़ो बड़भागी है।। १०३।।

बरष हजार बीते भये नहीं चितचीते, प्यासोई रहत ऐपै पानी नहीं पीजिये।
पावै जो प्रसाद तब जीभ सौं स्वाद लेत, लेत नहीं और याकी मति रस भीजिये।।
लीजै बात मानि जलपान करि डारि दियो, लियो चोंच भरि दृग भरि बुधि धीजिये।
अचरज देखि चख लगै न निमेष किहूँ, चहुँदिसि फिर्‌यो अब सेवा याकी कीजिये।। १०४।।

चलो आगे देखौ कोऊ रहै न परेखौ भाव, भक्ति करि लेखौ गये द्वीप हरि गाइये।
आयो एकजन धाय आरती समय विहाय, खैचि लिये प्रान फिरि बधू याकी आइये।।
वही इन कही पति देख्यो नहीं मही पर्यो, हर्यो याको जीव तन गिर्यो मन भाइये।
ऐसै पुत्र आदि आये साँचे हित में दिखाये, फेरिकै जिवाये ऋषि गाये चित लाइये।। १०५।।

अष्टकुल नाग भक्त

उरग अष्टकुल द्वारपाल, सावधान हरिधाम थिति।।
इलापत्र मुख अनन्त, अनन्त कीरति बिसतारत।
पद्म शंकु पन प्रकट, ध्यान उर ते नहिं टारत।।
अश्वकमल वासुकी, अजित आज्ञा अनुवरती।
करकोटक तक्षक सुभट सेवा सिर धरती।।
आगमोक्त शिवसंहिता "अगर" एकरस भजन रति।
उरग अष्टकुल द्वारपाल सावधान हरिधाम थिति।। २७।।
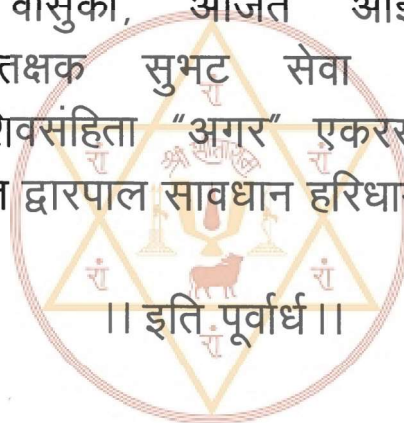
।। इति पूर्वार्ध।।

अथ श्रीभक्तमाल उत्तरार्द्ध

चतुःसम्प्रदायाचार्य

चौबीस प्रथम हरि वपु धरे त्यौं चतुर्व्यूह कलियुग प्रगट।।
• श्रीरामानंद उदार, सुधानिधि अवनि कल्पतरु।
विष्णुस्वामि बोहित्थ, सिन्धु संसार पार करु।।
मध्वाचारज मेघ, भक्ति सर ऊसर भरिया।
निम्बादित्य आदित्य, कुहर अज्ञान जु हरिया।।
जनम करम भागवत, धरम सम्प्रदाय थापीं अघट।
चौबीस प्रथम हरि वपु धरे त्यौं चतुर्व्यूह कलियुग प्रगट।।२८।।

रमा पद्धति रामानंद विष्णुस्वामि त्रिपुरारी।
निम्बादित्य सनकादिका मधुकर गुरु मुखचारि।।२९।।

श्रीनिम्बार्काचार्यजी
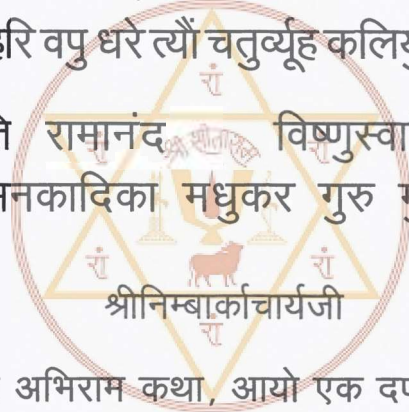
निम्बादित्य नाम जाते भयो अभिराम कथा, आयो एक दण्डी ग्राम न्योतो करि आये हैं।
पाक को अबार भई सन्ध्या मानि लई जती, 'रतीहूँ न पाऊँ' वेद वचन सुनाये हैं।।
आँगन में नींब तापै आदित दिखायौ ताहि, भोजन करायो पाछे निसि चिह्न पाये हैं।
प्रगट प्रभाव देखि जान्यो भक्तिभाव जग, दाँव पाइ नाव पर्‌यो हर्‌यो मन गाये हैं।।१०६।।

श्रीसम्प्रदाय

सम्प्रदाय शिरोमणि सिन्धुजा, रच्यौ भक्ति वित्तान।।
विष्वक्सेन मुनिवर्य, सु पुनि सठकोप पुनीता।
वोपदेव भागवत, लुप्त उधर्‌यो नवनीता।।

• पाठान्तर – श्रीरामानुज उदार सुधानिधि अवनि कल्पतरु।

मंगल मुनि श्रीनाथ, पुण्डरीकाक्ष परम जस।
राममिश्र रसरासि, प्रगट परताप परांकुश।।
यामुन मुनि रामानुज, तिमिर हरन उदय भान।
सम्प्रदायं शिरोमणि सिन्धुजा, रच्यौ भक्ति वित्तान।। ३०।।

स्वामी श्रीरामानुजाचार्यजी

सहस्त्र आस्य उपदेश करि जगत उधारन जतन कियो।।
गोपुर ह्वै आरूढ़, उच्चस्वर मन्त्र उचार्‌यो।
सूते नर परे जागि, बहत्तरि श्रवणनि धार्‌यो।।
तितनेई गुरुदेव पधति, भईं न्यारी न्यारी।
कुरुतारक शिष्य प्रथम, भक्ति वपु मंगलकारी।।
कृपणपाल करुणा समुद्र, रामानुज सम नहिं बियो।
सहस्त्र आस्य उपदेश करि जगत् उधारन जतन कियो।।३१।।

आस्य सो वदन नाम सहस हजार मुख, शेष अवतार जानो वही सुधि आई है।
गुरु उपदेसि मन्त्र कह्यो 'नीके राख्यौ' अन्त्र, जपतहिं श्याम जू ने मूरति दिखाई है।।
करुनानिधान कही 'सब भगवान पावें' चढ़ि दरवाजे सो पुकार्‌यो धुनि छाई है।
सुनि सीखि लियो यों बहत्तरहि सिद्ध भये, नयो भक्ति चोज यह रीति लैकै गाई है।। १०७।।

गये नीलाचल जगन्नाथ जू के देखिवे कौं, देख्यो अनाचार सब पण्डा दूरि किये है।
संग लै हजार शिष्य रंग भरि सेवा करैं, धरैं हिये भाव गूढ़ मत दरसाये हैं।।
बोले प्रभु 'वेई आवैं' करे अंगीकार मैं तो, प्यार ही को लेत कँभू औगुन न लिये है।
तऊ दृढ़ कीनी फिरि कही नहीं कान दीनी, लीनी वेदवानी विधि कैसे जात छिये हैं।। १०८।।

जोरावर भक्त सौं बसाइ नहीं कही किती, रती हूँ न लावैं मन चोज दरसायौ है।
गरुड़ को आज्ञा दई सोई मानि लई उन, शिष्य नि समेत निज देस छोड़ि आयौ है।।
जागिकै निहारे ठौर और ही मगन भये, दिये यों प्रगट करि गूढ़ भाव पायौ है।
वेई सब सेवा करैं, श्याम मन सदा हरैं, धरें साँचो प्रेम हिये प्रभू जू दिखायौ है।। १०६।।

मास परायण पांचवा विश्राम

चार दिग्गज महन्त

चतुर महन्त दिग्गज चतुर, भक्तिभूमि दाबे रहैं।।
श्रुतिप्रज्ञा श्रुतिदेव, ऋषभ पुहकर इभ ऐसे।
श्रुतिधामा श्रुतिउदधि, पराजित वामन जैसे।।
श्रीरामानुज गुरु बन्धु, विदित जग मंगलकारी।
शिवसंहिता प्रणीत, ज्ञान सनकादिक सारी।।
इन्दिरा पद्धति उदारधी, सभा साखि सारंग कहैं।
चतुर महन्त दिग्गज चतुर भक्तिभूमि दाबे रहैं।। ३२।।

श्रीलालाचार्यजी

आचारज जामात की, कथा सुनत हरि होइ रति।।
कोउ मालाधारी मृतक, बह्यो सरिता में आयो।
दाह कृत्य ज्यों बन्धु, न्यौति सब कुटुम्ब बुलायो।।
नाक सकोचहिं विप्र, तबहिं हरिपुर जन आये।
जेंवत देखे सबनि, जात काहू नहिं पाये।।
लालाचारज लक्षधा, प्रचुर भई महिमा जगति।
आचारज जामात की, कथा सुनत हरि होइ रति।। ३३।।

आचारज को जामात बात ताकी सुनी नीकै, पायो उपदेस 'सन्त बन्धु करि मानियै'।
कीजै कोटिगुनी प्रीति ऐपै न बनति रीति तातें इति करौ याते घटती न आनिये।।
मालाधारी साधु तनु सरिता में बह्यो आयो, ल्यायो घर फेरिकै विमान सब जानिये।
गावत बजावत लै नीर तीर दाह कियो, हियो दुख पायो सुख पायो समाधानिये।। ११०।।

कियो सो महोच्छो ज्ञाति विप्रन को न्योतो दियो, लियो आये नहिं कियो शंका दुखदाइये।
भये इकठौरे माया कीने सब बौरे कछु, कहैं बात औरे मरी देह बही आइये।।
याते नहीं खात वाकी जानत न जाति-पाँति, बड़ौ उतपात घर ल्याइ जाइ दाहिये।
मग अवलोकि उत पर्‌यो सुनि शोक हिये, जिये आइ पूछैं गुरु कैसे कै निवाहिये।। १११।।

चले श्री आचारज पै बारिज बदन देखि, करि साष्टांग बात कहि सो जनाइयै।
जाओ निहशंक, वे प्रसाद को न जानैं रंक, जानैं जे प्रभाव आवैं वेगि सुखदाइयै।।

देखे नभ–भूमि–द्वार ऐहैं निरधारजन, वैकुण्ठ–निवासी पाँति ढिग ह्वै कै आइयै।
इन्हें अब जान देवो जनि कछू कहो अहो ! गहो करौ हाँसी जब घर जाय खाइयै।। ११२।।

आये देखि पारषद गयो गिरी भूमि सद, हद करी कृपा यह जानि निज जन को।
पायौ लै प्रसाद स्वाद कहि अह्लाद भयो, नयो लयो मोद जान्यो साँचो सन्तपन को।।
विदा ह्वै पधारे नभ–मग में सिधारे विप्र, देखत विचारे द्वार व्यथा भई मन को।
गयौ अभिमान आनि मन्दिर मगन भये, नये दृग लाज बीनि–बीनि लेत कन को।। ११३।।

पांइ लपटाय अँग धूरि में लुटाय कहैं, करौ मनभायो और दीन बहु भाख्यौ है।
कही भक्तराज तुम कृपा मैं समाज पायो, गायो जो पुरानन में रूप नैन चाख्यौ है।।
छाड़ो उपहास अब करो निज दास हमें, पूजै हिये आस मन अति अभिलाख्यौ है।
किये परशंस मानो हंस ये परम कोऊ, ऐसे जस लाख भाँति घर–घर राख्यौ है।। ११४।।

श्रीपादपद्माचार्य जी (गुरु और शिष्य)

श्रीमारग उपदेश कृत, श्रवण सुनौ आख्यान शुचि।।
गुरु गमन कियो परदेश, शिष्य सुरधुनी दृढ़ाई।
इक मंजन इक पान, हृदय वन्दना कराई।।
गुरु गंगा में प्रविशि, शिष्य को वेगि बुलायौ।
विष्णुपदी भय मानि, कमल पत्रन पर धायौ।।
पादपद्म ता दिन प्रगट, सब प्रसन्न मन परम रुचि।
श्रीमारग उपदेश कृत, श्रवण सुनौ आख्यान शुचि।। ३४।।

देवधुनी तीर सो कुटीर बहु साधु रहैं, रहै गुरुभक्त एक न्यारो नहिं ह्वै सकै।
चले प्रभु गाँव 'जिनि तजो बलि जांव' करौ कही दास सेवा गंगा में ही कैसें छ्वै सकै।।
क्रिया सब कूप करै विष्णुपदी ध्यान धरै, रोष भरे सन्तश्रेणी भाव नहीं भ्वै सकै।
आये ईश जानि दुखमानि सो बखान कियो, आनि मन जनि बात अंग कैसे ध्वै सके।। ११५।।

चले लैके न्हान संग गंग में प्रवेस कियो, रंग भरि बोले सो अँगोछा वेगि ल्याइयै।
करत विचार सोच सागर न पारावर, गंगा जू प्रकट कह्यो कजन पै आइये।।
चलेई अधर पग धरै सो मधुर जाइ, प्रभु हाथ दियो लियो तीर भीर छाइये।
निकसत धाय चाय पग लपटाय गये, बड़ौ परताप यह निसिदिन गाइये।। ११६।।

श्रीसम्प्रदाय

•श्रीरामानंद पद्धति प्रताप, अवनि अमृत ह्वै अनुसर्‍यौ।।
देवाचारज द्वितीय, महामहिमा हरियानन्द।
तस्य राघवानन्द भये, भक्तन को मानद।।
पत्रावलम्ब पृथिवी करी, व काशी स्थाई।
चारि वरन आश्रम, सबही को भक्ति दृढ़ाई।।
तिनके रामानन्द प्रगट, विश्व मंगल जिन्ह वपु धर्‍यौ।
श्रीरामानंद पद्धति प्रताप, अवनि अमृत ह्वै अनुसर्‍यौ।। ३५।।

स्वामी श्रीरामानन्दायार्यजी

श्रीरामानन्द रघुनाथ ज्यौं, दुतिय सेतु जग तरन कियो।।
अनन्तानन्द, कबीर, सुखा, सुरसुरा, पद्मावति नरहरि।
पीपा, भावानन्द, रैदास, धना, सेन सुरसुर की घरहरि।।
औरौ शिष्य प्रशिष्य, एक ते एक उजागर।
जग मंगल आधार, भक्ति दशधा के आगर।।
बहुत काल वपु धारिकै, प्रणत जनन कौं पार दियो।
श्रीरामानन्द रघुनाथ ज्यौं दुतिय सेतु जग तरन कियो।। ३६।।

श्रीअनन्तानन्दजी

श्रीअनन्तानन्द पद परसिकै, लोकपाल से ते भये।।
योगानन्द, गयेश, करमचन्द, अल्ह, पैहारी।
सारी रामदास श्रीरंग, अवधि गुण महिमा भारी।।
तिनके नरहरि उदित, मुदित मेहा मंगलतन।
रघुवर यदुवर गाइ, विमल कीरति संच्यो धन।।
हरिभक्ति सिन्धु बेला रचे, पानि पद्मजा सिर दये।
श्रीअनन्तानन्द पद परसिकै, लोकपाल से ते भये।। ३७।।

• पाठान्तर –श्रीरामानुज पद्धति प्रताप अवनि अमृत ह्वै अनुसर्‍यौ।

श्रीरंगजी

द्यौसा एक गाँव, तहाँ श्रीरंग सुनाम हुतो, बनिक सराबगी की कथा लै बखानिये।
रहतो गुलाम गयो धर्मराज धाम उहाँ, भयो बड़ो दूत कही सुनु अरे बानिये।।
आये बनिजारे लैन देख तूँ दिखावैं चैन, बैल शृंगमध्य पैठि मारे पहचानिये।
बिनु हरिभक्ति सब जगत की यही रीति, भयो हरिभक्त श्रीअनन्तपद ध्यानिये।। ११७।।

सुत को दिखाई देत भूत नित सूख्यो जात, पूछें कही बात जाइ वाही ठौर सोयो है।
आयो निसि मारिवे को धायो यह रोष भर्‌यो, देवो गति मोकौं उन बोलिकै सुनायो है।।
जाति को सोनार पर नारि लगि प्रेत भयौं, लयौं तेरी सरन मैं ढूँढ़ि जग पायो है।
दियो चरनामृत लै कियो दिव्यरूप वाको, अति ही अनूप सुनो भक्तिभाव गायो है।। ११८।।

पयहारी श्रीकृष्णदासजी

निर्वेद अवधि कलि कृष्णदास, अन्न परिहरि पय पान कियो।।
जाके सिर कर धर्‌यो, तासु कर तर नहिं आँड्यो।
अर्प्यो पद निर्वान, शोक निर्भय करि छाँड्यो।।
तेजपुंज बल भजन, महामुनि ऊरधरेता।
सेवत चरण सरोज, राय राना भुविजेता।।
दहिमा वंश दिनकर उदय, सन्त कमल हिय सुख दियो।
निर्वेद अवधि कलि कृष्णदास, अन्न परिहरि पय पान कियो।।३८॥

जाके सिर कर धर्‌यो ता तर न आँड्यो हाथ, दीनो बड़ो वर राजा कुल्हू को जू साखिये।
परवत कन्दरा में दरसन दीयो आनि, दियो भावसाधु हरिसेवा अभिलाखिये।।
गिरी जो जलेबी थार माँझ ते उठाई बाल, भयो हियो शाल बिन अरपित चाखिये।
लै करि खड्ग ताहि मारन उपाइ कियो, जियो सन्त ओट फिरि मोल करि राखिये।। ११६।।

नृपसुत भक्त बड़ो अबलौं विराजमान, साधु सनमान में न दूसरो बखानिये।
सन्त बधू गर्भ देखि उभै पनवारे दिये, कही अर्भ इष्ट मेरो ऐसी उर आनिये।।
कोऊ भेषधारी सो व्योपारी पगदासिन को, कही कृपा करो कहा जानै और प्रानिये।
ऐपै तजि देवो क्रिया देखि जग बुरो होत, जोति बहु दई दाम राम मति सानिये।। १२०।।

पयहारी के शिष्यगण

पयहारी परसाद तें, शिष्य सबै भये पारकर।।
कील्ह अगर केवल, चरण व्रतहठी नारायण।
सूरज पुरुषां पृथु, तिपुर हरिभक्ति परायन।।
पद्मनाभ गोपाल, टेक टीला गदाधारी।
देवा हेम कल्यान, गंगा गंगासम नारी।।
विष्णुदास कन्हर रंगा, चाँदन सबही गोविन्द पर।
पयहारी परसाद तें शिष्य सबै भये पारकर।।३६।।

श्रीकील्हदेवजी

गांगेय मृत्यु गंज्यो नहीं, त्यौं कील्ह करन नहिं कालवश।।
राम चरण चिन्तवनि, रहति निशिदिन लौं लागी।
सर्वभूत सिर नामित, सूर भजनानन्द भागी।।
सांख्ययोग मति सुदृढ़, कियो अनुभव हस्तामल।
ब्रह्मरन्ध्र करि गौन भये, हरि तन करनी बल।।
सुमेरदेव सुत जग विदित, भुवि विस्तार्यो विमल यश।
गांगेय मृत्यु गंज्यो नहीं त्यौं, कील्ह करन नहिं कालवश।।४०।।

श्रीसुमेर देव पिता सूबे गुजरात हुतें, भयो तनु पात सो विमान चढ़ि चले हैं।
बैठे मधुपुरी कील्ह मानसिंह राजा ढिंग, देखे नभ जात उठि कही भले—भले हैं।।
पूछे नृप 'बोले कासौं?' कैसे के प्रकासौं, कहौ, कह्यो हठ परे सुनि अचरज रले है।
मानुस पठाये सुधि ल्याये साँच आँच लागी, करी साष्टांग बात मानी भाग फले हैं।।१२१।।

ऐसे प्रभु लीन नहीं काल के अधीन बात, सुनिये नवीन चाहैं रामसेवा कीजिये।
धरी ही पिटारी फूल—माला हाथ डार्यो तहाँ, ब्याल कर काट्यो कह्यो फेरि काटि लीजिये।।
ऐसे ही कटायो बार तीनि हुलसायो हियो, कियो न प्रभाव नेकु सदा रस पीजिये।
करिकै समाज साधु मध्य यों विराज प्रान, तजे, दसैं द्वार योगी थके सुनि जीजिये।।१२२।।

श्रीअग्रदासजी

(श्री) अग्रदास हरिभजन बिन काल वृथा नहिं बित्तयो।।
सदाचार ज्यौं सन्त, प्राप्त जैसें करि आये।
सेवा सुमिरन सावधान, चरण राघव चित लाये।।
प्रसिध बाग सौं प्रीति, सुहथ कृत करत निरन्तर।
रसना निर्मल नाम, मनहुँ वर्षत धाराधर।।
कृष्णदास(कृपाकरि)भक्तिदत्त, मन वच क्रम करि अटल दयो।
(श्री) अग्रदास हरिभजन बिन काल वृथा नहिं बित्तयो।।४१।।

दरसन काज महाराज मानसिंह आयो, छायो बाग माँझ बैठे द्वार द्वारपाल हैं।
झारिकै पतौवा गये बाहिर लै डारिवे को, देखी भीर भार रहे बैठि ये रसाल हैं।।
आये देखि नाभा जू ने उठि साष्टांग करी, भरी जल आँखे चले अँसुवनि जाल हैं।
राजा मग चाहि हारि आनिकै निहारै नैंन, जांनी आप जानी भये दासनि दयाल है।।१२३।।

श्रीशंकराचार्यजी

कलियुग धर्मपालक प्रगट, आचारज शंकर सुभट।।
उत्शृंखल अज्ञान, जितें अनईश्वरवादी।
बौद्ध कुतर्की जैन, और पाखण्डहिं आदी।।
विमुखनि को दियों, दण्ड ऐंचि सन्मारग आने।
सदाचार की सींव, विश्व कीरतिहिं बखाने।।
ईश्वरांश अवतार महि, मरजादा माँडी अघट।
कलियुग धर्मपालक प्रगट, आचारज शंकर सुभट।।४२।।

विमुख समूह लैकें किये सनमुख श्याम, अति अभिराम लीला जग बिसतारी है।
सेवरा प्रबल बास केवरा ज्यौं फैलि रहे, गहे नहीं जाहिं वादी शुचि बात धारी है।।
तजिकै सरीर काहू नृप में प्रवेस कियो, दियो करि ग्रन्थ मोह–मुद्गर सुभारी है।
शिष्यानि सौं कह्यो कँभू देह में आवेस जानो, तबही बखानो आय सुनि कीजै न्यारी है।।१२४।।

जानिकै आवेस तन शिष्य नैं प्रवेस कियो, रावले में देखि सो श्लोक लै उचार्यो है।
सुनतहिं तज्यो तन निज तन आय लियो, कियो यों प्रमान दासपन पूरो पार्यो है।।

सेवरा हराये वादी आये नृप पास ऊँचे, छात पर बैठि एक माया फन्द डार्‌यो है।
जल चढ़ि आयो नाव भाव लै दिखायो कहैं ,'चढ़ों नहिं बूड़ो' आप कौतुक सौं धार्‌यो है।।१२५।।

आचारज कही यों चढ़ाओ इन सेवरानि, राजा ने चढ़ाये गिरे टूँक उड़ि गये हैं।
तबतौ प्रसन्न नृप पाँव पर्‌यो भाव भर्‌यो, कह्यो जोई कर्‌यो धर्म भागवत लये हैं।।
भक्ति ही प्रचार पाछे मायावाद डारि दीनौं, कीनौं प्रभु कह्यौ किते विमुखहू भये हैं।
आशय सो गँभीर सन्त धीर वह रीति जाने, प्रीति ही में साने हरिरूप गुन नये हैं।।१२६।।

श्रीनामदेवजी

नामदेव प्रतिज्ञा निर्वही ज्यौं त्रेता नरहरिदास की।।
बालदशा बीठल्य, पानि जाके पै पीयौ।
मृतक गऊ जिवाय, परचौ असुरन कौं दीयौ।।
सेज सलिल तें काढ़ि, पहिल जैसी ही होती।
देवल उलट्यो देखि, संकुचि रहे सबही सोती।।
पण्ढरनाथ कृत अनुग ज्यौं, छानि सुकर छाई घास की।
नामदेव प्रतिज्ञा निर्वही ज्यौं, त्रेता नरहरिदास की।। ४३।।

छीपा वामदेव हरिदेव जू का भक्त बड़ो, ताकी एक बेटी पतिहीन भई जानिये।
द्वादश बरष माँझ भयो तब कही पिता, सेवा सावधान मन नीके करि आनिये।।
तेरे जे मनोरथ हैं पूरन करन येई, जोपै दत्तचित्त ह्वै कैं मेरी बात मानिये।
करत टहल प्रभु वेगि ही प्रसन्न भये कीनी, काम-वासना सो पोषि उन मानिये।। १२७।।

विधवा को गर्भ ताकी बात चली ठौर-ठौर, दुष्ट सिरमौरनि की भई मन भाइयै।
चलत-चलत वामदेव जू के कान परी, करी निरधार प्रभू आप अपनाइयै।।
भयो जू प्रगट बाल नाम नामदेव धर्‌यौ, कर्‌यौ मनभायो सब सम्पत्ति लुटाइयै।
दिन-दिन बढ़्यो कछू औरे रंग चढ़्यो भक्तिभाव, अंग मढ़्यो कढ़्यो रूप सुखदाइयै।। १२८।।

खेलत खिलौना रीति-प्रीति सब सेवा ही की, पट पहिरावैं पुनि भोग को लगावहीं।
घण्टा लै बजावैं नीके ध्यान मन लावें त्यौं-त्यौं, अति सुख पावें नैन नीर भरि आवहीं।।
बार-बार कहैं नामदेव वामदेव जू सौं, 'देवो मोहि सेवा माँझ अति ही सुहावहीं'।
'जाँऊ एक गाँव फिरि आऊँ दिन तीनि मध्य, दूध को पिवावौ मत पीवौ मोहि भावहीं'।। १२९।।

कौन वह बेर ? जेहि बेर दिन फेर होय, फेर–फेर कहैं वह बेर नहीं आइये?।
आई वह बेर लै कराही माँझ हेरि दूध, डार्‍यो युग सेर मन नीके कै बनाइये।।
चोपनि के ढेर लागि निपट औसेर दृग, आयो नीर घेरि जिनि गिरें घूँटि जाइये।
माता कहै टेरि 'करी बड़ी तैं अबेर अब, करो मति झेर' अजू चित दै औंटाइये।। १३०।।

चल्यो प्रभु पास लै कटोरा छबिरास तामें, दूध सो सुबास मध्य मिसिरी मिलाइयै।
हिये में हुलास निज अज्ञता को त्रास, ऐपै करैं जोपै दास मोहि महा सुखदाइयै।।
देख्यौ मृदुहास कोटि चाँदनी की भास कियौ, भाव को प्रकास मति अति सरसाइयै।
प्याइवे की आस करि ओट कछु भर्‍यो स्वास, देखिकै निरास कह्यो पीवौ जू अघाइयै।। १३१।।

ऐसैं दिन बीते दोय राखी हिये बात गोय, रह्यो निसि सोय ऐपैं नींद नहीं आवही।
भयो जू सवारो फिरि वैसे ही सुधार लियौ, हियौ कियौ गाढ़ो जाय धर्‍यौ पियो भावही।।
बार–बार पीवो कहूँ अब तुम पीवो नाहिं, आवै भोर नाना गरे छूरी दै दिखावहीं।
गहि लीयो 'कर जिनि कर ऐसी पीवौं मैं तो', पीवे कौं लगेई नेकु राखौ सदा पावही।। १३२।।

आये वामदेव पाछैं पूछैं नामदेव जू सौं, दूध को प्रसंग अति रंग भरि भाखियै।
मोसौं न पिछाँनि दिन दोय हानि भई तब, मानि डर प्रान तज्यो चाहौं अभिलाषियै।।
पीयो सुख दीयो जब नेकु राखि लीयो मैं तो, जीयो सुनि बातें कही प्यायो कौन साखियै।
धर्‍यौ पै न पीयैं, अर्‍यो, प्यायौ सुख पायो नाना, यामें लै दिखायौ भक्तवश रस चाखियै।। १३३।।

नृप सो मलेच्छ बोलि कही 'मिले साहिब को, दीजिये मिलाय करामात दिखराइयै'।
होय करामात तोपै काहे को कसब करैं?, भरैं दिन ऐसैं बाँटि सन्तन सौं खाइयै।।
ताही के प्रताप आप इहाँ लौं बुलायो हमें, दीजिये जिवाय गाय घर चलि जाइयै।
दई लै जिवाय गाय सहज सुभाय ही मैं, अति सुख पाय पाँय पर्‍यो मन भाइयै।। १३४।।

'लेवो देस गाँव जाते मेरो कछु नांव होय', 'चाहिये न कछु' दई सेज मनिमई है।
धरि लई सीस 'देऊँ संग दस बीस नर,' नाहीं करि आये जल माँझ डारि दई है।।
भूप सुनि चौंकि पर्‍यो ल्यावो फेरि आये, कहौ कही नेकु आनिकै दिखावो कीजै नई है।
जल तैं निकासि बहु भाँति गहि डारी तट, लीजिये पिछानि देखि सुधि–बुधि गई है।। १३५।।

आनि पर्‍यो पाँय प्रभु पाश तें बचाय लीजे, 'कीजै एक बात कभूँ साधु न दुखाइये'।
लई यही मानि 'फेरि कीजियै न सुधि मेरी', लीजियै गुननि गाय मन्दिर लौं जाइये।।
देखि द्वार भीर पगदासी कटि बाँधी धरि, कर सौं उछीर करि चाहै पद गाइये।
देखि लीनी वेई काहू दीनी पाँच सात चोट, कीनी धकाधकी रिस मन में न आइये।। १३६।।

बैठे पिछवारे जाइ कीनी जू उचित यह, लीनी जो लगाइ चोट मेरे मन भाइयै।
कान दैकैं सुनो अब चाहत न और कछु, ठौर मोकौं यही नित नेम पद गाइयै।।
सुनत ही आनि करि करुना विकल भये, फेर्‌यो द्वार इतै गहि मन्दिर फिराइयै।
जेतिक वे सोती मोती आब–सी उतरि गई, भई हिये प्रीति गहे पाँव सुखदाइयै।। १३७।।

औचक ही घर माँझ साँझ ही अगिनि लागी, बड़ो अनुरागी रहि गई सोऊ डारियै।
कहै अहो नाथ! सब कीजिये जु अंगीकार, हँसे सुकुमार हरि मोही कौं निहारियै।।
तुम्हरो भवन और सकै कौन आइ इहाँ?, भये यों प्रसन्न छानि छाई आप सारियै।
पूछैं आनि लोग कौने छाई हो? छबाइ दीजे, लीजै जोई भावै 'तन–मन–प्रान वारियै'।। १३८।।

सुनौ और परचै जो आये न कवित्त माँझ, बाँझ भई माता क्यौं न? जौ न मति पागी है।
हुतो एक शाह तुलादान को उछाह भयो, दयो पुर सबै रह्यो नामदेव रागी है।।
'ल्यावौ जू बुलाइ' एक दोई तो फिराइ दिये, तीसरे सौं आये 'कहा कहो? बड़भागी है'।
'कीजिये जु कछु अंगीकार मेरो भलो होय', 'भयो भलो तेरो दीजै जोपै आसा लागी है'।। १३६।।

जाके तुलसी हैं ऐसे तुलसी के पत्र माँझ, लिख्यो आधो राम–नाम यासौं तोल दीजियै।
कहा परिहास करो? ढरो ह्वै दयाल देखि, होत कैसो ख्याल याकौं पूरो करो रीझियै।।
ल्यायो एक काँटो लै चढ़ायो पात सोना संग, 'भयो' बड़ो रंग सम होत नाहिं छीजियै।
लई सो तराजू जासौं तुलै मन पाँच सात, जाति–पाँतिहू को धन धर्‌यो पै न धीजिये।। १४०।।

पर्‌यो सोच भारी दुख पावें नर–नारी, नामदेव जू विचारी एक और काम कीजियै।
जिते व्रत दान और स्नान किये तीरथ में, करियै संकल्प यापै जल डारि दीजियै।।
करेऊ उपाय पात पला भूमि गाढ़े पाँय, रहे वे खिसाय कह्यो इतनोई लीजियै।
लैकैं कहाँ धरैं? सरवरहू न करैं भक्तिभाव सौं लै भरैं हिये मति अति भीजिये।। १४१।।

कियो रूप ब्राह्मन कौं दूबरो निपट अंग, भयो हिये रंग व्रत परिचै को लीजियै।
भई एकादशी अन्न माँगत बहुत भूखो, आजु तो न दैहौं भोर चाहौ जितो लीजिये।।
कर्‌यो हठ भारी मिलि दोऊ ताको शोर पर्‌यो, समझावै नामदेव याको कहा खीझिये।
बीते जाम चारि मरि रहे यों पसारि पाँव, भाव पै न जानैं दई हत्या नहीं छीजिये।। १४२।

रचिकै चिता कौं विप्र गोद लैकै बैठे जाइ, दियो मुसुकाय मैं परीच्छा लीनी तेरी है।
देखि सो सचाई सुखदाई मनभाई मेरे, भये अन्तर्धान परे पाँय प्रीति हेरी है।।
जागरन माँझ हरि भक्तन को प्यास लगी, गये लैन जल प्रेत आनि कीनी फेरी है।
फेंट तें निकासी ताल गायो पद ततकाल, बड़ेई कृपाल रूप धर्‌यो छबि ढेरी है।। १४३।।

मास परायण छठवाँ विश्राम

श्रीजयदेवजी

जयदेव कवि नृप चक्कवै खंडमंडलेश्वर आन कवि।।
प्रचुर भयो तिहुँ लोक, गीतगोविन्द उजागर।
कोक काव्य नवरस, सरस सिंगार को आगर।।
अष्टपदी अभ्यास करै, तेहिं बुद्धि बढ़ावै।
(श्री) राधारमन प्रसन्न, सुनन निश्चय तहँ आवै।।
सन्त सरोरुहखण्ड कौं, पद्मापति सुखजनक रवि।
जयदेव कवि नृप चक्कवै खंडमंडलेश्वर आन कवि।।४४।।

नवाह परायण द्वितिय विश्राम

किन्दुबिल्व ग्राम तामें भये कविराज राज, भर्‌यो रसराज हिये मन–मन चाखिये।
दिन–दिन प्रति रूख–रूखतर जाइ रहैं, गहैं एक गूदरी कमंडलु कौं राखिये।।
कही देवै विप्र सुता जगन्नाथदेव जू कौं, भयो जब समैं चल्यो दैन प्रभु भाखिये।
'रसिक जैदेव नाम मेरोई सरूप ताहि देवौ, ततकाल अहो! मेरी कहो साखिये'।। १४४।।

चल्यो द्विज तहाँ–जहाँ बैठे कविराजराज, अहो महाराज! मेरी सुता यह लीजिये।
कीजिये विचार अधिकार विसतार जाके, ताहि को निहारि सुकुमारि यह दीजिये।।
जगन्नाथदेव जू की आज्ञा प्रतिपाल करो, ढरो मति धरो हिये ना तो दोष भीजिये।
उनको हजार सोहैं हमको पहार एक, ताते फिरि जावो तुम्हैं कहा कहि खीजिये।। १४५।।

सुता सौं कहत 'तुम बैठि रहौ याही ठौर, आज्ञा सिरमौर मोपै नाहीं जात टारी है'।
चल्यौ अनखाइ समझाइ हारे बातनि सौं, 'मन! तू समझ कहा कीजै?' सोच भारी है।।
बोले द्विज बालकी सौं 'आप ही विचार करो, धरो हिये ध्यान मोपै जात न सँभारी है'।
बोली कर जोरि 'मेरो जोर न चलत कछू, चाहौ सोई होहु यह वारि फेरि डारी है'।। १४६।।

जानी जब भई तिया कियो प्रभु जोर मोपै, तोपै एक झोंपड़ी की छाया करि लीजिये।
भई तब छाया श्याम–सेवा पधराइ लई, 'नई एक पोथी मैं बनाऊँ' मन कीजिये।।
भयो जू प्रगट गीत सरस गोविन्द जू को, मान में प्रसंग 'सीस मंडन को दीजिये'।
यही एक पद मुख निकसत सोच पर्‌यो, धर्‌यो कैसे जात? लाल लिख्यो मति रीझिये।। १४७।।

नीलाचल धाम तामें पण्डित नृपति एक, करी यही नाम धरि पोथी सुखदाइयै।
द्विजन बुलाइ कही यही है, प्रसिद्ध करो, लिखि–लिखि पढ़ौ देस–देसनि चलाइयै।।

बोले मुसुकाइ विप्र क्षिप्र सो दिखाइ दई, नई यह कोऊ मति अति भरमाइयै।
धरी दोऊ मन्दिर में जगन्नाथदेव जू के, दीनी यह डारि वह हार लपटाइयै।। १४८।।

पर्‌यो सोच भारी नृप निपट खिसानो भयो, गयो उठि सागर में बूड़ौ वही बात है।
अति अपमान कियो, कियो मैं बखान सोई, गोई जात कैसे? आँच लागी गात–गात है।।
आज्ञा प्रभु दई 'मत बूड़ै तू समुद्र माँझ, दूसरो न ग्रन्थ ऐसो वृथा तनु पात है।
द्वादस सुश्लोक लिखि दीजे सर्ग द्वादस में, ताहि संग चलै जाकी ख्याति पात–पात है'।। १४६।।

सुता एक माली की जु बैंगन की वारी माँझ, तौरै वनमाली गावै कथा सर्ग पाँच की।
डौलैं जगन्नाथ पाछें–काछें अँग मिहीं झँगा, आछे कहि घूमें सुधि आवै बिरहाँच की।।
फट्‌यौ पट देखि नृप पूछी 'अहो! भयो कहा?' 'जानत न हम' 'अब कहो बात साँच की'।
प्रभु ही जनाई 'मनभाई मेरे वही गाथा', ल्याये वही बालकी कौं पालकी मैं नाँच की।। १५०।।

फेरी नृप डौंडी यह औंड़ी बात जानि महा, कहा राजा रंक पढ़ै नीकी ठौर जानिकैं।
अक्षर मधुर और मधुर स्वरनि ही सौं, गावैं जब लाल प्यारी ढिंगहि लैं मानिकैं।।
सुनी यह रीति एक मुगल ने धारि लई, पढ़ै–चढ़ै घोड़े आगे श्याम रूप ठानिकैं।
पोथी को प्रताप स्वर्ग गावत हैं देवबधू आप ही जु रीझि लिख्यो निज कर आनिकै।। १५१।।

पोथी की तो बात सब कही मैं सुहात हिये, सुनौ और बात जामें अति अधिकाइये।
गाँठि में मुहर मग चलत में ठग मिले 'कहो कहाँ जात?' 'जहाँ तुम चलि जाइये'।।
जानि लई बात खोलि द्रव्य पकराइ दियो, लियो चाहो जोई–जोई सोई मोकौं ल्याइये।
दुष्टनि समुझि कही कीनी इन विद्या अहो! आवै जो नगर इन्हें वेगि पकराइये।। १५२।।

एक कहै 'डारौ मार भलो है विचार यही', एक कहै 'मारौ मत धन हाथ आयो है'।
'जोपै ले पिछान कहूँ कीजिये निदान कहा', हाथ–पाँव काटि बड़े गाढ़ पधरायो है।।
आयो तहाँ राजा एक देखिकै विवेक भयो, छायो उजियारो औ प्रसन्न दरसायो है।
बाहर निकासि मानो चन्द्रमा प्रकास राशि, पूछ्यो इतिहास कह्यो 'ऐसो तनु पायो है'।। १५३।।

बड़ेई प्रभाववान सकै को बखान? अहो! मेरे कोऊ भूरि भाग दरसन कीजियै।
पालकी बिठाइ लिये किये सब ठूठ नीके, जी के भाये भये 'कछु आज्ञा मोहि दीजियै'।।
'करौ हरि साधु–सेवा नाना पकवान मेवा, आवैं जोई सन्त तिन्हैं देखि–देखि भीजियै'।
आये वेई ठग माला तिलक चिलक किये, किलकि के कही 'बड़े बन्धु लखि लीजियै'।। १५४।।

नृपति बुलाइ कही हिये हरि भाय भरि, 'ढरे तेरे भाग अब सेवा फल लीजिये'।
गयो लै महल माँझ टहल लगाये लोग, लागे होन भोग जिय शंका तन छीजिये।।

माँगे बार–बार विदा राजा नहीं जान देत, अति अकुलाये कही स्वामी 'धन दीजिये'।
देकैं बहु भाँति सो पठाये संग मानस हूँ, 'आवौ पहुँचाय तब तुम पर रीझिये'।। १५५।।

पूछैं नृप नर 'कोऊ तुम्हरी न सरवर, जिते आये साधु ऐसी सेवा नहीं भई है।
स्वामी जू सौं नातौ कहा? 'कहौ हम खाँइ हा–हा', 'राखियो दुराइ यह बात अति नई है'।।
हुते एकठौर नृप चाकरी में तहाँ इन कियोई बिगार मारि डारौ आज्ञा दई है।
राखे हम हितू जानिलै निदान हाथ–पाँव वाही के ऐसान अब हम भरि लई है'।। १५६।।

फाटि गई भूमि सब ठग वे समाइ गये, भये ये चकित दौरि स्वामी जू पै आये है।
कही जिती बात सुनि गात–गात काँपि उठे, हाथ–पाँव मीड़ैं भये ज्यौं के त्यौं सुहाये है।।
अचरज दोऊ नृप पास जा प्रकास किये, जिये एक सुनि आये वाही ठौर धाये हैं।
पूछैं बार–बार सीस पाँयनि पै धारि रहे, कहिये उघारि कैसे मेरे मनभाये हैं।। १५७।।

राजा अति अर गही कही सब बात खोलि, निपट अमोल यह सन्तन को वेश है।
कैसो अपकार करै तऊ उपकार करैं, ढरै रीति आपनी ही सरस सुदेश है।।
साधुता न तजै कँभू जैसे दुष्ट दुष्टता न, यही जानि लीजै मिले रसिक नरेश है।
जान्यो जब नाव ठाँव रहो इहाँ बलि जाँव, भयो मैं सनाथ प्रेमभक्ति भई देश है।। १५८।।

गये जा लिवाय ल्याय कविराजराज तिया, कियो लै मिलाप आप रानी ढिग आई है।
मर्‌यो एक भाई वाकै भई यों भौजाई सती, कोऊ अंग काटि कोऊ कूदि परी धाई है।।
सुनत ही नृपबधू निपट अचम्भौ भयो, इनकैं न भयो फिरि कही समुझाई हैं।
प्रीति की न रीति यह बड़ी विपरीति अहो! छुटै तन जबै प्रिया प्रान छूटि जाई है।। १५९।।

'ऐसी एक आप' कहि राजा सौं लै बात कही, 'लैकैं जाओ बाग स्वामी नेकु देखौं प्रीति को'।
'निपट विचारी बुरी देत मेरे गरे छुरी' तिया हठ मानि करी वैसे ही प्रतीति को।।
आनि कहे आप पाये कही यही भाँति आय, बैठी ढिग तिया देखि लोटि गई रीति को।
बोली भक्तवधू 'अजू वे तौ हैं बहुत नीके, तुम कहा औचक ही पावति हौं भीति को'।। १६०।।

भई लाज भारी पुनि फेरिकै सँवारी दिन बीति गये कोऊ जब–तब वही कीनी है।
जानि गई भक्तवधू चाहति परीच्छा लियो, कही 'अजू! पाये' सुनि तजी देह भीनी है।।
भयो मुख श्वेत रानी–राजा आये जानी यह, 'रचौं चिता जरौं मति भई मेरी हीनी है'।
भई सुधि आपकौं जु आये वेगि दौरि इहाँ, देखि मृत्युप्राय नृप कह्यो 'मेरी दीनी है'।। १६१।।

बोल्यो नृप 'अजू! मोहिं जरेई बनत अब, सब उपदेस लैकै धूरि में मिलायो है'।
कह्यो बहु भाँति ऐपै आवति न शान्ति किहूँ गाई अष्टपदी सुर दियो तन ज्यायो है।।

लाजनि को मार्‌यो राजा चाहे अपघात कियो, जियो नहीं जात 'भक्ति लेशहूँ न आयो है'।
करि समाधान निज ग्राम आये किन्दुबिल्व, जैसो कछु सुन्यो यह परचो लै गायो है।।१६२।।

देवधुनि सोत हो अठारै कोस आश्रम तैं, सदाई असनान करैं धरैं जोग्यताई कौं।
भयो तन वृद्ध तऊँ छोड़ैं नहीं नित्यनेम, प्रेम देखि भारी निसि कही सुखदाई कौं।।
'आवो जिनि ध्यान करौ, करौ मत हठ ऐसौ', मानी नहीं 'आऊँ मैं हीं' 'जानौ कैसे आई कौं'।
फूले देखौ कंज तब कीजियो प्रतिति मेरी, भई वही भाँति सेवैं अबलौं सुहाई कौं।।१६३।।

श्रीश्रीधराचार्यजी

श्रीधर श्रीभागौत में, परम धरम निरनै कियौ।।
तीन काण्ड एकत्व, सानि कोउ अज्ञ बखानत।
कर्मठ ज्ञानी ऐंचि, अर्थ कौ अनरथ बानत।।
परमहंस सहिता, विदित टीका बिसतार्‌यौ।
षट्‌शास्त्रनि अविरुद्ध, वेद संमतहिं विचार्‌यौ।।
परमानन्द प्रसाद तें, माधौ सुकर सुधारि दियौ।
श्रीधर श्रीभागौत में परम धरम निरनै कियौ।। ४५।।

पंडित समाज बड़े-बड़े भक्तराज जिते, भागवत टीका करि आपुस में रीझियै।
भयो जू विचार काशीपुरी अविनासी माँझ, सभा अनुसार जोई-सोई लिखि दीजियै।।
ताको सो प्रमान भगवान बिन्दुमाधौजी है, साधौ यही बात धरि मन्दिर में लीजियै।
धरे सब जाय प्रभु सुकर बनाय दियो, कियो सर्वोपरि लैकै, चल्यो मति धीजियै।।१६४।।

मास परायण सातवाँ विश्राम

श्रीविल्वमंगलजी

कृष्ण कृपा कोपर प्रगट विल्वमंगल मंगलस्वरूप।।
'करणामृत' सुकवित्त, उक्ति अनुछिष्ट उचारी।
रसिकजनन जीवन, ह्रदय जै हारावलि धारी।।
हरि पकरायो हाथ, बहुरि तहँ लियो छुड़ाई।
कहा भयो कर छुटे, बदौं जो हिय तें जाई।।

चिन्तामणि सँग पायकै, ब्रजवधू केलि बरनी अनूप।
कृष्ण कृपा कोपर प्रगट विल्वमंगल मंगलस्वरूप।। ४६।।

कृष्णवेना तीर एक द्विज मतिधीर रहै, ह्वै गयो अधीर संग चिन्तामनि पाइकै।
तजी लोकलाज हिये वाही को जु राज भयो, निसिदिन काज वहै रहै घर जाइकै।।
पिता को सराध नेकु रह्यो मन साधि, दिन शेष में आवेस चल्यो अति अकुलाइकै।
नदी चढ़ी रही भारी पैये न अवारी नाव, भाव भर्‌यो हियो जियो जात नधि जाइकै।। १६५।।

करत विचार वारि धार में न रहैं प्रान, तातें भली धारि मित्र सनमुख जाइयै।
परे कूदि नीर कछु सुधि न सरीर की है, वही एक पीर कब दरसन पाइयै।।
पैयत न पार तन हारि भयो बूड़िवे कौं, मृतक निहारि मानी नाव मन भाइयै।
लगेई किनारे जाय चले पग धाय चाय, आये पट लागे निसि आधी सो बिहाइये।। १६६।।

अजगर घूमि झूमि भूमि कौं परस कियो, लियोई सहारौ चढ्यो छात पर जायकै।
ऊपर किवार लगे पर्‌यो कूदि आँगन में, गिर्‌यो यों गिरत रागी जागी शोर पायकै।।
दीपक बराइ जोपै देखै विल्वमंगल है, 'बड़ोई अमंगल तूँ कियो कहा आयकै'।
जल अन्हवाय सूखे पट पहिराय 'हाय! कैसे करि आयो जलपार द्वार धायकै'।। १६७।।

'नौका पठवाई द्वार लाव लटकाई देखि, मेरे मनभाई मैं तो तबै लई जानिकै।
'चलो देखौं अहो! यह कहा धौं प्रलाप करै', देख्यौ विषधर महा खीजी अपमानिकै।।
'जैसो मन मेरे हाड़–चाम सौं लगायो तैसो श्याम सौं लगावो तोपै जानियें सयानिकै।
मैं तो भये भोर भजौं युगलकिशोर अब तेरी तुही जाने चाहौ करौ मन मानिकै'।। १६८।।

खुलि गई आँखै अभिलाखैं रूपमाधुरी कौ, चाखै रसरंग औ उमंग अंग न्यारियै।
बीन लै बजाई गाई विपिन निकुंज क्रीड़ा, भयो सुखपुंज जापै कोटि विषै वारियै।।
बीति गई राति प्रात चले आप आपकौ जू, हिये वही जाप दृग नीर भरि डारियै।
सोमगिरी नाम अभिराम गुरु कियो आनि, सकै को बखानि लाल भुवन निहारियै।। १६९।।

रहे सो बरस रससागर मगन भये, नये–नये चोज के श्लोक पढ़ि जीजिये।
चले वृन्दावन मन कहै कब देखौं जाइ, आइ मग माँझ एक ठौर मति भीजिये।।
पर्‌यो बड़ो शोर दृग कोरकैं न चाहै काहू, तहाँ सर तिया न्हाति देखि आखैं रीझिये।
लगे वाके पाछे काँछ काछै की न सुधि कछू, गई घर आछे रहे द्वार तन छीजिये।। १७०।।

आयो वाको पति द्वार देखे भागवत ठाढ़े, बड़ो भागवत पूछी बधू सौं जनाइये।
कही जू पधारो पाँव धारो गृह पावन कौं, पावन पखारौं जल ढारौं सीस भाइये।।

चले भौन माँझ आरति मिटायवे कौं, गायवे कौं जोई रीति सोई कें बताइये।
नारि सौं कह्यो है तू सिंगार करि सेवा कीजै, लीजै यों सुहाग जामें वेगि प्रभु पाइये।। १७१।।

चली यै सिंगार करि थार में प्रसाद लैकै, ऊँची चित्रसारी जहाँ बैठे अनुरागी हैं।
झनक–मनक जाइ जोरि कर ठाढ़ी रही, गही मति देखि–देखि न्यूनवृत्ति भागी है।।
कही युग सुई ल्यावो ल्याई दई लई हाथ, फोरि डारी आँखैं 'अहो! बड़ी ये अभागी हैं'।
गई पति पास स्वांस भरत न बोलि आवै, बोली दुख पाय आय पाँय परे रागी हैं।। १७२।।

'कियो अपराध हम साधु कौं दुखायौं' अहो! बड़े तुम साधु हम नाम साधु धर्‌यो है।
रहौ अजू सेवा करौं करी तुम सेवा ऐसी जैसी नहीं काहू माँझ मेरो मन भर्‌यो है।।
चले सुख पाय दृग भूत से छुटाइ दिये हिये ही की आँखिन सौं अबै काम पर्‌यो है।
बैठे वनमध्य जाइ भूखे जानि आप आइ भोजन कराइ चलौ छाया दिन ढर्‌यो है।। १७३।।

चलै लै गहाय कर छाया घन तरु तर, चाहत छुटायो हाथ छोड़ैं कैसे? नीको है।
ज्यौं–ज्यौं बल करैं त्यौं–त्यौं तजत न ऐऊ अरे, लियोइ छुटाइ गह्यो गाढ़ो रूप हीको है।।
ऐसे ही करत वृन्दावन घन आइ लियो, पियो चाहैं रस सब जग लाग्यो फीको है।
भई उतकण्ठा भारी आये श्रीविहारीलाल, मुरली बजाइकै सु कियो भायो जीको है।। १७४।।

खुलि गये नैन ज्यौं कमल रवि उदै भये, देखि रूपरासि बाढ़ी कोटिगुनी प्यास है।
मुरली मधुर सुर राख्यो मद भरि मानो, ढरि आयो कानन में आनन में भास है।।
मानिकै प्रताप चिन्तामणि मन माँझ भई, 'चिन्तामणि जैति' आदि बोले रसरास है।
'करनामृत' ग्रन्थ हृदै ग्रन्थि कौं विदारि डारै, बाँधै रस ग्रन्थ–पन्थ युगल प्रकास है।। १७५।।

चिन्तामनि सुनी 'वन माँझ रूप देख्यौ लाल', ह्वै गई निहाल आई नेह नातो जानिकैं।
उठि बहु मान कियो दियौं दूध–भात दोना, दै पठावैं नित हरि हितू जन मानिकैं।।
लियो कैसे जाइ तुम्हें भाय सौं दियो जो प्रभु, लैहौं नाथ हाथ सौं जो देहैं सनमानिकै।
बैठे दोऊजन कोऊ पावैं नहीं एक कन, रीझे श्यामघन दीनो दूसरो हूँ आनिकै।। १७६।।

श्रीविष्णुपुरीजी

कलि जीव जंजाली कारनै, विष्णुपुरी बड़ि निधि सँची।।
भगवत धर्म उतंग, आन धर्म आन न देखा।
पीतर पटतर विगत, निकष ज्यौं कुन्दन रेखा।।

कृष्ण कृपा कहि बेलि, फलित सत्संग दिखायो।
कोटि ग्रन्थ को अर्थ, तेरह विरचन में गायो।।
महा समुद्र भागौत तें, भक्तिरतन राजी रची।
कलि जीव जंजाली कारनै, विष्णुपुरी बड़ि निधि सँची।।४७।।

जगन्नाथ छेत्र माँझ बैठे महाप्रभु जू वे, चहुँ ओर भक्त भूप भीर अति छाई है।
बोले 'विष्णुपुरी पुरी काशी मध्य रहैं जाते, जानियत मोक्ष चाह नीकी मन आई है'।।
लिखी प्रभु चीठी 'आपु मनिगन माला एक, दीजिये पठाइ मोहिं लागती सुहाई है'।
जानि लई बात निधि भागवत रत्नदाम, दइ पठै आदि मुक्ति खोदिकै बहाई है।।१७७।।

श्रीज्ञानदेवजी

विष्णुस्वामि सम्प्रदाय दृढ़, ज्ञानदेव गम्भीर मति।।
नाम तिलोचन शिष्य, सूर शशि सदृश उजागर।
गिरा गंग उनहारि, काव्य रचना प्रेमाकर।।
आचारज हरिदास, अतुल बल आनँददायन।
तेहिं मारग वल्लभ, विदित पृथु पधति परायन।।
नवधा प्रधान सेवा सुदृढ़, मन वच क्रम हरि चरन रति।
विष्णुस्वामि सम्प्रदाय दृढ़ ज्ञानदेव गम्भीर मति।। ४८।।

विष्णुस्वामि सम्प्रदाई बड़ेई गम्भीर मति, ज्ञानदेव नाम ताकी बात सुनि लीजियै।
पिता गृह त्यागि आइ ग्रहन संन्यास कियो, दियो बोलि झूँठि तिया नहीं गुरु कीजियै।।
आई सुनि बधू पाछें कह्यो जान्यो मिथ्यावाद, 'भुजनि पकरि मेरे संग करि दीजियै'।
ल्याई सो लिवाइ जाति अति ही रिसाइ दियो, पाँति में ते डारि रहैं दूरि नहीं छीजियै।।१७८।।

भये पुत्र तीन तामें मुख्य बड़ो ज्ञानदेव, जाकी कृष्णदेव जू सौं हिये की सचाई है।
वेद न पढ़ावे कोऊ कहैं सब जाति गई, लई करि सभा अहो! कहा मन आई है।।
'बिनस्यो ब्रह्मत्व' कही 'श्रुति अधिकार नाहिं', बोल्यो यों निहारि 'पढ़ै भैंसा' लै दिखाई है।
देखि भक्तिभाव चाव भयो आनि गहैं पाँव, कियोई सुभाव वही गही दीनताई है।। १७९।।

श्रीत्रिलोचनजी

भयें उभै शिष्य नामदेव श्री तिलोचनजू, सूर शशि नाईं कियो जग में प्रकास है।
नामा की तो बात कहि आये सुनो दूसरे की, सुनेई बनत भक्त कथा रसरास है।।
उपजे बनिककुल सेवें कुल अच्युत कौं, ऐपै नहिं बनै एक तिया रहे पास है।
टहलुवा न कोई 'साधु मन ही की जानि लेत', यही अभिलाष सदा दासनि को दास है।।१८०।।

आये प्रभु टहलुवा रूप धरि द्वार पर, फटी एक कामरी पन्हैयाँ टूटी पाँय हैं।
निकसत पूछें 'अहो! कहाँ ते पधारे आप? 'बाप महतारी और देखिये न' गाय हैं।।
'बाप महतारी मेरे कोऊ नाहिं साँची कहौं गहौं मैं टहल जोपै मिलत सुभाय हैं'।
'अनमिल बात कौन? दीजियै जनाय वहू' 'पाऊँ पाँच सात सेर उठत रिसाय हैं'।। १८१।।

चारि हू बरन की जु रीति सब मेरे हाथ, साथ हू न चाहौं करौं नीके मन लाइकै।
भक्तन की सेवा सो तौ करत जनम गयो, नयो कछु नाहिं डारे बरस बिताइकै।।
अन्तरयामी नाम नेरो चेरो भयो तेरो हौं तो, बोल्यो 'भक्तभाव खावौ निशंक अघाइकै'।
कामरी पन्हैयाँ सब नई करि दई और, मीड़िकै, न्हवायो तन मैल कौं छुटाइकै।। १८२।।

बोल्यो घरदासी सौं 'तूँ रहै याकी दासी होइ, देखियो उदासी देत ऐसो नहीं पावनौ।
खाय सो खवावो सुख पावो नित-नित हियें, जियैं जग माहि जौलौं मिलि गुन गावनौं।।
आवत अनेक साधु भावत टहल हियें, लिये चाव दाबें पाँव सबनि लड़ावनौ।
ऐसे ही करत मास तेरह व्यतीत भये, गये उठि आपु नेकु बात को चलावनौ।। १८३।।

एक दिन गई ही परोसिन कैं भक्तबधू, पूछि लई बात 'अहो! काहे कौं मलीन है'।
बोली मुसुकाय वे टहलुवा लिवाय ल्याये, क्योंहू न अघाय खोट पीसि तन छीन है।।
काहू सौं न कहौ यह गहौ मन माँझ एरी, 'तेरी सौं सुनैगो जोपै जात रहै भीन है'।
सुनि लई यही नेकु गये उठि हुती टेक, दुखहूँ अनेक जैसे जल बिन मीन है।। १८४।।

बीते दिन तीनि अन्न-जल करि हीन भये, ''ऐसो सो प्रवीन अहो! फेरि कहाँ पाइयें''।
बड़ी तू अभागी ! बात काहे कौं कहन लागी? रागी साधुसेवा में जु कैसे करि ल्याइयें।।
भई नभ वानी तुम खावो पीवो पानी यह, मैं ही मति ठानी मोकौं प्रीति रीति भाइयें।
मैं तो हौं अधीन तेरे घर ही में रहौं लीन, जोपै कहौ सदा सेवा करिवे कौं आइयें।। १८५।।

कीने हरिदास मैं तौ दासहू न भयौं नेकु, बड़ो उपहास मुख जग में दिखाइयै।
कहैं जन भक्त कहा भक्ति हम करी कहो? अहो ! अज्ञताई रीति मन में न आइयै।।

उनकी तो बात बनि आवै सब उनही सौं, गुन ही कौं लेत मेरे औगुन छिपाइये।
आये घर माँझ तऊ मूढ़ मैं न जानि सक्यौ, आवैं अब क्योंहूँ धाय पाँय लपटाइये।। १८६।।

श्रीवल्लभाचार्यजी

हिये में सरूप सेवा करि अनुराग भरे, ढरे और जीवन की जीवनि कौं दीजिये।
सोई लै प्रकास घर–घर में विलास कियो, अति ही हुलास फल नैननि कौं लीजिये।।
चातुरी अवधि नेकु आतुरी न होति किहूँ, चहुँ दिसि नाना राजभोग सुख कीजिये।
वल्लभ जू नाम लियो पृथु अभिराम रीति, गोकुल में धाम पानि सुनि मन रीझिये।। १८७।।

गोकुल के देखिवे कौं गयौ एक साधु सूधो, गोकुल मगन भयो रीति कछु न्यारिये।
छोंकर के वृक्ष पर बटुवा झुलाय दियो, कियो जाय दरसन सुख भयो भारिये।।
देखै आइ नाहीं प्रभु फेरि आप पास आयो, चिन्ता सौं मलीन देखि कही जा निहारिये।
वैसेई सरूप कई गई सुधि बोल्यो आनि, लीजिये पिछानि कह्यो सेवा नित धारिये।। १८८।।

खुलि गईं आखें अभिलाखैं पहिचानि कीजै, दीजै जू बताइ मोहिं पाऊँ निज रूप है।
कही जावो वाही ठौर देखौ प्रेम लेखौ हिये, लिये भाव सेवा करौ मारग अनूप है।।
देखिके मगन भयो लयो उर धारि हरि, नैन भरि आये जान्यो भक्ति को स्वरूप है।
निसिदिन लग्यौ पग्यौ जग्यौ भाग पूरन हो पूरन चमतकार कृपा अनुरूप है।। १८९।।

मास परायण आठवां विश्राम

श्रीकुलशेखरजी

सन्त साखि जानैं सबै, प्रगट प्रेम कलियुग प्रधान।।
भक्तदास इक भूप, श्रवन सीताहर कीनौं।
मार मार कर खड्ग, बाजि सागर में दीनौ।।
नरसिंह कौ अनुकरण, होइ हिरनाकुश मार्‍यो।
वहै भयौ दसरत्थ, राम बिछुरत तन डार्‍यो।।
कृष्ण दाम बाँधे सुने, तिहिं छन दीनो प्रान।
सन्त साखि जानैं सबै, प्रगट प्रेम कलियुग प्रधान।। ४६।।

सन्त साखि जानैं कलिकाल में प्रगट प्रेम, बड़ोई असत जाके भक्ति में अभाव है।
हुतो एक भूप रामरूप ततपर महा, राम ही की लीला गुन सुनैं करि भाव है।।
विप्र सौं सुनावै सीता चोरी कौ न गावै, हियो खरो भरि आवै वह जानत सुभाव है।
पर्‍यो द्विज दुखी निज सुवन पठाइ दियो, जानै न सुनायो भरमायो कियो घाव है।। १९०।।

मार मार करि कर खड्ग निकासि लियौ, दियौ घोरौ सागर में सो आवेस आयो है।
'मारौं याहि काल दुष्ट रावन विहाल करौं, पाँवन को देखौं सीता' भाव दृग छायो है।।
जानकीरवन दोऊ दरसन दियो आनि, बोले 'बिन प्रान कियौ नीच फल पायो है'।
सुनि सुख भयो गयौ शोक हृदै दारुन जो, रूप की निहारनि यों फेरिकै जिवायो है।। १६१।।

श्रीलीलानुकरणजी, श्रीरतिवन्तीबाईजी

नीलाचल धाम तहाँ लीला अनुकर्न भयो, नरसिंह रूप धारि साँचै मारि डार्यो है।
कोऊ कहै द्वेष कोऊ कहत आवेस तोपै, करौ दसरथ कियो भाव पूरो पार्यो है।।
हुती एक बाई कृष्ण रूप सौं लगाई मति कथा में न आई सुत सुनी कह्यो धार्यो है।
'बाँधे जसुमति' सुनि औरै भई गति करि दई साँची रति तन तज्यो मानौ वार्यो है।। १६२।

सप्ताह परायण दूसरा विश्राम

प्रसाद अवज्ञा जानिकैं, पाणि तज्यौ एकै नृपति।।
हौं कहा कहौं बनाइ, बात सबही जग जानैं।
कर तैं दौना भयो, स्याम सौरभ मन मानैं।।
छपन भोग तैं पहिल, खीच करमा कौ भावैं।
सिलपिल्ले के कहत, कुँअरि पै हरि चलि आवैं।।
भक्तन हित सुत विष दियौ, भूप नारि प्रभु राखि पति।
प्रसाद अवज्ञा जानिकैं, पाणि तज्यौ एकै नृपति।। ५०।।

प्रसादनिष्ठ श्रीपुरुषोत्तमजी नृपति

प्रसाद की अवज्ञा तैं तज्यो नृप कर एक, करिकैं विवेक सुनौ जैसें बात भई है।
खेलै भूप चौपरि कौं आयो प्रभु–भुक्त–शेष, दाहिने में पासे बाँये छुयौ मति गई है।।
लै गये रिसायकैं फिराय महा दुख पाय, उठ्यो नरदेव गृह गयो सुनी नई है।
लियो अनसन 'हाथ तजौं याही छन तब, साँचौ मेरौ पन' बोलि विप्र पूछि लई है।। १६३।।

काटै हाथ कौन मेरो? रह्यो गहि मौन यातैं, पूछत सचिव कही विथा सो विचारियै।
आवै एक प्रेत मो दिखाई नित देत, निसि डारिकैं झरोखा कर शोर करै भारियै।।
'सोऊँ ढिंग आइ रहौं आपुकौं छिपाइ जब, डारैं पानि आनि तबही सुकाटि डारियै'।
कही नृप भलैं चौकी देत में घुमायो भूप, डार्यो उठि आइ छेद न्यारो कियौ वारियै।। १६४।।

देखिकैं लजानौं 'कहा कियौं मैं अजानौं' ! नृप कही 'प्रेत मानौं यही हरि सौं बिगारियै'।
कही जगन्नाथदेव 'लै प्रसाद जावो उहाँ, ल्यावो हाथ बोवै बाग' सोई उर धारियै।।
चले तहाँ धाइ भूप आगे मिल्यो आइ हाथ, निकस्यो लगाइ हियै भयौ सुख भारियै।
ल्याये कर फूल ताके भये फूल दौना के जु, नितहीं चढ़त अंग गन्ध हरि प्यारियै।। १६५।।

श्रीकर्माबाईजी

हुती एक बाई ताको करमा सुनाम जानि, बिना रीति भाँति भोग खिचरी लगावही।
जगन्नाथदेव आपु भोजन करत नीकें, जिते लगैं भोग तामें यह अति भावहीं।।
गयो तहाँ साधु मानि बड़ो अपराध करै, भरै बहु स्वांस सदाचार लै सिखावहीं।
भई यों अवार देखैं खोलिकै किवार जोपै, जूठनि लगी है मुख धोये बिनु आवही।। १६६।।

पूछी 'प्रभु! भयो कहा? कहिये प्रगट खोलि, बोलिहू न आवै हमें देखि नई रीति है।
'करमा सुनाम एक खिचरी खवावै मोहिं, मैं हूँ नित पाऊँ जाइ जानि साँचि प्रीति है।।
गयो मेरो सन्त रीति भाँति सो सिखाइ आयो, मत मो अनन्त बिनु जाने यों अनीति है।
कही वही साधु सौं 'जु! साधि आवौ वही बात', जाइकै सिखाई हिय आई बड़ी भीति है।। १६७।

सिलपिल्ले भक्त उभयबाईजी

सिलपिल्ले भक्त उभै बाई सोई कथा सुनौ, एक नृपसुता एक सुता जिमींदार की।
आये गुरु घर देखि सेवा ढिंग बैठी जाइ, कही ललचाइ पूजा कीजै सुकुमार की।।
दियो शिलाटूक लैकै नाम कहि दियो वही, कीजिये लगाइ मन मति भवपार की।
करत–करत अनुराग बढ़ि गयो भारी, बड़ी ये विचित्र रीति यही सोभा सार की।। १६८।।

पाछिले कवित्त माँझ दुहुँन की एकै रीति, अब सुनौ न्यारी–न्यारी नीके मन दीजियै।
जिमींदार सुता ताके भये उभै भाई रहैं, आपुस में बैर गाँव मार्‌यो सब छीजियै।।
तामें गई सेवा इन बड़ोई कलेस कियौ, जियौ नाहिं जात खान–पान कैसें कीजियै।
रहे समुझाय याहि कछु न सुहाय तब, कही जाय ल्यावौ तेरे दोऊ सम धीजियै।। १६६।।

गई वाही गाँव जहाँ दूसरो जू भाई रहै, बैठ्यौ हो अथाई माँझ कही वही बात है।
'लेवो जू पिछानि तहँ बैठे एक ठौर प्रभु, बोलि उठ्यो कोऊ 'बोलि लीजैं प्रीति गात है'।।
भई आँखि राती लागी फाटिवे कौं छाती, सो पुकारी सुत आरत सौं मानौं तन पात है।
हिये आइ लागे सब दुख दूर भागे कोऊ बड़े भाग जागे घर आई न समात है।। २००।।

सुनौ नृपसुता बात भक्ति गात–गात पगी, भगी सब विषैवृत्ति सेवा अनुरागी है।
ब्याही ही विमुख घर आयो लैन वहै वर, खरी अरबरी कोऊ चित चिन्ता लागी है।।

करि दई संग भरी अपने ही रंग चली, अलीहूँ न कोई एक वही जासौं रागी है।
आयो ढिंग पति बोलि कियो चाहै रति वाकी, और भई गति मति आवौ विथा पागी है।। २०१।।

'कौन वह विथा? ताकौ कीजियै जतन वेगि, बड़ो उदवेग नेकु बोलि सुख दीजियै।
'बोलिवो जौ चाहौ तौपै करौ हरिभक्ति हिये, बिन हरिभक्ति मेरो अंग जिन छीजियै।।
आयो रोष भारी तब मन में विचारी वा 'पिटारी में जु कछु सोई लैकै न्यारो कीजियै'।
करी वही बात मूसि जल माँझ डारि दई, नई भई ज्वाला जियो जात नहीं खीजियै।। २०२।।

तज्यो जल–अन्न अब चाहत प्रसन्न कियो, होत क्यौं प्रसन्न जाको सबरस लियो है।
पहुँचे भवन आइ दई सो जताइ बात, गात अति छीन देखि कहा हठ कियो है।।
सासु समुझावै कछु हाथ सौं खवावै याकौं, बोलिहू न भावै तब धरकत हियो है।
'कहै सोई करैं अब पाँय तेरे परैं हम', बोली 'जब वेई आवैं तौही जात जियो है'।। २०३।।

आये वाही ठौर भौंर आई तनु भूमि गिर्‌यो, ढर्‌यो जल नैन सुर आरत पुकारी है।
भक्तिवश श्याम जैसै कामवश कामी नर, धाइ लागे छाती सो जु संग सो पिटारी है।।
देखि पति सासु आदि जगत विवाद मिट्‌यो, वाद ही जनम गयो नेकु न सँभारी है।
किये सब भक्त हरि साधुसेवा माँझ पगे, जगे कोउ भाग घर बधू यों पधारी है।। २०४।।

भक्तों के हित सुतों को विष दिया, दो बाईजी

भक्तन के हित सुत विष दियौ उभै बाई, कथा सरसाई बात खोलिकै बताइयै।
भयो एक भूप ताके भक्त हूँ अनेक आवैं, आयो भक्तभूप तासौं लगन लगाइयै।।
नितहीं चलत ऐपै चलन न देत राजा, बितयो बरष मास कहै भोर जाइयै।
गई आस टूटि तन छूटिवे की रीति भई, लई बात पूछि रानी सबै लै जनाइयै।। २०५।।

दियो सुत विष रानी जानी नृप जीवै नाहिं, सन्त हैं स्वतन्त्र सो इन्हेंहि कैसैं राखियै।
भये बिन भोर बधू शोर करि रोय उठी, भोय गई रावले में सुनी साधु भाषियै।।
खोलि डारी कटि पट भवन प्रवेस कियो, लियो देखि बालक कौं नील तनु साषियै।
पूछ्यौ भूप तिया सौं 'जू साँचे कहि कियो कहा?' कही 'तुम चाल्यौ चाहौ नैन अभिलाषियै'।। २०६।।

छाती खोलि रोये सन्त बोलिहूँ न आवै मुख, सुख भयो भारी भक्ति रीति कछु न्यारियै!
जानीऊँ न जाति जाति–पाँति को विचार कहा, अहो! रससागर सो सदा उर धारियै।।
हरिगुन गाय साखी सन्तन बताय दिये, बालक जिवाय लागी ठौर वह प्यारियै।
संग के पठाय दिये रहे वे जे भींजे हिये, बोले आप 'जाऊँ जौ न मारिकै बिडारियै'।। २०७।।

दूसरी बाईजी

सुनौ चित्तलाई बात दूसरी सुहाई हिये, जिये जग मांहि जौलौं सन्त संग कीजियै।
भक्त नृप एक सुता ब्याही सो अभक्त महा, जाके घर माँझ जन नाम नहीं लीजियै।।
पल्यो साधु सीथ सौं सरीर दृग रूप पले, जीभ चरनामृत के स्वाद ही सौं भीजियै।
रह्यौ कैसें जाय अकुलाय न बसाय कछु, आवैं पुर प्यारे तब विष सुत दीजियै।। २०८।।

आये पुर सन्त आइ दासी ने जनाइ कही, कही कैसे जाइ सुत विष लैकै दियो है।
गये वाके प्रान रोय उठी किलकानि सब, भूमि गिरे आनि टूक भयो जात हियो है।।
बोली अकुलाय 'एक जीवे कौ उपाय जोपै, कियो जाय पिता मेरे कैयो बार कियो है'।
'कहै साई करैं' दृग भरैं 'ल्यावौ सन्तनि कौ कैसे होत सन्त?' पूछ्यो चेरी नाम लियो है।।२०९।।

चली लै लिवाय चेरी बोलिवौ सिखाय दियो, देखिकै धरनि परि पाँय गहि लीजियै।
कीनी वही रीति दृगधारा मानौ प्रीति सन्त, करी यों प्रतीति गृह पावन कौ कीजियै।।
चले सुख पाय दासी आगे ही जनाय जाय, आय ठाड़ी पौंरि पाँय गहे मति भीजियै।
कही हरे बात 'मेरे जानौ पिता मात मैं तो, अंग में न माति आज प्रान वारि दीजियै।। २१०।।

रीझि गये सन्त प्रीति देखिकैं अनन्त कह्यो, 'होइगी जु वही सो प्रतिज्ञा तैं जो करी है।
बालक निहारि जानी विष निरधार दियो, दियो चरनामृत कौं प्रानसंज्ञा धरी है।।
देखत विमुख जाय पाँय ततकाल लिये, किये तब शिष्य साधुसेवा मति हरी है।
ऐसें भूप नारि पति राखी सब साखी जन, रहैं अभिलाखी जोपै देखौ याही घरी है।। २११।।

मास परायण नवाँ विश्राम

आशै अगाध दुहुँ भक्त को, हरितोषन अतिशै कियौ।।
रंगनाथ को सदन, करन बहु बुद्धि विचारी।
कपट धर्म रचि जैन, द्रव्यहित देह बिसारी।।
हंस पकरनैं काज, बधिक बानौं धरि आये।
तिलक दाम की सकुच, जानि तिन आप बँधाये।।
सुत बध हरिजन देखिकै, दै कन्या आदर दियौ।
आशै अगाध दुहुँ भक्त को, हरितोषन अतिशै कियौ।। ५१।।

मामा–भानजा

आशय अगाध दोऊ भक्त मामा–भानजे कौं, दियौ प्रभु तोष ताकी बात चित धारियै।
घर तें निकसि चले वन कौं विवेक रूप, मूरति अनूप बिन मन्दिर निहारियै।।

दक्षिण में रंगनाथ नाम अभिराम जाकौ, ताकौ ले बनावैं धाम काम सब टारियै।
धन के जतन फिरे भूमि पै न पायो कहूँ, चहुँ दिसि हेर देख्यो भयो सुख भारियै।। २१२।।

मन्दिर सराबगी कौं प्रतिमा सौं पारस की, आरस न कियो वेद न्यून हूँ बतायो है।
'पावैं प्रभु सुख हम नर्कहूँ गये तौ कहा?' धरक न आई तब कान लै फुकायो है।।
ऐसी करी सेवा जासौं हरी मति केवरा ज्यौं, सेवरा समाज सबै नीके कैं रिझायो है।
दियो सौंपि भार तब लैवे को विचार करैं, हरैं कौन राह? भेद राजनि पैं पायो है।। २१३।।

मामा रह्यो भीतर औ ऊपर सो भानजो हो, कलस भँवरकली हाथ सौं फिरायो है।
जेबरी लै फाँसि दियो मूरति सो खैंचि लई, और बार बहु आप नीकैं चढ़ि आयो है।।
कियो हो जो द्वार तामें फूलि तन फँसि बैठ्यो, अति सुख पाय तब बोलिकै सुनायो है।
'काटि लेवौ सीस ईश भेष की न निन्दा करैं,' भरैं अँकवारि मन कीजियै सवायो है।। २१४।।

काटि लियो सीस ईश इच्छा कौ विचार कियौ, जियौ नहीं जाय तऊ चाह मति पागी है।
जोपै तन त्याग करौं कैसें आस सिन्धु तरौं?, ढरौं वाही ओर आयो नींव खुदे लागी है।।
भयो शोक भारी हमें ह्वै गई अबारी काहू, और नैं विचारी देखैं वही बड़भागी है।
भरि अकँवारि मिले मन्दिर सँवारि झिले, खिले सुख पाइ नैन जानै जोई रागी है।। २१५।।

हंस भक्त

कोढ़ी भयो राजा, किये जतन अनेक ऐपैं, एकहूँ न लागै, कह्यो हँसनि मँगाइयै।
बधिक बुलाय कही, वेगि ही उपाय करौ, जहाँ–तहाँ ढूँढ़ि अहो, इहाँ लगि ल्याइयै।।
कैसे करि ल्यावै? वेतौ रहैं मानसर माँझ, ल्यावोगे छुटौगे तब जनैं चारि जाइयै।
देखत ही उड़ि जात, जाति को पिछानि लेत, साधु सौं न डरैं, जानि भेष लै बनाइयै।। २१६।।

गये जहाँ हँस, सन्त बानौ सो प्रशंस, देखि, जानिके बँधाये राजा पास लैकै आये हैं।
मानि मत सार, प्रभु वैद को स्वरूप धारि, पूछिकें बजार लोग, भूप ढिंग ल्याये हैं।।
काहे कौ मँगाये पच्छी? आछी हम करैं देह, छोड़ि दीजै इन्हें, कही नीठ करि पाये हैं।
औषधि पिसाये, अँग–अंगनि मलाये, किये नीके, सुख पाये, कहि उनको छुटाये हैं।। २१७।।

लेवो भूमि गाऊँ, बलि जाऊँ या दयालुता की, भाल भाग ताकैं जाकौं दरसन दीजियै।
पायो हम सब, अब करौ हरि साधुसेवा, मानुष जनम ताकी सफलता कीजियै।।
करी लै निदेस, देसभक्ति विसतार भयो, हंस हितसार जानि, हिये धरि लीजियै।
बधिकनि जानी, जासौं खगनि प्रतीति कीनी, ऐसो भेष छोड़िये न राख्यौ मति भीजियै।। २१८।।

श्रीसदाव्रतीजी महाजन

महाजन सुनो सदाव्रती ताको भक्तपन, मन में विचार सेवा कीजै चित लायकै।
आवत अनेक साधु, निपट अगाध मति, साधि लेत जैसी आवै सुबुधि मिलायकै।।
सन्त सुख मानि, रहि गयो घर माँझ सदा, सुत सौं सनेह नित खेलै संग जायकै।
इच्छा भगवान मुख्य, गौन लोभ जानि मारि, डार्‌यो, धूरि गाड़ि, गृह आयो पछितायकै।।२१६।।

देखै महतारी, मग बेटा कहाँ पगि रह्यौ? बीते चारि जाम, तऊ धाम में न आयौ है।
फेरी पुर डौंड़ी, ताके संग सन्त लौंड़ी आय, कह्यौ यों पुकारि, सुत कौने बिरमायौ है।।
वेगि दै बताय दीजे, आभरन दिये लीजे, कही सो संन्यासी, एही मार्‌यौ मन लायौ है।
दई लै दिखाय देह, बोल्यो याको गहि लेहु, याही ने हमारौ पुत्र मार्‌यो नीके पायौ है।।२२०।।

बोल्यो अकुलाय, मैं तौ दियो है बताय मोंको, देहु जु छुटाय, नहीं झूठ कछु भाषियै।
लेवौ मति नाम साधु, जो उपाधि मेट्यौ चाहौ, जावौ उठि और कहूँ, मानी छोरि नाषियै।।
आयकै विचार कियौ, जानी सकुचायो सन्त, बोलि उठी तिया, सुता दैकैं नीके राखियै।
पर्‌यो बधू पाँय, तेरी लीजियै बलाय, पुत्र शोक को मिटाय, और खरी अभिलाषियै।।२२१।।

बोलि लियौ सन्त, सुता कीजियै जू अंगीकार, दुख सो अपार, काहू विमुख कौं दीजियै।
बोल्यौ मुरझाय, मैं तौ मार्‌यौ सुत हाय ! मोपै जियौहू न जाय, मेरो नाम नहीं लीजियै।।
देखौ साधुताई, धरी सीस पै बुराई, जहाँ राईहूँ न दोष, कियौ मेरु सम रीझियै।
दई बेटी ब्याहि, कहि मेरो उर दाह मिटै, कीजियै निबाह जग माहिं जौलौं जीजियै।।२२२।।

आये गुरु घर, सुनि दीजै कौन सर, बड़े सिद्ध सुखदाई, साधुसेवा लै बताई है।
कह्यो सुत कहाँ?, अजू ! पायौ कही कैसी भाँति, कैसे कैं बखानै, जग मीचु लपटाई है।।
प्रभु ने परीच्छा लई, सोई हमें आज्ञा दई, चलियै दिखावौं जहाँ देह कौं जराई है।
गये वाही ठौर, सिरमौर हरि ध्यान कियो, जियो चल्यो आयो दास कीरति बढ़ाई है।।२२३।।

चारौ युग चतुर्भुज सदा, भक्त गिरा साँची करन।।
दारुमई तरवार, सारमय रची 'भुवन' की।
'देवा' हित सितकेश, प्रतिज्ञा राखी जन की।।
कमधुज के कपि चारु, चिता पर काष्ठ जु ल्याये।
जैमल के जुधि माँहि, अश्व चढ़ि आपुन धाये।

घृत सहित भैंस चौगुनी, श्रीधर संग सायक धरन।
चारौ युग चतुर्भुज सदा, भक्त गिरा साँची करन।। ५२।।

श्रीभुवनसिंहजी चौहान

सुनौ कलिकाल बात, और है पुरान ख्यात, भुवन चौहान, जहाँ राना की दुहाई है।
पट्टा युगलाख खात, सेवा अभिलाष साधु, चल्यो सो सिकार नृप संग भीर धाई है।।
मृगी पाछे परे, करे टूक, हुती गाभिन यों आइ गई दया, कही 'काहे को लगाई है'।
कहैं मोकौं भक्त, क्रिया करौं मैं अभक्तन की, दारु तरवार धरौं, यहै मनभाई है।। २२४।।

और एक भाई, तानै देखी तरवार दारु, सक्यो न सँभार, जाय राना कौं जनाई है।
नृप न प्रतीति करै, करै यह सौंह नाना, बानो प्रभु देखि, तेज बात न चलाई है।।
ऐसे ही बरस एक, कहत वितीत भयो, कह्यो मोहि मारि डारौ, जोपै मैं बनाई है।
करी गोठ कुण्ड जाय, पायकै प्रसाद बैठे, प्रथम निकासि आप सबनि दिखाई है।। २२५।।

क्रम सौं निहारि कही, भुवन विचार कहा? कहौ चाहैं दार, मुख निकसत सार है।
काढ़िकै दिखाई, मानौं बिजुरी चमचमाई, आई मन माँझ, बोल्यौ याकौ मारौ भार है।।
भक्त कर जोरिकै बचायौ, अजू ! मारियै क्यों? कही बात झूठ, नहीं करी करतार है।
पट्टा दूनादून पावौ, आवौ मत मुजरा कौं, मैं ही घर आऊ, होय मेरौ निसतार है।। २२६।।

श्रीचतुर्भुजजी के पण्डा श्रीदेवाजी

दरसन आयो राना, रूप चतुर्भुज जू कैं, रहे प्रभु पौढ़ि हार सीस लपटाये हैं।
वेगि दै उतारि कर, लैकैं गरे डारि दियो, देखि धौरौ बार, कही धौरे आये? आये हैं।।
कहत तो कही गई, सही नहीं जात अब, महीपति डारै मारि, हरिपद ध्याये हैं।
अहो हृषीकेश ! करौ मेरे लिये सेतकेश, लेशहूँ न भक्ति, कही किये देखौ छाये है।। २२७।।

मानि राजा त्रास, दुखरासि सिन्धु बूड़्यो हुतो, सुनिकै मिठास वानी मानौ फेरि जियो है।
देखे सेत बार, जानी कृपा मो अपार करी, भरी आँखै नीर, सेवा लेश मैं न कियो है।।
बड़ेई दयाल, सदा भक्त प्रतिपाल करैं, मैं तो हौं अभक्त, ऐपै सकुचायो हियो है।
झूठे समबन्धहू तैं, नाम लाजै मेरोई जु, तातैं सुख साजै, यह दरसाय दियो है।। २२८।।

आयो भोर राना, सेत बार सो निहारि रह्यो, कह्यो केश काहू के, लै पण्डा ने लगाये हैं।
ऐंचि लियौ एक तामें, खैंचिकै चढ़ाई नाक, रुधिर की धार नृप अंग छिरकाये हैं।।
गिर्‌यो भूमि मुरछा ह्वै, तन की न सुधि कछू, जाग्यौ जाम बीते अपराध कोटि गाये है।
यही अब दण्ड, राज बैठे सो न आवै इहाँ, अबलौंहूँ आनि मानि करै, जो सिखाये हैं।। २२६।।

श्रीकामध्वजजी

भये चारि भाई, करैं चाकरी वै राना जू की, तामें एक भक्त, करै वन में बसेरो है।
आयकै प्रसाद पावै, फेरि उठि जाय तहीं, कहैं नेकु चलौ, तौ महीना लीजै तेरो है।।
जाके हम चाकर हैं, रहत हजूर सदा, मरै तौ जरावै कौन?, वही जाको चेरो है।
छूट्यो तन वन, राम आज्ञा हनुमान आये, कियो दाह, धुँआ लगे, प्रेत पार नेरो है।। २३०।।

नवाह परायण तृतीय विश्राम

श्रीजयमलजी

मेरतै प्रथम वास, जैमल नृपति ताकौं, सेवा अनुराग, नेकु खटकौ न भावहीं।
करै घरी दस, तामें कोऊ जो खबरि देत, लेत नहीं कान, और ठौर मरवावही।।
हुतो एक भाई बैरी, भेद यह पाइ लियो, कियो आनि घेरौ माता, जाइकैं सुनावहीं।
करैं हरि भली, प्रभु घोरा असवार भये, मारी फौज सब, कहैं लोग सचु पावहीं।। २३१।।

देखै हाँफै घोरो, अहो ! कौन असवार भयौ?, गयो आगे जबै, देख्यो वही बैरी पर्‌यो है।
बोल्यो सुखपाय, 'अजू ! साँवरो सिपाही को हैं?' एकले ही फौज मारी मेरो मन हर्‌यो है।।
तोही को दिखाई दई, मेरे तरसत नैंन, ! बैंनन सौं जानी वही स्याम प्रभु ढर्‌यो है।
पूछिकै पठाय दियौ, वानै पन यहै लियौ, कियौ इन दुंख करै भली बुरो कर्‌यो है।। २३२।।

श्रीग्वाल भक्तजी

भयो एक ग्वाल, साधुसेवा सो रसाल करैं, परै जोई हाथ, लैकै सन्तन खवावहीं।
पायो पकवान, वन मध्य गयो ख्वाइवे कौं, आइवे की ढील, चोर भैंस सो चुरावही।।
जानिकै छिपाई, बात, माता सौं बनाइ कही, दई विप्र भूखौ घृत संग फेरि आवही।
दिन हो दिवारी कौ सु, उन्हि पहिरायौ हाँस, आई घर दाम लिये राँभ कैं सुनावहीं।।। २३३।।

श्रीश्रीधरस्वामीजी

भागवत टीका करी श्रीधर सुजानि लेहु, गेह में रहत करैं जगत् व्यवहार हैं।
चले जात मग, ठग लगे कहैं कौन संग? संग रघुनाथ मेरो जीवन अधार है।।
जानी इन कोऊ, नाहिं मारिवो उपाय करे, धरे चाप बान, आवैं वही सुकुमार है।
आये घर ल्याये पूछैं, श्याम सो सरूप कँहा? जाने वे तौ पार किये आपु डार्‌यो भार है।। २३४।।

मास परायण दसवा विश्राम

भक्तनि संग भगवान् नित ज्यौं गऊबच्छ गोहन फिरैं।।
निहकिंचन इक दास तासु के हरिजन आये।
विदित बटोही रूप भये हरि आपु लुटाये।।

साषि देन कौ स्याम, खुरदहा प्रभुहिं पधारे।
रामदास के सदन, राय रनछोर सिधारे।।
आयुध छत तन अनुग के, बलि बन्धन अपु वपु धरैं।
भक्तनि संग भगवान् नित, ज्यौं गऊबच्छ गोहन फिरैं।। ५३ ।।

श्रीहरिपालजी

भक्तनि के संग, भगवान् ऐसे फिर्‌यो करैं, जैसे बच्छ संग फिरै नेहवती गाइ है।
हरिपाल नाम विप्र, धाम में जनम लियो, कियो अनुराग, साधु दई श्री लुटाइ है।।
केतिक हजार लै बजार के करज खाये, गरज न सरै कियौ चोरी को उपाइ है।
विमुख कौं लेत, हरिदास कौं न दुख देत, आये सन्त द्वार, तिया संग बतराइ है।। २३५ ।।

बैठे कृष्ण रुक्मिनी, महल तहाँ सोच पर्‌यो, हर्‌यो मन साधुसेवा साहूरूप कियौ है।
पूछी चले कहाँ? कही भक्त है हमारो एक मैं हूँ आऊँ? आओ आये जहाँ पूछि लियौ है।।
अजू मग चल्यो जात बड़ो उतपात मधि, कोऊ पहुँचावै देवौ, लै रुपैया दियौ है।
करो समाधान, सन्त मैं लिवाइ जाऊँ इन्हें, लाइ वन माँझ देखि, बहु धन जियौ है।। २३६ ।।

देखैं जो निहार माला–तिलक न सदाचार, होयँगे भण्डार जोपै, इतो धन लायो है।
लीजियै छिनाइ, 'यही वारि' कहै डारि देवो, दियो सब डारि द्दला छिगुनी में छायो है।।
अँगुरी मरोरि, कही, 'बड़ो तूँ कठोर अहो', तोकौं कैसे छोड़ौ, सन्त जेवें मोको भायो है।
प्रगट दिखायो रूप, सुन्दर अनूप वह, मेरौ भक्तभूप, लैकै छाती सौं लगायो है।। २३७ ।।

श्रीसाक्षीगोपालजी के भक्त

गौड़देसवासी उभै विप्र ताकी कथा सुनौ, एक वयस वृद्ध जाति वृद्ध छोटो संग है।
और–और ठौरि, फिरि आये फिरि आये वन, तन भयो दुखी कीनी टहल अभंग है।।
रीझो बड़ो द्विज निज सुता तोको दई अहो, रहो, नहीं चाह मेरे लई बिनै रंग है।
साखी दै गोपाल, अब बात प्रतिपाल करो, ढरो कुल ग्राम भाम पूछ्यो सो प्रसंग है।। २३८ ।।

बोल्यो छोटो विप्र, छिप्र दीजियै कही जो बात, तिया सुत कहैं, अहो सुता याके जोग है?।
द्विज कहै नाहीं कैसे करौं?, मैं तो दैन कही, कही कहो भूलि भयो, विथा कौ प्रयोग है।।
भई सभा भारी, पूछ्यो साखी नर–नारी? श्रीगोपाल वनवारी, और कौन तुच्छ लोग है।
लेवौ जू लिखाइ जोपै साखी भरैं आइए तोपै ब्याहि बेटी दीजै लीजै करौ सुख भोग है।।२३६।।

आयौ वृन्दावन, वनवासी श्रीगोपाल जू सौं बोल्यो चलौ साखी देवौ, लई है लिखाइकै।
बीते कैयौ याम, तब बोले स्यामसुन्दर जू, प्रतिमा न चलै, तोपै बोले क्यौं जू भायकै।।
लागे जब संग, युग सेर भोग धरौ रंग, आधे–आध पावैं, चलौं नूपुर बजायकै।
धुनि तेरे कान परै, पांछै जिनि दीठि करै, करैं रहौं वाहि ठौर कही मैं सुनायकै।। २४०।।

गये ढिंग गाँव, कही नेकु तौ चिताँव रहे, चितये तें ठाढ़े, दियो मृदु मुसकायकै।
ल्यावौ जू बुलाय कह्यो, आय देखौ, आये आप, सुनतहिं चौंकि सब ग्राम आयो धायकै।।
बोलिकै सुनाई साष, पूजी हिये अभिलाष, लाख लाख भाँति रंग भर्‍यो उर भायकै।
आयो न सरूप फेरि, विनै करि राख्यो घेरि, भूप सुख ढेरि दियो, अबलौं बजायकै।। २४१।।

श्रीरामदासजी

द्वारका के ढिंग ही डाकौर एक गाँव रहे रहै, रामदास भक्त–भक्ति जाकौं प्यारियै।
जागरन एकादशी करे रनछोर जू के, भयौ तन वृद्ध, आज्ञा दई नहिं धारियै।।
बोले भरि भाय, तेरौ आयवौ सह्यौ न जाय, चलौं घर धाय तेरे, ल्यावौ गाड़ी भारियै।
खिरकी जु मन्दिर के पाछे, तहाँ ठाढ़ी करौ, भरौ अँकवारी मोकौं, वेगि ही पधारिये।। २४२।।

करी वाही भाँति, आयौ जागरन गाड़ी चढ़ि, जानी सब वृद्ध भयो, थकी पाँव गति है।
द्वादशी की आधी रात, लैंके चल्यो मोद गात, भूषण उतारि धरे, जाकी साँची रति है।।
मन्दिर उघारि देखैं, परो है उजारि तहाँ, दौरे पाछे जानि, देखि कही कौन मति है।
बापी पधराय हाँकि जाय सुख पाय रह्यो, गह्यो चल्यो जात आनि मार्‍यो घाव अति है।। २४३।।

देखे चहुँदिसि गाड़ी, कहुँ पै न पाये हरि, करि पछतावो कहैं, भक्त कै लगाई है।
बोलि उठ्यो एक, एहि ओर यह गयो हुतौ, जाय देखैं बावरी कौं, लोहू लपटाई है।।
दास कौं जु डारी चोट, ओट लई अंग मैं ही, नहीं मैं तो जाऊँ, बिजै मूरति बताई है।
मेरी सम सोनो लेहु, कही जन तोलि देहु, मेरे कहाँ? बोल्यो बारी तिया कै जताई है।। २४४।

लगे जब तौलिवे कौं, बारी पाछे डारि दई, नई गति भई, पल उठै नहीं बारी कौ।
तबतौ खिसाने भये, सबै उठि घर गये, कैसें सुख पावैं, फिर्‍यो मत ही मुरारी कौ।।
घर ही विराजे आप, कह्यो भक्ति कौ प्रताप, जाप करैं जोपै, फुरैं रूप लाल प्यारी कौ।
बलिबन्ध नाम प्रभु, बाँधे बलि भयो तब आयुध को छत सुनि, आये चोट मारी कौ।। २४५।।

बच्छ हरन पाछैं विदित, सुनौ सन्त अचरज भयो।।
जसू स्वामि के वृषभ, चोरि ब्रजवासी ल्याये।
तैसेई दिये स्याम, वरष दिन खेत जुताये।।

नामा ज्यौं नँददास, मुई इक बच्छि जिवाई।
अंब अल्ह कौं नये, प्रसिद्ध जग गाथा गाई।।
बारमुखी के मुकुट कौं, श्रीरंगनाथ को सिर नयो।
बच्छ हरन पाछैं विदित सुनौ सन्त अचरज भयो।। ५४।।

श्रीजसूस्वामीजी

जसू नाम स्वामी, गंगा जमुना के मध्य रहैं, गहैं साधुसेवा ताको खेती उपजावहीं।
चोरी गये बैल, ताकी इनकौं न सुधि कछू, तैसे दिये स्याम, हल जुटै, मन भावहीं।।
आये ब्रजवासी पैंठ, वृषभ निहारि कही, इन्हें कौन ल्यायो? घर जाय देखि आवहीं।
ऐसे बार दोय चारि, फिरेउ न ठीक होत, पूछी पुनि ल्याये आये उन्हें पै न पावहीं।। २४६।।

बड़ोई प्रभाव देख्यो, तैसे प्रभु बैल दिये, भयो हिये भाय, जाय पाँयनि में परे हैं।
निपट अधीन दीन, भाषि अभिलाष जानि, दया के निधान स्वामी, शिष्य लैकै करे हैं।।
चोरी त्यागि दई, अति शुद्ध बुद्धि भई, नई रीति गहि लई, साधु पन्थ अनुसरे है।
अन्न पहुँचावैं, दूध दही दै लड़ावै आवैं, सन्त गुन गावैं, वे अनन्त सुख भरे है।। २४७।।

श्रीनन्ददासजी वैष्णवसेवी

निकट बरेली गाँव, तामें सो हवेली रहैं, नन्ददास विप्र, भक्त, साधुसेवा रागी है।
करै द्विज द्वेष, तासौं मुई एक बछिया लै, डारि दई खेत माँझ, गारी जक लागी है।।
हत्या कौं प्रसंग करैं, सन्तजन हूँ सौं लरैं, हिन्दू सो न मारै, यह बड़ोई अभागी है।
खेत पर जाय वाही लियो है जिवाय, देखि द्वेषी परे पाँय, भक्ति भाय मति पागी है।। २४८।।

श्रीअल्हजी अर्चावतारनैष्ठिक

चले जात अल्ह, मग लगि बाग दीठि पर्‌यो, करि अनुराग हरिसेवा विसतारियै।
वाकि रहे आँव माँगे, माली पास भोग लिये, कह्यो 'लीजै' कही, झुकि आईं सब डारियै।।
चल्यौ दौरि राजा जहाँ, जायकै सुनाई बात, गात भई प्रीति आप तट पाँय धारियै।
आवत ही लोटि गयो, मैं तो जू सनाथ भयो, देवो लै प्रसाद भक्तिभाव ही सँभारियै।। २४६।।

भक्ता वारमुखीजी

वेश्या को प्रसंग सुनौ, अति रस संग भर्‌यो, भर्‌यो घर धन अहो ऐपै कौन काम कौ।
चले मग जात, जन ठौर स्वच्छ आई मन, छाई भूमि आसन सो, लोभ नाहीं दाम कौ।।

निकसी झमकि द्वार, हंस, निहारि सब, कौन भाग जागे, भेद नहीं मेरे नाम कौ।
मुहरनि पात्र भरि, लै महन्त आगे धर्‍यो, ढर्‍यो दृग नीर कही भोग करौ स्याम कौ।। २५०।।

पूछी तुम कौन? काके भौन में जनम लियो? कियो सुनि मौन महाचिन्ता चित्त धरी है।
खोलिकै निशंक कहौ, शंका जनि आनो मन, कहि बारमुखी, ऐपै पाँय आय परी है।।
भरो है भण्डार धन, करो अंगीकार अजू, ! करिये विचार जोपे, तोपैं यह मरी है।
एक है उपाय, हाथ रंगनाथ जू को अहो, कीजिये मुकुट जामें, जाति मति हरी है।। २५१।।

विप्रहू न छुवें जाको, रंगनाथ कैसे लेत? देत हम हाथ तोकौं, रहैं इहाँ कीजियै।
कियोई बनाय सब, घर कौ लगाय धन, बनि ठनि चली, थार मधि धरि लीजियै।।
ऐसें आज्ञा पाइकै, निशंक गई मन्दिर में, फिरी यों सशंक, धिक् तियाधर्म भीजियै।
बोले आप याको ल्याय, आप पहिराय जाय, दियो पहिराय, नयो सीस मति रीझियै।। २५२।।

ब्राह्मण–दम्पत्ति

और युगन तें कमलनयन, कलियुग बहुत कृपा करी।।
बीच दिये रघुनाथ, भक्त संग ठगिया लागे।
निर्जन वन में जाय, दुष्ट कर्म कियो अभागे।।
बीच दियो सो कहाँ? राम ! कहि नारि पुकारी।
आये सारंगपाणि, शोकसागर ते तारी।।
दुष्ट किये निर्जीव सब, दास प्राण संज्ञा धरी।
और युगन तें कमलनयन, कलियुग बहुत कृपा करी।। ५५।।

विप्र हरिभक्त करि गौनो चल्यो तिया संग, जाके दूनौ रंग, ताकी बात लै जनाइयै।
मग ठग मिले, द्विज पूछैं अहो ! कहाँ जात? जहाँ तुम जात, यामें मन न पत्याइयै।।
पन्थ को छुटाय चाहैं, वन में लिवाय जायँ, कहैं अति सूधो पैंड़ो, उर में न आइयै।
बोले बीच राम, तऊ हिये नेकु धकधकी, कहै वह भाम, श्याम नाम कहाँ पाइयै।। २५३।।

चले लागि संग, अब रंग कै कुरंग करौ, तिया पर रीझे, भक्ति साँची इन जानी है।
गये वन मध्य, ठग लोभ लगि मार्‍यो विप्र, छिप्र लैकै चले, बधू अति बिलखानी है।।
देखै फिरि–फिरि पाछैं, कहैं कहा देखै? मार्‍यो तबतौ उचार्‍यो देखौं वाही बीच प्रानी है।
आये राम प्यारे, सब दुष्ट मारि डारे, साधु प्रान दै उवारे, हित रीति यों बखानी है।। २५४।।

मास परायण ग्यारवाँ विश्राम

भेषनिष्ठ एक राजा

एक भूप भागौत की, कथा सुनत हरि होय रति।।
तिलक दाम धरि कोइ, ताहि गुरु गोविन्द जानै।
षट्दर्शनी अभाव, सर्वथा घट करि मानै।।
भाँड़ भक्त कौ भेष, हाँसि हित, भँड़कुट ल्याये।
नरपति कै दृढ़ नेम, ताहि ये पाँव धुवाये।।
भाँड़ भेष गाढ़ो गह्यो, दरस परस उपजी भगति।
एक भूप भागौत की कथा सुनत हरि होय रति।। ५६।।

राजा भक्तराज, डोम, भाँड़ कौ न काज होय भोय गई, याके धन हरी कौ न दीजियै।
आये भेष धारि, लै पुजाये, नाचैं देकै तारि, नृपति निहारि कही यों निहाल कीजियै।।
भोजन कराये, भरि मुहरनि थार ल्याये, आगे धरि विनय करी, अजू यह लीजियै।
भई भक्तिरासि बोले, आवै बास भावै नाहिं, बाहिं गहि रहै, कैसें चले मति भीजियै।। २५५।।

अन्तर्निष्ठ राजा

अन्तरनिष्ठ नृपाल इक, परम धरम, नाहिन धुजी।।
हरि सुमिरण हरि ध्यान, आन काहू न जनावै।
अलग न इहि विधि रहै, अँगना मरम न पावै।।
निद्रावश सो भूप, वदन ते नाम उचार्‌यो।
रानी पति पर रीझि, बहुत वसु ता पर वार्‌यो।।
ऋषिराज सोचि कह्यो नारि सौं, आज भक्ति मेरी कुजी।
अन्तरनिष्ठ नृपाल इक परम धरम नाहिन धुजी।। ५७।।

तिया हरिभक्त कहै, पति पै न भक्त पायौं ! रहै मुरझायो मन, सोच बढ्यो भारी है।
मरम न जान्यो, निसि सोवत पिछान्यो भाव,–विरह प्रभाव नाम निकस्यौ, विहारी है।।
सुनत ही रानी, प्रेमसागर सभानी, भोर सम्पत्ति लुटाई मानो, नृपति जियारी है।
देखि उत्साह भूप पूछ्यो सो निवाह कह्यो रह्यो तन ठौर नाम जीव यों विचारी है।। २५६।।

देखि तन त्याग पति, भई और गति याकी, ऐसो रतिवान् मैं न भेद कछू पायो है।
भयो दुख भारी, सुधि–बुधि सब तब टारी, नेकु न विचारी, भावरासि हियो छायो है।।
निसिदिन ध्यान तजे, विरह प्रबल प्रान, भक्ति रस खान, रूप कापै जात गायो है।
जाके यह होय, सोई जानै रस भोय सब, डारै मति खोय, यामें प्रगट दिखायो है।। २५७।।

श्री गुरुनिष्ठ भक्त

गुरु गदित वचन शिष सत्य अति, दृढ़ प्रतीति गाढ़ो गह्यो।।
अनुचर आज्ञा माँगि, कह्यो कारज कौं जैहों।
आचारज इक बात, तोहिं आये तें कहिहौं।।
स्वामी रह्यो समाय, दास दरसन कौं आयो।
गुरु की गिरा विश्वास, फेरि शव घर में ल्यायो।।
शिषपन साँचो करन कौं, विभु सबै सुनत सोई कह्यो।
गुरु गदित वचन शिष सत्य अति, दृढ़ प्रतीति गाढ़ो गह्यो।।५८।।

बड़ो गुरुनिष्ठ, कछु घटी साधु, इष्ट जानै, स्वामी, सन्त पूज्य मानैं कैसैं समझाइयै।
नित्यहिं विचारे, पुनि टारे, पै उचारे नाहिं, चल्यो जब रामत कौं, कही फिरि आइयै।।
सपथ दिवाई न जराइवे कौं दियो तन, ल्यायो यों फिराइ वही बात जू जनाइयै।
साँचो भाव जानि, प्रान आये सो बखान कियो, करो भक्त सेवा, करी वर्ष लौं दिखाइये।। २५८।।

श्रीरैदासजी

सन्देह ग्रन्थि खण्डन निपुन, वानी विमल रैदास की।।
सदाचार श्रुति शास्त्र, वचन अविरुद्ध उचार्‌यो।
नीर खीर विवरन, परम हंसनि उर धार्‌यो।।
भगवत् कृपा प्रसाद, परमगति इहि तन पाई।
राजसिंहासन बैठि, ज्ञाति परतीति दिखाई।।
वर्णाश्रम अभिमान तजि, पद रज वन्दहिं जासु की।
सन्देह ग्रन्थि खण्डन निपुन, वानी विमल रैदास की।। ५९।।

रामानन्द जू कौ शिष्य ब्रह्मचारी रहे एक, गहे वृत्ति चूटकी की कहे तासौं बानिये।
करो अंगीकार सीधो कहि दस बीस बार, बरषे प्रबल धार तामें वापै आनिये।।
भोग कौं लगावें प्रभु ध्यान नहिं आवैं, अरे कैसें करि ल्यावैं जाइ पूछि नीच मानिये।
दियो शाप भारी बात सुनी न हमारी घटि, कुल में उतारी देह सोई याकों जानिये।। २५६।।

माता दूध प्यावे याकों छुयोऊ न भावे सुधि, आवे सब पाछिलि सो सेवा को प्रताप है।
भई नभ वानी रामानन्द मन जानी बड़ो, दण्ड दियो मानी वेगि आये चले आप है।।
दुखी माता–पिता देखि धाय लपटाय पाँय, कीजिये उपाय कियो शिष्य गयो पाप है।
स्तनपान कियो जियो लियो उन्हें ईश जानि, निपट अजानि फेरि भूले भयो ताप है।। २६०।।

बड़ेई रैदास हरिदासनि सौं प्रीति बढ़ी, पिता न सुहाई दई ठौर पिछवारहीं।
हुतो धन माल कन दियो हू न हाल तिया, पति सुख जाल अहो! किये जब न्यारहीं।।
गाँठें पगदासी कहूँ बात न प्रकासी ल्यावें, खाल करें जूती साधु–सन्त कौं सँभारही।
डारी एक छानि कियो सेवा को अस्थान रहें, चौड़े आप जानि बाँटि पावे यहि धारहीं।। २६१।।

सहे अति कष्ठ अंग हिये सुखसील रंग, आये हरिप्यारे लियो भक्त भेष धारिकैं।
कियो बहु मान खान–पान सो प्रसन्न ह्वै कै दीनों कह्यो पारस हैं राखियो सँभारिकै।।
मेरे धन राम कछु पाथर न सरै काम, दाम मैं न चाहौं, चाहौं डारौं तन वारिकैं।
राँपी एक सोनों कियो दियो करि कृपा राखो, राखो यहु छानि माँझ लैहौं जु निकारिकैं।। २६२।।

आये फिरि श्याम मास तेरह वितीत भये प्रीति करि बोले 'कहो पारस की रीति कौं'।
वाही ठौर लीजै मेरो मन न पतीजे अब, चाहौ सोई कीजै मैं तो पावत हौं भीति कौं।।
लैंके उठि गये नये कौतुक सो सुनो पावें, सेवत मुहर पाँच नित ही प्रतीति कौं।
सेवा हू करत डर लाग्यो निसि कह्यो हरि, छोड़ो अर आपनी औ राखो मेरी जीतिकौं।। २६३।।

मानि लई बात नई ठौर लै बनाय चाय, सन्तनि बसाय हरि मन्दिर चिनायो है।
विविध वितान तान गनौं जो प्रमान होइ, भोय गई भक्तिपुरी जग जस गायो है।।
दरसन आवैं लोग नाना विधि रागभोग, रोग भयो विप्रनि कौं तन सब छायो है।
बड़ेई खिलारी वे रहे हैं छान डारि करी, घर पै अँटारी फेरि द्विजन सिखायो है।। २६४।।

प्रीति रसरासि सौं रैदास हरि सेवत हैं, घर में दुराय लोक रंजनादि टारी है।
प्रेरि दिये ह्वदै जाय द्विजनि पुकारि करी, भरी सभा नृप आगे कह्यो मुख गारी है।।
जन कौं बुलाय समझाय न्याय प्रभु सौंपि, कीनौं जग जस साधु लीला मनुहारी है।
जिते प्रतिकूल मैं तो माने अनुकूल, 'यातें सन्तनि प्रभाव मनि कोठरी की तारी है'।। २६५।।

बसत चित्तौर माँझ रानी एक झाली नाम, नाम बिन कान खाली आनि शिष्य भई है।
संगहु तैं विप्र सुनि छिप्र तन आँच लागी, भागी मति नृप आगे भीर सब गई है।।
वैसेहिं सिंहासन पै आयकै विराजे प्रभु, पढ़े वेद वानी पै न आये यह नई है।
पतितपावन नाम कीजिये प्रगट आजु, गायो पद गोद आय बैठे भक्ति लई है।। २६६ ।।

गई घर झाली पुनि बोलिकै पठाये 'अहो! जैसे प्रतिपाली अब तैसें प्रतिपारिये'।
आपुहू पधारे उन बहु धन पट वारे विप्र सुनि पाँव धारे सीधौ दै निवारियै।।
करिकै रसोई द्विज भोजन करन बैठे द्वै–द्वै मधि एक यों रैदास कौं निहारियै।
देखि भई आँखै दीन भाषैं शिष्य भये लाखै स्वर्न को जनेऊ काढ्यो त्वचा कीनी न्यारिये।।२६७।।

श्रीकबीरजी

कबीर कानि राखी नहीं वर्णाश्रम षट्दरसनी।।
भक्ति विमुख जो धर्म सो अधरम करि गायो।
जोग जग्य व्रत दान भजन बिनु तुच्छ दिखायो।।
हिन्दू तुरक प्रमान रमैनी शबदी साखी।
पक्षपात नहिं वचन सबही के हित की भाखी।।
आरूढ़ दसा ह्वै जगत् पर मुखदेखी नाहिन भनी।
कबीर कानि राखी नहीं वर्णाश्रम षट्दरसनी।। ६० ।।

अति ही गम्भीर मति सरस कबीर हियो, लियो भक्तिभाव जाति–पाँति सब टारियै।
भई नभ वानी देह तिलक रमानी करौ, करौ गुरु रामानन्द गरें माल धारियै।।
देखैं नहिं मुख मेरो मानिकैं मलेछ मोकौं जात न्हान गंगा कही मग तन डारियै।
रजनी के शेष में आवेस सौं चलत आप परै पग राम कहै मन्त्र सो विचारिये।। २६८ ।।

कीनी वही बात माला–तिलक बनाय गात मानि उतपात मात शोर कियो भारियै।
पहुँची पुकार रामानन्द जू कैं पास आनि कही कोऊ पूछे तुम नाम लै उचारिये।
ल्यावौ जू पकरि वाको कब हम शिष्य कियो? ल्याये करि परदा में पूछी कहि डारिये।
राम–नाम मन्त्र यही लिख्यो सब तन्त्रनि में खोलि पट मिले साँचौ मत उर धारियै।। २६९ ।।

बुनैं तानौं–बानौं हिये राम मँडरानौं कहि कैसे कै बखानौं वह रीति कछु न्यारिये।
उतनोई करैं जामें तन निरवाह होय भोय गई औरै बात भक्ति लागी प्यारियै।।

ठाढ़े मण्डी माँझ पट बेचन लै जन कोऊ, आयो मोकौं देहु देह मेरी है उघारियै।
लग्यौ देन आधौ फारि आधे सौं न काम होत, दियो सब लियौ जोपै यहै उर धारियै।। २७०।।

तिया सुत मात मग देखैं भूखे आवैं कब? दबि रहे हाटनि में ल्यावैं कहा धाम कौं।
साँचो भक्तिभाव जानि निपट सुजान वे तौ, कृपा के निधान गृह सोच पर्‌यो श्याम कौ।।
बालद लै धाये दिन तीनि यों बिताये जब, आये घर डारि दई, दई हौ आराम कौं।
माता करै शोर कोऊ हाकिम मरोरि बाँधे, डारौ बिन जानैं सुत लेत नहीं दाम कौं।। २७१।।

गये जन दोय चार ढूँढ़िकै लिवाय ल्याये, आये घर सुनी बात जानी प्रभु पीर कौं।
रहे सुख पाय कृपा करी रघुराय दई, छिन में लुटाय सब बोलि भक्त भीर कौं।।
दियौ छोड़ि तानौं–बानौं सुख सरसानौं हिये, किये रोष धाये सुनि विप्र तजि धीर कौं।
क्यों रे तूँ जुलाहे ! धन पाये न बुलाये हमें? शूद्रनि कौं दियो जावौ कहैं यों कबीर कौं।।२७२।।

क्यौं जू उठि जाऊँ? कछु चोरी धन ल्याऊँ नित, हरिगुन गाऊँ कोऊ राह मैं न मारी है।
उनकौं लै मान कियो याही में अमान भयौ, दयो जोपै जाय हमें तौही तो जियारी है।।
'घर में तौ नाहीं मण्डी जाहिं तुम रहौ बैठे', नीठिकै छुटायौ पैडौ छिपे ब्याधि टारी है।
आये प्रभु आप द्रव्य ल्याये समाधान कियो, लियो सुख होय भक्त कीरति उजारी है।। २७३।।

ब्राह्मन कौ रूप धरि आये छिपि बैठे जहाँ, 'काहे कौं मरत भौंन जावौ जू कबीर के।
कोऊ जाय द्वार ताहि देत है अढ़ाई सेर, बेर जिन लावौ चले जावौ यों बहीर के'।।
आये घर माँझ देखि निपट मगन भये, नये–नये कौतुक ये कैसें रहै धीर के।
वारमुखी लई संग मानौ वाही रंग रँगे, जानौ यह बात करी डर अति भीर के।। २७४।।

सन्त देखि डरे सुख भयौई असन्तनि के, तब तौ विचार मन माँझ और आयो है।
बैठी नृप सभा जहाँ गये पै न मान कियौ, कियौ एक चोज उठि जल ढरकायो है।।
राजा जिय सोच पर्‌यो कर्‌यो कहा? कह्यो तब, जगन्नाथ पण्डा पाँव जरत बचायो है।
सुनि अचरज भरे नृप ने पठाये नर ल्याये सुधि कही 'अजू साँच ही सुनायो है'।। २७५।।

कही राजा रानी सौं 'जु बात वह साँची भई, आँच लागी हिये अब कहो कहा कीजियै?'।
'चले ही बनत चले' सीस तृण बोझ भारी, गरे सो कुल्हारी बाँधि तिया संग भीजियै।।
निकसे बजार ह्वैकै डारि दई लोकलाज, कियौ मैं अकाज छिन–छिन तन छीजियै।
दूर ते कबीर देखि ह्वै गये अधीर महा, आये उठि आगे कह्यौ डारि मति रीझियै।। २७६।।

देखिकै प्रभाव फेरि उपज्यौ अभाव द्विज, आयौ पादसाह सो सिकन्दर सुनाँव है।
विमुख समूह संग माता हूँ मिलाय लई, जायकै पुकारे 'जू दुखायौ सब गाँव है'।।

ल्यावौ रे ! पकरि वाको देखौं ये मकर कैसो, अकर मिटाऊँ गाढ़े जकर तनाव है।
आनि ठाढ़े किये काजी कहत 'सलाम करौ', जानै न सलाम जानै राम गाढ़े पाँव है।। २७७।।

बाँधिकै जंजीर गंगा नीर माँझ वोरि दिये, जिये तीर ठाढ़े कहै 'जन्त्र–मन्त्र आवंही'।
लकरीन माँझ डारि अगिनि प्रजारि दई, नई मानो भई देह कंचन लजावही।।
विफल उपाय भये तऊ नहीं आय नये, तब मतवारो हाथी आनिकै झुकावही।
आवत न ढिंग औ चिघारि हारि भाजि जाय, आप आगे सिंह रूप बैठे सो भगावहीं।। २७८।।

देख्यो बादसाह भाव कूदि परे गहे पाँव, देखि करामात मात भये सब लोग हैं।
'प्रभु पै बचाय लीजै हमें न गजब कीजै, दीजै जोई चाहो गाँव देश नाना भोग हैं'।।
'चाहैं एक राम जाकौं जपैं आठो याम और, दाम सौं न काम जामें भरे कोटि रोग है'।
आये घर जीति साधु मिले करि प्रीति जिन्हें, हरि की प्रतीति वेई गायवे के जोग है।। २७६।।

होय के खिसाने द्विज निज चारि विप्रन के, मूड़नि मुड़ायो भेष सुन्दर बनाये है।
दूर–दूर गाँवनि में नावनि को पूँछि–पूँछि, नाम लै कबीर जू कौ झूठैं न्योति आये है।
आये सब साधु सुनि एतो दुरि गये कहूँ, चहुँ दिसि सन्तनि के फिरैं हरि धाये हैं।
उनहीं को रूप धरि न्यारी–न्यारी ठौर बैठे, एऊ मिलि गये नीके पोषिकै रिझाये हैं।। २८०।।

आई अपछरा छारिवे के लिये भेष किये, हिये देखि गाढ़ो फिरि गई नहीं लागी है।
चतुर्भुजरूप प्रभु आनिकैं प्रगट कियो, लियो फल नैननि कौं बड़ो बड़भागी है।।
सीस धरै हाथ तन साथ मेरे धाम आवौ, गावौ गुन रहौ जौलौं तेरी मति पागी हैं।
मगह में जाय भक्तिभाव को दिखाय बहु, फूलनि मँगाय पौढ़ि मिल्यौ हरि रागी है।। २८१।।

मास परायण बाहरवाँ विश्राम

श्रीपीपाजी की कथा

पीपा प्रताप जग वासना, नाहर कौं उपदेश दियौ।।
प्रथम भवानी भक्त, मुक्ति माँगन कौं धायौ।
सत्य कह्यो तिहिं शक्ति, सुदृढ़ हरिशरण बतायौ।।
श्रीरामानन्द पद पाइ, भयौ अति भक्ति की सीवाँ।
गुण असंख्य निर्मोल, सन्त धरि राखत ग्रीवाँ।।
परसि प्रणाली सरस भई, सकल विश्व मंगल कियौ।
पीपा प्रताप जग वासना नाहर कौं उपदेश दियौ।। ६१।।

गागरौनगढ़ बढ़ पीपा नाम राजा भयो, लयो पन देवी सेवा रंग चढ़्यो भारियै।
आये पुर साधु सीधौ दियौ जोई सोई लियो, कियो मन माँझ प्रभु ! बुद्धि फेरि डारियै।।
सोयो निसि रोयो देखि सुपनो बेहाल अति, प्रेत विकराल देह धरिकै पछारियै।
अब न सुहाय कछू वहू पाँय परि गई, नई रीति भई वाहि भक्ति लागी प्यारियै।। २८२।।

पूछ्यो हरि पाइवे कौ मग जब देवी कही, 'सही रामानन्द गुरु करि प्रभु पाइयै'।
लोग जानै बौरौ भयौ गयौ यह काशीपुरी, फुरी मति अति आये जहाँ हरि गाइयै।।
द्वार में न जान देत आज्ञा ईश लेत कही, राजा सौं न हेत सुनि सबही लुटाइयै।
कह्यौ 'कुँवा गिरौ' चले गिरन प्रसन्न हिये, जिये सुख पायौ ल्याये दरस दिखाइयै।। २८३।।

किये शिष्य कृपा करी धरी हरिभक्ति हृदे, कही 'अब जावौ गृह सेवा साधु कीजियै।
बितये बरष जब सरस टहल जानि, सन्त सुख मानि आवैं घर मधि लीजियै'।।
आये आज्ञा पाय धाम कीन्हीं अभिराम रीति, प्रीति कौ न पारावार चीठी लिखि दीजियै।
'हूजियै कृपाल वही बात प्रतिपाल करौ', चले जुग बीस जन संग मति रीझियै।। २८४।।

कबीर रैदास आदि दास सब संग लिये, आये पुर पास पीपा पालकी लै आयो है।
करी साष्टांग न्यारी–न्यारी बिनै साधुन को, धन को लुटाय सो समाज पधरायौ है।।
जैसी कीन्हीं सेवा बहु मेवा नाना राग भोग, वानी के न जोग भाग कापै जात गायौ है।
जानी भक्ति रीति 'घर रहौ कै अतीत होहु', करिकै प्रतीति गुरु पग लगि धायौ है।। २८५।।

लागी संग रानी दस दोय कही मानी नहीं, कष्ट को बतावैं डरपावैं मन लावहीं।
कामरीन फारि मधि मेखला पहिरि लेवो, देवो डारि आभरन जोपै नहीं भावहीं।।
काहू पै न होय दियो रोय भोय भक्ति आई, छोटी नाम सीता गरें डारी न लजावहीं।
'यहू दूर डारौ करौ तन को उघारौ' कियौ, द्रव्यौ रामानन्द हियौ पीपा न सुहावहीं।। २८६।।

जोपै यापै कृपा करी दीजै काहू संग करि, मेरे नहीं रंग यामें कही बार–बार है।
सौंह को दिवाय दई लई तब कर धरि, चले ढरि विप्र एक छोड़ै न विचार है।।
खायौ विष ज्यायौ पुनि फेरिकैं पठायौ सब, आयौ यों समाज द्वारावती सुखसार है।
रहे कोऊ दिन आज्ञा माँगी इन रहिवे की, कूदे सिन्धु माँझ चाह उपजी अपार है।। २८७।।

आये आगे लैन आप दिये हैं पठाय जन, देखि द्वारावती कृष्ण मिले बहु भायकै।
महल–महल माँझ चहल–पहल लखी, रहे दिन सात सुख सकै कौन गायकै।।
आज्ञा दई जाइवे की जाइवौ न चाहैं हिये, पिये वह रूप 'देखौ मोहीं कौं जु जायकै'।
भक्त बूड़ि गयो यह बड़ोई कलंक भयौ, मेटौ तम अंक शंक गही अकुलायकै।। २८८।।

चले पहुँचायवे को प्रीति के अधीन आप, बिन जल मीन जैसे ऐसे फिरि आये है।
देखि नई बात गात सूखे पट भीजे हिये, लिये पहिचानि आनि पग लपटाये है।।
दई लैकै छाप पाप जगत् के दूरि करौ, 'ढरौ कहूँ और' कहि सीता समझाये हैं।
छठेई मिलान वन में पठान भेंट भई, लई छीनि तिया कियौ चैन प्रभु धाये हैं।। २८६।।

अभूँ लगि जाओ घर कैसे–कैसे आवैं डर, बोली 'हरि ! जानियै न भाव पै न आयो है'।
लेत हौं परीच्छा मैं तो जानौं तेरी सिच्छा ऐपै, सुनि दृढ़ बात कान अति सुख पायो है।।
चले मग दूसरे सु तामें एक सिंह रहै, आयौ बास लेत शिष्य कियो समझायो है।
आये और गाँव सेषसाई प्रभु नांव रहै, करे बाँस हरे ढरे चीधर सुहायो है।। २६०।।

दोऊ तिया पति देखैं आये भागवत ऐपै, घर की कुगति रति साँची लै दिखाई है।
लहँगा उतारि बेचि दियौ ताकौ सीधौ लियौ, 'करौ अजू! पाक' बधू कोठी में दुराई है।।
करी लै रसोई सोई भोग लगि बैठे कह्यौ आवौ मिलि दोई कही पाछे सीथ भाई है।
वाहू कौ बुलावौ ल्यावौ आनिकै जिमांवौ, तब सीता गई ठौर जाइ नगन लखाई है।। २६१।।

पूछैं 'कहो बात ये उघारे क्यों है गात', कही 'ऐसे ही बिहात साधुसेवा मन भाई है'।
'आवैं जब सन्त सुख होत है अनन्त तन, ढक्यौं कै उघारौ? कहा चरचा चलाई है'।।
जानि गई रीति प्रीति देखी एक इनहीं, में 'हमहूँ कहावैं ऐपै छटाहूँ न पाई है'।
दियौ पट आधौ फारि गहिकै निकारि लई, भई सुख सैल पाछैं पीपा सौं सुनाई है।। २६२।।

'करैं वेश्याकर्म अब धर्म है हमारौ यही', कही जाय बैठी जहाँ नाजनि की ढेरी है।
घिरि आये लोग जिन्हें नैंननि कौ रोग, लखि दूर भयो शोक नेकु नीके हूँ न हेरी है।।
कहैं तुम कौन? 'बारमुखी नहीं भौन संग, भरुवा सु गहैं मौन सुनि परी बेरी है।
करी अन्नरासि आगे मुहर रुपैया पागे, पठै दई चीधर के तबही निबेरी है।। २६३।।

आज्ञा माँगि टोड़े आये कभूँ भूखे कभूँ घाये, औचक ही दाम पाये गयो हो स्नान को।
मुहरनि भाँड़ो भूमि गाड़ो देखि छाँडि आयौं, कही निसि तिया बोली 'जावौ सर आन को'।।
चोर चाहैं चोरी करैं ढरे सुनि वाही ओर, देखैं जो उघारि साँप डारैं हतै प्रान को।
ऐसे आय परीं गनी सात सत बीस भईं, तोलै पाँच बाँट करै एक के प्रमान को।। २६४।।

जोई आवै द्वार ताहि देत हैं अहार और, बोलिकै अनन्त सन्त भोजन करायो है।
बीत दिन तीन धन ख्वाय प्याय छीन कियौ, लियो सुनि नाम नृप देखिवे को आयो है।।
देखिकै प्रसन्न भयौ नयौ 'देवौ दीच्छा मोहि', दीच्छा है अतीत करैं आप सो सुहायो है।
'चाहो सोई करौं ह्वै कृपाल मोकौं ढरौ', 'अजू! आनि सम्पति औ रानी जाइ ल्यायो है'।।२६५।।

करिकै परीच्छा दई दीच्छा संग रानी दई, भई हमारी करौ परदा न सन्त सौं।
दीयौ धन घोरा कछू राख्यो दै निहोरा भूप, मान तन छोरा बड़ौ मान्यौं जीव जन्त सौं।।
सुनि जरि बरि गये भाई सेनसूरज के, ऊरज प्रताप कहा कहैं सीताकन्त सौं।
आयौ बनिजारौ मोल लियौ चाहैं खैलनि कौं, दियौ बहकाय कहौ पीपा जू अनन्त सौं।।२६६।।

बोल्यौ बनिजारौ 'दाम खोलि खैला दीजियै जू!' 'लीजियै जू!' आय गाँव चरन पठाये हैं।
गये उठि पाछे बोलि सन्तनि महोच्छौ कियौ, आयौ वाही समैं कही लेहु मन भाये है।।
दरसन करि हिये भक्तिभाव भर्‌यौ आनि, आनिकै वसन सब साधु पहिराये हैं।
और दिन न्हान गये घोड़ा चढ़ि छोड़ि दियौ, लियौ बाँध्यौ दुष्टन ने आयौ मानौ ल्याये है।। २६७।।

गये हे बुलाये आप पाछे घर सन्त आये, अन्न कछू नाहिं कहूँ जाय करि ल्याइयै।
विषई बनिक एक देखिकै बुलाइ लई, दई सब सौंज कही 'सही निसि आइयै'।।
भोजन करत माँझ पीपा जू पधारे, पूछी वारे तन प्रान जब कहिकै सुनाइयै।
करिकै सिंगार सीता चली झुकि मेह आयौ, काँधे पै चढ़ायौ वपु बनिया रिझाइयै।। २६८।।

हाट पै उतार दई द्वार आप बैठे रहे, चहे सूके पग माता! कैसे करि आई हौ?।
स्वामी जू लिवाय ल्याये कहाँ हैं? निहारौ जाय, आय पाँय पर्‌यो डर्‌यो राखौ सुखदाई हौ।।
मानौ जिन शंक काज कीजियै निशंक धन, दियौ बिन अंक जोपै लरैं मरैं भाई हौ।
मर्‌यौ लाज भार चाहै धसौं भूमि फार दृग, बहै नीर धार देखि दई दीच्छा पाई हौ।। २६६।।

चलत–चलत बात नृपति श्रवन परी, भरी सभा विप्र कहैं बड़ी विपरीति है।
भूप मन आई यह निपट घटाई होत, भक्ति सरसाई नहीं जानै घटी प्रीति है।।
चले पीपा बोध दैन द्वार ही तैं सुधि दई, लई सुनि कही आवौं करौं सेवा रीति है।
'बड़ौ मूढ़ राजा मोजा गाँठै बैठ्यौ मोची घर', सुनि दौरि आयो रहे ठाढ़े कौन नीति है।।३००।।

हुती घर माँझ बाँझ रानी एक रूपवती, माँगी 'वही ल्यावौ वेगि' चल्यौ सोच भारी है।
डगमग पाँव धरै पीपा सिंह रूप करै, ठाढ़ौ देखि डरै इत आवै आप ख्वारी है।।
जाय तौ विलाय गयौ तिया ढिंग सुत नयौ, नयो भूमि पर 'कला जानी न तिहारी है'।
प्रगट्यौ सरूप निज खीजिकै प्रसंग कह्यौ, 'कहाँ वह रंग?' शिष्य भयो लाज टारी है।।३०१।।

कियौ उपदेस नृप हृदै में प्रवेस कियौ, लियौ वही पन आप आये निज धाम है।
बोल्यौ एक नाम साधु 'एक निसि देहु तिया', 'लेहु' कही भागौ संग भागी सीता बाम है।।
प्रात भये चलैं नाहिं 'रैन ही की आज्ञा प्रभु', चल्यौ हारि आगे घर–घर देखो ग्राम है।
आयौ वाही ठौर 'चलो माता! पहुँचाय आवौ', आय गहे पाँव भाव भयो गयो काम है।। ३०२।।

विषई कुटिल चारि साधुभेष लियौ धारि, कीनी मनोहारि कही 'तिया निज दीजियै'।
करिकै सिंगार सीता कोठे माँझ बैठीं जाय, चाहैं मग आतुर ह्वै अजू! जाहु लीजियै।।
गये जब द्वार उठी नाहरी सुफारिवे कौं, फारैं नहीं वानौ जानि आय अति खीजियै।
अपनौ विचारो हियो कियो भोग भावना कौ, मानि साँच भये शिष्य प्रभु मति धीजियै।।३०३।।

(१) गूजरी कौं धन दियौ (२) पियौं दही सन्तनि नैं, (३) ब्राह्मन को भक्त कियौ (४) देवी दी निकारिकै।(५) तेली कौं जिवायौ (६) भैंसि चोरनि पै फेरि ल्यायो (७) गाड़ी भरि गेहूँ (८) तन पाँच ठौर जारिकै।।(९) कागद लै कोरो कर्‌यौ (१०) बनियाँ को शोक हर्‌यौ, (११) भर्‌यो घर त्यागि (१२) डारी हत्या हूँ उतारिकै।(१३) राजा कौं औसेर भई (१४) सन्त कौं जु विभौ दई, (१५) लई चीठी मानि गये श्रीरंग उदारिकै।।३०४।।

सप्ताह परायण तीसरा विश्राम

(१) श्रीरंग के चेत धर्‌यौ (२) तिया हिय भाव भर्‌यौ, (३) ब्राह्मन को शोक हर्‌यो राजा पै पुजायकै।(४) चँदवा बुझाय लियौ (५) तेली को लै बैल दियौ, (६) दियौ पुनि घर माँझ भयौ सुख आयकै।।(७) बड़ोई अकाल पर्‌यौ जीव दुख दूर कर्‌यौ, पर्‌यौ भूमि गर्भ धन पायौ दै लुटायकै।(८) अति विसतार लियौ कियौ है विचार, (९) यह सुनै एक बार फेरि भूलै नहीं गायकै।।३०४।।

मास परायण तेहरवा विश्राम

श्रीधनाजी

धन्य धना के भजन को, बिनहीं बीज अंकुर भयौ।।
घर आये हरिदास, तिनहिं गोधूम खवाये।
तात मात डर खेत, थोथ लांगूल चलाये।।
आस–पास कृषिकार, खेत की करत बड़ाई।
भक्त भजे की रीति, प्रगट परतीति जु पाई।।
अचरज मानत जगत में, कहुँ निपुज्यौ कहुँवे बयौ।
धन्य धना के भजन को, बिनहिं बीज अंकुर भयौ।।६२।।

खेत की तौ बात कही प्रगट कवित्त माँझ, और एक सुनौ भई प्रथम जु रीति है।
आयौ साधु विप्र धाम सेवा अभिराम करै, ढर्‌यौ ढिंग आय कही 'मोहूँ दीजैं प्रीति है'।।
पाथर लै दियौ अति सावधान कियौ छाती, माँझ लाय जियौ सेवै जैसी नेह नीति है।
रोटी धरि आगे आँखि मूँदि लियौ परदा कै, छियौ नहीं टूक देखि भई बड़ी भीति है।।३०६।।

बार–बार पाँव परै अरै भूख–प्यास तजी, धरै हिये साँचौ भाव पाई प्रभु प्यारियै।
छाक नित आवै नीके भोग कौ लगावै जोई, छोड़ैं सोई पावैं प्रीति रीति कछु न्यारियै।।
जाकौ कोऊ खाय ताकी टहल बनाय, करै ल्यावत चराय गाय हरि उर धारियै।
आयौ फिरि विप्र नेह खोजहूँ न पायौ कहूँ, सरसायौ बातै लै दिखायौ श्याम ज्यारियै।। ३०७।।

द्विज लखि गायनि में चायनि समाज नाहिं, भायनि की चोट दृग लागी नीर झरी है।
जायकै भवन सीतारवन प्रसन्न करैं, बड़े भाग मानि प्रीति देखी जैसी करी है।।
धना को दयाल ह्वै कै आज्ञा प्रभु दई ढरौ, करौ गुरु रामानन्द भक्ति मति हरी है।
भये शिष्य जाय आप छाती सौं लगाय लिये, किये गृह काम सबै सुनी जैसी धरी है।। ३०८।।

श्रीसेनजी

विदित बात जग जानियै हरि भये सहायक सेन के।।
प्रभू दास के काज, रूप नापित कौ कीनौं।
छिप्र छुड़हरी गही, पानि दर्पन तँह लीनौ।।
तादृश ह्वै तिहिं काल, भूप के तेल लगायौ।
उलटि राव भयो शिष्य, प्रगट परचौ जब पायौ।।
श्याम रहत सनमुख सदा ज्यौं बच्छा हित धेन के।
विदित बात जग जानियै हरि भये सहायक सेन के।। ६३।।

बाँधौगढ़ वास हरि साधु सेवा आस लगी, पगी मति अति प्रभु परचौ दिखायौ है।
करि नित्त नेम चल्यौ भूप कौं लगाऊँ तेल, भयौ मग मेल सन्त फिरि घर आयौ है।।
टहल बनाय करी नृप की न शंक धरी, धरि उर श्याम जाय भूपति रिझायौ है।
पाछे सेन गयौ पन्थ पूछै हिये रंग छायौ, भयौ अचरज राजा वचन सुनायौ है।। ३०९।।

फेरि कैसे आये? सुनि अति ही लजाये कही, 'सदन पधारे सन्त भई यों अबार है।
आवन न पायौं वाही सेवा अरुझायौं', राजा दौरि सिर नायौ देखि महिमा अपार है।।
भीजि गयौ हियौ दास भाव दृढ़ लियौ पियौ, भक्तिरस शिष्य ह्वै कै जान्यौ सोई सार है।
अबलौं हूँ प्रीति सुत नाती वही रीति चलैं, होय जौ प्रतीति प्रभु पावै निरधार है।। ३१०।।

श्रीसुखानन्दजी

भक्ति दान भय हरन भुज, सुखानन्द पारस परस।।
सुखसागर की छाप, राग गौरी रुचि न्यारी।
पद रचना गुरु मन्त्र, मनौं आगम अनुहारी।।
निसिदिन प्रेम प्रवाह, द्रवत भूधर ज्यौं निर्झर।
हरिगुन कथा अगाध, भाल राजत लीला भर।।
संत कंज पोषन विमल, अति पीयूष सरसी सरस।
भक्ति दान भय हरन भुज, सुखानन्द पारस परस।। ६४।।

श्रीसुरसुरानन्दजी

महिमा महा प्रसाद की, सुरसुरानन्द साँची करी।।
एक समै अध्वा चलत, बरा वाक् छल पाये।
देखा–देखी शिष्य, तिनहुँ पाछैं ते खाये।।
तिन पर स्वामी खिजे, वमन करि बिन विश्वासी।
तिन तैसें परतच्छ, भूमि पर कीनी रासी।।
सुरसुरी सुवर पुनि उद्गले, पुहुप रेनु तुलसी हरी।
महिमा महा प्रसाद की सुरसुरानन्द साँची करी।। ६५।।

श्रीसुरसुरीजी

महासती सत ऊपमा, त्यौं सत्त सुरसुरी कौ रह्यौ।।
अति उदार दम्पति, त्यागि गृह वन को गमने।
अचरज भयो तँह एक, सन्त सुनि जिन हो बिमने।।
बैठे हुते एकान्त, आय असुरनि दुख दीयौ।
सुमिरे सारँगपाणि, रूप नरहरि कौ कीयौ।।
सुरसुरानन्द की घरनि कौ सत राख्यौ नरसिंह जह्यौ।
महासती सत ऊपमा त्यौं सत्त सुरसुरी कौ रह्यौ।। ६६।।

नवाह परायण चतुर्थ विश्राम

श्रीनरहरियानन्दजी

निपट नरहरियानन्द कौ, करदाता दुर्गा भई।।
घर झर लकरी नाहिं, शक्ति कौ सदन उदारैं।
शक्ति भक्त सौं बोलि, दिनहिं प्रति बरही डारैं।।
लगी परोसी हौंस, भवानी भ्वैंसो मारैं।
बदले की बेगारि, मूँड़ वाके सिर डारैं।।
भरत प्रसंग ज्यौं कालिका, लडू देखि तन में तई।
निपट नरहरियानन्द कौ करदाता दुर्गा भई।। ६७।।

श्रीपद्मनाभजी

कबीर कृपा तें परमतत्त्व, पद्मनाभ परचौ लह्यौ।।
नाम महानिधि मन्त्र, नाम ही सेवा पूजा।
जप तप तीरथ नाम, नाम बिन और न दूजा।।
नाम प्रीति नाम बैर, नाम कहि नामी बोलै।
नाम अजामिल साखि, नाम बन्धन तें खोलै।।
नाम अधिक रघुनाथ तें, राम निकट हनुमत् कह्यौ।
कबीर कृपा तैं परमतत्त्व पद्मनाभ परचौ लह्यौ।। ६८।।

काशीवासी साहु भयो कोढ़ी सो निवाह कैसे, परि गये कृमि चल्यौ बूड़िवे को भीर है।
निकसे पद्म आय पूछि ढ़िंग जाय कही, गही देह खोलौ गुन न्हाय गंगा नीर है।।
राम–नाम कहै बेर तीन में नवीन होत, भयौई नवीन कियौ भक्त मति धीर है।
गयौ गुरु पास तुम महिमा न जानी अहो ! नामाभास काम करै कही यों कबीर है।। ३११।।

श्रीतत्वाजी, श्रीजीवाजी

तत्वा जीवा दक्षिण देश, वंशोद्धर राजत विदित।।
भक्ति सुधा जल समुद्र, भये बेलावलि गाढ़ी।
पूरवजा ज्यौं रीति, प्रीति उत्तरोत्तर बाढ़ी।।

रघुकुल सदृश सुभाव, श्रेष्ठ गुण सदा धर्मरत।
सूर धीर ऊदार, दया पर दक्ष अनन्य व्रत।।
पद्‌मखण्ड पद्‌मा पद्धति, प्रफुलित कर सविता उदित।
तत्वा जीवा दक्षिण देश, वंशोद्धर राजत विदित।। ६६।।

तत्वा जीवा भाई उभै विप्र साधु सेवा पन, मन धरी बात तातैं शिष्य नहीं भये हैं।
गाड़्यौ एक ठूंठ द्वार होय अहो! हरी डार, सन्त चरनामृत को लैकै डारि दये है।।
जबही हरित देखैं ताकौं गुरु करिं लेखैं, आये श्रीकबीर पूजी आस पाँव लये हैं।
नीठ–नीठ नाम दियौ, दियौ परिचाय धाम, काम कोऊ होय जोपै आवौ कहि गये हैं।। ३१२।।

कानाकानी भई द्विज जानी जाति गई पाँति, न्यारी करि दई कोऊ बेटी नहीं लेत है।
चल्यो एक काशी जहाँ बसत कबीर धीर, जाय कही पीर जब पूछ्यौ कौन हेत है।।
दोऊ तुम भाई करौ आपु में सगाई होय, भक्ति सरसाई न घटाई चित चेत है।
आय वहै करी परी ज्ञाति खरभरी कहैं, कहा उर धरी कछू मतिहूँ अचेत है।। ३१३।।

'करैं यही बात हमें और न सुहात' आये, सबै हा–हा खात यह छाँड़ि हठ दीजियै।
पूछिवे कौं फेरि गये करौ ब्याह जोपै नये, दण्ड करि नाना भाँति भक्ति दृढ़ कीजियै।।
तब दई सुता लई पाँति में प्रसन्न ह्वै कै, पाँति हरि भक्तनि सौं सदा मति भीजियै।
विमुख समूह देखि सबही बड़ाई करैं, धरैं हिय माँझ कहैं पन पर रीझियै।। ३१४।।

श्रीमाधवदासजी

बिनै व्यास मनो प्रगट ह्वै, जग को हित माधौ कियौ।।
पहिले वेद विभाग, कथित पुरान अष्टादस।
भारतादि भागौत, मथित उद्धार्‌यौ हरि जस।।
अब सोधे सब ग्रन्थ, अर्थ भाषा विस्तार्‌यौ।
लीला जै–जै जैति, गाय भवपार उतार्‌यौ।।
जगन्नाथ इष्ट वैराग्य सींव, करुणा रस भीज्यो हियौ।
बिनै व्यास मनो प्रगट ह्वै जग को हित माधौ कियौ।।७०।।

माधौदास द्विज निज तिया तन त्याग कियौ, लियौ इन जानि जग ऐसोई व्योहार है।
सुत की बढ़नि जोग लियें नित चाहत हो, भई यह औरैं लै दिखाई करतार है।।
ताते तजि दियौ गेह वेई अब पालैं देह, करै अभिमान सोई जानिये गँवार है।
आये नीलगिरि धाम रहे गिरिसिन्धु तीर, अति मतिधीर भूख–प्यास न विचार है।। ३१५।।

भये दिन तीन एतो भूख के अधीन, नाहिं रहैं हरि लीन प्रभु सोच पर्‍यो भारियै।
दियौ सैनभोग आप लक्ष्मी जू लै पधारीं, हाटक की थारी झनझन पाँव धारियै।।
बैठे हैं कुटी में पीठ दिये हिये रूप रँगे, बीजुरी–सी कौंधि गई नीके न निहारियै।
देखि सो प्रसाद बड़ौ मन अह्लाद भयौ, लयौ भाग मानि पात्र धर्‍योई विचारियै।। ३१६।।

खोलैं जो किवार थार देखियै न सोच पर्‍यो, कर्‍यो लै जतन ढूँढ़ि वाही ठौर पायौ है।
ल्याये बाँधि मारी बेंत धारी जगन्नाथदेव, भेव जब जान्यौ पीठ चिह्न दरसायौ है।।
कही पुनि आप मैं ही दियौ जब लियौ याने, माने अपराध पाँव गहिकै छिमायौ है।
भई यों प्रसिद्ध बात कीरति न माँत कहूँ, सुनिकै लजात साधु शील यह गायौ है।। ३१७।।

देखत सरूप सुधि तन की बिसरी जात, रहि जात मन्दिर में जानै नहीं कोई है।
लग्यौ सीत गात सुनौ बात प्रभु काँपि उठे, दई सकलात आनि प्रीति हिये भोई है।।
लागे जब बेगि–बेगि जाय परे सिन्धु तीर, चाहैं जब नीर लिये ठाढ़े देहँ धोई है।
करिकै विचार और निहारि कही जानी मैं तो, देत हौ अपार दुख ईशता लै खोई है।। ३१८।।

'कहा करौं अहो! मोपै रहो नहीं जात नेकु', 'मेटौ विथा गात' 'मोकौं विथा बहु भारी है'।
रहै भाग शेष और तन में प्रवेस करैं, ताते नहीं दूर करौं ईशता लै टारी है।।
बहू बात साँच याकी गाँस एक और सुनौ, साधु को न हँसै कोऊ यह मैं विचारी है।
देखत ही देखत में पीड़ा सो विलाय गई, नई–नई कथा कहि भक्ति विसतारी है।। ३१९।।

कीरति अभंग देखि भिक्षा कौ अरम्भ कियौ, दियौ काहू बाई पोता खीजत चलायकै।
देवो गुन लियौ नीके जल सौं प्रछाल करि, करी दिव्य बाती दई दिये में बरायकै।।
मन्दिर उँजारौ भयौ हिये को अन्ध्यारौ गयौ, गयो फेरि देखन कौं परी पाँय आयकै।
ऐसे हैं दयाल दुख देत में निहाल करैं, करैं लै जे सेवा ताको सकै कौन गायकै।। ३२०।।

पण्डित प्रबल दिग्विजै करि आयौ आय, वचन सुनायौ 'जू ! विचार मोसौं कीजियै'।
दई लिखि हारि काशी जायकै निहारि पत्र, भयौ अति ख्वार लिखी जीति वाकी खीजियै।।
फेरि मिलि माधौ जू कौं वैसे ही हरायौ एक, खर कौ मँगायौ कही 'चढ़ौ जब धीजियै'।
बोल्यौ 'जूती बाँधो कान' गयो सुनि न्हान आन, जगन्नाथ जीते लै चढ़ायौ वाको रीझियै।। ३२१।।

ब्रज ही की लीला सब गावैं नीलाचल माँझ, मन भई चाह 'जाय नैंननि निहारियै'।
चले वृन्दावन मग लग एक गाँव जहाँ, बाई भक्त भोजन कौं ल्याई चाव भारियै।।
बैठे ये प्रसाद लेत, लेत दृग भरि 'अहो ! कहो कहा बात दुख हिये को उघारियै'।
'साँवरौ कुँवर यह कौन को भुराय ल्याये? माय कैसें जीवै' सुनि मति लै बिसारियै।। ३२२।।

चले और गाँव जहाँ महाजन भक्त रहै, गहे मन माँझ आगे विनती हूँ करी है।
गये वाके घर वह गयौ काहू और घर, भाय भरी तिया आनि पाँयन में परी है।।
ऊपर महन्त कही 'अजू एक सन्त आये' 'इहाँ तौ समाई नाहिं' आई अरबरी है।
कीजिये रसोई 'जोई सिद्ध सोई ल्यावो', दूध नीके कै पिवायो नाम माधौ आस भरी है।।३२३।।

गये उठि पाछे भक्त आयो सो सुनायौ नाम सुनि अभिराम दौरे संग ही महन्त है।
लिये जाय पाँय लपटाय सुखपाय मिले, झिले घर माँझ 'तिया धन्य तो सो कन्त है'।।
सन्तपति बोले 'मैं अनन्त अपराध किये ! जिये अब' कही 'सेवौ सीत मानि जन्त है'।
आवत मिलाप होय यही राखौ बात गोय, आये वृन्दावन जहाँ सदाई बसन्त है।। ३२४।।

देखि–देखि वृन्दावन मन में मगन भये, गये श्रीबिहारी जू के चना तहाँ पाये है।
कहि रह्यो द्वारपाल नेकु में प्रसाद लाल, यमुना रसाल तट भोग कौं लगाये है।।
नाना विधि पाक धरैं स्वामी आप ध्यान करैं, बोले हरि भावैं नाहिं वेई लै खवाये है।
पूछ्यो सो जनायौ ढूँढ़ि ल्यायौ आगे गायौ, सब तुम तौ उदार हास रस समझाये है।। ३२५।।

गये ब्रज देखिवे कौं भाण्डीर में "खेम" रहै, निसि को दुराय खाय कृमि लै दिखाये हैं।
लीला सुनिवे कौं हरियाने गाँव रहे, जाय गोबरहूँ पाथि पुनि नीलाचल धाये हैं।।
घर हूँ को आये सुत सुखी सुनि माता वानी, मारग में स्वप्न देकै बनिक मिलाये हैं।
याही विधि नाना भाँति चरित अपार जानौ, जिते कछु जाने तिते गायकै सुनाये हैं।। ३२६।।

मास परायण चौदह विश्राम

श्रीरघुनाथदास गोसाँईंजी

(श्री) रघुनाथ गुसाँई गरुड़ ज्यौं, सिंहपौरि ठाढ़े रहैं।।
सीत लगत सकलात, विदित पुरुषोत्तम दीनी।
शौच गये हरि संग, कृत्य सेवक की कीनी।।
जगन्नाथ पद प्रीति, निरन्तर करत खवासी।
भगवत् धर्म प्रधान, प्रसन्न नीलाचल वासी।।

उत्कल देश उड़ीसा नगर बैनतेय सब कोउ कहैं।
(श्री) रघुनाथ गुसाँईं गरुड़ ज्यौं, सिंहपौरि ठाढ़े रहैं।।७१।।

अति अनुराग घर सम्पति सौं रह्यो पागि, ताहू करि त्याग कियौ नीलाचल वास है।
धन को पठावैं पिता ऐपै नहीं भावै कछू, देखिवो महाप्रभुजी कौ पास है।।
मन्दिर के द्वार रूप सुन्दर निहार्यो करैं, लग्यौ सीत गात सकलात दई दास है।
शौच संग जायवे की रीति कौं प्रमान वहै, वैसे सब जानौ माधौदास सुखरास है।। ३२७।।

महाप्रभु कृष्ण चैतन्य जू की आज्ञा पाइ, आये वृन्दावन राधाकुण्ड वास कियौ है।
रहनि कहनि रूप चहनि न कहि सकै, थकैं सुनि तन भाव रूप करि लियौ है।।
मानसी में पायौ दूध–भात सरसात हिये, लिये रस नारी देखि बैद कहि दियौ है।
कहाँ लौं प्रताप कहौं आप ही समझि लेहु, देहु वही रीझि जासौं आगे पाय जियौ है।। ३२८।।

श्रीनित्यानन्दजी, श्रीकृष्णचैतन्यजी

नित्यानन्द (कृष्ण) चैतन्य की, भक्ति दसों दिशि विस्तरी।।
गौड़ देश पाखण्ड, मेटि कियौ भजन परायण।
करुणासिन्धु कृतज्ञ, भये अगतिन गति दायन।।
दसधा रस आक्रान्ति, महत् जन चरण उपासे।
नाम लेत निहपाप, दुरित तिहिं नर के नासे।।
अवतार विदित पूरव मही, उभै महन्त देही धरी।
नित्यानन्द(कृष्ण)चैतन्य की, भक्ति दसों दिशि विस्तरी।।७२।।

श्रीनित्यानन्दजी

आप बलदेव सदा वारुणी सौं मत्त रहैं, चहैं मन मान्यो प्रेम मत्तताई चाखियै।
सोई नित्यानन्द प्रभु महन्त की देही धरी, भरी सब आनि तऊ पुनि अभिलाखियै।।
भयो बोझ भारी किहूँ जात न सँभारी, तब ठौर–ठौर पारषद माँझ धरि राखियै।
कहत–कहत और सुनत–सुनत जाके, भये मतवारे बहु ग्रन्थ ताकी साखियै।। ३२९।।

श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुजी

गोपिन के अनुराग आगे आप हारे श्याम, जान्यौ यह लाल रंग कैसे आवै तन में।
ये तौ सब गौर तनी नख–सिख बनी–ठनी, खुल्यौ यों सुरंग अंग–अंग रँगे वन में।।

श्यामताई माँझ सो ललाई हूँ समाइ जाय, ताते मेरे जान फिरि आई यहै मन में।
जसुमति सुत सोई शची सुत गौर भये, नये–नये नेह चोज नाचैं निज गन में।। ३३०।।

आवै कभूँ प्रेम हेमपिण्डवत तन होत, कभूँ सन्धि–सन्धि छूटि अंग बढ़ि जात है।
और एक न्यारी रीति आँसू पिचकारी मानौं उभै लाल प्यारी भावसागर समात है।।
ईशता बखान कही करौ सो प्रमान याको, 'जगन्नाथ क्षेत्र नेत्र निरखि साक्षात है'।
चतुर्भुज षट्भुज रूप लै दिखाय दियो, दियो जो अनूप हित बात पात–पात है।। ३३१।।

श्रीकृष्णचैतन्य नाम जगत प्रगट भयौ, अति अभिराम लै महन्त देही धरी है।
जितो गौड़ देश भक्ति लेशहूँ न जानै कोऊ, सोऊ प्रेमसागर में बोर्‌यो कहि 'हरी' है।।
भये सिरमौर एक–एक जग तारिवे कौं, धारिवे कौं कौन साखि पोथिन में धरी है।
कोटि कोटि अजामील वारि डारै दुष्टता पै, ऐसेहूँ मनन किये भक्ति भूमि भरी है।। ३३२।।

श्रीसूरदासजी

सूर कवित सुनि कौन कवि, जो नहिं सिर चालन करै।।
उक्ति चोज अनुप्रास, वरन अस्थिति अति भारी।
वचन प्रीति निर्वाह, अर्थ अद्‌भुत तुक धारी।।
प्रतिबिम्बित दिवि दृष्टि, हृदय हरि लीला भासी।
जनम करम गुन रूप, बसै रसना परकासी।।
विमल बुद्धि गुन और की, जो यह गुन श्रवननि धरै।
सूर कवित सुनि कौन कवि, जो नहिं सिर चालन करै।।७३।।

श्रीपरमानन्ददासजी

ब्रजबधू रीति कलियुग विषैं, परमानन्द भयौ प्रेमकेत।।
पौगण्ड बाल कैशोर, गोप लीला सब गाई।
अचरज कहा यह बात, हुतौ पहिलौ जु सखाई।।
नैननि नीर प्रवाह, रहत रोमांच रैन दिन।
गद्‌गद् गिरा उदार, श्याम शोभा भीज्यौ तन।।

'सारंग' छाप ताकी भई, श्रवण सुनत आवेश देत।
ब्रजबधू रीति कलियुग विषैं परमानन्द भयौ प्रेमकेत।।७४।।

श्रीकेशवभट्टजी काश्मीरी

केशवभट नरमुकुटमणि, जिनकी प्रभुता विस्तरी।।
काश्मीरि की छाप, पाप तापन जग मण्डन।
दृढ़ हरिभक्ति कुठार, आन धर्म बिटप विहण्डन।।
मथुरा मध्य मलेच्छ, वाद करि बरबट जीते।
काजी अजित अनेक, देखि परचै भय भीते।।
विदित बात संसार सब, सन्त साखि नाहिन दुरी।
केशवभट नरमुकुटमणि, जिनकी प्रभुता विस्तरी।। ७५।।

(चार कवित्त अन्य कवि कृत हैं)

करि दिग विजै सब पण्डित हराय दिये, लिये बड़े–बड़े जीति भीति उपजाई है।
फिरत चौडौल चढ़े गज बाजि लोग संग, प्रतिभा कौ रंग आये नदिया प्रभाई है।।
डरे द्विज भारी महाप्रभु जू विचारी तब, लीला विसतारी गंगा तीर सुखदाई है।
बैठे ढिंग आय बोले नम्रता जनाय रह्यो, जग जसु छाय नेकु सुनै मनभाई है।।

'लरिकान संग पढ़ौ बातैं बड़ी–बड़ी गढ़ौ, ऐपै रढ़ौ कहौं सोई सीलता पै रीझियै'।
'गंगा कौ सरूप कहौ' 'चाहौ दृग आगे सोई', नये सौ श्लोक किये सुनि मति भीजियै।।
तामें एक कण्ठ करि पढ़िकै सुनायौ 'अहो! बड़ो अभिलाष याकी व्याख्या करि दीजियै'।
अचरज भारी भयौ कैसे तुम सीखि लयो?, 'दयौ लै प्रभाव तुम्हें ताने दयौ जीजियै'।

दूषन औ भूषन हूँ कीजियै बखान याके, सुनि दुख मानि कही दोष कहाँ पाइयै।
'कविता प्रबन्ध मध्य रहै खोटि गन्ध अहो ! आज्ञा मोकौं देउ कह्यो 'कहिकै सुनाइयै'।।
व्याख्या करि दई नई औगुन सुगुनमई, आये निज धाम 'भोर मिले' समुझाइयै।
सरस्वती ध्यान कियौ आई ततकाल बाल, बाल पै हरायो सब जग जितवाइयै।

बोली सरस्वती 'मेरे ईश भगवान वेतौ मान मेरौ कितौ सम्मुख बतराइयै'।
भयौ दरसन तुम्हें मन परसन होत, सुनि सुख सोत वानी आये प्रभु पाइयै।।

विनै बहु करी, करी कृपा आप बोले 'अजू ! भक्तिफल लीजै कहू भूलि न हराइयै'।
हिये धरि लई भीर–भार छोड़ि दई पुनि, नई यह भई सुनि दुष्ट मरवाइयै।।

आपु काशमीर सुनी बसत विश्रान्त तीर, तुरक समूह द्वार जन्त्र इक धारियै।
सहज सुभाय कोऊ निकसत आय ताको, पकरत जाय तातें सुन्नत निहारियै।।
संग लै हजार शिष्य भरे भक्तिरंग महा, अरे वाही ठौर बोले नीच पट टारियै।
क्रोध भरि झारे आय सूबा पै पुकारे वे तौ, देखि सबै हारे मारे जल बोरि डारियै।।३३३।।

गये सब दौरि जहाँ काजी की जु पौरि हुती, कियौ तिन सोई अजू कीजिये पुकार है।
आजु कोऊ ऐसो एक आयो है जु मथुरा में, संग हैं हजार शिष्य तेज को न पार है।।
लैकै झरकारे धिरकारे मति भाँति कह्यौ, क्यौं रे अधरमी हिन्दूधर्म कियौ ख्वार है।
होहु तुम राँड कियौ पुरुषार्थ भाँड़ जोई, हरि सौं विमुख ताको नहीं पारावार है।।३३४।।

काजी अति डर्यौ हिये पर्यौ खरभर्यौ, यह कौन आय अर्यौ अब करौं का उपाय मैं।
रचे भूत बयताल मूठि दीठि मायाजाल, सुदर्शन किये ख्याल सहज सुभाय मैं।।
असुर के तन में सो अगिनि लगाइ दई, दई कहो दई कहा, कहा कियो हाय मैं।
ये तो हैं बड़े प्रतापी मैं तो अहौ महापापी, अहो! मति थापी आवैं परौं धाय पाय मैं।। ३३५।।

आय पाँय पर्यौ नीर नैननि ते ढर्यौ बैन, कहै मर्यौं–मर्यौं प्रभु मेरी रक्षा कीजिये।
तब स्वामी कह्यौ तोहि लैहौं मैं बचाय पुनि, एक है उपाय सीख मेरी सुनि लीजिये।।
फेरिकै अधर्म ऐसो करौगे न कर्म अब, मेटौ सब गर्व सदा सीतल ह्वै जीजिये।
और जिते वादी हरि विमुख प्रमादी तिन्हें, लीये सत मारग में नौधा रस पीजिये।। ३३६।।

जिते हिन्दु तुरकनि सैकरान मारे हारे, भरे दुख भारे वेतौ स्वामी जू पै आये हैं।
प्रभु कह्यौ आवौ अब दुख जनि पावौ, केशौराय गुन गावौ जल जमुना के न्हाये हैं।।
झीन एक वस्त्र लाय तिन कहँ पहिराय, हिन्दू केर चिह्न पाय जग जस गाये हैं।
तुर्क तिया कान धरीं आइ सब पाँय परीं, करी प्रभु दया नर–नारी दरसाये हैं।। ३३७।।

मास परायण पन्द्रहवाँ विश्राम

श्रीश्रीभट्टजी

श्रीभट्ट सुभट प्रगट्यौ अघट, रस रसिकन मनमोद घन।।
मधुर भाव सम्मिलित, ललित लीला सु बलित छवि।
निरखत हरखत हृदै, प्रेम बरषत सु कलित कवि।।

भव निस्तारन हेतु, देत दृढ़ भक्ति सबनि नित।
जासु सुजस ससि ऊदै, हरत अति तम भ्रम श्रम चित।।
आनंद कंद श्रीनन्द सुत श्रीवृषभानु सुता भजन।
श्रीभट्ट सुभट प्रगट्यौ अघट, रस रसिकन मनमोद घन।।७६।।

श्रीहरिव्यासदेवजी

हरिव्यास तेज हरिभजन बल, देवी को दीक्षा दई।।
खेचर नर की शिष्य, निपट अचरज यह आवै।
विदित बात संसार, सन्त मुख कीरति गावै।।
वैरागिन के वृन्द, रहत सँग स्याम सनेही।
ज्यौं जोगेश्वर मध्य, मनो सोभित वैदेही।।
श्रीभट्ट चरण रज परस तैं सकल सृष्टि जाकौं नई।
हरिव्यास तेज हरिभजन बल, देवी को दीक्षा दई।। ७७।।

चटथावल गाँव बाग देखि अनुराग भयौ, लयौ नित्त नेम करि चाहैं पाक कीजियै।
देवी को स्थान काहू बकरा लै मार्‌यो आनि देखत गलानि 'इहाँ पानी नाहिं पीजियै'।।
भूखे निसि भई भक्ति तेज मिड़ गई नई, देह धरि लई आय लखि मति भीजियै।
'करौ जू रसोई' 'कौन करै कछु औरै भोई', 'सोई मोकौं दीजै दान शिष्य करि लीजियै'।।३३८।।

करी देवी शिष्य सुनि नगर को सटकी यों, पटकी लै खाट जाकी बड़ौ सरदार है।
चढ़ी मुख बोलै 'हौं तो भई हरिव्यास दासी, जो न दास होहु तो पै अभी डारौं मार है'।।
आये सब भृत्य भये मानौं नये तन लये, गये दुख पाप ताप किये भव पार है।
कोऊ दिन रहे नाना भोग सुख लहे एक, श्रद्धा कै स्वपच आयो पायौ भक्ति सार है।।३३९।।

श्रीदिवाकरजी

अज्ञान ध्वांत अन्तहिं करन, दुतिय दिवाकर अवतर्‌यौ।।
उपदेशे नृपसिंह, रहत नित आज्ञाकारी।
पक्व वृक्ष ज्यौं नाय, सन्त पोषक उपकारी।।

वानी भोलाराम, सुहृद सबहिन पर छाया।
भक्त चरणरज जाँचि, विशद राघौ गुण गाया।।
करमचन्द कश्यप सदन, बहुरि आय मनो वपु धर्‍यौ।
अज्ञान ध्वांत अन्तहिं करन दुतिय दिवाकर अवतर्‍यौ।।७८।।

श्रीविट्ठलनाथ गोसाँईंजी

विट्ठलनाथ ब्रजराज ज्यौं लाल लड़ायकै सुख लियौ।।
राग भोग नित विविध, रहत परिचर्या तत्पर।
सय्या भूषन वसन रचित रचना अपने कर।।
वह गोकुल वह नन्दसदन दीच्छित को सौहे।
प्रगट विभौ जहाँ घोष, देखि सुरपति मन मोहै।।
वल्लभ सुत बल भजन के, कलियुग में द्वापर कियौ।
विट्ठलनाथ ब्रजराज ज्यौं लाल लड़ायकै सुख लियौ।।७९।।

श्रीत्रिपुरदासजी

कायथ त्रिपुरदास भक्ति सुख रासि भर्‍यो, कर्‍यौ ऐसो पन सीत दगला पठाइयै।
निपट अमोल पट हियें हित जटि आवै, तातें अति भावै नाथ अंग पहिराइयै।।
आयो कोऊ काल नरपति नैं बिहाल कियौ, भयौ ईश ख्याल नेकु घर में न खाइयै।
वही ऋतु आई सुधि आई आँखि पानी भरि, आई एक द्वाति दीठि आई बेंचि ल्याइयै।।३४०।।

बेंचिकै बजार यों रुपैया एक पायौ ताकौ, ल्यायौ मोटौ थान मात्र रंग लाल गाइयै।
भीज्यो अनुराग पुनि नैन जलधार भीज्यो–भीज्यो दीनताई धरि राख्यौ और आइयै।।
कोऊ प्रभुजन आय सहज दिखाई दई, भई मन दियौ लै भण्डारी पकराइयै।
काहू दास दासी के न काम कौ पै जाउँ लैकै, विनती हमारी जू गुसाँई न सुनाइयै।।३४१।।

दियो लै भण्डारी कर राखे धरि पट वापै, निपट सनेही नाथ बोले अकुलायकै।
'भये हैं जड़ाये कोऊ वेगि ही उपाय करो', विविध उढ़ाये अंग वसन सुहायकै।।
आज्ञा पुनि दई यों अँगीठी बारि दई, फेर वही भई सुनि रहे अति ही लजायकै।
सेवक बुलाय कही 'कौन की कबाय आई?' सबै की सुनाई एक वही ली बचायकै।।३४२।।

सुनी न 'त्रिपुरदास !' बोल्यौ 'धन नास भयौ, मोटो एक थान आयौ राख्यौ है बिछायकै'।
'ल्यावौ वेगि याही छिन' मन की प्रवीन जानि, ल्यायो दुख मानि व्यौंति लई सो सिंवायकै।।
अँग पहिराई सुखदाई कापै गाई जात कही तब बात 'जाड़ौ गयौ भरि भायकै'।
नेह सरसाई लै दिखाई उर आई सबै ऐसी रसिकाई ह्रदै राखी है बसायकै।। ३४३।।

श्रीविट्ठलनाथजी के सुत

(श्री) विट्ठलेश सुत सुहृद् श्रीगोवरधनधर ध्याइयै।।
श्रीगिरिधर जू सरस शील, गोविन्द जु साथहिं।
बालकृष्ण जसवीर, धीर श्रीगोकुल नाथहिं।।
श्रीरघुनाथ जु महाराज, श्रीजदुनाथहिं भजि।
श्रीघनश्याम जु पगे, प्रभु अनुरागी सुधि सजि।।
ए सात प्रगट विभु भजन जग, तारन तस जस गाइयै।
(श्री) विट्ठलेश सुत सुहृद श्रीगोवरधनधर ध्याइयै।। ८०।।

श्रीकृष्णदासजी

गिरिधरन रीझि कृष्णदास कौं, नाम माँझ साझौ दियौ।।
श्रीवल्लभ गुरुदत्त भजन, सागर गुन आगर।
कवित नोख निर्दोष, नाथ सेवा में नागर।।
वानी वन्दित विदुष, सुजस गोपाल अलंकृत।
ब्रजरज अति आराध्य, वहै धारी सर्वसु चित।।
सान्निध्य सदा हरिदासवर्य, गौरश्याम दृढ़ व्रत लियौ।
गिरिधरन रीझि कृष्णदास कौं नाम माँझ साझौ दियौ॥८१॥

प्रेम रसरासि कृष्णदास जू प्रकास कियौ, लियौ नाथ मानि सो प्रमान जग गाइकै।
दिल्ली की बाजार में जलेबी सो निहारि नैन, भोग लै लगाई लगी विद्यमान पाइयै।।
राग सुनि भक्तिनी को भये अनुराग बस, ससिमुख लाल जू कौं जाइकैं सुनाइयै।
देखि रिझवार रीझि निकट बुलाइ लई, लई संग चले जग लाज को बहाइयै।। ३४४।।

नीके अन्हवाय पट आभरन पहिराय, सौंधौ हूँ लगाय हरि मन्दिर में ल्याये हैं।
देखि भई मतवारी कीनी लै आलापचारी, कह्यो 'लाल देखे?' बोली 'देखे में ही भाये हैं'।।
नृत्य गान तान भाव भरि मुसक्यान, दृग रूप लपटान नाथ निपट रिझाये हैं।
ह्वै कैं तदाकार तन छूट्यौ अंगीकार करी, धरी उर प्रीति मन सबके भिजाये हैं।। ३४५।।

आये सूर सागर सो कही बड़े नागर हौ, कोऊ पद गावौ मेरी छाया न मिलाइयै।
गाये पाँच सात सुनि जान मुसुकात कही, भलें जू प्रभात आनि करिकै सुनाइयै।।
पर्‍यौ सोच भारी गिरिधारी उर धारी बात, सुन्दर बनाय सेज धर्‍यो यो लखाइयै।
आयकै सुनायौ सुख पायौ पच्छपात लै बतायौ औ मनायौ रँग छायौ अभूँ गाइकै।। ३४६।।

कुँवा में खिसिल देह छूटि गई नई भई, भई यों अशंका कछु औरै उर आई है।
रसिकन मन दुख जानि सो सुजान नाथ, दियो दरसाय तन ग्वाल सुखदाई है।।
गोवर्द्धन तीर कही 'आगे बलवीर गये, श्रीगुसाँई धीर सौं प्रनाम' यों जनाई है।
धनहूँ बतायो खोदि पायो विसवास आयो, हिये सुख छायो शंक पंक लै बहाई है।। ३४७।।

श्रीवर्द्धमानजी, श्रीगंगलजी

वर्द्धमान गंगल गम्भीर, उभै थंभ हरिभक्ति कै।।
श्रीभागौत बखानि, अमृतमय नदी बहाई।
अमल करी सब अवनि, ताप हारक सुखदाई।।
भक्तन सौं अनुराग, दीन सौं परम दयाकर।
भजन जसोदानन्द, सन्त संघट के आगर।।
भीषमभट्ट अंगज उदार, कलियुग दाता सुगति के।
वर्द्धमान गंगल गम्भीर उभै थंभ हरिभक्ति के।। ८२।।

श्रीखेम गोसाँईजी

रामदास परताप तें, खेम गुसाँईं खेमकर।।
रघुनन्दन को दास, प्रगट भू-मण्डल जानै।
सर्वसु सीताराम, और कछु उर नहिं आनै।।

धनुष बान सौं प्रीति, स्वामि के आयुध प्यारे।
निकट निरन्तर रहत, होत कबहूँ नहिं न्यारे।।
सूरवीर हनुमत् सदृश, परम उपासक प्रेम भर।
रामदास परताप तैं खेम गुसाईं खेमकर।। ८३।।

श्रीविट्ठलदासजी

विट्ठलदास माथुर मुकुट, भयौ अमानी मानदा।।
तिलक दाम सौं प्रीति, गुनहिं गुन अन्तर धार्‌यौ।
भक्तन को उत्कर्ष, जनम भरि रसन उचार्‌यौ।।
सरल हृदै सन्तोष, जहाँ तँह पर उपकारी।
उत्सव में सुत दान, कर्म कियो दुसकर भारी।।
हरि गोविन्द जै-जै गोविन्द गिरा सदा आनन्ददा।
विट्ठलदास माथुर मुकुट भयौ अमानी मानदा।। ८४।।

भाई उभै माथुर सु राना के पुरोहित हे, लरि मरे आपुस में जियौ एक जाम है।
ताको सुत विट्ठल सु दास सुखरासि हिये, लिये वैस थोरी भयौ बड़ौ सेवै श्याम है।।
बोल्यौ नृप सभा मध्य 'आवत न विप्र सुत, छिप्र लैकै आवौ' कही कह्यौ 'पूजै काम है'।
फेरिकै बुलायौ 'करौ जागरन याही ठौर' काहू समझायौ 'गावै नाचै प्रेमधाम है'।। ३४८।।

गये संग साधुनि लै बिनै रंग रँगे सब, राना उठि आदर दै नीके पधराये हैं।
किये जा बिछौना तीनि छत्तनि के ऊपर लै, नाचि गाय आये प्रेम गिरे नीचे आये हैं।।
राजा मुख भयौ सेत दुष्टनि कौं गारी देत, सन्त भरि अंक लेत घर मधि ल्याये है।
भूप बहु भेंट करी देह वाही भाँति परी, पाछे सुधि भई दिन तीसरे जगाये है।। ३४६।।

उठे जब माय ने जनाय सब बात कही, सही नहीं जात निसि निकसे विचारिकै।
आये यों छठीकरा में गरुड़ गोविन्द सेवा, करत मगन हिये रहत निहारिकै।।
राजा के जे लोग सु तौ ढूँढ़ि करि रहे बैठि, तिया मात आई करैं रुदन पुकारिकै।
किये लै उपाय रही कितौ हा-हा खाय ये तौ, रहे मँडराय तब बसी मन हारिकै।। ३५०।।

देख्यो जब कष्ट तन प्रभू जू स्वप्न दियौ, 'जावौ मधुपुरी' ऐसै तीन बार भाषियै।
आये जहाँ जाति-पाँति छाये कछु औरे रंग, देख्यो एक खाती साधु संग अभिलाषियै।।
तिया रहे गर्भवती सती मति सोच रती, खोदि भूमि पाई प्रतिमा सुधन राषियै।
खाती को बुलाय कही लही यहु लेहु तुम, उन पाँय परि कह्यौ रूप सुख चाषियै।। ३५१।।

करें सेवा-पूजा और काम नहिं दूजा तब, फैलि गई भक्ति भये शिष्य बहु भायकै।
बड़ोई समाज होत मानौं सिन्धु सोत आये, विविध बधाये गुनीजन उठे गायकै।।
आई एक नटी गुण रूप धन जटी वह, गावै तान कटी चटपटी-सी लगायकै।
दिये पट भूषन लै भूख न मिटत किहूँ, चहुँ दिसि हेरि पुत्र दियौ अकुलायकै।। ३५२।।

रंगीराय नाम ताकी शिष्या एक राना सुता भयो दुख भारी नेकु जलहूँ न पीजियै।
कहिकै पठाई वासौं 'चाहौ सोई धन लीजै', 'मेरो प्रभुरूप मेरे नैननि कूँ दीजियै'।।
'द्रव्य तो न चाहौं रीझि चाहौं तन मन दियौ', फेरिकै समाज कियौ विनती कौ कीजियै।
जिते गुनीजन तिनै दिये अनगन दाम पाछे नृत्य कर्यो आप देत सो न लीजियै।। ३५३।।

ल्याई एक डोला में बैठाय रंगीराय जू कौं, सुन्दर सिंगार कही बार तेरी आइयै।
कियौ नृत्य भारी जो विभूति सो तौ वारी, लिये भरि अँकवारी भेंट किये द्वार गाइयै।।
'मोहन न्योछावर में भयौ मोहि लेहु मति', लियौ उन शिष्य तन तज्यौ कहाँ पाइयै।
कह्यौ जू चरित्र बड़े रसिक विचित्रनि कौ, जोपै लाल मित्र कियौ चाहौ हिये ल्याइयै।। ३५४।।

श्रीहरिरामजी हठीले

हरिराम हठीले भजनबल, राणा को उत्तर दियौ।।
उग्र तेज ऊदार, सुघर सुथराई सींवा।
प्रेमपुंज रसरासि सदा, गद्गद सुर ग्रीवा।।
भक्तन को अपराध करै, ताकौ फल गायौ।
हिरण्यकशिपु प्रह्लाद, प्रगट दृष्टान्त दिखायौ।।
सस्फुट वक्ता जगत् में, राजसभा निधरक हियौ।
हरिराम हठीले भजनबल, राणा को उत्तर दियौ।। ८५।।

राणा सौं सनेह सदा चौपर कौं खेल्यौं करै, ऐसो सो संन्यासी भूमि सन्त की छिनाई है।
जायकै पुकार्‌यौ साधु झिरकी बिडार्‌यौ पर्‌यौ, विमुख के वश बात साँची लै झुठाई है।।

आये हरिराम जू पै सबही जताई रीति, प्रीति करि बोले चलौ आगे आवौं भाई है।
गये बैठे आयो जन मन में न ल्यायौ नृप, तब समुझायौ झार्यौ फेरि भू दिवाई है।। ३५५।।

श्रीकमलाकरभट्टजी

कमलाकर भट्ट जगत् में, तत्त्ववाद रोपी धुजा।।
पण्डित कला प्रवीन, अधिक आदर दे आरज।
सम्प्रदाय सिर छत्र, द्वितीय मनौ मध्वाचारज।।
जेतिक हरि अवतार, सबै पूरन करि जानै।
परिपाटी ध्वजविजै, सदृश भागौत बखानै।।
श्रुति स्मृति सम्मत पुरान, तप्तमुद्रा धारी भुजा।
कमलाकर भट्ट जगत् में तत्त्ववाद रोपी धुजा।। ८६।।

श्रीनारायणभट्टजी

ब्रजभूमि उपासक भट्ट सो, रचि पचि हरि एकै कियौ।।
गोप्य स्थल मथुरा मण्डल जिते वाराह बखाने।
ते किये नारायण प्रगट, प्रसिद्ध पृथ्वी में जाने।।
भक्तिसुधा कौ सिन्धु, सदा सतसंग समाजन।
परम रसज्ञ अनन्य, कृष्णलीला कौ भाजन।।
ज्ञान स्मारत पच्छ कौं, नाहिन कोउ खण्डन बियौ।
ब्रजभूमि उपासक भट्ट सो रचि पचि हरि एकै कियौ।। ८७।।

भट्ट श्रीनारायन जू भये ब्रज परायन, जायँ जाही ग्राम जहाँ व्रत करि ध्याये हैं।
बोलिकै सुनावैं इहाँ अमुकौ सरूप हैं जू, लीला कुण्ड धाम श्याम प्रगट दिखाये हैं।।
ठौर–ठौर रास के विलास लै प्रकास किये, जिये यों रसिकजन कोटि सुख पाये हैं।
मथुरा ते कही 'चलौ वेनी' पूछैं 'वेनी कहाँ?' 'ऊँचे गाँव' आय खोदि सोत लै लखाये हैं। ३५६।।

श्रीब्रजवल्लभजी

ब्रजवल्लभ वल्लभ सुवन, दुर्लभ सुख नैननि दिये।।
नृत्य गान गुन निपुन, रास में रस बरषावत।
अब लीला ललितादि, बलित दम्पतिहिं रिझावत।।
अति उदार निस्तार, सुजस ब्रजमण्डल राजत।
महा महोत्सव करत, बहुत सबही सुख साजत।।
श्रीनारायण भट्ट प्रभु, परम प्रीति रस बस किये।
ब्रजवल्लभ वल्लभ सुवन, दुर्लभ सुख नैननि दिये।। ८८।।

श्रीरूप–सनातन गोसाँईजी

संसार स्वाद सुख बांत ज्यौं, दुहुँ रूप–सनातन त्यागि दियौ।।
गौड़देश बंगाल हुते, सबही अधिकारी।
हय गय भवन भण्डार, विभौ भू–भुज उन हारी।।
यह सुख अनित्य विचारि, वास वृन्दावन कीन्हौ।
यथा लाभ सन्तोष कुँज, करवा मन दीन्हौ।।
ब्रजभूमि रहस्य राधाकृष्ण, भक्त तोष उद्धार कियौ।
संसार स्वाद सुख बांत ज्यौं, दुहुँ रूप–सनातन त्यागि दियौ।।८९।।

कहत वैराग गये पागि नाभा स्वामी जू वे, गई यों निवर तुक पाँच लागी आँच है।
रही एक माँझ धर्‌यौ कोटिक कवित्त अर्थ, याही ठौर लै दिखायो कविता कौ साँच है।।
राधाकृष्ण रस की आचारजता कही यामें, सोई जीवनाथभट्ट छपै वानी नाँच है।
बड़े अनुरागी ये तो कहिवौ बड़ाई कहा, अहो! जिन कृपादृष्टि प्रेम पोथी बाँच है।। ३५७।।

वृन्दावन ब्रजभूमि जानत न कोऊ प्राय, दई दरसाय जैसी शुक मुख गाई है।
रीति हूँ उपासना की भागवत अनुसार, लियौ रससार सो रसिक सुखदाई है।।
आज्ञा प्रभु पाय पुनि गोपीश्वर लगे आय, किये ग्रन्थ भाय भक्ति भाँति सब पाई है।
एक–एक बात में समात मन बुद्धि जब, पुलकित गात दृग झरी–सी लगाई है।। ३५८।।

रहैं नन्दगाँव रूप आये श्रीसनातन जू, महासुख रूप भोग खीर कौ लगाइये।
नेकु मन आई सुखदाई प्रिया लाड़िली जू, मानौ कोऊ बालकी सुसौंज सब ल्याइये।।

करिकै रसोई सोई लै प्रसाद पायौ भायो, अमल सो आयो चढ़ि पूछी सो जिताइये।
'फेरि जिनि ऐसी करौ यही दृढ़ हिये धरौ, ढरौ निज चाल' कहि आँखैं भरि आइये।। ३५६।।

रूप गुण गान होत कान सुनि सभा सब, अति अकुलान प्रान मूरछा–सी आई है।
बड़े आप धीर रहे ठाढ़े न सरीर सुधि, बुधि में न आवै ऐसी बात लै दिखाई है।।
श्रीगुसाईं कर्णपुर पाछे आय देखे आछे, नेकु ढिंग भये स्वांस लग्यौ तब पाई है।
मानौ आगि आँच लागी ऐसो तन चिह्न भयौ, नयौ यह प्रेम रीति कापै जात गाई है।। ३६०।।

श्रीगोविन्दचन्द आय निसि कौ स्वप्न दियौ, दियौ कहि भेद सब जासौं पहिचानियै।
रहौं मैं खिरक माँझ पोषैं निसि भोर साँझ, सीचैं दूध धार गाय जाय देखि जानियै।।
प्रगट लै कियौ रूप अति ही अनूप छबि, कवि कैसे कहे थकि रहै लखि मानियै।
कहाँ लौं बखानौं भरै सागर न गागर में, नागर रसिक हिये निसिदिन आनियै।। ३६१।।

रहैं श्रीसनातन जू नन्दगाँव पावन पै, आवन दिवस तीन दूध लैकै प्यारियै।
साँवरौ किशोर आप पूछें 'किहिं ओर रहो?' 'कहे चारि भाई' पिता रीतिहूँ उचारियै।।
गये ग्राम बूझी घर हरि पै न पाये कहूँ, चहुँ दिसि हेरि–हेरि नैन भरि डारियै।
अबकै जो आवै फेर जान नहीं पावै सीस, लाल पाग भावै निसिदिन उर धारियै।। ३६२।।

कही व्याली रूप वेनी निरखि सरूप नैन, जानी श्रीसनातन जू काव्य अनुसारियै।
राधासर तीर द्रुम डार गहि झूलैं–फूलैं, देखत लफलफात गति मति वारियै।।
आये यों अनुज पास फिरे आस–पास देखि, भयौ अति त्रास गहे पाउँ उर धारियै।
चरित अपार उभै भाई हितसार पगे, जगे जग माहिं मति मन में उचारियै।। ३६३।।

श्रीहितहरिवंश गोसाँईंजी

(श्री) हरिवंश गुसाँईं भजन की, रीति सकृत् कोउ जानिहै।।
(श्री) राधाचरण प्रधान, हृदै अति सुदृढ़ उपासी।
कुँजकेलि दम्पत्ति तहाँ, की करत खवासी।।
सर्वसु महा प्रसाद, प्रसिद्ध ताके अधिकारी।
विधि निषेध नहिं दास, अनन्य उतकट व्रतधारी।।
व्यास सुवन पथ अनुसरै, सोई भले पहिचानिहै।
(श्री)हरिवंश गुसाँईं भजन की रीति सकृत् कोउ जानिहै।।६०।।

हित जू की रीति कोऊ लाखनि में एक जानै, राधा ही प्रधान मानै पाछे कृष्ण ध्याइयै।
निपट विकट भाव होत न सुभाव ऐसो, उनहीं की कृपादृष्टि नेकु क्यौं हूँ पाइयै।।
विधि औ निषेध छेद डारे प्रान प्यारे हिये, जिये निज दास निसिदिन वहै गाइयै।
सुखद चरित्र सब रसिक विचित्रन के, जानत प्रसिद्ध कहा कहिकै सुनाइयै।। ३६४।।

आये घर त्याग राग बढ्यौ प्रिया–प्रियतम सौं, विप्र बड़भाग हरि आज्ञा दई जानियै।
तेरी उभै सुता ब्याहि देवौ लेवौ नाम मेरौ, इनकौ जो वंस सो प्रशंस जग मानियै।।
ताही द्वार सेवा विसतार निज भक्तन की, अगतिन गति सो प्रसिद्ध पहिचानियै।
मानि प्रिय बात ग्रहगयौ सुख लह्यौ तब, कह्यौ कैसे जात यह मन, मन आनियै।। ३६५।।

राधिकावल्लभ लाल आज्ञा सो रसाल दई, सेवा मो प्रकास औ विलास कुंज धाम कौ।
सोई विसतार सुखसार दृग रूप पियौ, दियौ रसिकानि जिन लियौ पच्छ बाम कौ।।
निसिदिन गान रस माधुरी कौ पान उर, अन्तर सिहान एक काम स्यामा–स्याम कौ।
गुन सो अनूप कहि कैसे कै सरूप कहै, लहै मनमोद जैसे और नहीं नाम कौ।। ३६६।।

स्वामी श्रीहरिदासजी
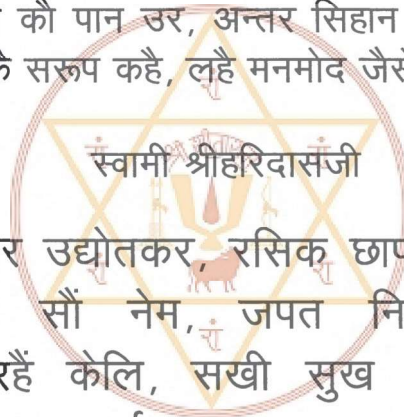
(श्री) आसुधीर उद्योतकर, रसिक छाप हरिदास की।।
जुगल नाम सौं नेम, जपत नित कुंजविहारी।
अवलोकत रहैं केलि, सखी सुख के अधिकारी।।
गान कला गन्धर्व, स्याम–स्यामा कौं तोषैं।
उत्तम भोग लगाय, मोर मरकट तिमि पोषैं।।
नृपति द्वार ठाढ़े रहैं, दरसन आसा जास की।
(श्री) आसुधीर उद्योतकर, रसिक छाप हरिदास की।। ६१।।

स्वामी हरिदास रसरासि को बखान सकै, रसिकता छाप जोई जाप मधि पाइयै।
ल्यायो कोऊ चोवा वाकौ अति मन भोवा वामें, डार्‌यौ लै पुलिन यह खोवा हिये आइयै।।
जानिकै सुजान कही 'लै दिखावौ लाल प्यारे', नैसुकु उघारे पट सुगंध बुड़ाइयै।
पारस पाषान करि जल डरवाय दियौ, कियौ तब शिष्य ऐसे नाना विधि गाइयै।। ३६७।।

मास परायण सोलहवाँ विश्राम

श्रीहरिराम व्यासजी

उतकर्ष तिलक अरु दाम को, भक्त इष्ट अति व्यास के।
काहू के आराध्य मच्छ, कच्छ नरहरि सूकर।
वामन फरसाधरन, सेतबन्धन जु सैलकर।।
एकन कें यह रीति, नेम नवधा सौं लाये।
सुकुल सुमोखन सुवन, अच्युत गोत्री जु लड़ाये।।
नौगुण तोरि नूपुर गुह्यौ, महत सभा मधि रास के।
उत्कर्ष तिलक अरु दाम कौ भक्त इष्ट अति व्यास के।।६२।।

आये गृह त्यागि वृन्दावन अनुराग करि, गयौ हियौ पागि होय न्यारो तासौं खीजियै।
राजा लैन आयो ऐपै जायवौ न भायो, श्रीकिशोर उरझायौ मन सेवा मति भीजियै।।
चीरा जरकसी सीस चीकनौ खिसिलि जाय, 'लेहु जू बँधाय नहीं आप बाँध लीजियै'।
गये उठि कुंज सुधि आई सुखपुंज आये, देख्यौ बँध्यौ मंजु कही कैसे मोपै रीझियै।। ३६८।।

सन्त सुखदैन बैठे संग ही प्रसाद लेन, परोसति तिया सब भाँतिन प्रवीन है।
दूध बरताई लै मलाई छिटकाई निज, खीझि उठे जानि पति पोषति नवीन है।।
सेवा सौं छुटाय दई अति अनमनी भई, गई भूख बीते दिन तीन तन छीन है।
सब समझावैं तब दण्ड को मनावैं अँग, आभरन बेंचि साधु जेंवैं यों अधीन हैं।। ३६९।।

सुता कौ विवाह भयौ बड़ौ उतसाह कियौ, नाना पकवान सब नीके बनि आये हैं।
भक्तनि की सुधि करी खरी अरबरी मति, भावना करत भोग सुखद लगाये है।।
आय गये साधु सो बुलाय कही पावौ जाय, पोटनि बँधाय चाय कुंजनि पठाये है।
वंसी पहिराई द्विज भक्ति लै दृढ़ाई सन्त, सम्पुट में चिरिया दै हित सौं बसाये हैं।। ३७०।।

शरद उज्यारी रास रच्यौ पिया प्यारी तामें, रंग बढ़्यौ भारी कैसे कहिकै सुनाइयै।
प्रिया अति गति लई बिजुरी-सी कौंधि गई, चकचौंधी भई छबि मण्डल में छाइयै।।
नूपुर सी टूटि छूटि पर्यौ अरबर्यौ मन, तोरिकै जनेऊ कर्यौ वाही भाँति भाइयै।
सकल समाज में यों कह्यौ 'आज काम आयौ, ढोयो हौं जनम' ताकी बात जिय आइयै।। ३७१।।

गायौ भक्त इष्ट अति सुनिकै महन्त एक, लैन कौं परीच्छा आयौ संग सन्त भीर है।
भूख कौं जतावै वानी व्यास कौ सुनावै सुनि, कही भोग आवै इहाँ मानै हरि धीर है।।

तब न प्रमान करी शंक धरी लै प्रसाद, ग्रास दोय चार उठे मानौं भई पीर है।
पातरि समेटि लई सीत करि मोकौं दई, पावौ तुम और पाँव लिये दृग नीर है।। ३७२।।

भये सुत तीन बाँट निपट नवीन कियौ, एक ओर सेवा एक ओर धन धर्‌यौ है।
तीसरी जु ठौर श्यामवन्दनी और छाप धरी, करी ऐसी रीति देखि बड़ौ सोच पर्‌यौ है।।
एक ने रुपैया लिये एक ने किशोर जू कौं, श्रीकिशोरदास भाल तिलक लै कर्‌यौ है।
छापे दिये स्वामी हरिदास निसि रास कीनौं, वही रास ललितादि गायो मन हर्‌यौ है।। ३७३।।

श्रीजीव गोसाँईंजी

(श्री) रूप सनातन भक्तिजल, जीवगुसाँईं सर गँभीर।।
बेला भजन सुपक्व, कषाय न कबहूँ लागी।
वृन्दावन दृढ़वास, जुगल चरननि अनुरागी।।
पोथी लेखन पान, अघट अक्षर चित दीनौ।
सद्ग्रन्थनि कौ सार, सबै हस्तामल दीनौ।
सन्देह ग्रन्थि छेदन समर्थ, रस रास उपासक परम धीर।
(श्री) रूप सनातन भक्तिजल जीवगुसाँईं सर गँभीर।। ६३।।

किये नाना ग्रन्थ हृदै ग्रन्थि दृढ़ छेदि डारैं, डारैं धन यमुना में आवै चहुँओर तें।
कही दास 'साधुसेवा कीजै' कहैं 'पात्रता न', करौ नीके करी बोल्यौ कटु कोप जोर तें।।
तब समझायौ सन्त गौरव बढ़ायौ यह, सबकौं सिखायौ बोलौ मीठौ निसि भोर तें।
चरित अपार भाव–भक्ति कौ न पारावार, कियोऊ वैराग सार कहै कौन छोर तें।। ३७४।।

श्रीवृन्दावनवासी भक्त

वृन्दावन की माधुरी, इन मिलि आस्वादन कियौ।।
सर्वसु राधारमन, भट्ट गोपाल उजागर।
हृषीकेश भगवान, विपुलबीठल रससागर।।
थानेश्वरी जगन्नाथ, लोकनाथ महामुनि मधु श्रीरंग।
कृष्णदास पण्डित, उभै अधिकारी हरि अंग।।

घमण्डी युगलकिशोर भृत्य, भूगर्भ जीव दृढ़व्रत लियौ।
वृन्दावन की माधुरी इन मिलि आस्वादन कियौ।। ६४।।

श्रीगोपालभट्ट गोसाँईंजी

श्रीगोपाल भट्ट जू के हिये वै रसाल बसे, लसे यों प्रगट राधारवन सरूप हैं।
नाना भोग राग करें अति अनुराग पगे, जगे जग माहिं हित कौतुक अनूप हैं।।
वृन्दावन माधुरी अगाध कौ सवाद लियौ, जियौ जिन पायौ सीथ भये रस रूप हैं।
गुन ही कौ लेत जीव अवगुन को त्यागि देत, करुनानिकेत धर्मसेत भक्तभूप हैं।। ३७५।।

श्रीअलि भगवान्

अलि भगवान रामसेवा सावधान मन, वृन्दावन आये कछु औरै रीति भई है।
देखे रासमण्डल में विहरत रस रास, बाढ़ी छबि प्यास दृग सुधि-बुधि गई है।।
नाम धरि रास औ विहारी सेवा प्यारी लागी, खगी हिय माँझ गुरु सुनी बात नई है।
विपिन पधारे आप जाय जग धारे सीस, 'ईश मेरे तुम' सुख पायौ कहि दई है।। ३७६।।

नवाह परायण पंचम विश्राम

श्रीबीठलविपुलजी

स्वामी हरिदास जू के दास नाम बीठल है, गुरु के वियोग दाह उपज्यौ अपार है।
रास के समाज में विराज सब भक्तराज, बोलिकै पठाये आये आज्ञा बड़ौ भार है।।
युगल सरूप अवलोकि नाना नृत्य भेद, गान तान कान सुनि रही न सँभार है।
मिलि गये वाही ठौर पायौ भाव तन और, कह्यौ रससागर सो ताकौं यों विचार है।। ३७७।।

श्रीजगन्नाथजी थानेश्वरी

महाप्रभु पारषद थानेश्वरी जगन्नाथ, नाथ कौ प्रकास घर दिना तीनि देख्यो है।
भये शिष्य जान आप नाम कृष्णदास धर्यौ, कृष्ण जू कहत सबै आदर बिसेख्यो है।।
सेवा मनमोहन जू कूप में जनाइ दई, बाहर निकासि करी लाड़ उर लेख्यो है।
सुत रघुनाथ जू कौं स्वप्न में श्लोक दान, दया के निधान पुत्र दियौ प्रेम पेख्यो है।। ३७८।।

श्रीलोकनाथ गोसाँईंजी

महाप्रभु कृष्णचैतन्य जू के पारषद, लोकनाथ नाम अभिराम सब रीति है।
राधाकृष्ण लीला सौं रंगीन में नवीन मन, जैसे जल मीन तैसें निसि दिन प्रीति है।।
भागवत गान रसखान सो तौ प्रान तुल्य, अति सुख मान कहैं गावै जोई मीति है।
रसिक प्रवीन मग चलत चरन लागि, कृपा कै जताय दई जैसी नेह नीति है।। ३७९।।

श्रीमधु गोसाँईंजी

श्रीमधुगोसाँईं आये वृन्दावन चाह बढ़ी, देखैं इन नैननि सौं कैसो धौं सरूप है।
ढूँढ़त–फिरत वन–वन कुजलता द्रुम, मिटी भूख–प्यास नहीं जानैं छाँह धूप है।।
जमुना चढ़त काट करत करारे जहाँ, वंसीवट तट डीठ परे वे अनूप है।
अँक भरि लिये दौर अजहूँ लौं सिरमौर, चाहै भाग भाल साथ गोपीनाथ रूप है।। ३८०।।

श्रीकृष्णदासजी ब्रह्मचारी

गुसाँईं श्रीसनातन जू मदनमोहन रूप, माथें पधराये कही 'सेवा नीके कीजियै'।
जानौं कृष्णदास ब्रह्मचारी अधिकारी भये, भट्ट श्रीनारायण जू शिष्य किये रीझियै।।
करिकै सिंगार चारु आप ही निहारि रहैं, गहैं नहीं चेत भाव माँझ मति भीजियै।
कहाँ लौं बखान करौं राग भोग रीति भाँति, अबलौं विराजमान देखि–देखि जीजियै।। ३८१।।

श्रीकृष्णदासजी पण्डित

श्रीगोविन्दचन्द रूपरासि रसरासि दास, कृष्णदास पण्डित ये दूसरे यों जानि लै।
सेवा अनुराग अंग–अंग मति पागि रही, पागि रही मति जोपै तोपै यह मानि लै।।
प्रीति हरिदासन सौं विविध प्रसाद देत, हिये लाय लेत देखि पद्धति प्रमानि लै।
सहज की रीति में प्रतीति सो विनीत करैं, ढरैं वाही ओर मन अनुभव आनि लै।। ३८२।।

श्रीभूगर्भ गोसाँईंजी

गुसाँईं भूगर्भ वृन्दावन दृढ़ वास कियौ, लियौ सुख बैठि कुंज गोविन्द अनूप हैं।
बड़ेई विरक्त अनुरक्त रूपमाधुरी में, ताही कौ सवाद लेत मिले भक्तभूप हैं।।
मानसी विचार ही अहार सो निहारि रहैं, गहैं मनवृत्ति वेई युगल सरूप हैं।
बुद्धि के प्रमान उनमान में बखान कर्‌यो, भर्‌यौ बहुरंग जाहि जानै रसरूप हैं।। ३८३।।

श्री रसिकमुरारिजी

(श्री) रसिकमुरारि उदार अति मत्त गजहिं उपदेश दियौ।।
तन मन धन परिवार सहित सेवत सन्तन कहँ।
दिव्य भोग आरती अधिक हरिहूँ ते हिय महँ।।
श्रीवृन्दावनचन्द स्याम – स्यामा रँग भीने।
मगन प्रेम पीयूष पयध परचै बहु दीने।।

श्रीहरिप्रिय श्यामानन्दवर भजन भूमि उद्धार कियौ।
(श्री)रसिकमुरारि उदार अति मत्त गजहिं उपदेश दियौ।। ६५।।

रसिकमुरारि साधुसेवा विसतार कियो, पावै कौन पार, रीति भाँति कछु न्यारियै।
सन्त चरनामृत के माट गृह भरे रहैं, ताही कौ प्रनाम पूजा, करि उर धारियै।।
आवैं हरिदास, तिन्हैं देत सुखरासि, जीभ एक न प्रकासि सकै, थकै सो विचारियै।
करैं गुरु उत्सव लै, दिन मान सबै कोऊ द्वादस दिवस जन घटा लागी प्यारियै।। ३८४।।

सन्त चरनामृत कौं ल्यावो जाय नीकी भाँति, जीय की भाँति जानिवे को दास लै पठायौ है।
आनिकै बखान कियौ, लियो सब साधुन कौ, पान करि बोले, सो सवाद नहीं आयो है।।
जिते सभाजन कही, चाखौ देहु मन कोऊ महिमा न जानै कन जानी छोड़ि आयौ है।
पूछी कही कोढ़ी एक रह्यौ, आनो, ल्यायो, पीयो, दियो सुख पाय नैंन नीर ढरकायौ है।।३८५।।

नृपति समाज में विराजमान भक्तराज, कहैं वे विवेक कोऊ कहनि प्रभाव है।
तहाँ एक ठौर, साधु भोजन करत रौर, देवो दूजी सोंटा संग, कैसे आवै भाव है।।
पातरि उठाय श्रीगुसाँईं पर डारि दई, दई गारी सुनी आप, बोले देखो दाव है।
सीथ सौं विमुख मैं तो, आनि मुख मध्य दियो, कियो दास दूर, सन्तसेवा में न चाव है।। ३८६।।

बाग में समाज सन्त, चले आप देखिवे को, देखत दुरायौ जन हुक्का सोच पर्‌यो है।
बड़ौ अपराध मानि, साधु सनमान चाहैं, घूमितन बैठि कही देखौ कहूँ धर्‌यो है।।
जायकै सुनाई दास, काहू के तमाखू पास, सुनिकै हुलास बढ़्यौ, आगैं आनि कर्‌यो है।
झूठे ही उसांस भरि, साँचे प्रेम पाय लिये, किये मनभाये ऐसे, शंका दुख हर्‌यो है।। ३८७।।

उपजत अन्न गाँव, आवै साधुसेवा ठांव, नयौ नृप दुष्ट, आय कांव–कांव कियौ है।
ग्राम सो जबत कर्‌यो, कर्‌यो लै विचार आप, स्यामानन्द जू मुरारि पत्र लिखि दियौ है।
जाही भाँति होहु, ताही भाँति उठि आवौ इहाँ, आये हाथ बाँधि करि अँचैहू न लियौ है।
पाछे साष्टांग करी, करी लै निवेदन सो भोजन में कही चलि आयो भीज्यौ हियौ है।। ३८८।।

आज्ञा पाय अँचयौ लै, दै पठाये वाही ठौर, दुष्ट सिरमौर जहाँ, तहाँ आप आये हैं।
मिले मुतसद्दी शिष्य, आइकै सुनाई बात, जावौ उठि प्रात, यह नीच जैसे गाये हैं।।
हमही पठावैं, काम करि समझावैं सब, मन में न आवै, जानी नेह डर पाये है।
चिन्ता जिनि करौ, हिये धरौ निहचिन्तताई, भूप सुधि आई, दिना तीन कहाँ छाये है।। ३८९।।

सुनी आये गुरुवर, कही ल्यावो मेरे घर, देखैं करामात, बात यह लै सुनाई है।
कह्यौ आनि अभूँ जावौ चलौ उनमान देखैं, चले सुख मानि आयौ हाथी धूम छाई है।।
छोड़िकै कहार भाजि गये न निहारि सके, आप रससार वानी बोले, जैसी गाई है।
बोलौ हरे कृष्ण–कृष्ण, छाड़ौ गज तम तन, सनि गयौ हिये भाव, देह सो नवाई है।। ३६० ।।

बहै दृह नीर, देखि ह्वै गयौ अधीर, आप कृपा करि शिष्य कियौ, दियौ भक्तिभाव है।
कान में सुनायौ नाम, नाम दै गुपालदास, माल पहिराई गरें, प्रगट्यौ प्रभाव है।।
दुष्ट सिरमौर भूप, लखि उहिं ठौर आयौ, पाँय लपटायौ, भयौ हिये अति चाव है।
निपट अधीन, गाँव केतिक नवीन दिये, लिये कर जोरि, मेरौ फल्यो भाग दाव है।। ३६१ ।।

भयौ गजराज, भक्तराज साधुसेवा साज, सन्तनि समाज देखि, करत प्रनाम है।
आनि डारै गोनि, बनजारनि की बारन सौं, आयेई पुकारन वे जहाँ, गुरू धाम है।।
आवत महोच्छौ मध्य, पावत प्रसाद सीथ, बोले आप हाथी सौं यों, निंद्य वह काम है।
छोड़ि दई रीति तब, भक्तन सौं प्रीति बढ़ी, संग ही समूह फिरै, फैलि गयो नाम है।। ३६२ ।।

सन्त सत पाँच, सात, संग जित जात तित, लोग उठि धावैं, ल्यावैं सीधे बहु भीर है।
चहुँदिसि परी हई सूबा सुनि चाह भई हाथ पै न आवत सो आनै कोऊ धीर है।।
साधु एक गयौ, गही लयौ भेष दास तन, मन में प्रसाद, नेम पीवै नहीं नीर है।
बीते दिन तीन चारि, जल लै पिवावैं धारि, गंगा जू निहारि मधि, तज्यौ यों सरीर है।। ३६३ ।।

सप्ताह परायण चौथा विश्राम
मास परायण सत्रहवाँ विश्राम

भव प्रवाह निस्तार हित अवलम्बन ये जन भये।।

सोझा सींवा अधार धीर हरिनाभ त्रिलोचन।
आसाधर द्यौराजनीर सधना दुखमोचन।।
काशीश्वर अवधूत कृष्ण किंकर कटहरिया।
सोभू ऊदाराम नाम डूँगर व्रत धरिया।।
पदम पदारथ रामदास विमलानन्द अमृतश्रये।
भव प्रवाह निस्तार हित अवलम्बन ये जन भये।। ६६ ।।

श्रीसदन (सधनजी)

सदना कसाई, ताकी नीकी कस आई, जैसे बाराबानी सोने की, कसौटी कस आई है।
जीव को न बध करैं, ऐपै कुलाचार ढरै, बेंचै मांस लाय, प्रीति हरि सौं लगाई है।।

गण्डकी कौ सुत, बिन जाने तासो तौंल्यौ करै, भरै दृग साधु, आनि पूजे पै न भाई है।
कही निसि सुपने में, वाही ठौर मोकौं देवौ, सुनौं गुनगान रीझौ, हिय की सचाई है।। ३६४।।

लैकै आयौ साधु, मैं तौ बड़ौ अपराध कियौ, कियौ अभिषेक सेवा करी पै न भाई है।
ए तौ प्रभु रीझे तोपै, जोई चाहौ सोई करौ, गरो भरि आयो, सुनि मति बिसराई है।।
वेई हरि उर धारि, डारि दियौ कुलाचार, चले जगन्नाथदेव, चाह उपजाई है।
मिल्यौ एक, संग–संग जात वे सुगात सब, तब आप दूर–दूर रहैं जानि पाई है।। ३६५।।

आयौ मग गाँव, भिक्षा लेन इक ठांव गयौ, नयो रूप देखि, कोऊ तिया रीझि परी है।
बैठौ याही ठौर, करौ भोजन निहोरि कह्यौ, रह्यौ निसि सोय, आई मेरी मति हरी है।।
लेवो मोकौं संग, गरौ काटौ तौ न होय रंग, बूझी और काटी पति ग्रीव, पै न डरी है।
कही अब पागो मोसौं, नातौ कौन तोसौं मोसौं शोर करि उठी इन मार्‌यौ भीर करी है।। ३६६।।

हाकिम पकरि पूछे, कहै हँसि मार्‌यौ हम, डार्‌यौ सोच भारी, कही हाथ काटि डारियै।
कट्‌यौ कर, चले हरि रंग माँझ झिले मानी जानी कछु चूक मेरी यहै उर धारियै।।
जगन्नाथदेव आगे, पालकी पठाई लेन, सधना सो भक्त कहाँ? चढैं न विचारियै।
चढ़ि आये प्रभु पास, सुपनो सो मिट्‌यो त्रास, बोले दै कसौटी हूँ पै भक्ति बिसतारियै।। ३६७।।

श्रीकाशीश्वर गोसाँईजी
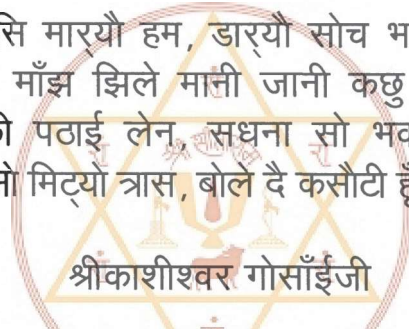
श्रीगुसाँई काशीश्वर, आगे अवधूत वर, करि प्रीति नीलाचल, रहे लाग्यो नीको है।
महाप्रभु श्रीकृष्णचैतन्य जू की आज्ञा पाय, आये वृन्दावन, देखि भायौ भयौ हीको है।।
सेवा अधिकार पायौ, रसिक गोविन्दचन्द, चाहत मुखारविन्द, जीवनि जो जीको है।
नित ही लड़ावें, भवसागर बुड़ावें, कौन पारावार पावै, सुनैं लागैं, जग फीको है।। ३६८।।

श्रीकलिकल्पवृक्ष भक्तजी

करुना छाया भक्तिफल ए कलिजुग पादप रचे।।
जतीरामरावल्लि श्यामखोजी सन्त सीहा।
दलहा पद्‌म मनोरथ राँका द्यौगू जपजीहा।।
जाड़ा चाचागुरू सवाई चाँदा नापा।
पुरुषोत्तम सौं साँच चतुर कीता (मनकौ) जिहि मेट्‌यौ आपा।।

मति सुन्दर, धीधांग श्रम, संसार चाल नाहिन नचे।
करुना छाया, भक्तिफल, ए कलियुग पादप रचे ।। ६७।।

श्रीखोजीजी

खोजी जू के गुरु, हरि भावना प्रवीन महा, देह अन्त समैं, बाँधि घण्टा सो प्रमानियै।
पावै प्रभु जब तब बाजि उठै जानौ यही, पाये पै न बाजी, बड़ी चिन्ता मन आनियै।।
तन त्याग बेर नहीं हुते फेरि पाछे आये, वाही ठौर पौढ़ि देख्यौ, आम पक्यौ मानियै।
तोरि ताके टूक किये, छोटौ एक जन्तु मध्य, गयौ सो विलाय बाजि उठो जग जानियै।। ३६६।।

शिष्य की तौ जोग्यताई, नीके मन आई, अजू, गुरू की प्रबल ऐपै नेकु घटी क्यौं भई।
सुनौ याकी बात, मन बातवत गति कही, सही लै दिखाई, और कथा अति रसमई।।
वेतौ प्रभु पाय चुके, प्रथम, प्रसिद्ध पाछे, आछो फल देखि, हरि जोग उपजी नई।
इच्छा सो सफल स्याम भक्तवश करी, वही रही पूरपच्छ सब विथा उर की गई।। ४००।।

श्रीराँकाजी, श्रीबाँकाजी

राँका पति बाँका तिया, बसैं पुर पण्ढर में, उर में न चाह, नेकु रीति कछु न्यारियै।
लकरीन बीनि करि, जीविका नवीन करैं, धरैं हरिरूप हिये, ताही सौं जियारियै।।
विनती करत, नामदेव श्रीकृष्णदेव जू सौं, कीजै दुख दूर, कही मेरी मति हारियै।
चलौ लै दिखाऊँ तब, तेरे मन भाऊँ रहे, वन छिपि दोऊ, थैली मग माँझ डारियै।। ४०१।।

आये दोऊ तिया पति, पाछे बधू आगे स्वामी, औचक ही मन माँझ, सम्पति निहारियै।
जानी यों जुवति जाति, कभूँ मन चलि जाति, याते वेगि सम्भ्रम सौं, धूरि वापै डारियै।।
पूछी अजू ! कहा कियौ भूमि में निहूरि तुम? कही वही बात, बोली धनहूँ विचारियै।
कहै मोसौं राँका, ऐपै बाँका आज देखी तुही, सुनि प्रभु बोले, बात साँची है हमारियै।। ४०२।।

नामदेव हारे, हरिदेव कही और बात, जोपै दाह गात, चलौ लकरी सकेरियै।
आये दोउ बीनिवे को, देखी इकठौरी ढेरी, द्वैहूँ मिली पावैं, तऊ हाथ नाहिं छेरियै।।
तबतौ प्रगट श्याम, ल्याये यों लिवाय घर, देखि मूँड फोरौ कह्यौ, ऐसे प्रभु फेरियै।
विनती करत, कर जोरि अंग पटधारौ भारौ, बोझ पर्‌यौ लियौ चीर मात्र हेरियै।। ४०३।।

कलि में कामधेनु भक्तजी

पर अर्थ परायन भक्त ये, कामधेनु कलियुग्ग के।।

लक्ष्मण लफरा लड्डू, सन्त जोधपुर त्यागी।
सूरज कुम्भनदास, विमानी खेम विरागी।।
भावन विरही भरत, नफर हरिकेश लटेरा।।
हरिदास अयोध्या चक्रपानि, (दियो) सरजू तट डेरा।।
तिरलोक पुखरदी बिज्जुली, उद्धव वनचर वंस के।
पर अर्थ परायन भक्त ये, कामधेनु कलियुग्ग के।। ६८ ।।

श्रीलड्डू भक्तजी

लड्डू नाम भक्त जाय, निकसे विमुख देस, लेशहूँ न सन्तभाव, जानैं पाप पागे हैं।
देवी कौं प्रसन्न करैं, मानुस को मारि धरैं, लै गये पकरि तहाँ, मारिवे कौं लागे हैं।।
प्रतिमा कौं फारि बिकरार रूप धारि आई, लैकै तरवार, मूँड़ काटे भीजे बागे हैं।
आगे नृत्य करैं, दृग भरैं, साधु पाँव धरैं, ऐसे रखवारे जानि, जन अनुरागे हैं।।। ४०४ ।।

श्रीसन्तजी

सदा साधुसेवा अनुराग रंग पागि रह्यौ, गह्यौ नेम भिक्षा व्रत, गाँव–गाँव जायकै।
आये घर सन्त पूछैं, तिया सौं यों, सन्त कहाँ? सन्त चूल्हे माँझ, कही ऐसे अलसायकै।।
वानी सुनि जानी चले मग सुखदानी मिले, कही कित हुते? सो बखानी उर आयकै।
बोली वह साँच, वही आँच ही कौ ध्यान मेरे, आनि गृह फेरि किये मगन जिंवायकै।। ४०५ ।।

श्रीतिलोकजी सुनार

पूरब में ओक, सो तिलोक हो सुनार जाति, पायौ भक्तिसार साधुसेवा उर धारियै।
भूप के विवाह, सुता जोरो एक जेहरि कौं, गढ़िवे को दियौ, कह्यौ नीके कै, सँवारियै।।
आवत अनन्त सन्त, औसर न पावैं किहूँ, रहे दिन दोय, भूप रोष यों सँभारियै।
ल्यावो रे पकरि, ल्याये, छाड़ियै मकर कही नेकु, रह्यौ काम आवै, नातो मारि डारियै।। ४०६ ।।

आयौ वही दिन, कर छुयौहूँ न इन नृप, करै प्रान बिन, वन माँझ छिप्यौ जायकै।
आये नर चारि पाँच, जानी प्रभु आँच, गढ़ि लियौ सो दिखायौ, साँच चले भक्त भायकै।
भूप कौ सलाम कियौ, जेहरि कौ जोरौ दियौ, लियो कर देखि, नैंन छोड़ैं न अघायकै।
भई रीझि भारी, सब चूक मेटि डारी, धन पायौ लै मुरारी, ऐसे बैठे घर आयकै।। ४०७ ।।

भोर ही महोच्छौ कियौ, जोई माँगै सोई दियौ, नाना पकवान रस खान स्वाद लागे हैं।
सन्त कौ सरूप धरि, लै प्रसाद गोद भरि, गये तहाँ पावै जू तिलोक गृह पागे हैं।।
कौन सो तिलोक? अरे दूसरो तिलोक मैं न, बैन सुनि चैन भयौ, आये निसि रागे हैं।
चहल–पहल धन, भर्‌यौ, घर देखि ढर्‌यो, प्रभु, पदकंज जानी, मेरे भाग जागे है।।४०८।।

अभिलाषपूरक भक्तजी

अभिलाष अधिक पूरन करन ये चिन्तामणि चतुरदास।।
सोम भीम सोमनाथ विको विशाखा लमध्याना।
महदा मुकुन्द गयेश त्रिविक्रम रघु जग जाना।।
बालमीकि वृद्धव्यास जगन झाँझू बीठल आचारज।
हरभूलाला हरिदास बाहुबल राघव आरज।।
लाखा छीतर उद्धव कपूर घाटम घोरी कियौ प्रकास।
अभिलाष अधिक पूरन करन ये चिन्तामणि चतुरदास।।९९।।

दिग्गज भक्तजी

भक्तपाल दिग्गज भगत, ए थानापति सूर धीर।।
देवानन्द नरहरियानन्द, मुकुन्द महीपति सन्तराम तम्बोली।
खेम श्रीरंग नन्द विष्णु बीदा बाजूसुत जोरी।।
छीतम द्वारकादास माधव माडन रूपा दामोदर।
भल नरहरि भगवान बालकान्हर केशव सोहैं घर।।
दास प्रयाग लोहंग गुपाल नागूसुत गृह भक्तभीर।
भक्तपाल दिग्गज भगत, ए थानापति सूर धीर।। १००।।

श्रीहरिभजन परायण भक्तजी

बद्रीनाथ उड़ीसे द्वारका, सेवक सब हरिभजन पर।।
केसौ पुनि हरिनाथ, भीम खेता गोविन्द ब्रह्मचारी।
बालकृष्ण बड़भरथ, अच्युत अपया व्रत धारी।।

पण्डा गोपीनाथ, मुकुन्दा, गजपति महाजस।
गुननिधि जस गोपाल, देइ भक्तनि कौ सरबस।।
श्रीअंग सदा सानिधि रहैं, कृत पुण्यपुंज भल भाग भर।
बद्रीनाथ उड़ीसे द्वारका, सेवक सब हरिभजन पर।।१०१।।

श्रीरुद्रप्रताप गजपतिजी

श्रीप्रतापरुद्र, गजपति कौ बखान कियौ, लियौ भक्तिभाव, महाप्रभु पै न देखहीं।
कियेहूँ उपाय कोटि, ओटि लै संन्यास लियौ, हियौ अकुलायौ, अहो! किहूँ मोको पेखहीं।।
जगन्नाथ रथ आगे, नृत्य करैं मत्त भये, नीलाचल नृप पाँय पर्‌यौ भाग लेखहीं।
छाती सौं लगायौ, प्रेमसागर बुड़ायौ भयौ, अति मन भायौ, दुख देत ये निमेखहीं।। ४०६।।

श्रीहरिसुयश प्रचारक भक्तजी

हरि सुजस प्रचुर कर जगत् में, ये कविजन अतिसय उदार।।
विद्यापति ब्रह्मदास, बहोरन चतुरविहारी।
गोविन्द गंगा रामलाल बरसानियाँ मंगलकारी।।
प्रियदयाल परसराम, भक्त भाई खाटी कौ।
नन्दसुवन की छाप, कवित केशव कौ नीकौ।।
आसकरन पूरन नृपति, भीषम जनदयाल गुन नहिन पार।
हरि सुजस प्रचुर कर जगत् में, ये कविजन अतिसय उदार।।१०२।

श्रीगोविन्दस्वामीजी

गोवर्द्धननाथ साथ, खेलैं सदा झैलैं रंग, अंग सख्यभाव, हिये गोविन्द सुनाम है।
स्वामी करि ख्यात, ताकी बात सुनि लीजै नीके, सुने सरसात नैंन, रीति अभिराम है।।
खेलत हो लाल संग, गयौ उठि दाँव लैके, मारी खैंचि गिल्ली, देखि मन्दिर में स्याम है।
मानि अपराध साधु, धक्का दै निकारि दियौ, मति सो अगाध कैसे, जानै वह बाम है।। ४१०।।

बैठ्यौ कुण्ड तीर जाय, निकसैगो आय वन, दिये हैं लगाय, ताको फल भुगताइयै।
लाल हिय सोच पर्‌यौ, कैसे भर्‌यौ जात वह, अर्‌यौ मग माँझ, भोग धर्‌यौ पै न खाइयै।
कही श्रीगुसाँई जू सौं, मोकौं ये न भायो कछू, चाहौ जो खवावौ तोपै, वाकौं जा मनाइयै।
वाको हुतो दाँव, मोपै सो तौ भाव जान्यौ नहीं, कहै मोसौं बातै सो कुमारै वेगि ल्याइयै।। ४११।।

वन–वन खेले बिन, बनत न मोकौं नेकु, भनत जु गारी, अनगनत लगावैगो।
सुधि–बुधि मेरी गई, भई बड़ी चिन्ता मोहिं, ल्याइये जू ढूँढ़ि, कहूँ चैन ढिंग आवैगो।।
भोग जे लगाये मैं तौ, तनक न पाये रिस, वाकी जब जाय, तब मोहिं कछु भावैगो।
चले उठि धाय, नीठ–नीठ कैं मनाय ल्याये, मन्दिर मे खाय मिलि, कही गरें लावैगो।।४१२।।

गये हैं बहिर भूमि, तहाँ कृष्ण आये झूमि, करी बड़ी धूम, आक बोड़िन सौं मारिकै।
इनहूँ निहारि, उठि मार दई वाही सौं जु, कौतुक अपार, सख्यभाव रससारकै।।
माता मग चाहै बड़ी, बेर भई आई तहाँ, कहाँ बार लाई ओट, पाई उर धारिकै।
आयौ यों विचार, अनुसार सदाचार कियौ, लियौ प्रेम गाढ़ कभूँ, करत सँभारिकै।।४१३।।

आवत हो भोग, महासुन्दर मन्दिर कौं, रह्यौ मग बैठि, कही आगै मोहिं दीजियै।
भयौ कोप भारी, थार डारि जा पुकार करी, भरी न अनीति जात, सेवा यह लीजियै।
बोलिकै सुनाई अहो, कहा मनभाई? तब, बोलिकै बताई, अजू बात कान किजियै।
पहिले जु खाय, वन माँझ उठि जाय पाछे, पाऊँ कहाँ धाय, सुनि मति रस भीजियै।।४१४।।

मास परायण अठाहरवाँ विश्राम

श्रीमथुरामण्डलवासी भक्तजी

जे बसे बसत मथुरा मण्डल, ते दयादृष्टि मो पर करौ।।
रघुनाथ गोपीनाथ, रामभद्र दासूस्वामी।
गुँजामाली चित उत्तम, बीठल मरहठ निहकामी।।
यदुनन्दन रघुनाथ रामानन्द, गोविन्द मुरली सोती।
हरिदास मिश्र, भगवान् मुकुन्द केसौ दण्डोती।।
चतुरभुज चरित्र विष्णुदास, बेनी पद मो सिर धरौ।
जे बसे बसत मथुरा मण्डल, ते दयादृष्टि मो पर करौ।।१०३।।

श्रीगुँजामालीजी और उनकी पुत्रबधू

कही नाभा स्वामी आप, गायौ मैं प्रताप सन्त, बसे ब्रज बसैं सो तौ, महिमा अपार है।
भये गुँजामाली, गुँजाहार धारि नाम पर्‌यौ, कर्‌यौ वास लाहौर में, आगें सुनौ सार है।।
सुत बधू विधवा सौं, बोलिकै सुनायौ लेहु, धनपति गेह श्रीगोपाल भरतार है।
देवौ प्रभुसेवा माँगै, नारि बार–बार यहै, डारै सब वारि यापै, गनै जग छार है।।४१५।।

दई सेवा वाहि, और घर धन तिया दियौ, लियौ ब्रजवास, वाकी प्रीति सुनि लीजियै।
ठाकुर विराजैं तहाँ, खेलैं सुत औरनि के, डारैं ईंटा खोहा, पर्‌यौ प्रभु पर खीझियै।।
दिये वे बिड़ारि, धर्‌यौ भोग पै न खात हरि, पूछी कही वेई आवैं, तबही तौ जीजियै।
कह्यौ रिस भरि, धूरि नीकी भोर डारौं भरि, खावौ अब हा–हा करी, पायौ ल्याई रीझियै।।४१६।।

श्रीभक्तराज युवतीजनजी

कलिजुग जुवतीजन भक्तराज, महिमा सब जानै जगत्।।
सीता झाली सुमति सोभा प्रभुता उमा भटियानी।
गंगा गौरी कुँवरि उबीठा, गोपाली गनेसदे रानी।।
कला लखा कृतगढ़ौ, मानमती सुचि सतिभामा।
जमुना कोली रामा, मृगा देवादे भक्तन विश्रामा।।
जुग जेवा कीकी कमला, देवकी हीरा हरिचेरी पोखे भगत।
कलिजुग जुवतीजन भक्तराज, महिमा सब जानै जगत्।।१०४।।

श्रीगणेशदेई रानीजी
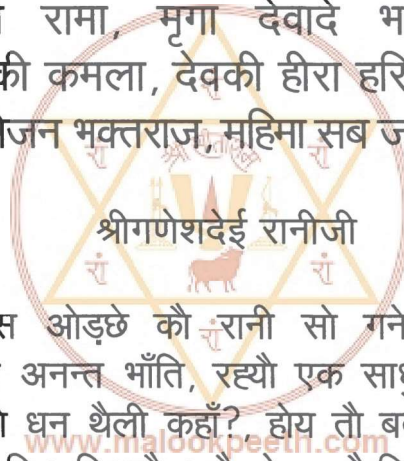
मधुकरसाह भूप भयौ देस ओड़छे कौ रानी सो गनेसदेई काम बाँकौ कियौ है।
आवैं बहु सन्त सेवा करत अनन्त भाँति, रह्यौ एक साधु, खान–पान सुख लियौ है।।
निपट अकेली देखि, बोल्यौ धन थैली कहाँ?, होय तौ बताऊँ, सब तुम जानौ हियौ है।
मारी जाँघ छुरी, लखि लोहू वेगि भागि गयौ, भयौ सोच जाने जिनि, राजा बन्द दियौ है।।४०७।।

बाँधि नीकी भाँति पौढ़ि, रही कही काहू सौं न, आयो ढिंग राजा, मति आवौ तिया धर्म है।
बीते दिन तीन, जानी वेदन नवीन कछू, कहियै प्रवीन मोसौं, खोलि सब मर्म है।।
टारी बार दोय चारि, नृप के विचार पर्‌यो, कर्‌यौ समाधान जिन, आनौ जिय भर्म है।
फिर्‌यौ आस–पास भूमि, पर तन रास करी, भक्तिकौ प्रभाव छाँड़ि, तिया पति सर्म है।।४१८।।

हरि के सम्मत जे भगत, ते दासनि के दास।।
नरबाहन बाहन बरीस जापू जैमल बीदावत।
जयन्त धारा रूपा अनुभई ऊदारावत।

गम्भीरे अर्जुन जनार्दन गोविन्द जीता।
दामोदर साँपिले गदा ईश्वर हेमविदीता।।
मयानन्द महिमा अनन्त, गुढीले तुलसीदास।
हरि के सम्मत जे, भगत, ते दासनि के दास।। १०५।।

श्रीनरबाहनजी

रहैं भौगाँव नांव नरबाहन साधुसेवी, लूटि लई नाव, जाकी बन्दीखानै दियौ है।
लौंड़ी आवै दैन कछू, खायवे को, आई दया, अति अकुलाई लै, उपाय यह कियौ है।।
बोलौ राधवल्लभ औ, लेवौ हरिवंश नाम, पूछै शिष्य नाम कहौ, पूछी नाम लियौ है।
दई मँगवाय वस्तु, राखियो दुराय बात, आय दास भयौ, कही रीझि पद दियौ है।। ४१६।।

श्रीमुख पूजा सन्त की, आपुन तें अधिकी कही।।
यहै वचन परमान, दास गाँवरी जटीयाने भाऊ।
बूँदी बनियाँ राम, मँड़ौते मोहनवारी दाऊ।।
माड़ौठी जगदीसदास, लछमन चटूथावल भारी।
सुनपथ में भगवान्, सबै सलखान गुपाल उधारी।।
जोबनेर गोपाल के, भक्त इष्टता निर्वही।
श्रीमुख पूजा सन्त की, आपुन तें अधिकी कही।। १०६।।

श्रीगोपालदास जोबनेरी

जोबनेर वास, सो गोपाल भक्त–इष्ट ताकौं, कियौ निर्वाह बात, मोकौं लागी प्यारियै।
भयौ हो विरक्त कोऊ कुल में प्रसंग सुन्यौ, आयौ यों परीच्छा लैन, द्वार पै विचारियै।।
आय पर्यौ पाँय, पाँय धारौ निज मन्दिर में, सुन्दरी न देखौं मुख, पन कैसे टारियै।
चलो जिन टारौ तिया, रहैंगी किनारौ करि, चले सब छिपीं नेकु, देखी याकै मारियै।।४२०।।

एक पै तमाचो दियौ, दूसरे ने रोष कियौ, देवौ या कपोल पै यों, वानी कही प्यारी है।
सुनि आँसू भरि आये, जाय लपटाये पाँय, कैसे कही जाय, यह रीति कछु न्यारी है।।
भक्त इष्ट सुन्यौ मेरे, बड़ौ अचरज भयौ, लई मैं परीच्छा, भई सिच्छा मोकौं भारी है।
बोल्यौ अकुलाय, अजू पैयै कहाँ भाय ऐपै, साधु सुख पाय कहैं, यही मेरी ज्यारी है।।४२१।।

श्रीलाखाजी

परमहंस वंशनि में, भयौ विभागी बानरौ।।
मुरधरखण्ड निवास, भूप सब आज्ञाकारी।
राम–नाम विश्वास, भक्त पद रज व्रतधारी।
जगन्नाथ के द्वार, दँडौतनि प्रभु पै धायौ।
दई दास की दादि, हुण्डी करि फेरि पठायौ।।
सुरधुनी ओघ संसर्ग तैं, नाम बदल कुच्छित नरौ।
परमहंस वंशनि में , भयौ विभागी बानरौ।।१०७।।

लाखा नाम भक्त, वाकौ बानरौ बखान कियौ, कहै, जग डूम, जासौ मेरो सिरमौर है।
करैं साधुसेवा बहु, पाक डारि मेवा, सन्त जेंवत अनन्त, सुख पावै कौर–कौर है।।
ऐसे में अकाल पर्‌यौ, आवैं धरि माल–जाल, कैसे प्रतिपाल करैं, ताकी और ठौर है।
प्रभु जू स्वपन दियौ, कियौं में जतन एक, गाड़ी भरि गेहूँ भैंसि, आवै करौ गौर है।।४२२।।

गेहूँ कोठी डारि मुँह, मूँदि नीचे देवो खोलि, निकसै अतोल, पीसि रोटी लै बनाइयै।
दूध जितौ होय, सो जमायकै विलोय लीजै, दीजै यों चुपरि संग, छाछ दै जिंवाइयै।।
खुलि गई आँखैं, भाखैं तिया सौं जु आज्ञा दई, भई मनभाई, अजू हरिगुन गाइयै।
भोर भयें गाड़ी भैंसि, आई वही रीति करी, करी साधुसेवा नाना भाँतिन रिझाइयै।।४२३।।

आई कौन रीति, वाकी प्रीतिहूँ बखान कीजै, लीजै उरधारि, सार भक्ति निरधार है।
रहै ढिंग गाँव, तहाँ सभा एक ठाँव भई, टूटि गयो भाई, सो उगाही कौ विचार है।।
बोलि उठ्यौ कोऊ, यों व्यौहार को तौ भार चुक्यौ, लीजियै सँभारि लाखा सन्त भवपार है।।
लाज दबि तिन दिये, गेहूँ लै पचास मन, दई निज भैंसि सग सब सरदार है।।४२४।।

मारबाड़ देस तैं, चल्यौई साष्टांग किये, हिये जगन्नाथदेव, याही पन जाइयै।
नेह भरि भारी, देह वारि फेरि डारी, कैसें करै तनधारी, नेकु श्रम मुरझाइयै।।
पहुँच्यौ निकट जाय, पालकी पठाइ दई, कहैं लाखा भक्त कौन? वेगि दै बताइयै।
काहू कहि दियौ, जाय कर गहि लियौ, अजू! चलौ प्रभु पास इहि छिनहिं बुलाइयै।।४२५।।

कैसे चढ़ौं पालकी में?, पन प्रतिपाल कीजै, दीजै मोकौं दान, यही भाँति जा निहारियै।
बोले प्रभु कही यों, सुमिरनी बनाय ल्याये, अब पहिराय मोहिं सुनि उर धारियै।।

चले चढ़ि–बढ़ि, कियौ चाहैं यह जानी मैं तौ, पढ़ि–पढ़ि पोथी प्रेम मोपै बिसतारियै।
जायकै निहारे, तन मन प्रान वारे, जगन्नाथ जू के प्यारे, नेकु ढिंग तें न टारियै।। ४२६।।

बेटी एक क्याँरी, ब्याहि देत न विचारी, मन, धन हरि साधुनि कौ, कैसे कै लगाइयै।
कीजै वाकौ काज कही, जगन्नाथदेव जू ने, लीजै मोपै द्रव्य, उर नेकहूँ न आइयै।।
विदा पै न भये, चले, दृग भरि लये गये, आगे नृप भक्त, मग चौकी अटकाइयै।
दियौ है सुपन प्रभु, जिनि हठ करौ अजू, हुण्डी लिखि दई लई, बिनै कै जताइयै।। ४२७।।

हुण्डी सो हजार की यों, लैकै गृहद्वार आये, तामें ते लगायौ सौक, बेटी ब्याह कियौ है।
और सब सन्तनि, बुलायकैं खवाय दिये, लिये पग दास, सुखरासि पन लियौ है।।
ऐसें ही बहुत दाम, वाही के निमित्त लै–लै, सन्त भुगताये अति हरषित हियौ है।
चरित अपार, कछु मति अनुसार कह्यौ, लह्यौं जिन स्वाद, सो तौ पाय निधि जियौ है।।४२८।।

मास परायण उन्नीसवाँ विश्राम

श्रीनरसीजी

जगत् विदित नरसी भगत, (जिन) गुज्जर धर पावन करी।
महास्मारत लोग, भक्ति लौलेश न जानैं।
माला मुद्रा देखि, तासु की निन्दा ठानैं।।
ऐसे कुल उत्पन्न, भयौ भागौत सिरोमनि।
ऊसर तें सर कियौ, खण्डदोषहिं खोयो जिनि।।
बहुत ठौर परचै दियौ, रसरीति भक्ति हिरदै धरी।
जगत् विदित नरसी भगत, (जिन) गुज्जर धर पावन करी।।१०८।।

जूनागढ़ वास, पिता–माता तन नास भयौ, रहै एक भाई, औ भौजाई रिस भरी है।
डोलत–फिरत आय, बोलत पियावौ नीर, भाभी पै न जानी पीर, बोली जरीबरी है।।
आवत कमाये जल, प्याये बिन सरै कैसे?, पियौ यों जवाब दियौ, देह थरथरी है।
निकसे विचारि कहूँ, दीजै तन डारि मानौ, शिव पै पुकार करी, रहे चित धरी है।। ४२९।।

बीते दिन सात, शिव धाम तें न जात, बार, परै काहू तुच्छ द्वार, सोऊ सुधि लेत है।
इतनी विचारि, भूख–प्यास दई टारि, लियौ प्रगट सरूप धारि, भयौ हिये हेत है।।
बोले वर माँग अजू, माँगिवौ न जानत हौं, तुम्हें जोई प्यारौ, सोई देवो चितचेत है।
पर्‌यो सोच भारी, मेरी प्रान–प्यारी नारी, तासौं कहत डरत वेद, कहै नेति–नेति है।।४३०।।

दियौं मैं वृकासुर को, वर डर भयौ तहाँ, वैसे डर कोटि–कोटि, यापै वारि डारे हैं।
बालक न होय, यह पालक है लोकनि कौ, मन कौ विचार कहा, दीजै प्रान प्यारे है।।
जोपै नहीं देत, मेरौ बोलिवो अचेत होत, दियौ निज हेत तन आलिन के धारे हैं।
ल्याये वृन्दावन, रासमण्डल जटित मनि, प्रिया अनगन बीच, लाल जू निहारे हैं।। ४३१।।

हीरनि खचित, रासमण्डल नचत दोऊ, रचित अपार नृत्य, गान तान न्यारियै।
रूप उजियारी, चन्द चाँदनी न सम तारी, देत कर–तारी, लाल गति लेत प्यारियै।।
ग्रीवा की ढुरनि, कर आँगुरी मुरनि, मुख मधुर सुरनि, सुनि श्रवन तपारियै।
बजत मृदंग मुँहचंग, संग अंग–अंग, उठति तरंग, रंग, छबि जीय की ज्यारियै।। ४३२।।

दई लै मसाल हाथ, निरखि निहाल भई, लाल डीठि परी कोऊ नई यह आई है।
शिव सहचरी, रंग भरी अटकरी, बात, मृदु–मुसकात, नैंन कोर में जताई है।।
चाहै याहि टारौ, यह चाहै प्रान वारौं, तब स्याम ढिंग आय कही, नीके समुझाई है।
जावौ यहै ध्यान करौ, करौ सुधि आऊँ जहाँ, आये निज ठौर, चटपटी–सी लगाई है।। ४३३।।

कीनी ठौर न्यारी, विप्र सुता भई नारी, एक सुत उभै बारी, जग भक्ति बिसतारी है।
आवैं बहु सन्त, सुख देत हैं अनन्त, गुन गावत रिझावत औ सेवा विधि धारी है।।
जिती द्विज जात, दुख भयौ अति गात, मान्यौ बड़ौ उतपात, दोष करै न विचारी है।
एतौ रूप सागर में, नागर मगन महा, सकैं कहा करि, चहुँओर गिरिधारी है।। ४३४।।

तीरथ करत साधु, आये, पुर पूछै कोऊ, हुण्डी लिखि देय हमें ? द्वारका सिधारिवे।
जे वे रहे दूषि, कही जात ही भगावै भूषि, नरसी विदित शाह आगे दाम डारिवे।
चरन पकरि गिरि, जावो जौ लिखावौ अहो, कहौ बार–बार सुनि, विनती न टारिवे।
दियौ लै बताय घर, जाय वही रीति करी, भरी अँकवार मेरे, भाग कहा बारिवे।। ४३५।।

सात सै रुपैया गनि ढेरी करि दई आगे, लागे पग देवौ लिखि, कही बार–बार है।
जानी बहकाये प्रभु, दाम दै पठाये लिखी, किये मनभाये, शाह साँवल उदार है।।
वाही हाथ दीजियै लै कीजिये निशंक काज, गये जदु राजधानी, पूछ्यो सौं बजार है।
ढूँढ़ि फिरि हारे, भूख–प्यास मीड़ि डारे पुर, तजि भये न्यारे, दुख सागर अपार है।। ४३६।।

शाह कौ सरूप करि, आये काँधे थैली धरि, कौन पास हुण्डी? दाम लीजियै गनायकै।
बोलि उठे ढूँढ़ि हारे!, भले जू निहारे आजु, कही लाज हमें देत, मैं हूँ पाये आयकै।।
मेरौ है इको सौ वास, जानै कोऊ हरिदास, लेवो सुखरासि, करो चीठी दीजै जायकै।
धरे हैं रुपैया ढेर, लिख्यो करौ बेर–बेर, फेरि आय पाती दई, लई गरे लायकै।। ४३७।।

देखि आये शाह ? दौरि मिले उतसाह अंग, वेऊ रंग बोरे, सन्त संग कौ प्रभाव है।
हुण्डी लिखि दई दाम, लिये सो खवाय दिये, किये प्रभु पूरे काम, सन्तनि सौं भाव है।।
सुता ससुरारि भयौ, छूछक विचारि सासु, देत बहु गारि, जाको निपट अभाव है।।
पिता सौं पठाई, कहि छाती लै जराई इनि, जोपै कछु दियौ जाय, आवो यह दाव है।। ४३८।।

चले गाड़ी टूटी-सी, उभय बूढ़े बैल जोरि, पहुँचे नगर छोर, द्विज कही जायकै।
सुनत ही आई देखि, मुँह पियराई फिरी, दाम नहीं एक, तुम कियौ कहा आयकै।।
चिन्ता जिनि करौ जाय, सासु ढिंग ढरौ लिखि, कागद में धरौ अति, उत्तम अघायकै।
कही समझाय सुनि, निपट रिसाय उठी, कियौ परिहास लिख्यौ, गाँव खुनसायकै।। ४३६।।

कागद लै आई देखि, दूसरें फिराई पुनि, भूलै पै न पाई, जात पाथर लिखाये हैं।
रहिवे कौं दई, ठौर फूटी ढही पौरि जाके, बैठे सिरमौर आय बहु सुख पाये हैं।।
जल दै पठायौ, भलीभाँति कै औटायौ, भई बरषा सिरायौ, यों समोयकै अन्याये हैं।
कोठरी सँवारि, आगे परदा सो दियौ डारि, लै बजाई तार, वेश अगनित आये है।। ४४०।।

गाँव पहिरायो, छबि छायौ जस गायो अहो, हाटक रजत उभै, पाथर हू आये हैं।
रहि गई एक, भूले लिखत अनेक जहाँ, लेहैं ताही पास, जापै सब मिलि पाये हैं।।
विनती करत बेटी, दीजियै जू लाज रहै, दियो मँगवाय हरि, फेरिकै बुलाये हैं।
अँग न समात सुता, तात कौ निरखि रंग, संग चली आई, पति आदि बिसराये हैं।।। ४४१।।

सुता हुतीं दोय भोय, भक्ति रही घर ही में, एक पति त्याग, एक पतिहू न कियौ है।
पुर में फिरत उभै, गाइन सुचाइन सौं, धन सौं न भेंट, काहू नाम कहि दियौ है।।
आई लगी गाइवे कौं, कही समुझाय अहो, पायवे को नाहीं, कछु पावै दुख हियौ है।
चाहौ हरिभक्ति तौ, मुँड़ायकै लड़ाय लीजे, कीजै बार दूर रहीं, प्रेमरस पियौ है।। ४४२।।

मिलीं उभै सुता, रंग झिली संग गायन वै, चायनि सौं नृत्य करै भायनि बतायकै।
सालंग है नाम, मामा मण्डलीक मन्त्री रहै, कहै विपरीत बड़ी, राजा सौं सुनायकै।।
बड़े-बड़े दण्डी, और पण्डित समाज कियौ, करौ वाकी भण्डी, देश दिजिये छुटायकै।
आये चार चोबदार, चलौ जू विचार कीजै, भयौ दरबार हमें, दिये हैं पठायकै।। ४४३।।

चारौं तुम जावो टरि, भयौ हमें राजा डर, सकै कहा करि? अजू चलैं संग-संगहीं।।
नाचत बजावत ये, चलीं ढिंग गावत, सुभावत मगन जानी, भीजि गई रंगहीं।।
आये वाही भाँति, सभा प्रभाहत भई तऊ, बोले कहा रीति यह, जुवती प्रसंगहीं?।
कही भक्तिगन्ध, दूरि, पढ़े पोथी परी धूरि, श्रीशुक सराही तिया, माथुरनि भंगहीं।। ४४४।।

बोलि उठ्यौ विप्र एक, छूछक प्रसंग देख्यौ कह्यौ, रसरंग भर्यौ, ढर्यौ नृप पाँय में।
कही जू विराजौ गाजौ, नित सुख साजौ जाय, किये हरि राय वश, भीजे रहौ भाय में।।
धारौ उर और, सिरमौर प्रभु मन्दिर में, सुन्दर केदारौ राग, गावै भरे चाय में।
स्याम कण्ठमाल टूटि, आवत रसाल हियें, देखि दुख पावैं परे, विमुख सुभाय में।। ४४५।।

नृपति सिखायौ जाय, वृथा जस छायौ काचे, सूत में पुहायौ हार, टूटै ख्यात करी है।
माता हरिभक्त, भूप कही जिनि करौ कान, तऊ बानि राजस की, माया मति हरी है।।
गयौ ढिंग मन्दिर के, सुन्दर मँगाय पाट, तागौ बटवाय करि, माला गुहि धरी है।
प्रभु पहिराय कह्यौ, गाय अब जानि परै, भरै सुर राग और गायौ पै न परी है।। ४४६।।

विमुख प्रसन्न भये, तबतौ उराहने दये, नये–नये चोज हरि, सनमुख भाखिये।
जाने ग्वालबाल एक, माल गहि रहे हिये, जिये लाग्यौ यही रूप, कहौ लाख लाखिये।।
नारायन बड़े महा, अहो मेरे भाग लिख्यो, करै कौन दूरि, छबि पूरि अभिलाखिये।
म्हारो कहा जाय, आय परसे कलंक तुम्हें, राखियै निशंक हार, भक्ति मारि नाखिये।। ४४७।।

रहै तहाँ शाह, किये उभै लै विवाह जाने, तिया एक भक्त कहै, हरि कौं दिखाइये।
नरसी कही ही भलै, सोई प्रभु वानी लई, साँच करि दई, गये राग छुटवाइयै।।
बोले पट खोलि, दिये, किये दरसन तानै, ताने पट सोवै वह, कही देवौ भाइयै।
लिये दाम, काम कियौ, कागद गहाय दियो, दियौ कछु खाइवे कौं पायौ लै भिंजाइयै।। ४४८।।

गहने धर्यौ हो राग, केदारौ सो शाह घर, धरि रूप नरसी कौ, जायकै छुटायौ है।
कागद लै डार्यौ गोद, मोद भरि गाय उठे, आय झन्न–झन्न श्याम, हार पहिरायौ है।।
भयौ जै–जैकार, नृप पाँय लपटाय गयौ, गह्यौ हिये भाव, सो प्रभाव दरसायौ है।
विमुख खिसाने भये, गये उठि नये नाहिं, बिन हरिकृपा भक्तिपन्थ जात पायौ है।। ४४६।।

करन सगाई आयो, पायो वर भायो नाहिं, घर–घर फिर्यो द्विज नरसी बतायौ है।
आय सुख पाय, पूछ्यौ सुत सो दिखाय दियौ, कियौ लै तिलक मन, देखत चुरायौ है।।
अजू हम लायक न, तुम सब लायक हौ, सायक सो छूट्यौ, जाय नाम लै सुनायौ है।
सुनत ही माथौ फोरि, कहें तालकूटा वह, बाल, बोरि आये, जावो फेरि दुख छायौ है।। ४५०।।

काटिकै अँगूठा डारौ, तब सो उचारौ बात, मन में विचारौ, कियौ तिलक बनायकै।
जाने सुता भाग ऐसे, रहे सोच पागि सब, आवै जब ब्याहिवे कौ, धन दै अघायकै।।
लगन हूँ लिखि दियौ, दियौ द्विज आनि लियौ, डारि राख्यौ कहूँ, गावैं ताल ए बजायकै।
रहे दिन चार, पै विचार नहीं नेकु मन, आये श्री कृष्ण–रूक्मिनी जू, झूमि मिले धायकै।। ४५१।।

ठौर–ठौर पकवान, होत तिया गान करै, घुरत निसान कान सुनिये न बात है।
चित्रमुख किये, लै विचित्र पट्टरानी आप, घोरी रंग बोरी पै, चढ़ायौ सुत रात है।।
करी सो ज्यौंनार, तामें मानस अपार आये, द्विजनि विचारि, पोट बाँधी पै न मात है।
मणिमय ही साज–बाज, गज रथ ऊँट कोर, झमकै किशोर आज, सजी यों बरात है।। ४५२।।

नरसी सौं कहें गहें हाथ, तुम साथ चलौ, अन्तरिच्छ में हूँ चलौं, इति बात मानियै।
कही अजू! जानौ तुम, मैं तो हिये आनौं यहैं, लहै सुख मन मेरो, फेंट ताल आनियै।।
आप ही विचारि सब, भार सौं उठाइ लियौ, दिया डेरा पुरी, समधी की पहिचानियै।
मानस पठायौ, दिन आयौ पै न आये, अहो!, देखैं छबि छाये, नर पूछैं जू बखानियै।। ४५३।।

नरसी बरात मत जानौ यह नरसी की नरसी न पावै ऐसी समझ अपार है।
आयकै सुनाई सुधि–बुधि बिसराई अहो करत हँसाई बात भाखौ निरधार है।।
गयौ जो सगाई करि दर वर आयौ द्विज अंग में न मात कैसे रंग बिसतार है।
कही एक घास धनरासि सौं न पूजै किहूँ चहुँदिसि पूरि रही देखौ भक्तिसार है।। ४५४।।

चले अचरज मानि, देखि अभिमान गयौ, लयौ पाछौ ब्राह्मन को, हमें राखि लीजिये।
जाइ गहि पाँय, रह्यौ, भाय भरि दया करौ, गये दृग भरे पाँव, परे कृपा कीजिये।।
मिले भरि अँक लै, दिखायौ सो मयंक मुख, हूजिये निशंक इन्हे, भार सुता दीजिये।
ब्याह करि आये, भक्तिभाव लपटाये सब, गाये गुण जाने, जेते सुनि–सुनि जीजिये।। ४५५।।

मास परायण बीसवाँ विश्राम

श्रीयशोधरजी

दिवदास वंश, जसोधर सदन, भई भक्ति अनपायनी।।
सुत कलत्र सम्मत, सबै गोविन्द परायन।
सेवत हरि हरिदास, द्रवत मुख राम रसायन।।
सीतापति कौ सुजस, प्रथम ही गवन बखान्यौ।
द्वै सुत दीजै मोहिं, कवित सबही जग जान्यौ।।
गिरा गदित लीला मधुर, सन्तनि आनन्ददायिनी।
दिवदास वंश, जसोधर सदन, भई भक्ति अनपायनी।। १०६।।

नवाह परायण षष्ठ विश्राम

श्रीनन्ददासजी

(श्री) नन्ददास आनन्द निधि, रसिक सु प्रभु हित रँग मगे।।
लीला पद रस रीति, ग्रन्थ रचना में नागर।
सरस उक्ति जुत जुक्ति, भक्तिरस गान उजागर।।
प्रचुर पयध लौं सुजस, रामपुर ग्राम निवासी।
सकल सुकुल सम्बलित, भक्तपद रेनु उपासी।।
चन्द्रहास अग्रज सुहृद्, परम प्रेम पै में पगे।
(श्री) नन्ददास आनन्द निधि, रसिक सु प्रभु हित रँग मगे।। ११०।।

श्रीजनगोपालजी

संसार सकल व्यापक भई, जकरी जन गोपाल की।।
भक्ति तेज अति भाल, सन्त मण्डल कौ मण्डन।
बुधि प्रवेश भागौत, ग्रन्थि संशय कौ खण्डन।।
नरहड़ ग्राम निवास, देश बागड़ निस्तार्यौ।
नवधा भजन प्रबोध, अनन्य दासन व्रत धार्यौ।।
भक्त कृपा बांछी, सदा पदरज राधा लाल की।
संसार सकल व्यापक भई, जकरी जन गोपाल की।। १११।।

श्रीमाधवदाजी

माधव दृढ़ महि ऊपरै, प्रचुर करी लोटन भगति।।
प्रसिद्ध प्रेम की राशि, गढ़ागढ़ परचौ दीयौ।
ऊँचे तें भयौ पात, स्याम साँचौ पन कीयौ।।
सुत नाती पुनि, सदृश चलत ऊही परिपाटी।
भक्तनि सौं अति प्रेम, नेम नहीं किहुँ अँग घाटी।।
नृत्य करत नहिं तन सँभार, समसर जनकन की सकति।
माधव दृढ़ महि ऊपरै, प्रचुर करी लोटन भगति।। ११२।।

गढ़ागढ़ पुर नाम, माधौ बढ़ि प्रेम भूमि, लोटैं जब नृत्य करैं, भूलैं सुधि अंग की।
भूपति विमुख झूठ, जानिकै परीच्छा लई, आनि तीन छाति पर, देखी गति रंग की।।
नूपुरनि बाँधि नाचि, साँच सो दिखाय दियौ, गिर्यौ हू कराह मध्य, जियौ मति पंग की।
बड़ौ त्रास भयौ नृप, दास बिसवास बढ्यौ, बढ्यौ उर भाव, रति न्यारी या प्रसंग की।। ४५६।।

श्रीअंगदजी

अभिलाष भक्त अंगद कौ, पुरुषोत्तम पूरन कर्‌यौ।।
नग अमोल इक ताहि, सबै भूपति मिलि जाचैं।
साम दाम बहु करैं, दास नाहिन मत काचैं।।
एक समै संकष्ट, लेय पानी महँ डार्‌यौ।
प्रभो तिहारी वस्तु, वदन ते वचन उचार्‌यौ।।
पाँच दोय सत कोस ते, हरि हीरा लै उर धर्‌यौ।
अभिलाष भक्त अंगद कौ पुरुषोत्तम पूरन कर्‌यौ।। ११३।।

रायसेन गढ़ वास, नृप सो सिलाहदी जू, ताको यह काका रहे, अंगद विमुख है।
ताकी नारी प्यारी, प्रभु साधुसेवा धारी उर, आये गुरू घर कहैं, कृष्ण कथा सुख है।।
बैठे भौन कौन?, देखि कैसें मौन रह्यो जात?, बोल्यो तिया जात कहा, करौ नर रुख है।
सुनि उठि गये, बधू अन्न–जल त्यागि दये, लये पाँव जाय, विषै वश भयौ दुख है।। ४५७।।

मुख न दिखावै याहि, देख्यो ही सुहावै कही, भावै सोई करौ, नेकु वदन दिखाइयै।
मैं हूँ जल त्यागि दियौ, अन्न जात कापै लियो, जीवौं तब नीके, जब आपु कछु खाइयै।।
बोली मोसौं 'बोलौ, जिन छाँड़ौं तन याही छिन, पन साँचौ होतौ, तोपै सुनत समाइयै'।
'कहौ अब कीजै जोई, मेरी मति गई खोई', भोई उर दया, बात कहि समझाइयै।। ४५८।।

'वेई गुरु करौ जाय, पाँयन में परौ' गयौ, चायनि लिवाय ल्यायौ, भयौ शिष्य दीन है।
धारी उर माल, भाल तिलक बनाय कियौ, लियो सीत, प्रीति कोऊ उपजी नवीन है।।
चढ़ी फौज संग चढ्यौ, बैरी पुर मारि बढ्यौ, कढ्यौ टोपी लैकै हीरा सत एक पीन है।
डारे सब बेंचि पागपेच मध्य राख्यौं मुख्य, भाष्यौ 'सो अमोल करौं जगन्नाथ लीन है'।। ४५९।।

कानाकानी भई नृप बात सुनि लई कही, 'हीरा वह देव तोपै और माफ किये हैं'।
आय समुझावैं बहु जुगति बनावैं याके, मन में न आवैं जाय सबै कहि दिये हैं।।

अंगद बहिन लागै वाकी भूवा पागै वासौं, 'देवो विष मारौ फिर तूही पग छिये हैं'।
करत रसोई घोरि गरल मिलायो पाक, भोग हूँ लगायो 'अजू आवो' बोलि लिये हैं।।४६०।।

वाकी एक सुता संग लैकै बैठें जेंवन कौं, आई सो छिपाय कही 'जेंवौ कहूँ गई है'।
जेंवत न बोधि हारी तब सो विचारी प्रीति, भीति रोय मिली गरें रीति कहि दई है।।
प्रभु लै जिवाये राँड–भाँड कै निकासि द्वार, दै करि किवार सब पायौ ओप नई है।
वह दुख हियें रह्यौ कह्यौ कैसे जात काहू? बात सुनी नृपहूँ नै जैसी भाँति भई है।।४६१।।

चले नीलाचल हीरा जाय पहिराय आवें, आय घेरि लीने नृप नरनि खिसायकै।
कही डारि देवौ कै लराई सनमुख लेवौ, बस न हमारौ भूप आज्ञा आये धायकै।।
बोले 'नेकु रहौ मैं अन्हाय पकराय देत,' हेत मन और जल डार्यौ लै दिखायकै।
'वस्तु है तिहारी प्रभु लीजियै' उचारी यह, वानी लागी प्यारी उर धारी सुख पायकै।।४६२।।

ऐतौ घर आये वे तो जल मधि कूदि छाये, अति अकुलाये नेकु खोजहूँ न पायौ है।
राजा चलि आयौ सब नीर कढ़वायौ कीच, देखि मुरझायौ दुखसागर अन्हायौ है।।
जगन्नाथदेव आज्ञा दई 'वाहि सुधि देवौ', आयकै सुनाई नर–तन बिसरायौ है।
गयौ जाय देख्यौ उर पर जगमग रह्यौ, लह्यौ सुख नैननि कौ कापै जात गायौ है।।४६३।।

राजा हिय ताप भयौ दयौ अन्न त्यागि कह्यौ, आवै जोपै भाग मेरे ब्राह्मन पठाये हैं।
धरनौ दे रहे कहे नृप के वचन सब, तब ह्वै दयाल आप पुर ढिंग आये हैं।।
भूप सुनि आगे आय पाँय लपटाय गयौ, लयौ उर लाय दृग नीर लै भिजाये हैं।
राजा सरबसु दियौ जियौ हरिभक्ति कियौ, हियौ सरसायौ गुन जाने जिते गाये हैं।।४६४।।

श्रीचतुर्भुजजी नृपति

चतुर्भुज नृपति की भक्ति को, कौन भूप सरवर करैं।।
भक्त आगमन सुनत, सनमुख जोजन इक जाई।
सदन आनि सत्कार, सदृश गोविन्द बड़ाई।।
पाद प्रछालन सुहथ, राय रानी मन साँचै।
धूप दीप नैवेद्य, बहुरि तिन आगें नाचैं।।
यह रीति करौलीधीश की, तन मन धन आगे धरैं।
चतुर्भुज नृपति की भक्ति कौ कौन भूप सरवर करैं।। ११४।।

पुर ढिंग चारौं ओर चौकी राखी जोजन पै, जो जन ही आवें तिन्हें ल्यावत लिवायकै।
मालाधारी दास मानि आवै कोऊ द्वार जोपै, करै वही रीति सो सुनाई छप्पै गायकै।
सुनी एक भूप भक्त निपट अनूप कथा, सबकौं भण्डार खोलि देत बोल्यौ धायकै।
पात्र औ अपात्र यों विचार ही जौ नाहीं तौपै, कहा ऐसी बात? दई नेकु मैं उड़ायकै।।४६५।।

भागवत गावै भक्तभूप एक विप्र तहाँ, बोलिकें सुनावै 'ऐसी मन जिन ल्याइयै'।
पावै आशै कौन हृदय भौन में प्रवेश करि? भरि अनुराग कही उर मधि आइयै।।
करी लै परीच्छा भाट विमुख पठाय दियौ, दियौ माला तिलक सो दास यों सुनाइयै।
गयौ, गयौ भूलि फूलि कुल विसतार कियौ, लियौ पहिचानि अब जान कैसे पाइयै।।४६६।।

बीते दिन बीस तीस आई वह सीख सुधि, कही हरिदास कोऊ आयौ यों सुनाइयै।
बोले जू निशंक जावौ गावौ गुन गोविन्द के, आये घर मध्य भूप करी जैसी भाइयै।।
भक्ति के प्रसंग कौ न रंग कहूँ नेकु जान्यौ, जान्यौ उनमान सौं परीच्छा मँगवाइयै।
दियौ लै भण्डार खोलि लियौ मन मान्यौ दई, सम्पुट में कौड़ी डारि जरी लपटाइयै।।४६७।।

आयौ वाही राजा पास सभा में प्रकास कियौ, लियौ धन दियौ पाछे सोई लै दिखायौ है।
खोलिकै लपेटा मध्य सम्पुट निहारि कौड़ी, समुझि विचारै हारै मन में न आयौ है।।
बड़ौ भागवत विप्र पण्डित प्रवीन महा, निसि रसलीन जानि आयकै बतायौ है।
कर्‌यौ उनमान भक्ति मानिवौ प्रमान जरी, मूँदिकै पठाई ताहि गुन समझायौ है।।४६८।।

राजा रीझि पाँव गहे कहे जू वचन नीके, ऐपै नेकु आप जाय तत्व याकौ ल्याइयै।
आये दौर पाँव लपटाय भूप भाय भरे, परे प्रेमसागर में चरचा चलाइयै।।
चलिवे न देत सुख देत चले लोल मन, खोलिकै भण्डार दियौ लियौ न रिझाइयै।।
उभै सुवा सारौ कही एक करधारौ मेरे, दई अकुलाय लई मानौ निधि पाइयै।।४६९।।

आयौ राजसभा बहु बातनि अखारौ जहाँ, बोलि उठी सारौ कृष्ण कहौ झारि डोरे हैं।
पूछैं नृप कहौ अहो! लहौ सब याही सौं जू, पच्छी वा समाज रहै हरि प्रान प्यारे हैं।।
कोटि-कोटि रसना बखानौं पै न पाऊँ पार सार सुनि भक्ति आय सीस पाँव धारे हैं।
राखौ यह खग पगि रह्यौ तन मन स्याम अति अभिराम रीति मिले औ पधारे हैं।।४७०।।

मास परायण इक्कीसवाँ विश्राम

श्रीमीराजी

लोकलाज कुल शृंखला, तजि मीरा गिरिधर भजी।।
सदृश गोपिका प्रेम, प्रगट कलिजुगहिं दिखायौ।
निरअंकुश, अति निडर, रसिक जस रसना गायौ।।

दुष्टनि दोष विचारि, मृत्यु को, उद्यम कीयौ।
बार न बाँकौ भयौ, गरल अमृत ज्यौं पीयौ।।
भक्ति निसान बजायकै, काहू ते नाहिन लजी।
लोकलाज कुल श्रृंखला, तजि मीरा गिरिधर भजी।।११५।।

मेरतौ जनम भूमि, झूमि हित नैंन लगे, पगे गिरिधारीलाल, पिता ही के धाम में।
राना कै सगाई भई, करी ब्याह सामा नई, गई मति बूडि वा रँगीले घनस्याम में।।
भाँवरैं परत मन, साँवरे सरूप माँझ, ताँवरैं-सी आवैं, चलिवे कौ पति ग्राम में।
पूछैं पिता-माता पट, आभरन लीजियै जू, लोचन भरत नीर कहा काम दाम में ।।४७१।।

देवौ गिरिधारीलाल, जौ निहाल कियौ चाहौ, और धनमाल सब रखियै उठायकै।
बेटी अति प्यारी, प्रीति रंग चढ्यौ भारी, रोय मिली महतारी, कही लीजियै लड़ायकै।।
डोला पधराय, दृग-दृग सौं लगाय, चलीं सुख न समाय, चाय प्रानपति पायकै।
पहुँचीं भवन सासु, देवी पै गवन कियौ, तिया अरु वर, गँठजोरौ कर्‌यौ भायकै।।४७२।।

देवी के पुजायवे कौं, कियौ ले उपाय सासु, वर पै पुजाइ, पुनि बधू पूजि भाखियै।
बोली जू बिकायो माथौ, लाल गिरिधारी हाथ, और कौ न नवै एक, वही अभिलाखियै।।
बढ़त सुहाग याके, पूजे तातें पूजा करौ, करौ जिनि हठ, सीस पाँयनि पै राखियै।
कही बार-बार, तुम यही निरधार जानौ, वही सुकुमार जापै, वारि फेरि नाखियै।।४७३।।

तबतौ खिसानी भई, अति जरि बरि गई, गई पति पास, यह बधू नहीं काम की।
अबहीं जवाब दियौ, कियौ अपमान मेरौ, आगे क्यौं प्रमान करै? भरै स्वांस चाम की।।
राना सुनि कोप कर्‌यौ, धर्‌यौ हिये मारिवोई, दई ठौर न्यारी देखि, रीझी मति बाम की।
लालनि लड़ावै, गुन गायकै मल्हावै, साधुसंग ही सुहावै, जिन्हें लागी चाह स्याम की।।४७४।।

आयकै ननन्द कहै, गहे किन चेत भाभी!, साधुनि सौं हेत में, कलंक लागै भारियै।
राना देशपति लाजै, बाप कुल रीति जात, मानि लीजै बात, वेगि संग निरवारियै।।
लागे प्रान साथ, सन्त पावत अनन्त सुख, जाको दुख होय ताको, नीके करि टारियै।
सुनिकै कटोरा भरि, गरल पठाय दियौ, लियौ करि पान, रंग चढ्यौ यों निहारियै।।४७५।।

गरल पठायौ सो तौ, सीस लै चढायौ संग, त्याग विष भारी, ताकी झार न सँभारी है।
राना नै लगायौ चर, बैठे साधु ढिंग ढर, तबही खबर कर, मारौ यहै धारी है।।

राजैं गिरिधारीलाल, तिनहीं सौं रंग जाल, बोलत हँसत ख्याल कान परी प्यारी है।
जायकै सुनाई, भई अति चपलाई, आयौ लिये तरवार दै, किवार खोलि न्यारी है।।४७६।।

जाके संग रंग भींजि, करत प्रसंग नाना, कहाँ वह नर गयौ, वेगि दै बताइयै।
आगे ही विराजै कछू, तोसौं नहीं लाजै अभूँ, देखि सुख साजै, आँखैं खोलि दरसाइयै।।
भयोई खिसानौ, राना लिख्यौ चित्र भीत मानौ, उलटि पयानौ कियौ नेकु मन आइयै।
देख्यौ हूँ प्रभाव ऐपै, भाव में न भिद्यौ जाइ, बिना हरिकृपा कहो, कैसे करि पाइयै।।४७७।।

विषई कुटिल एक, भेष धरि साधु लियौ, कियौ यों प्रसंग, मोसौं अंग–संग कीजियै।
आज्ञा मोकौं दई आप, लाल गिरिधारी अहो, सीस धरि लई करि, भोजन हूँ लीजिये।।
सन्तनि समाज में, बिछाय सेज बोलि लियौ, शंक अब कौन की, निशंक रस भीजियै।
सेत मुख भयौ, विषैभाव सब गयौ, नयौ पाँयन पै आय, मोकौं भक्तिदान दीजियै।।४७८।।

रूप की निकाई भूप, अकबर भाई हिये, लिये, संग तानसेन देखिवे कौं आयो है।
निरखि निहाल भयौ, छबि गिरिधारीलाल, पद सुखजाल एक, तबही चढ़ायो है।।
वृन्दावन आई, जीव गुसाँई सौं मिलि झिली, तिया मुख देखिवे को, पन लै छुटायो है।
देखि कुँज–कुँज, लाल प्यारी सुखपुंज भरी, धरी उर माँझ आय, देश वन गायो है।।४७६।।

राना की मलीन मति, देखि बसी द्वारावति, रति गिरिधारीलाल, नित ही लड़ाइयै।
लागी चटपटी भूप, भक्ति कौ सरूप जानि, अति दुख मानि, विप्र श्रेणी लै पठाइयै।।
वेगि लैकै आवौ मोकौं, प्रान दै जिवावौ अहो, गये द्वार धरनौ दै, विनती सुनाइयै।
सुनि विदा होन गई, राय रनछोर जू पै, छाँड़ौं राखौ हीन, लीन भई नहीं पाइयै।।४८०।।

श्रीपृथ्वीराजजी आमेर नरेश

आमेर अछत कूरम कौ, द्वारकानाथ दरसन दियौ।।
श्रीकृष्णदास उपदेश, परमतत्त्व परचौ पायौ।
निरगुन सगुन निरूप, तिमिर अज्ञान नसायौ।।
काछ वाच निकलंक, मनौ गांगेय युधिष्ठिर।
हरि पूजा प्रह्लाद, धर्मध्वज धारी जग पर।।
पृथ्वीराज परचौ प्रगट, तन शंख चक्र मण्डित कियौ।
आमेर अछत कूरम कौ, द्वारकानाथ दरसन दियौ।।११६।।

श्रीपृथ्वीराजजी

पृथ्वीराज राजा चल्यौ, द्वारका श्रीस्वामी संग, अति रसरंग भर्‌यौ, आज्ञा प्रभु पाई है।
सुनिकै दीवान, दुख मानि निसि कान लग्यौ, कही पग्यो साधुसेवा, भक्ति घर छाई है।।
देखियै निहारिकै, विचार कीजे इच्छा जोई, लीजै नहीं साथ, जावो बात ले दुराई है।
आयौ भोर भूप, हाथ जोरि करि ठाढ़ौ रह्यौ, कह्यौ रहौ देस सो, निदेस न सुहाई है।।४८१।।

द्वारावतीनाथ देखौं, गोमती स्नान करौं, धरौं भुज छाप आप, मन अभिलाखियै।
चिन्ता जिनि कीजै, तीनों बात इहाँ लीजै अजू, दीजै जोई आज्ञा सोई, सिर धरि राखियै।
आये पहुँचाय दूर, नैंन जल पूरि बहे, दहै उर भारी, कहाँ संग रस चाखियै।
बीते दिन दोय, निसि रहे हुते सोइ, भोइ गई भक्ति गिरा, आय वानी मधु, भाखियै।।४८२।।

अहो पृथ्वीराज कही, स्वामी ही सी वानी लही, आयौ उठि दौरि, वाही ठौर प्रभु देखे हैं।
घूम्यौ कह्यौ कान, धरौ गोमती स्नान करौ, सुनिकै अन्हायौ पुनि, वे न कहुँ पेखे हैं।।
शंख चक्र आदि छाप, तन सब व्यापि गई, भई यों अबार रानी, आय अबरेखे हैं।
बोले रह्यौ नीर में, सरीर लै सनाथ कीजै, लीजै नाथ हियै निज, भाग करि लेखे है।।४८३।।

भयौ जब भोर, पुर बड़ौ भक्ति शोर पर्‌यौ, कर्‌यौ आनि दरसन, भई भीर भारी है।
आये बहु सन्त औ महन्त बड़े-बड़े धाये, अति सुख पाये देह, रचना निहारी है।।
नाना भेंट आवैं हित, महिमा सुनावैं राजा, सुनत लजावैं जानी, कृपा वनवारी है।
मन्दिर करायौ, प्रभुरूप पधरायौ सब, जग जस गायौ कथा, मोकौं लागी प्यारी है।।४८४।।

विप्र दृगहीन सो, अनाथ बैजनाथ द्वार, पर्‌यौ चख चाहै मास, केतिक बिहाने हैं।
आज्ञा बार दोय चार, भई ये न फेरि होहिं, याको हठसार देखि, शिव पिघलाने हैं।।
पृथ्वीराज अंग के, अँगोछा सौं अँगोछौ जाय, आयकै सुनाई द्विज, गौरव डेराने हैं।
नयौ मँगवाय तन, छ्वाय दियौ छ्वायौ नैंन, खुले चैन, भयौ जन लखि सरसाने हैं।।४८५।।

भक्तनि कौ आदर अधिक, राजवंश में इन कियौ।।
लधु मथुरा मेरता, भक्त अति जैमल पोषे।
टोड़े भजन निधान, रामचन्द्र हरिजन तोषे।।
अभैराम एक रसहिं, नेम नींवा के भारी।
करमशील सुरतान भगवान्, बीरम भूपति व्रतधारी।।

ईश्वर अखैराज रायमल, कन्हर मधुकर नृप सरबसु दियौ।
भक्तनि कौ आदर अधिक, राजवंश में इन कियौ।। ११७।।

श्रीजयमलजी

मेरतें बसत भूप भक्ति को सरूप जानै, जैमल अनूप जाकी कथा कहि आये हैं।
करी साधुसेवा, रीति प्रीति की प्रतीति भई, नई एक सुनौ हरि कैसे कै लड़ाये हैं।।
नीचे मान मन्दिर सो सुन्दर विचारी बात, छात पर बँगला के, चित्र लै बनाये हैं।
विविध बिछौना सेज, राजत उढ़ौना पानदान धरि सोंना, जरी परदा सिंवाये हैं।। ४८६।।

ताकी दारु सीढ़ी करि, रचना उतारि धरें, भरें दूरि चौकी आप, भाव स्वच्छताई है।
मानसी विचारें, लाल सेज पग धारें, पान खात लै उगार डारैं, पौढ़े सुखदाई है।।
तिया हू न भेद जानै सो निसेनी धरी वानै, देखिकै किसोर सोयौ, फिरी भोर आई है।
पति को सुनाई भई, अति मनभाई वाकौ, खीझि डरपाई जानी, भाग अधिकाई है। ।४८७।।

श्रीमधुकरशाहजी

मधुकरशाह नाम, कियौ लै सफल जातें, भेष गुनसार ग्रहै, तजत असार है।
ओड़छे कौ भूप, भक्तभूप सुखरूप भयौ, लयौ पन भारी जाके और न विचार है।।
कण्ठी धरि आवै कोय, धोय पग पीवै सदा, भाई दूखि खर गर, डार्‌यौ माल भार है।
पाँव परछाल कही, आज जू निहाल किये, हिये द्रव्ये दुष्ट, पाँव गहे दृग धार है। ४८८।।

सप्ताह परायण पांचवा विश्राम

श्रीखेमालरत्नजी

खेमालरतन राठौर के, अटल भक्ति आई सदन।।
रैना पर गुण राम, भजन भागौत उजागर।
प्रेमी परम किशोर, उदर राजत रतनाकर।।
हरिदासन के दास, दसा ऊँची ध्वज धारी।
निर्भय अननि उदार, रसिक जस रसना भारी।।
दशधा सम्पति सन्त बल, सदा रहत प्रफुलित वदन।
खेमालरतन राठौर के, अटल भक्ति आई सदन।।११८।।

श्रीरामरयनजी

कलिजुग भक्ति करी कमान, रामरैन कैं रिजु करी।
अजर धर्म आचर्‍यौ, लोक हित, मनौ नीलकंठ।
निन्दकजन अनिराय, कहा महिमा जानैगो भूसठ।।
विदित गान्धर्वी ब्याह, कियौ दुसकन्त प्रमानै।
भरत पुत्र भागौत, सुमुख शुकदेव बखानै।।
और भूप कोउ छ्वै सकै, दृष्टि जाय नाहिन धरी।
कलियुग भक्ति करी कमान, रामरैन कैं रिजु करी।।११६।।

पूनौं में प्रकास भयौ, शरद् समाज रास, विविध विलास, नृत्य रागरंग भारी है।
बैठे रस भीजे दोऊ, बोल्यो राम राजा रीझि, भेंट कहा कीजै, विप्र कही जोई प्यारी है।।
प्यार को विचारै न, निहारै कहूँ नैकु छटा, सुता रूपघटा, अनुरूप सेवा ज्यारी है।
रही सभा सोचि, आप जायके लिवाय ल्याये, भेष सौं दिवाये फेरे, सम्पति लै बारी है।।४८६।।

श्रीरामरयनजी की धर्मपत्नी

हरि गुरु हरिदासनि सौं, रामघरनि साँची रही।।
आरज कौ उपदेश, सुनौ उर नीके धार्‍यौ।
नवधा दशधा प्रीति, आन सबै धर्म बिसार्‍यौ।।
अच्युतकुल अनुराग, प्रगट पुरुषारथ जान्यौ।
सारासार विवेक, बात तीनौं मन मान्यौ।।
दासत्व अनन्य उदारता, सन्तनि मुख राजा कही।
हरि गुरु हरिदासनि सौं, रामघरनि साँची रही।।१२०।।

आये मधुपुरी राजा, राम अभिराम दोऊ, दाम पै न राख्यौ, साधु विप्र भुगताये हैं।
ऐसे ये उदार राह, खरच सँभार नाहिं, चलिवो विचार भयौ, चूरा दीठि आये हैं।।
मुद्रा सत पाँच मोल, खोलि तिया आगे, धरे दीजै बेंचि गये, नाभा कर पहिराये हैं।
पति को बुलाइ कही, नीके देखि रीझे भीजे, काढ़िकै करज पुर, आये दै पठाये हैं।।४९०।।

मास परायण बाईसवाँ विश्राम

श्रीकिशोरसिंहजी

अभिलाष उभै खैमाल का, ते किशोर पूरा किया।।
पाँयनि नूपुर बाँधि, नृत्य नगधर हित नाच्यौ।
राम कलस मन रली, सीस तातें नहीं बाच्यौ।।
वानी विमल उदार, भक्ति महिमा विस्तारी।
प्रेमपुंज सुठि सील, विनय सन्तनि रुचिकारी।।
सृष्टि सराहै राम सुव, लघु वयस लछन आरज लिया।
अभिलाष उभै खैमाल का, ते किशोर पूरा किया।।१२१।।

खेमालरतन तन, त्याग समैं अश्रुपात, बात सुत पूछैं, अजू नीकें खोलि दीजिये।
कीजै पुण्य दान बहुँ, सम्पति अमान भरी, धरी हिये दोई सोई, कही सुनि लीजिये।।
विविध बड़ाई में, समाई मति भई पै न, नित ही विचार अब, मन पर खीजिये।
नीर भरि घट सीस, धरिकै न ल्यायौ और, नूपुरन बाँधि नृत्य, कियौ नाँहि छीजिये।।४६१।।

रहे चुपचाप सबै, जानी, काम आप ही कौ, बोल्यौ, यों किसोर नाती, आज्ञा मोकौं दीजियै।
यही नित करौं, नहीं टरौं जौलौं जीवै तन, मन में हुलास उठि, छाती लाय जीजियै।।
बहु सुख पाये, पाये वैसे ही निवाहे, पन गाये गुन लाल प्यारी, अति मति भीजियै।
भक्ति विस्तार कियौ, वयस लघु भीज्यौ हियौ, दियौ सनमान सन्तसभा सब रीझियै।।४६२।।

श्रीहरीदासजी

खेमालरतन राठौर की, सुफल बेलि मिठी फली।।
हरीदास हरिभक्त, भक्ति मन्दिर कौ कलसौ।
भजन भाव परिपक्व, हृदै भागीरथि जल सौ।।
त्रिधा भाँति अति अनन्य, राम की रीति निबाही।
हरि गुरु हरिबल भाँति, तिनहिं सेवा दृढ़ साही।।
पूरन इन्दु प्रमुदित उदधि, त्यों दास देखि बाढ़े रली।
खेमालरतन राठौर की, सुफल बेलि मीठी फली।। १२२।।

श्रीचतुर्भुजदासजी कीर्तननिष्ठ

(श्री) हरिवंश चरनबल चतुरभुज, गौंड़ देश तीरथ कियौ।।
गायौ भक्ति प्रताप, सबहिं दासत्व दृढ़ायौ।
राधावल्लभ भजन, अनन्यता वर्ग बढ़ायौ।।
मुरलीधर की छाप, कवित अति ही निर्दूषन।
भक्तिनि की अँघ्रिरेनु, वहै धारी सिर भूषन।।
सत्संग महा आनन्द में, प्रेम रहत भीज्यो हियौ।
(श्री) हरिवंश चरनबल चतुरभुज, गौंड़ देश तीरथ कियौ।।१२३।।

गौंड़वाने देश, भक्ति लेशहूँ न दीखै कहूँ, मानुस कौं मारि, इष्टदेव कौं चढ़ायौ है।
तहाँ जाय देवता कौं, मन्त्र लै सुनायौ कान, लियौ उन मानि, गाँव सुपन सुनायौ है।।
स्वामी चतुर्भुज जू के, वेगि तुम दास होहु, नातौ होय नास, सब गाँव भज्यौ आयौ है।
ऐसे शिष्य किये, मालाकण्ठी पाय जिये, पाँव लिये मन दिये, औ अनन्त सुख पायौ है।।४६३।।

भोग लै लगावैं नाना, सन्तनि लड़ावैं कथा, भागवत गावैं, भावभक्ति बिसतारियै।
भज्यौ धन लैके कोऊ, धनी पाछै पर्‌यौ सोऊ, आनिकै दबायौ बैठि, रह्यौ न निहारियै।।
निकसी पुरान बात, करै नयौ गात दिच्छा-,सिच्छा सुनि शिष्य, भयौ गह्यौ यों पुकारियै।
कहै या जनम मैं न, लियौं कछू दियौ फारौ, हाथ लै उबार्‌यौ, प्रभु रीति लगी प्यारियै।।४६४।।

राजा झूँठ मानि कह्यौ, करो बिन प्रान याकों, साधु ये विराजमान, लै कलंक दियौ है।
चले ठौर मारिवे कौं, धारिवे कौं सकै कैसे, नैन भरि आये नीर, बोल्यौ धन लियौ है।।
कहै नृप साँचो ह्वैकै, झूठौ जिन हूजे सन्त,-महिमा अनन्त कही, स्वामी ऐसो कियौ है।
भूप सुनि आयौ, उपदेस मन भायौ, शिष्य भयौ नयौ तन, पायौ भीजि गयौ हियौ है।।४६५।।

पकि रह्यौ खेत, सन्त आय करि तोरी लेत, जिते रखवारे, मुख सेत शोर कियौ है।
कह्यौ स्वामी नाम सुन्यौ, कही बड़ौ काम भयौ, यह तौ हमारौ सोई, आप सुनि लियौ है।।
लैकै मिष्टान आय, सुमुख बखान कीनौ, लीनौ अपनाय, आज भीज्यौ मेरौ हियौ है।
लै गये लिवाय नाना, भोजन कराय भक्ति, चरचा चलाय, चाय हित रस पियौ है।।४६६।।

श्रीकृष्णदासजी चालक

चालक की चरचरी चहुँदिसि, उदधि अन्त लौं अनुसरी।।

सक्रकोप सुठि चरित, प्रसिध पुनि पंचाध्यायी।
कृष्ण रूक्मिनी केलि, रुचिर भोजन विधि गाई।।
गिरिराजधरन की छाप, गिरा जलधर ज्यौं गाजै।
सन्त सिखण्डी खण्ड, ह्रदै आनन्द के काजै।।
जाड़ा हरन जग जाड़ता, कृष्णदास देही धरी।
चालक की चरचरी चहुँदिसि, उदधि अन्त लौं अनुसरी।।१२४।।

श्रीसन्तदासजी

विमलानन्द प्रबोध वंश, सन्तदास सींवा धरम।।
गोपीनाथ पद राग, भोग छप्पन भुंजाये।
पृथु पद्धति अनुसार, देव दम्पति दुलराये।।
भगवत् भक्त समान, ठौर द्वै कौ बल गायौ।
कवित सूर सौं मिलत, भेद कछु जात न पायौ।।
जन्म कर्म लीला जुगति, रहसि भक्ति भेदी मरम।
विमलानन्द प्रबोध वंश, सन्तदास सींवा धरम।। १२५।।

बसत निवाई ग्राम, स्याम सौं लगाई मति, ऐसी मन आई, भोग छप्पन लगाये हैं।
प्रीति की सचाई यह, जग में दिखाई सेवैं, जगन्नाथदेव आप, रुचि सौं जिंवाये हैं।।
राजा कौं सुपन दियौ, नाम लै प्रगट कियौ, सन्त ही के गृह में तौं, जेंवौं यों रिझाये हैं।
भक्ति के अधीन सब, जानत प्रवीनजन, ऐसे हैं रंगीन लाल, ठौर–ठौर गाये हैं।। ४६७।।

श्रीसूरदासजी–मदनमोहन

(श्री) मदनमोहन सूरदास की, नाम श्रृंखला जूरी अटल।।
गान काव्य गुणराशि, सुहृद् सहचरि अवतारी।
राधाकृष्ण उपास्य, रहसि सुख के अधिकारी।।
नवरस मुख्य सिंगार, विविध भाँतिन करि गायौ।
वदन उच्चरित बेर, सहस पायनि ह्वै धायौ।।

अंगीकार की अवधि यह, ज्यों आख्या भ्राता जमल।
(श्री) मदनमोहन सूरदास की, नाम शृंखला जुरी अटल।। १२६।।

सूरदास नाम, नैन कंज अभिराम फूले, झूले रंग पीके नीके, जिय के और ज्याये हैं।
भये सो अमीन यों, सँडीले के नवीन रीति, प्रीति गुड़ देखि, दाम बीसगुने लाये हैं।।
कही पूवा पावैं आप, मदनगोपाल लाल, परे प्रेम ख्याल, लादि छकरा पठाये हैं।
आये निसि भये, स्याम कियौ आज्ञा जोग लैकै, अबही लगावौ भोग, जागे फिरि पाये हैं।। ४६८ ।।

पद लै बनायौ, भक्तिरूप दरसायौ, दूर सन्तनि की पनहीं को, रच्छक कहाऊँ मैं।
काहू सीखि लियो, साधु लियो चाहै परचै कौं, आये द्वार मन्दिर के, खोलि कही आऊँ मैं।।
रह्यौ बैठि जाय, जूति हाथ में उठाय लीनी, कीनी पूरी आस मेरी, निसिदिन गाऊँ मैं।
भीतर बुलाये श्रीगुसाँई, बार दोय चार, सेवा सौंपी सार, कह्यौ जन पग ध्याऊँ मै।। ४६६ ।।

पृथ्वीपति सम्पति लै, साधुनि खबाइ दई, भई नहीं शंक यों, निशंक रंग पागे हैं।
आये सो खजानौ लैन, मानौ यह बात अहो, पाथर लै भरे आप, आधी निसि भागे हैं।।
रूक्का लिखि डारे दाम, गटके ये सन्तनि नैं, याते हम सटके हैं, चले जब जागे हैं।
पहुँचे हुजूर भूप, खोलिकै सन्दूक देखैं, पेखैं आँक कागद में, रीझि अनुरागे हैं।। ५०० ।।

लैन कौं पठाये कही, निपट रिझाये हमें, मन में स ल्याये, लिखी वन तन् डार्‌यौ है।
टोडर दिवान कह्यौ, धन कौ विरान कियौ, ल्यावौ रे पकरि मूढ़, फेरिकै सँभार्‌यौ है।।
लै गये हुजूर, नृप बोल्यौ मोसौं दूर राखौ, ऐसौ महाकूर सौंपि, दुष्ट कष्ट धार्‌यौ है।
दोहा लिखि दीनौ अकबर देखि रीझि लीनौ, जावौ वाही ठौर तोपै द्रव्य सब बार्‌यौ है।। ५०१ ।।

आये वृन्दावन मन, माधुरी में भीजि रह्यौ, कह्यौ जोई पद, सुन्यौ रूप रसरासि है।
जा दिन प्रगट भयौ, गयौ शत जोजन पै, जन पै सुनत भेद, बाढ़ी जग प्यास है।।
सूरध्वज द्विज निज, महल–टहल पाय, चहल–पहल हिये, जुगल प्रकास है।
मदनमोहन जू हैं, इष्ट–इष्ट महाप्रभु, अचरज कहा कृपादष्टि अनायास है।। ५०२ ।।

श्रीकात्यायनीजी

कात्यायनी के प्रेम की, बात जात कापै कही।।
मारग जात अकेल, गान रसना जु उचारैं।
ताल मृदंगी वृक्ष, रीझि अम्बर तहँ डारैं।।

गोप नारि अनुसारि, गिरा गद्गद आवेशी।
जग प्रपंच ते दूरि, अजा परसै नहीं लेशी।।
भगवान् रीति अनुराग की, सन्त साखि मेली सही।
कात्यायनी के प्रेम की, बात जात कापै कही।। १२७।।

श्रीमुरारिदासजी

कृष्ण विरह कुन्ती शरीर, त्यौं मुरारि तन त्यागियौ।।
विदित बिलौंदा गाँव, देश मुरधर सब जानै।
महा महोच्छौ मध्य, सन्त परिषद् परवानै।।
पगनि घूँघुरू बाँधि, राम कौ चरित दिखायौ।
देसी सारँगपाणि, हंस ता संग पठायौ।।
उपमा और न जगत् में, पृथा बिना नाहिन बियौ।
कृष्ण विरह कुन्ती शरीर, त्यौं मुरारि तन त्यागियौ।।१२८।।

श्रीमुरारिदास रहे, राजगुरु, भक्त–दास, आवत स्नान किये, कान धुनि कीजियै।
जाति कौ चमार करै, सेवा सो उचारि कहै, प्रभु चरनामृत कौ, पात्र जोई लीजियै।।
गये घर मांझ वाके, देखि डर काँपि उठ्यौ, ल्यावौ देवौ हमें, अहो पान करि जीजियै।
कही मैं तो न्यून तुच्छ, बोले हमहूँ तें स्वच्छ, जानै कोऊ नाहिं, तुम्हें मेरी मति भीजियै।।५०३।।

बहै दृग नीर कहै, मेरे बड़ी पीर भई, तुम मति धीर नहीं, मेरी जोग्यताई है।
लियौई निपट हठ, बड़े पटु साधुता में, स्यामै प्यारी भक्ति, जाति–पाँति लै बहाई है।।
फैलि गई गाँव, वाकौ नांव लै चवाब करैं, भरै नृप कान सुनि, वाहू न सुहाई है।
आयौ प्रभु दखिवे कौं, गयौ वह रंग उड़ि, जान्यौ सो प्रसंग सुन्यौ, वहै बात छाई है।।५०४।।

गये सब त्यागि, प्रभुसेवा ही सौं राग जिन्हें, नृप दुख पागि गयौ, सुनी यह बात है।
होत हो समाज सदा, भूप के बरस माँझ, दरस न काहू होत, मान्यौ उतपात है।।
चलेई लिबायवे कौं, जहाँ श्रीमुरारिदास, करी साष्टांग, रास नैंन अश्रुपात है।
मुखहुँ न देखैं वाको, विमुख कै लेखैं अहो, पेखैं लोग कहैं, यह गुरु शिष्य ख्यात है।।५०५।।

ठाढ़ौ हाथ जोरि, मति दीनता में वोरि, कीजै दण्ड मोपै कोरि, यों निहारि मुख भाखियै।
घटती ने मेरी, आप कृपा ही की घटती है, बढ़ती–सी करी, तातें न्यूनताई राखियै।।
सुनिकै प्रसन्न भये, कहे लै प्रसंग नये, बालमीकि आदि दै–दै, नानाविधि साखियै।
आये निज गाँव, नाम सुनि सब साधु धाये, भयोई समाज वैसो, देखि अभिलाखियै।।५०६।।

आये बहु गुनीजन, नृत्य–गान छाई धुनि, ऐपै सन्तसभा मन, स्वामी गुण देखिये।
जानिकै प्रवीन उठे, नूपुर नवीन बाँधि, सप्तस्वर तीन ग्राम, लीन भये पेखिये।।
गायौ रधुनाथ जू कौ, वन कौ गमन समैं, ता संग गमन प्रान, चित्र सम लेखिये।
भयौ दुखरासि, कहाँ पैयै श्रीमुरारिदास, गये राम पास, एतौ हिये अबरेखिये।। ५०७।।

मास परायण तेईसवाँ विश्राम

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी (भक्तमाल सुमेरु)

कलि कुटिल जीव निस्तार हित, बाल्मीकि तुलसी भयौ।।
त्रेता काव्य निबन्ध, करी सतकोटि रमायन।
इक अक्षर उद्धरैं, ब्रह्म हत्यादि परायन।।
अब भक्तनि सुखदैन, बहुरि लीला विस्तारी।
रामचरन रसमत्त, रहत अहनिसि व्रतधारी।।
संसार अपार के पार को, सुगम रूप नवका लयौ।
कलि कुटिल जीव निस्तार हित, बाल्मीकि तुलसी भयौ।।१२६।।

तिया सौं सनेह, बिन पूछे पिता गेह गई, भूली सुधि देह, भजे वाही ठौर आये हैं।
बधू अति लाज भई, रिस सौं निकसि गई, प्रीति राम नई, तन हाड़–चाम छाये हैं।।
सुनी जब बात, मानौ ह्वै गयौ प्रभात, वह पाछे पछितात, तजि काशीपुरी धाये हैं।
कियौ तहाँ वास, प्रभुसेवा लै प्रकास कीनौ, लीनौ दृढभाव, नैंन रूप के तिसाये हैं।।५०८।।

शौच जल शेष, पाय भूतहू विशेष, कोऊ बोल्यौ सुखमानि, हनुमान जू बताये हैं।
रामायन कथा सौ, रसायन है काननि कौ, आवत प्रथम पाछे, जात घृना छाये हैं।।
जाय पहिचानि, संग चले उर आनि आये, वन मधि जानि, धाय पाँय लपटाये हैं।
करैं तिरस्कार कही, सकौगे न टारि मैं तो, जाने रससार रूप, धर्यौ जैसे गाये हैं।।५०९।।

माँगि लीजै वर, कही दीजै राम भूपरूप, अति ही अनूप नित, नैंन अभिलाखियै।
कियौ लैं संकेत, वाही दिन ही सौं लाग्यौ हेत, आई सोई समैं, चेत कब छबि चाखियै।।

आये रघुनाथ साथ, लछिमन चढ़े घोरे, पट, रंग बोरे हरे कैसे मन राखियै।
पाछे हनुमान आये, बोले देखे प्रान प्यारे, नेकु न निहारे मैं तौ, भलैं फेरि भाखियै।। ५१०।।

हत्या करि विप्र एक, तीरथ करत आयौ, कहै मुख राम, भिच्छा डारियै हत्यारे कौ।
सुनि अभिराम नाम, धाम में बुलाय लियौ, दियौ लै प्रसाद, कियौ शुद्ध गायौ प्यारे कौ।।
भई द्विजसभा, कहि बोलिकै पठाये आप, कैसे गयौ पाप, संग लैके जेंये न्यारे कौ।
पोथी तुम बाँचौ, हिये भाव नहीं साँचौ, अजू ताते मति काँचौ, दूर करै न अंध्यारे कौ।। ५११।।

देखी पोथी बाँच, नाम–महिमा हूँ कही साँच, ऐपै हत्या करै, कैसें तरै कहि दीजियै।
आवै जो प्रतीति, कहौ कही याके हाथ जेंवैं, शिव जू कौ बैल, तब पंगति में लीजियै।।
थार में प्रसाद दियौ, चले जहाँ पन कियौ, बोले आप नाम कै, प्रसाद मति भीजियै।
जैसी तुम जानो, तैसी कैसे कै बखानौं, अहो सुनिकै प्रसन्न, पायो जै–जै धुनि रीझियै।। ५१२।।

आये निसि चोर, चोरी करन हरन धन, देखे स्याम घन, हाथ चाप सर लिये हैं।
जब–जब आवैं, बान साँधि डरपावैं एतौ अति मँड़रावै, ऐपै बली दूरि किये हैं।।
भोर आय पूछैं, अजू! साँवरो किशोर कौन, सुनि करि मौन रहे, आँसू डारि दिये हैं।
दई सो लुटाय, जानी चौकी राम राय दई, लई उन्ह दिच्छा,–सिच्छा शुद्ध भये हिये हैं।। ५१३।।

कियौ विप्र तन त्याग, तिया चली संग लागि, दूरहीं ते देखि कियौ, चरन प्रनाम है।
बोले यों सुहागवती, मर्‌यौ पति होऊँ सती, अबतौ निकसि गई, ज्याऊँ सेवौ राम है।।
बोलिकै कुटुम्ब कही, जोपै भक्ति करो सही, गही तब बात, जीव दियो अभिराम है।
भये सब साधु, व्याधि मेटि लै विमुखता की, जाकी वास रहै तौ न, सूझै स्याम धाम है।। ५१४।।

दिल्लीपति पातसाह, अहदी पठाये लैन, ताकौ सो सुनायौ, सूबै विप्र ज्यायौ जानियै।
देखिवे कौं चाहै, नीकै सुख सौं निवाहै आय, कही बहु विनै गही, चले मन आनियै।।
पहुँचे नृपति पास, आदर प्रकास कियौ, दियौ उच्च आसन लै, बोल्यौ मृदु वानियै।।
दीजे करामात, जग ख्यात सब मात किये, कही झूठ बात, एक राम पहिचानियै।। ५१५।।

देखैं राम कैसौ कहि कैद किये, किये हिये हूजिये कृपाल, हनुमान जू दयाल हो।
ताही समैं फैलि गये, कोटि–कोटि कपि नये, लोचैं तन खोचैं, चीर भयौ यों बिहाल हो।।
फोरैं कोट, मारैं चोट, किये डारैं, लोट–पोट, लीजै कौन ओट, जाय मान्यौ प्रलयकाल हो।
भईं तब आँखैं, दुखसागर कौं चाखैं अब, वेई हमें राखैं, भाखैं वारौं धनमाल हो।। ५१६।।

आय पाँय लिये तुम, दिये हम प्रान पावैं, आप समझावैं, करामात नेकु लीजियै।
लाज दबि गयौ नृप, तब राखि लयौ कह्यौ, भयौ घर राम जू कौ, वेगि छोड़ि दीजियै।।

सुनि तजि दयो और, कर्‌यौ लैकै कोट नयौ, अबहूँ न रहे कोऊ, वामैं तन छीजियै।
काशी जाय वृन्दावन, आय मिले नाभा जू सौं, सुन्यौ हो कवित्त निज, रीझि मति भीजियै।।५१७।।

मदनगोपाल जू कौ, दरसन करि कही, सही राम इष्ट मेरे, दृष्टिभाव पागी है।
वैसे ही सरूप कियौ, दियौ ले दिखाय रूप, मन अनुरूप छबि, देखि नीकी लागी है।।
काहू कही कृष्ण, अवतारी जू प्रशंस महा, राम अंश सुनि, बोले मति अनुरागी है।
दसरथ सुत जानौं, सुन्दर अनूप मानौं, ईशता बताई रति, कोटिगुनी जागी है।। ५१८।।

श्रीमानदासजी

गोप्य केलि रघुनाथ की, (श्री) मानदास परगट करी।।
करुना वीर सिंगार, आदि उज्ज्वल रस गायौ।
पर उपकारक धीर, कवित कविजन मन भायौ।।
कोशलेश पदकमल, अननि दासत व्रत लीनौ।
जानकी जीवन सुजस, रहत निसिदिन रँग भीनौ।।
रामायन नाटक रहसि, युक्ति उक्ति भाषा धरी।
गोप्य केलि रघुनाथ की, (श्री) मानदास परगट करी।।१३०।।

श्रीगिरिधरजी

(श्री) वल्लभ जू के वंश में, सुरतरु गिरिधर भ्राजमान।।
अर्थ धर्म काम मोक्ष, भक्ति अनपायनि दाता।
हस्तामल श्रुति ज्ञान, सबहि शास्त्रन के ज्ञाता।।
परिचर्या ब्रजराज, कुँवर कें मन कौं कर्षै।
दरसन परम पुनीत, सभा तन अम्मृत वर्षै।।
विट्‌ठलेश नन्दन सुभाव, जग कोऊ नहिं ता समान।
(श्री) वल्लभ जू के वंश में सुरतरु, गिरिधर भ्राजमान।।१३१।।

श्रीगोकुलनाथ गोसाँईजी

(श्री) वल्लभ जू के वंश में, गुननिधि गोकुलनाथ अति।।

उदधि सदा अक्षोभ, सहज सुन्दर मित भाषी।
गुरुवत्तन गिरिराज, भलप्पन सब जग साषी।।
विट्ठलेश की भक्ति, भयौ बेला दृढ़ ताकै।
भगवत् तेज प्रताप, नमित नरवर पद जाकैं।।
निर्विलीक आसय उदार, भजनपुंज गिरिधरन रति।
(श्री) वल्लभ जू के वंश में, गुननिधि गोकुलनाथ अति।।१३२।।

आयौ कोऊ शिष्य होन, ल्यायौ भेंट लाखन की, भाखन की चातुरी पै, मेरी मति रीझियै।
कहूँ है सनेह तेरो, जाके मिले बिना देह, व्याकुलता होय, जोपै तोपै दीच्छा दीजियै।।
बोल्यौ अजू मेरौ काहू, वस्तु सौं न हेतु नेकु, नेति–नेति कही, हम गुरु ढूँढ़ि लिजियै।
प्रेम ही की बात इहाँ, कर ही पलटि जात, गयौ दुख गात, कहो कैसें रँग भीजियै।।५१६।।

कान्हा हो हलालखोर, घोरि दियौ मन लैके, स्याम रससागर में, नागर रसाल है।
निसि को सुपन माँझ, निपुन श्रीनाथ जू नैं, आज्ञा दई, भीत नई, भई ओट साल है।।
गोकुल के नाथ जू सौं, वेगि दै जताइ दीजे, कीजे याहि दूर, छबि पूर देखौ ख्याल है।
भोर जौ विचारै, नहिं धीरज कौं धारै, उहाँ जाऊँ कोऊ मारै, पैड़ें पर्‌यौ यह लाल है।।५२०।।

ऐसे दिन तीन, आज्ञा देते वे प्रवीन, नाथ हाथ कहा मेरे, बिन गये नही सरैगौ।
गये द्वार द्वारपाल, बोले जू विचार एक, दीजै सुधि कान, सुनि खीझे बात करैगौ।।
काहू ने सुनाय दई, लीजिये बुलाय अहो, कहौ और दूर करौ, करे दूरि ढरैगौ।
जाय वही कही, लही आपनी पिछानि मिले, सुन्यौ मेरौ नाम श्याम कह्यौ नहीं टरैगौ।।५२१।।

श्रीवनवारीदासजी

रसिक रँगीलौ भजनपुंज, सुठि वनवारी स्याम कौ।।
बात कवित बड़ चतुर, चोख चौकस अति जानै।
सारा सार विवेक, परमहंसनि परवानै।।
सदाचार सन्तोष, भूत सबको हितकारी।
आरज गुन तन अमित, भक्ति दशधा व्रतधारी।।
दरसन पुनीत, आसय उदार आलाप रुचिर सुख धाम कौ।

रसिक रँगीलौ भजनपुंज, सुठि वनवारी स्याम कौ।।१३३।।

श्रीनारायण मिश्रजी

भागौत भलीविधि कथन कौ, धनि जननी एकै जन्यौ।।
नाम नरायन मिश्र, वंश नवला जू उजागर।
भक्तन की अति भीर, भक्ति दशधा कौ आगर।।
आगम निगम पुरान, सार शास्त्रनि सब देखे।
सुरगुरु शुक सनकादि, व्यास नारद जु बिसेखे।।
सुधा बोध मुख सुरधुनी, जस वितान जग में तन्यौ।
भागौत भलीविधि कथन कौ, धनि जननी एकै जन्यौ।।१३४।।

श्रीराघवदासजी

कलिकाल कठिन जग जीतियो, राघौ की पूरी परी।।
काम क्रोध मद मोह, लोभ की लहर न लागी।
सूरज ज्यों जल ग्रहै, बहुरि ताही ज्यों त्यागी।।
सुन्दर शील सुभाव, सदा सन्तन सेवा व्रत।
गुरु धर्म निकष निर्वह्यौ, विश्व में विदित बड़ौ भृत।।

अल्हराम रावल कृपा, आदि अन्त धुकती धरी।
कलिकाल कठिन जग जीतियो, राघौ की पूरी परी।।१३४।।

श्रीबावनजी

हरिदास भलप्पन भजनबल, बावन ज्यौं बढ्यौ बावनौ।।
अच्युतकुल सौं दोष, सुपनेहूँ उर नहिं आनै।
तिलक दाम अनुराग, सबनि गुरुजन करि मानै।।
सदन माँहि वैराग्य, विदेहिन की सी भाँती।
रामचरण मकरन्द, रहति मनसा मदमाती।।

जोगानन्द उजागर वंश, करि निसिदिन हरिगुन गावनौ।
हरिदास भलप्पन भजनबल, बावन ज्यों बढ्यौ बावनौ।। १३६ ।।

श्रीपरशुरामजी

जंगली देश के लोग सब, श्रीपरशुराम किय पारषद।।
ज्यों चन्दन कौ पवन, नीम्ब पुनि चन्दन करई।
बहुत काल तम निबिड़, उदै दीपक ज्यौं हरई।।
श्रीभट पुनि हरिव्यास, सन्त मारग अनुसरई।
कथा कीरतन नेम, रसन हरिगुन उच्चरई।।
गोविन्द भक्ति गद रोग गति, तिलक दाम सद्वैद हद।
जंगली देश के लोग सब, श्रीपरशुराम किय पारषद।। १३७ ।।

राजसी महन्त देखि, गयौ कोऊ अन्त लैन, बोल्यौ जू अनन्त, हरि सगे माया टारियै।
चले संग वाके, त्यागि पहिरि कुपीन अंग, बैठे गिरि कन्दरा में, लागी ठौर प्यारियै।।
तहाँ बनिजारौ आय, सम्पति चढ़ाय दई, दई और पालकी हूँ, महिमा निहारियै।
जाय लपटायौ पाँय, भाव मैं न जान्यौ कछू, आन्यौं उर माँझ, आवै प्रान वारि डारियै।। ५२२ ।।

मास परायण चौबीसवाँ विश्राम
नवाह परायण सप्तम विश्राम

श्रीगदाधरभट्टजी

गुननिकर गदाधरभट्ट अति, सबहिन कौ लागै सुखद।।
सज्जन सुहृद् सुशील, वचन आरज प्रतिपालय।
निर्मत्सर निहकाम, कृपा करुणा कौ आलय।।
अनन्य भजन दृढ़ करनि, धर्‍यौ वपु भक्तनि काजै।
परम धरम कौ सेतु, विदित वृन्दावन गाजै।।
भागौत सुधा बरषै वदन, काहू कौं नाहिन दुखद।
गुननिकर गदाधरभट्ट अति, सबहिन कौ लागै सुखद।। १३८ ।।

स्याम रंग रँगी पद, सुनिकै गुसाँई जीव, पत्र दै पठाये, उभै साधु वेगि धाये हैं।
रैनी बिन रंग कैसे, चढ़यौ, अति सोच बढ़यौ, कागद में प्रेम मढ़यौ, तहाँ लैकै आये है।।
पुर ढिंग कूप, तहाँ बैठे रसरूप लगे, पूछिवे कौ तिनहीं सौं, नाम लै बताये हैं।
रहौ कौन ठौर, सिरमौर वृन्दावन धाम, नाम सुनि मुरछा ह्वै, गिरे प्रान पाये हैं।। ५२३।।

काहू कही भट्ट, श्रीगदाधर जू एई जानौ मानौ, उही पाती चाह, फेरिकै जिवाये हैं।
दियौ पत्र हाथ, लियो सीस सौं लगाय चाय, बाँचत ही चले वेगि, वन्दावन आये हैं।।
मिले श्रीगुसाँई जू सौं, आँखैं भरि आई नीर, सुधि न सरीर, धरि धीर वही गाये हैं।
पढ़े सब ग्रन्थ, संग नाना कृष्णकथा रंगरस की उमंग, अंग–अंग भाव छाये हैं।। ५२४।।

नाम हो कल्यानसिंह, जात रजपूत पूत, बैठ्यो आय कथा, सो अभूत रंग लाग्यौ है।
निपट निकट वास, धौरहा प्रकास गाँव, हास परिहास तज्यो, तिया दुख पाग्यो है।।
जानी भट्ट संग सौं, अनंग वास दूर भई, करौ लैकै नई आनि, हिये काम जाग्यो है।
माँगत फिरत हुती, जुवती औ गर्भवती, कही लै रुपैया बीस, नेकु कहो राग्यो है।। ५२५।।

गदाधर भट्ट जू की, कथा में प्रकास कहो, अहो कृपा करी, अब मेरी सुधि लीजियै।
दई लौंडी संग, लोभ रंग चित भंग किये, दिये लै बताय, बोली मेरौ काम कीजियै।।
बोले आप, बैठिये जू, जाप नित करौं हिये, पाप नहीं मेरौ, गई दरसन दीजियै।
श्रोता दुख पाय भाखैं, झूठी याहि मारि नाखैं, साँची कहि राखैं सुनि, तन–मन छीजियै।। ५२६।।

फाटि जाय भूमि, तौ समाय जायँ श्रोता कहें, बहे दृग नीर, ह्वै अधीर सुधि गई है।
राधिकावल्ल्भदास, प्रगट प्रकास भास, भयौ दुखरासी सुनि, सौ बुलाय लई है।।
साँच कहि दीजै नहीं, अभी जीव लीजै डारि, सबै कहि दीयौ, सुख लियौ संज्ञा भई है।
काढ़ि तरवार तिया, मारिवे कल्यान गयौ, दयौ परबोध, हमें करी दया नई है।। ५२७।।

रहैं काहू देस में, महन्त आये कथा माँझ, आगें लै बैठाये, देखैं सबै साधु भीजे हैं।
मेरे अश्रुपात क्यों न, होत सोच सोत परे, करे लै उपाय, दै लगाय मिर्च खीजे हैं।।
सन्त एक जानिकै, जताय दई भट्ट जू कौ, गये उठि सब, जब मिलि अति रीझे हैं।
ऐसी चाह होय, मेरे रोय कै पुकारि कही चली, जलधार नैंन प्रेम आय धीजे हैं।।। ५२८।।

आयौ एक चोर, घर सम्पति बटोरि, गाँठि बाँधी लै मरोरि, किहूँ उठै नाहिं भारी है।
आयकै उठाय दई, देखी इन रीति नई, पूछ्यौ नाम प्रीति भई, भूलो मैं विचारी है।।
बोले आप लै पधारौ, होत ही सवारौ आवै, और दसगुनी मेरे, तेरी यह ज्यारी है।
प्राननि कौं आगें धरौ, आनिकै उपाय करौ, रहे समझाय भयौ, शिष्य चोरी टारी है।। ५२९।।

प्रभु की टहल निज, करनि करत आप, भक्ति कौ प्रताप जानें, भागवत गाई है।
देत हुते चौंका कोऊ, शिष्य बहु भेंट ल्यायौ, दूर ही ते देखि, दास आयौ सो जनाई है।
धोवौ हाथ, बैठौ आप, सुनिकै रिसाय उठे, सेवा ही में चाय, वाकौं खीझि समझाई है।
हिये हितरासि जग, आस कौं विनास कियौ, पियौ प्रेमरस, ताकी बात लै दिखाई है।। ५३०।।

चारण भक्तजी

चरण शरण चारण भगत, हरि गायक एता हुआ।।
चौमुख चौरा चण्ड, जगत् ईश्वर गुण जाने।
करमानन्द अरु कोल्ह, अल्ह अक्षर परवाने।।
माधौ मथुरा मध्य, साधु जीवानन्द सीवाँ।
दूदा नारायणदास, नाम मांडन नत ग्रीवाँ।।
चौरासी रूपक चतुर, बरनत वानी ज्यों जुवा।
चरण शरण चारण भगत, हरि गायक एता हुआ।। १३६।।

श्रीकरमानन्दजी

करमानन्द चारण की, वानी की उचारन में, दारुन जो हियौ होय सोऊ पिघलायकै।
दियौ गृह त्यागि, हरिसेवा अनुराग भरे, बटुवा सुग्रीव हाथ, छरी पधराइयै।।
काहू ठौर जाय, गाड़ि वहीं पधराये वापै, ल्याये उर प्रभु भूलि आये कहाँ पाइयै।
फेरि चाह भई, दई स्याम को जताय बात, लई मँगवाय देखि, मति लै भिजाइयै।। ५३१।।

श्रीकोल्हजी, श्रीअल्हजी

कोल्ह अल्ह भाई दोऊ, कथा सुखदाई सुनौ, पहिलौ विरक्त, मद मांस नही खात है।
हरि ही के रूप, गुन वानी में उचार करै, धरै भक्तिभाव हिये, ताकी यह बात है।।
दूसरौ अनुज जानौ, खाय सब उन मानौ, नृप ही कौं गावै, प्रभु कभूँ गाय जात है।
बड़े के अधीन रहै, सोई करै जोई कहै, ईश करि चहै, आप दीनता में मात है।। ५३२।।

बड़े आय कही, चलौ द्वारका निहारैं सही, मिथ्या जगभोग, यामें आयु ही बिहात है।
आज्ञा के अधीन चल्यौ, आये पुर लीन भये, नये चोज मन्दिर में, सुनौ कान बात है।।
कोल्ह ने सुनाये सब जे–जे नाना छन्द गाये, पाछे अल्ह दोय चार कहे सकुचात है।
भर्‍यो ही हुंकारौ प्रभु, कही माला गरें डारौ, ल्याये पहिरावैं, कह्यौ मेरौ बड़ौ भ्रात है।। ५३३।।

दयौ पै न याहि दयौ, बड़ौ अपमान भयो, गयौ बूड़ौ सागर में, दुख कौ न पार है।
बूड़त ही आगे, भूमि पाई चल्यो झूमि प्रीति, सो अनीति भूलै नाहिं मानो तरवार है।।
सौंही आये लैन, हरिजन मन चैन झिल्यो, मिल्यौ कृष्ण जाय, जायौ अति सुखसार है।
बैठे जब भोजन कौं, दई उभै पातर लै, दूसरी जू कैसी, कही वही भाई प्यार है।। ५३४।।

सबै विष भयौ, दुख गयौ सोई हुयौ नयौ, दयौ परबोध, वाकी बात सुनि लीजियै।
तेरो छोटो भाई, मेरो भक्त सुखदाई, ताकी कथा लै जताई, जामें आप ही सौं धीजियै।।
प्रथम जनम माँझ बड़ौ, राजपुत्र भयौ गयौ, गृह त्यागि सदा मोसौं मति भीजियै।
आयौ वन कोऊ भूप, संग रागरंग रूप, देखि चाह भई देह, दई भोग दीजियै।। ५३५।।

तेरेई वियोग, अन्न–जल सब त्यागि दियौ, जियौ नही जात, वापै वेगि सुधि लीजियै।
हाथ पै प्रसाद दीनौं, आय घर चीन्ह लीनौं, सुपनौ सौ गयौ, बीति प्रीति वासौं कीजियै।
द्वारका को संग सुनि, आवत ही आगै चल्यौ, मिल्यौ भूमि पर दृग, भरि वहै दिजियै।
कही सब बात, स्याम धाम तज्यौ ताही छिन, कर्‌यौ वनवास दोऊ, अति मति भीजियै।। ५३६।।

श्रीनारायणदासजी

अल्ह ही के वंश में, प्रशंस याहि जानि लेव, बड़ौ और भाई छोटौ, श्रीनारायन दास है।
दीरघ कमाऊ, लघु उपज्यौ उड़ाऊ, भाभी दियो सीरो भोजन, लै भयौ दुखरासि है।।
देवौ मोकौं तातौ करि, बोली वह क्रोध भरि, यहूँ जा हुंकारौ भरवावै कियो हास है।
गयौ गृह त्यागि, हरि पागि कर्‌यौ वैसे ही जू, भक्तिवश स्याम, कह्यौ प्रगट प्रकास है।। ५३७।।

श्रीपृथीराजजी

नरदेव उभै भाषा निपुन, पृथीराज कविराज हुव।।
सवैया गीत श्लोक, बेलि दोहा गुन नवरस।
पिंगल काव्य प्रमान, विविध विधि गायौ हरि जस।।
पर दुख विदुख श्लाघ्य, वचन रचना जु विचारै।
अर्थ विचित्र निमोल, सबै सारंग उर धारै।।
रुक्मिनी लता बरनन अनूप, बागीश वदन कल्यान सुव।
नरदेव उभै भाषा निपुन, पृथीराज कविराज हुव।। १४०।।

मारवार देश बीकानेर कौ नरेस बड़ौ, पृथीराज नाम भक्तराज कविराज है।
सेवा अनुराग, और विषय वैराग ऐसौ, रानी पहिचानी नाहिं, मानौं देखी आज है।।
गयौ हो विदेश तहाँ, मानसी प्रवेस कियौ, हियौ नहीं छुवै, कैसे सरै मन काज है।
बीते दिन तीन, प्रभु मन्दिर न दीठि परै, पाछै हरि देखि भयौ, सुख कौ समाज है।। ५३८ ।।

लिखिकै पठायौ देश, सुन्दर सन्देस यह, मन्दिर न देखे, हरि बीते दिन तीन हैं।
लिख्यौ आयो साँच, बाँचि अति ही प्रसन्न भये, लगे राज बैठे प्रभु, बाहर प्रवीन हैं।।
सुनौ एक और, यों प्रतिज्ञा करी हिये धरी मथुरा सरीर त्याग करैं रसलीन हैं।
पृथीपति आनिकै मुहीम, दई काबुल की, बल अधिकाई, नहीं काल के अधीन हैं।। ५३९ ।।

जीवन अवधि रहै, निपट अलप दिन, कलप समान बीतै, पल न बिहात है।
आगम जनाय दियौ, चाहै इन्हें साँचौ कियौ लियौ, भक्तिभाव जाके, छायौ गात–गात है।।
चल्यौ चढ़ि साँड़िनी पै, लई मधुपुरी आनि, करिकै अस्नान प्रान, तजे सुनि बात है।
जै–जै धुनि भई व्यापि, गई चहुँओर अहो, भूपति चकोर जस, चन्द दिन–रात है।। ५४० ।।

श्रीसींवाजी

द्वारका देखि पालण्टती, अचढ़ सीवैं कीधी अटल।।
असुर अजीज अनीति, अगिनि में हरिपुर कीधौ।
सांगन सुत ने साद, राय रनछोरै दीधौ।।
धरा धाम धन काज, मरन बीजा हूँ माँडै।
कमधुज कुटकै हुवौ, चौक चतुरभुजनी छाँडै।।
बाढ़ेल बाढ़ कीवी कटक, चाँद नाम चाँड़े सबल।
द्वारका देखि पालण्टती, अचढ़ सीवैं कीधी अटल।। १४१।।

कावापति सींवा सुत, साँगन कौ प्यारौ हरि, द्वारावति ईश यों, पुकारै रक्षा कीजियै।
सदा भगवान् आप, भक्त प्रतिपाल करैं, करौ प्रतिपाल मेरौ, सुनि मति भीजिये।।
तुरक अजीज नाम, धाम कौं लगाई आगि, लई बाग धोरन की, आये टूक कीजिये।
दुष्ट सब मारे, प्रभु कष्ट ते उवारे, निज प्रान वारि डारे, यह नयौ रस पीजिये।। ५४१।।

मास परायण पच्चीसवाँ विश्राम

श्रीमती रत्नावतीजी

पृथीराज नृप कुलबधू, भक्तभूप रतनावती।।
कथा कीरतन प्रीति, भीर भक्तनि की भावै।
महा महाच्छौ मुदित, नित्य नँदलाल लड़ावै।।
मुकुन्द चरण चिन्तवन, भक्ति महिमा ध्वजधारी।
पति पर लोभ न कियौ, टेक अपनी नहीं टारि।।
भलपन सबै विशेष ही, आमेर सदन सुन खाजिती।
पृथीराज नृप कुलबधू, भक्तभूप रतनावती।। १४२।।

मानसिंह राजा ताकौ, छोटौ भाई माधौसिंह, ताकी जानौ तिया, जाकी बात लै बखानियै।
ढिंग जो खवासिनि सौं, स्वांसनि भरत नाम, रटति जटित प्रेम, रानी उर आनियै।।
नवलकिशोर कभूँ, नन्द के किशोर कभूँ, वृन्दावनचन्द कहि, आँखैं भरि पानियै।
सुनत विकल भई, सुनिवे की चाह भई, रीति यह नई कछु, प्रीति पहिचानियै।। ५४२।।

बार–बार कहै, कहा कहै, उर गहै मेरौ, बहै दृग नीर, हो सरीर सुधि गई है।
पूछौ मत बात, सुख करौ दिन–रात, यह सहै निज गात, रागी साधु कृपा भई है।।
अति उतकण्ठा देखि, कह्यौ सो विशेष सब, रसिक नरेसनि, की वानी कहि दई है।
टहल छुटाई औ, सिरहाने लै बैठाई वाहि, गुरू बुद्धि आई, यह जानौ रीति नई है।। ५४३।।

निसिदिन सुन्यौ करै, देखिवे को अरबरै, देखे कैसें जात, जल जात दृग भरे हैं।
कछुक उपाय कीजे, मोहन दिखाय दीजे, तबही तो जीजे, वेतौ आनि उर अरे हैं।।
दरसन दूर, राज छोड़ै लौटैं धूर, पै न पावैं छबि पूर, एक प्रेमवश करे हैं।
करौ हरिसेवा, भरि भाव धरि मेवा, पकवान रस खान दै, बखान मन धरे हैं।। ५४४।।

इन्द्रनीलमनी रूप, प्रगट सरूप कियौ, लियौ वहै भाव, यों सुभाव मिलि चली है।
नानाविधि रागभोग, लाड़कौ प्रयोग जामें, जामिनी सुपन जोग, भई रँगरली है।।
करत सिंगार छबि, सागर न पारावार, रहत निहारि वाही, माधुरी सौं पली है।
कोटिक उपाय करैं, जोग जज्ञ पार परै, ऐपै नही पावै यह, दूर प्रेम गली है।। ५४५।।

देख्योई चहति तऊ, कहति उपाय कहा? अहो चाह बात कहौ, कौन को सुनाइयै।
कही जू बनावौ ढिंग, महल कै ठौर एक, चौकी लै बैठावौ, चहुँओर समुझाइयै।।

आवैं हरिप्यारे तिन्हें, ल्यावैं वे लिवाय इहाँ, रहैं ते धुवाय पाँय, रुचि उपजाइयै।
नानाविधि पाक सामा, आगै आनि धरें आप, डारि चिक देखौ, स्याम दृगनि लखाइयै।। ५४६।।

आवैं हरिप्यारे, साधुसेवा करि टारे दिन, किहूँ पाँव धारे जिन्हें, ब्रजभूमि प्यारियै।
जुगलकिशोर गावैं, नैंननि बहावैं नीर, ह्वै गई अधीर, रूप दृगनि निहारियै।।
पूछी वा खवासिन सौं, जू रानी कौन अंग? जाके इतनी अटक, संग भंग सुख भारियै।
चली उठि हाथ गह्यौ, रह्यौ नहीं जात अहो, सह्यो दुख लाज बड़ी, तनक विचारियै।। ५४७।।

देख्यौं मैं विचारि, हरिरूप रससार ताकौ, कीजिये अहार, लाज कानि नीकें टारियै।
रोकत उतरि आई, जहाँ साधु सुखदाई, आनि लपटाई पाँय, विनती लै धारियै।।
सन्तनि जिंवायवे की, निज कर अभिलाष, लाख–लाख भाँतिन सौं, कैसे कै उचारियै।
आज्ञा जोई दीजै, सोई कीजै सुख वाही में जु, प्रीति अवगाही कही, करौ लागी प्यारियै।। ५४८।।

प्रेम में न नेम, हेम थार लै उमगि चली, चली दृगधार सो, परोसिकै जिंवाये हैं।
भीजि गये साधु, नेह सागर अगाध देखि, नैंननि निमेख तजी, भये मनभाये हैं।।
चन्दन लगाय, आनि बीरीऊ खवाय, स्याम चरचा चलाय, चख रूप सरसाये हैं।
धूम परी गाँव, झूमि आये सब देखिवे कौं, देखि नृप पास, लिखि मानस पठाये हैं।। ५४६।।

ह्वै करि निशंक रानी, बंकगति लई नई, दई तजि लाज, बैठी मोड़नि की भीर में।
लिख्यौ लै दिवान, नर आये सो बखान कियो बाँचि सुनि आँच लागी नृप के सरीर में।।
प्रेमसिंह सुत ताही काल सो रसाल आयौ भाल पै तिलक माल कण्ठी कण्ठ तीर में।
भूप को सलाम कियौ नरनि जताय दियौ बोल्यौ आव मोड़ी के रे पर्‌यौ मन पीर में।। ५५०।।

कोप भरि राजा गयौ भीतर सो सोच नयौ पाछे पूछि लयौ कह्यौ नरनि बखानिकै।
तबतौ विचारी अहो मोड़ा ही हमारी जाति भयौ दुख गात भक्तिभाव उर आनिकै।।
लिख्यौ पत्र माजी कौं जु प्रीति हिये साजी जोपै सीस पर बाजी आय राखौ तजि प्रानिकै।
सभा मधि भूप कही मोड़ी को विरूप भयौ रहैं अब मोड़ी के ही भूलौ मति जानिकै।। ५५१।।

लिख्यौ दे पठाये वेगि मानस लै आये जहाँ रानी भक्ति सानी हाथ दई पाती बाँचियै।
आयो चढ़ि रंग बाँचि सुत कौ प्रसंग बार भीजे जे फुलेल दूर किये प्रेम साँचियै।।
आगे सेवा पास निसि महल बसत जाय ल्याय याही ठौर प्रभु नीके गाय नाचियै।
नृप अन्न त्यागि दियौ, दियौ लिखि पत्र पुत्र भई मोड़ी आज तुम हित करि जाँचियै।। ५५२।।

गये नर पत्र दियौ सीस सौं लगाय लियौ बाँचिकै मगन हियौ रीझि बहु दई है।
नौबत बजाई द्वार बाँटत बधाई काहू नृपति सुनाई कही कहा रीति नई है।।

पूछे भूप लोग कह्यौ, मिटे सब सोग भये, मोड़ी के जू जोग, स्वांग कियौ बनि गई है।
भूपति सुनत बात, अति दुखगात भयौ, लयौ बैरभाव, चढ्यौ त्यारी इत भई है।। ५५३।।

नृप समझाय राख्यौ, देश में चवाब ह्वैहै, बुधिवन्तजन आय, सुत सौं जताई है।
बोल्यो, विषै लागि कोटि–कोटि तन खोये एक, भक्ति पर आवै काम, यह मन आई है।।
पाँय परि माँगि लई, दई जो प्रसन्न तुम, राजा निसि चल्यो जाय, करौ जिय भाई है।
आयौ निज पुर, ढिंग ढुरि नर मिले आनि, कह्यौ सो बखानि सब, चिन्ता उपजाई है।। ५५४।।

भवन प्रवेस कियौ, मन्त्री जो बुलाय लियौ, दियौ कहि कटी नाक, लोहू निरवारियै।
मारिवौ कलंक हू न आवै यों सुनावै भूप, काहू बुधिवन्त नै, विचारि लै उचारियै।।
नाहर जु पींजरा में, दीजे छाँड़ि लीजै मारि, पाछे ते पकरि वह, बात दाबि डारियै।
सबनि सुहाई जाय, करी मनभाई आयौ, देख्यौ वा खवासी कही, सिंह जू निहारियै।।५५५।।

करै हरिसेवा, भरि रंग अनुराग दृग, सुनी यह बात नेकु, नैंन उन टारे हैं।
भाव ही सौं जाने उठि, अति सनमाने अहो!, आज मेरे भाग, श्रीनृसिंह जू पधारे हैं।।
भावना सचाई वही, सोभा लै दिखाई, फूलमाल पहिराई, रचि टीकौ लागै प्यारे हैं।
भौन ते निकसि धाये, मानौ खम्भ फारि आये, विमुख समूह, ततकाल मारि डारे हैं।। ५५६।।

भूप कौं खबरि भई, रानी जू की सुधि लई, सुनी नीकी भाँति, आप नम्र ह्वैकै आये हैं।
भूमि पर साष्टांग, करी, हरि मति भई, दया, आप आय वाके, वचन सुनाये हैं।।
करत प्रणाम राजा, बोली अजू लाल जू कौं, नेकु फिरि देखौ, एक ओर ये लगाये हैं।
बोल्यौ नृपराज, धन सबही तिहारो धारो, पति पै न लोभ, कही करौ सुखभाये हैं।। ५५७।।

राजा मानसिंह, माधौसिंह उभै भाई चढ़े, नाव पर कहूँ तहाँ बूड़िवे कौं भई है।
बोल्यौं बड़ौ भ्राता, अब कीजिये जतन कौन? भौन तिया भक्त, कहि छोटे सुधि दई है।।
नेकु ध्यान कियौ, तब आनिकै किनारौ लियौ, हियौ हुलसायौ जेठ, चाह नई लई है।
कर्‌यौ आय दरसन, बिनै करि गयौ भूप, अति ही अनूप कथा, हिये व्यापि गई है।। ५५८।।

श्रीजगन्नाथजी पारीष

पारीष प्रसिद्ध कुल काँथड्या, जगन्नाथ सीवाँ धरम।।
(श्री) रामानुज की रीति, प्रीति पन हिरदैं धार्‌यौ।

संस्कार सम तत्त्व, हंस ज्यौं बुद्धि विचार्यौ।।
सदाचार मुनिवृत्ति, इन्दिरा पधति उजागर।
रामदास सुत सन्त, अनन्य दशधा कौ आगर।।
पुरूषोत्तम परसाद तें, उभै अंग पहिर्यौ वरम।
पारीष प्रसिद्ध कुल काँथड़्या, जगन्नाथ सीवाँ धरम ।।१४३।।

श्रीमथुरादासजी

कीरतन करत कर सुपनेहूँ, मथुरादास न माँड़ियौ।।
सदाचार सन्तोष, सुहृद् सुठि शील सुभासै।
हस्तक दीपक उदय, मेटि तम वस्तु प्रकासै।।
हरि कौ हिय विस्वास, नन्द–नन्दन बल भारी।
कृष्ण कलस सौं नेम, जगत जानै सिर धारी।।
(श्री) वर्द्धमान गुरु वचन रति, सो संग्रह नहिं छाँड़ियौ।
कीरतन करत कर सुपनेहूँ, मथुरादास न माँड़ियौ।। १४४ ।।

वास कै तिजारे माँझ, भक्ति रसरासि करी, करी एक बात, ताकौ प्रगट सुनाइयै।
आयौ भेषधारी कोऊ, करै सालग्राम सेवा, डोलत सिंहासन पै, आनि भीर छाइयै।।
स्वामी के जु शिष्य भयौ, तिनहूँ कै भाव देखि, वाही कौ प्रभाव आय, कह्यौ हिय भाइयै।
नेकु आप चलौ, उह रीति कौ विलोकियै जु, बड़े सरवज्ञ कही, दूखै नहीं जाइयै।। ५५६ ।।

पाँय परि गये लैकै, जाय ढिंग ठाढ़े भये, चाहत फिरायौ, पे न फिरैं सोच पर्यौ है।
जानि गयौ आप, कछु याही कौ प्रताप ऐपे, मारौं करि जाप, यों विचार मन धर्यौ है।।
मूठ लै चलाई, भक्ति तेज आगे आई, नाहिं वाही लपटाई, भयौ ऐसौ मानौ मर्यौ है।
ह्वै करि दयाल, जा जिवायौ समझायौ प्रीति, पन्थ दरसायौ हिय भायौ, शिष्य कर्यौ है।।५६०।।

श्रीनारायणदासजी नृतक

नृतक नारायणदास कौ, प्रेमपुंज आगे बढ़्यौ।।
पद लीनौ परसिद्ध, प्रीति जामें दृढ़ नातो।
अक्षर तनमय भयौ, मदनमोहन रँगरातौ।।

नाचत सब कोउ आहि, काहि पै यह बनि आवै।
चित्र लिखित सौ रह्यौ, त्रिभंग देसी जु दिखावै।।
हँड़िया सराय देखत दुनी, हरिपुर पदवीं कौं चढ्यौ।
नृतक नारायणदास कौ, प्रेमपुंज आगे बढ्यौ।।१४५।।

हरि ही कें आगे नृत्य करैं, हिये धरैं यही, ढरै देश देशनि में, जहाँ भक्त भीर है।
हँड़िया सराय मध्य, जाइकै निवास लियौ, लियौ सुनि नाम सो, मलेच्छ ज्ञाति मीर है।।
बोलिकै पठाये महाजन, हरिजन सबै, आयौ है सदन गुनी, ल्यावौ चाह पीर है।
आनिकै सुनाई भई, बड़ी कठिनाई अब, कीजै जोई भाई वह, निपट अधीर है।।५६१।।

बिना प्रभु आगें नृत्य, करियै न नेम यहै, सेवा वाके आगें कहौ, कैसें बिसतारियै।
कियो यों विचार, ऊँचे सिंहासन माला धारि, तुलसी निहारि, हरिगान कर्‌यौ भारियै।।
एक ओर बैठ्यौ मीर, निरखैं न कोर दृग, मगन किशोर रूप, सुनिलै बिसारियै।
चाहै कछु वारौं, परे औचक ही प्रान हाथ, रीझि सनमान कीनौ, मीच लागी प्यारियै।।५६२।।

मास परायण छब्बीसवाँ विश्राम

भूरिदा भक्तजनजी

गुनगन विशद् गोपाल के, एते जन भये भूरिदा।।
वोहिथ रामगुपाल कुँवरवर, गोविन्द मांडिल।
छीति स्वामि जसवन्त, गदाधर अनन्तानन्द भल।।
हरिनाभ मिश्र दीनदास, बछपाल कन्हर जस गायन।
गोसू रामदास नारद, स्याम पुनि हरिनारायन।।
कृष्णजीवन भगवान जन, स्यामदासविहारी अमृतदा।
गुनगन विशद् गोपाल के, एते जन भये भूरिदा।। १४६।।

संसार से निवृत्त भक्तजनजी

निरवर्त्त भये संसार ते, ते मेरे जजमान सब।।
उद्धव रामरेनु परसराम, गंगा धूषेत निवासी।
अच्युतकुल ब्रह्मदास विश्राम, सेषसाई के वासी।।

किंकर कुण्डा कृष्णदास, खेम सोठा गोपानन्द।
जैदेव राघौ विदुर, दयाल दामोदर मोहन परमानन्द।।
उद्धव रघुनाथी चतुरोनगन, कुँज ओक जे बसत अब।
निरवर्त्त भये संसार ते, ते मेरे जजमान सब।।१४७।।

श्री जयतारन विदुरजी

झीथड़ै ढिंग ही में जैतारन विदुर भयौ, भयौ हरि भक्त साधुसेवा मति पागी है।
बरषा न भई, सब खेती सूखि गई, चिन्ता नई प्रभु आज्ञा दई, बड़ौ बड़भागी है।।
खेत कौ कटावौ, औ गहावो, लै उड़ावौ, पावौ, दो हजार मन, अन्न, सुनी प्रीति जागी है।
करी वही रीति, लोग देखैं न प्रतीति होत, गाये हरि मीत, रासि लागी अनुरागी है।। ५६३ ।।

स्वामी श्रीचतुरोनगनजी

श्री स्वामी चतुरोनगन मगन, रैन दिन, भजन हित।।
सदा युक्त अनुरक्त, भक्त मण्डल को पोषत।
पुर मथुरा ब्रजभूमि, रमत सबहिं को तोषत।।
परम धरम दृढ़ करन, देव श्रीगुरू आराध्यौ।
मधुर वैन सुठि ठौर–ठौर, हरिजन सुख साध्यौ।।
सन्त महन्त अनन्त जन, जस विस्तारन जासु नित।

श्रीस्वामी चतुरोनगन, मगन रैन दिन, भजन हित।। १४८ ।।

आयौ गुरु गेह यों सनेह सौं ले सेवा करैं, धरैं साँचौ भाव हियें, अति मति भीजियै।
टहल लगाय दई, नई रुपवती तिया, दियौ वासौं कहि, स्वामी कहैं सोई कीजियै।।
सेवा कै रिझाये याते, प्रेम उर नित नयो, दयौ घर धन, बधू कृपा करि लीजियै।
धाम पधराय सुख, पायकै प्रनाम करी, धरी ब्रजभूमि उर, बसे रस पिजियै।।५६४।।

श्रीगोविन्दचन्द जू कौ, भोर ही दरस करि केशव सिंगार, राजभोग नन्दग्राम में।
गोवर्धन राधाकुण्ड, ह्वैकै आवैं वृन्दावन, मन में हुलास नित, करैं चारि जाम में।।
रहे पुनि पावन पै, भूखे दिन तीन बीते, आये दूध ले प्रवीन, एऊ रँगे स्याम में।
माँग्यौ नेकु पानी, ल्यावौ फेरि वह प्रानी कहाँ? दुख मतिसानी निसि कही, कियौ काम में।।५६५।।

पानी सौं न काज, ब्रजभूमि में विराज दूध, पीवौ घर–घर यह, आज्ञा प्रभु दई है।
एतौ ब्रजवासी, सब क्षीर के उपासी, कैसें मोको लेन दैहें कही दैहें, सुनी नई है।।
डोलैं धाम–धाम, स्याम कह्यौ जोई मानि लियौ, दियौ परचे हूँ, परतीति तब भई है।
जहाँ जा छिपावैं पात्र, वेगि आप ढूँढ़ि ल्यावैं, अति सुख पावैं, कीनी लीला रसमई है।।५६६।।

भक्तसेवी मधुकरिया भक्तजी

मधुकरी माँगि सेवैं, भगत, तिन पर हौं, बलिहार कियौ।।
गोमा परमानन्द प्रधान, द्वारका मथुरा खोरा।
कालुख सांगानेर भलौ, भगवान् को जोरा।।
बीठल टोंड़े खेम, पण्डा गूनौरै गाजै।
स्यामसेन के वंश, चीधर पीपोर विराजै।।
जैतारन गोपाल के, केवल कूबै मोल लियौ।
मधुकरी माँगि सेवैं भगत, तिन पर हौं बलिहार कियौ।।१४६।।

श्रीकूबा (केवलदासजी)

कहत कुम्हार जग, कुल निसतार कियौ, केवल सुनाम, साधुसेवा अभिराम है।
आये बहु सन्त, प्रीति करी लै अनन्त जाकौ, अन्त कौन पावै, ऐपै सीधौ नहीं धाम है।।
बड़ी ए गरज चले, करज निकासिवे कौं, बनिया न देत, कुँवा खोदौ कीजै काम है।
कही बोल कियौ, तोल लियौ नीके रोल करि, हित सौं जिमाये, जिन्हें प्यारो एक स्याम है।।५६७।।

गये कुँवा खोदिवे कौं, सुवा ज्यौं उचारै नाम, हुआ काम जान्यौ, वानै भयौ सुख भारी है।
आई रेत भूमि, झूमि माटी गिरि दबे वामें, केतिक हजार मन, होत कैसे न्यारी है।।
शोक करि आये धाम राम–नाम धुनि काहूँ, कान परी बीत्यो, मास, कही बात प्यारी है।
चले वाही ठौर, स्वर सुनि प्रीति भौंर परे, रीति कछु और, यह, सुनि बुधि टारी है।। ५६८।।

माटी दूर करी सब, पहुँचे निकट जब, बोलिकै सुनायौ, हरे वानी लागी प्यारियै।
दरसन भयौ जाय, पाँय लपटाय गये, रही मिहराबसी ह्वै, कूबहूँ निहारियै।।
धर्‍यौ जलपात्र एक, देखि बड़े पात्र जाने, आने निज गेह, पूजा लागी अति भारियै।
भई द्वार भीर, नर उमड़ि अपार आये, महिमा विचारि बहु, सम्पति लै वारियै।। ५६९।।

सुन्दर स्वरूप स्याम ल्याये पधरायवे कौं, साधु निज धाम आय, कूबा जू के बसे हैं।
रूप कौं निहारि, मन में विचार कियौ आप, करै कृपा मोकौं प्रभु, अचल ह्वै लसे हैं।।
करत उपाय सन्त, टरत न नेक किहूँ, कही जू अनन्त हरि, रीझे स्वामी हँसे हैं।
धर्‌यौ जानराय नाम, जानि लई जिय की बात, अंग में न मात, सदा सेवासुख रसे हैं।।४७०।।

चले द्वारावति छाप, ल्यावैं यह मति भई, आज्ञा प्रभु दई, फिरी घर ही को आये हैं।
करौ साधुसेवा, धरौ भाव दृढ़ हिये माँझ, टरौ जिनि कहूँ कीजै, जे–जे मन भाये हैं।।
गेह ही में शंख चक्र, आदि निज देह भये, नये–नये कौतुक, प्रगट जग गाये हैं।
गोमती कौ सागर सौं सगंम हो रह्यौ सुन्यौ, सुमिरनी पठायकै यों, दोऊ लै मिलाये हैं।। ५७१।।

भये शिष्य शाखा, अभिलाषा साधुसेवा ही की, महिमा अगाध जग, प्रगट दिखाई है।
आये घर सन्त, तिया करति रसोई कोई, आयौ वाको भाई, ताकौं खीर लै बनाई है।।
कूबाजी निहारि जानी, याकौ हित सोदर सौं, कीजियै विचार एक, सुमति उपाई है।
कही भरि ल्यावो जल, गई डरि कलपै न, लई तसमई सब, भक्तनि जिंवाई है।। ५७२।।

वेगि जल ल्याई, देखि आगि–सी बराई हियें, झाँकै मुँह भाई, दुखसागर बुड़ाई है।
विमुख विचारि, तिया कूबा जू निकारि दई, गई पति कियो और, ऐसी मन आई है।।
पर्‌यौई अकाल, बेटा–बेटी सो न पालि सकै, तकै कोऊ ठौर मति, अति अकुलाई है।
लिये संग कर्‌यौ जोई पुत्र सुता भूख भोई आय परी झींथड़ा में स्वामी को सुनाई है।। ५७३।।

नानाविधि पाक होत, सन्त आवैं जैसे सोत, सुख अधिकाई, रीति कैसे जात गाई है।
सुनत वचन वाके, दीन दुखलीन महा, निपट प्रवीन मन, माँझ दया आई है।।
देखि पति मेरौ, और तेरौ पति देखि याहि, कैसे कै निबाहि, सके परी कठिनाई है।
रहौ द्वार झार्‌यौ करौ पहुँचै अहार तुम्हें महिमा निहारि दृगधार लै बहाई है।। ५७४।।

कियौ प्रतिपाल तिया, पूरी कौ अकाल मास, भयौ जब समैं, विदा कीनी उठि गई है।
अति पछितात वह, बात अब पावै कहाँ ? जहाँ साधु संग, रंग सभा रसमई है।।
करैं जाकौं शिष्य, सन्तसेवा ही बतावैं करौ, जो अनन्त रूप, गुन चाह मन भई है।
नाभा जू बखान कियौ, मोकौं इन मोल लियौ, दियौ दरसाय सब, लीला नित नई है।। ५७५।।

सप्ताह परायण छठवाँ विश्राम

श्रीअग्रदेवजी के शिष्य

श्रीअग्र अनुग्रह तें भये, शिष्य सबै धर्म की धुजा।।
जंगी प्रसिद्ध प्रयाग, विनोदी पूरन वनवारी।
नरसिंह भल भगवान, दिवाकर दृढ़व्रत धारी।।
कोमल हृदै किशोर, जगत् जगन्नाथ सलूधौ।
औरौ अनुग उदार, खेम खीची धरमधीर लघु ऊधौ।।
त्रिविध ताप मोचन सबै, सौरभ प्रभु निज सिर भुजा।
श्रीअग्र अनुग्रह तें भये, शिष्य सबै धर्म की धुजा।। १५०।।

श्रीटीलाजी का वंश

भरतखण्ड भूधर सुमेर, टीला लाहा की पद्धति प्रगट।।
अंगद परमानन्द, दास जोगी जग जागै।
खरतर खेम उदार, ध्यान केसौ हरिजन अनुरागै।।
सस्फुट त्योला शब्द, लोहकर वंश उजागर।
हरिदास कपि प्रेम, सबै नवधा के आगर।।
अच्युतकुल सेवैं सदा, दासन तन दसधा अघट।
भरतखण्ड भूधर सुमेर, टीला लाहा की पद्धति प्रगट।। १५१।।

श्रीकान्हरदासजी

मधुपुरी महोच्छौ मंगलरूप, कान्हर को सौ को करैं।
चारि वरन आश्रम, रंक राजा अँन पावै।
भक्तनि कौ बहु मान, विमुख कोऊ नहिं जावै।।
बीरी चन्दन वसन, कृष्ण को कीरतन बरखैं।
प्रभु के भूषन देय, महामन अतिसय हरखैं।।
वीठल सुत विमल्यौ फिरै, दास चरणरज सिर धरैं।
मधुपुरी महोच्छौ मंगलरूप, कान्हर को सौ को करैं।। १५२।।

श्रीनीवाजी

भक्तनि सौं कलिजुग भलैं, निबाही नीवा खेतसी।।
आवहिं दास अनेक, उठि सु आदर करि लीजै।
चरण धोय दण्डौत, सदन में डेरा दीजै।।
ठौर–ठौर हरिकथा, हृदे अति हरिजन भावैं।
मधुर वचन मुँह लाय, विविध भाँतिन्ह जू लड़ावैं।।
सावधान सेवा करैं, निर्दूषन रति चेतसी।
भक्तनि सौं कलिजुग भलैं, निबाही नीवा खेतसी।। १५३।।

श्री तूँवर भगवान्जी

बसन बढ़े कुन्ती बधू, त्यौं तूँवर भगवान् के।।
यह अचरज भयौ एक, खाँड़ घृत मैदा बरषै।
रजत रुक्म की रेल, सृष्टि सबही मन हरषै।।
भोजन रास विलास, कृष्ण को कीरतन कीनौ।
भक्तनि कौ बहुमान, दान सबही कौ दीनौ।।
कीरति कीनी भीम सुत, सुनि भूप मनोरथ आनके।
बसन बढ़े कुन्ती बधू, त्यौं तूँवर भगवान् के।। १५४।।

बीतत बरस मास, आवै मधुपुरी नेम, प्रेम सौं महोच्छौ, रास हेमहीं लुटाइयै।
सन्तनि जिंवाय, नाना पट पहिराय, पाछे द्विजन बुलाय, कछु पूजें, पै न भाइयै।
आयौ कोऊ काल, धनमाल जा बिहाल भये, चाहैं पन पार्‌यौ, आये अलप कराइयै।
रहे विप्र दूषि, सुनि भयौ सुख, भूख बढ़ी, आयौ यों समाज करौ, ख्वारी मन आइयै।। ५७६।।

अति सनमान कियौ, ल्याये जोई सौंपि दियौ, लियौ गाँठ बाँधि, तब विनती सुनाइयै।
सन्तनि जिवावौ, भावै रास लै करावौ, भावै जेंवौ सुख पावौ, कीजै बात मन भाइयै।
सीधौ लाय कोठे धर्‌यो, रोक ही, सो थैली भर्‌यो, द्विजन बुलाय देत, किहूँ निघटाइयै।
जितनौ निकासैं, ताते सौगुनौ बढ़त और, एक–एक ठौर, बीसगुनो दै पठाइयै।। ५७७।।

श्रीजसवन्तजी

जसवन्त भक्ति जयमाल की, रूड़ा राखी राठवड़।।
भक्तनि सौं अति भाव, निरन्तर अन्तर नाहीं।
करजोरे इक पाँय, मुदित मन आज्ञा माहीं।।
श्रीवृंदावन वास, कुँज क्रीड़ा रुचि भावै।
राधावल्लभलाल, नित्तप्रति ताहि लड़ावे।।
परम धरम नवधा प्रधान सदन साँच निधि प्रेम जड़।
जसवन्त भक्ति जयमाल की रूड़ा राखी राठवड़।। १५५।।

श्रीहरीदासजी

हरीदास भक्तनि हित, धनि जननी एकै जन्यौ।।
अमित महागुन गोप्य, सार वित सोई जानै।
देखत कौ तुलाधार, दूर आसै उनमानै।।
देय दमामौ पैंज, विदित वृन्दावन पायौ।
राधावल्लभ भजन, प्रगट परताप दिखायौ।।
परम धरम साधन सुदृढ़, कलियुग कामधेनु में गन्यौ।

हरीदास भक्तनि हित, धनि जननी एकै जन्यौ।। १५६।।

हरीदास बनिक सो, काशी ढिंग वास जाकौ, ताकौ यह पन, तन त्यागौं ब्रजभूमहीं।
भयौ ज्वर नाड़ी छीन, छोड़ि गये वैद तीन, बोल्यौ यों प्रवीन, वृन्दावन रस झूमहीं।।
बेटी चारि सन्तनि कौ, दई अंगीकार करौ, धरौ डोली माँझ मोको, ध्यान दृग धूमहीं।
चले सावधान राधावल्लभ कौ गान करै, करै अचरज लोग परी गाँव धूमहीं।। ५७८।।

आवत ही मग माँझ, छूटि गयौ तन पन, साँचौ कियौ स्याम वन, प्रगट दिखायौ है।
आय दरसन कियौ, इष्ट गुरु प्रेम भरि, नेम पर्‌यौ पूरौ, जाय चीरघाट न्हायौ है।।
पाछें आये लोग, शोक करत भरत नैंन, बैन सब कही, कही ताही दिन आयौ है।
भक्ति कौ प्रभाव यामें, भाव और आनौ जिनि, बिन हरिकृपा यह, कैसे जात पायौ है।। ५७९।।

श्रीगोपालदासजी, श्रीविष्णुदास जी

भक्ति भार जूड़ैं जुगल, धर्म धुरन्धर जग विदित।।
बाँबोली गोपाल, गुननि गम्भीर गुनारट।
दच्छिन दिसि विष्णुदास, गाँव काशीर भजन भट।।
भक्तनि सो यह भाय, भजै गुरु गोविन्द जैसे।
तिलक दाम आधीन, सुवर सन्तनि प्रति तैसे।।
अच्युतकुल पन एकरस, निबह्यौ ज्यौं श्रीमुख गदित।
भक्ति भार जूड़ैं जुगल, धर्म धुरन्धर जग विदित।।१५७।।

रहैं गुरूभाई, दोऊ भाई, साधुसेवा हिये, ऐसे सुखदाई नई रीति लै चलाइयै।
जायँ जा महोच्छौं में, बुलाये हुलसाये अंग, संग गाड़ी सामा सो, भण्डारी दै मिलाइयै।।
याकौ तातपर्य्य, सन्त घटती न सही जात, बात वे न जाने, सुखमानै मन भाइयै।
बड़े गुरु सिद्ध, जग–महिमा प्रसिद्ध बोले, विनै कर जोरि, सोई कहिकै सुनाइयै।।५८०।।

चाहत महोत्छौ कियौ, हुलसत हियो नित, लियौ सुनि बोले, करौ वेगि दै तयारिये।
चहुँदिसि डार्यौ नीर, कर्यौ न्यौतो ऐसे धीर, आवै बहु भीर, सन्त ठौरनि सँवारिये॥
आये हरिप्यारे, चारो खूँट तें निहारे नैंन, जाय पगु धारे, सीस विनै लै उचारिये।
भोजन कराय दिन, पाँच लगि छाय रहे, पट पहिराय, सुख दियौ अति भारिये।।५८१।।

आज्ञा गुरु दई, भोर आवौ फिरि आस–पास, महा सुखरासि, नामदेव जू निहारियै।
उज्ज्वल वसन तन, एकले प्रसन्न मन, चले जात वेगि, सीस पाँयनि पै धारियै।
वेई दें बताय, श्रीकबीर अति धीर साधु, चले दोऊ भाई, परदच्छिना विचारियै।
प्रथम निरखि नाम, हरखि लपटि पग, लगि रहे छोड़त न, बोले सुनौ धारियै।।५८२।।

साधु अपराध जहाँ, होत तहाँ आवत न, होय सनमान सब, सन्त तहीं आइयै।
देखि प्रीति रीति, हम निपट प्रसन्न भये, लये उर लाय, जावौ श्री कबीर पाइयै।।
आगें जो निहारैं, भक्तराज दृग धारैं चली, बोले हँसि आप, कोऊ मिल्यौ सुखदाइयै।
कह्यौ हाँ जू मान दई, भई कृपा पूरन यों, सेवा कौ प्रताप कहौ, कहाँ लगि गाइयै।।५८३।।

मास परायण सत्तइसवाँ विश्राम

श्री कील्हदेवजी के शिष्यजन

कील्ह कृपा कीरति विशद्, परम पारषद सिष प्रगट।।
आसकरन रिषिराज, रूप भगवान् भक्त गुर।
चतुरदास जग अभय, छाप छीतर जू चतुरवर।।
लाखै अद्भुत रायमल, खेम मनसा क्रम वाचा।
रसिक रायमल गौर, देवा दामोदर हरिरँग राँचा।।
सबै सुमंगल दास दृढ़, धर्म धुरन्धर भजन भट।
कील्ह कृपा कीरति विशद्, परम पारषद सिष प्रगट।। १५८ ।।

श्रीनाथभट्टजी

रसरास उपासक भक्तराज, नाथभट्ट निर्मल वयन।।
आगम निगम पुरान, सार शास्त्रनि जु विचार्यौ।
ज्यौं पारौ दे पुटहिं, सबनि कौ सार उधार्यौ।।
श्रीरूप–सनातन जीव, भट्ट नारायण भाख्यौ।
सो सर्वसु उर साँच, जतन करि नीके राख्यौ।।
फनीवंश गोपाल सुव, रागा अनुगा कौ अयन।
रसरास उपासक भक्तराज, नाथभट्ट निर्मल वयन।। १५६ ।।

श्रीकरमैतीजी

कठिन काल कलियुग्ग में, करमैती निकलंक रही।।
नश्वर पति–रति त्यागि, कृष्णपद सौं रति जोरी।
सबै जगत् की फाँसि, तरकि तिनुका ज्यौं तोरी।।
निरमल कुल काँथड्या, धन्य परसा जिहिं जाई।
विदित वृन्दावन वास, सन्त मुख करत बड़ाई।।
संसार स्वाद सुख बांत करि, फेरि नहीं तिन तन चही।
कठिन काल कलियुग्ग में, करमैती निकलंक रही।। १६० ।।

शेषावति नृप के, पुरोहित की बेटी जानौ, वास हो खँड़ेला, करमैती सो बखानियै।
बस्यौ उर स्याम, अभिराम कोटि काम हूँ ते, भूले धाम काम, सेवा मानसी पिछानियै।।
बीत जात जाम, तन बाम अनुकूल भयौ, फूलि–फूलि अंग, गति मति छबि सानियै।।
आयौ पति गौनो लैन, भायौ पितु–मातु हिये, लिये चित चाव पट आभरन आनियै।। ५८४।।

पर्‌यौ सोच भारी, कहा कीजिये विचारी, हाड़–चाम सौं सँवारी देह, रति के न काम की।
तावें देवौ त्यागि, मन सोवै जनि जाग, अरे मिटै उर दाग, एक साँची प्रीति स्याम की।।
लाज कौन काज, जोपै चाहै ब्रजराज सुत, बड़ोई अकाज जोपै, करै सुधि धाम की।
जानी भोर गौनो होत, सानी अनुराग रंग, संग एक वही चली भीजी मति बाम की।। ५८५।।

आधी निसि निकसी यों, बसी हिये मूरति सो, पूरति सनेह तन, सुधि बिसराई है।
भोर भये शोर पर्‌यौ, पर्‌यौ पितु–मातु सोच, कर्‌यौ लै जतन, ठौर–ठौर ढूँढ़ि आई है।।
चारो ओर दौरे नर, आये ढिंग दुरि जानि, ऊँट के करंक मध्य देह जा दुराई है।
जग दुरगन्ध, कोऊ ऐसी बुरी लागी जामें, वह दुरगन्ध सो सुगन्ध–सी सुहाई है।। ५८६।।

बीते दिन तीन, वा करंक ही में शंक नहीं, बंक प्रीति रीति, यह कैसें करि गाइयै।
आयौ कोऊ संग, ताही संग, गंग तीर आई, तहाँ सो अन्हाई, दै भूषन वन आइयै।।
ढूँढ़त परसराम, पिता मधुपुरी आये, पते ले बताये, जाय माथुर मिलाइयै।
सघन विपिन, बह्मकुण्ड पर बर एक, चढ़ि करि देखी, भूमि अँसुवा भिजाइयै।। ५८७।।

उतरिकै आय, रोय पाँय लपटाय गयो, कटी मेरी नाक, जग मुख न दिखाइयै।
चलौ गृह वास करौ, लोक उपहास मिटै, सासु घर जावौ, मत सेवा चित लाइयै।।
कोऊ सिंह व्याध्र अजू, वपु कौं विनास करै, त्रास मेरे होत, फिरि मृतक जिवाइयै।
बोली कही साँच, बिन भक्ति तन ऐसो जानौं, जोपै जियौ चाहौ, करौ प्रीति जस गाइयै।। ५८८।।

कही तुम कटी नाक, कटै जोपै होय कहूँ, नाक एक भक्ति, नाक लोक में न पाइयै।
बरस पचास लगि, विषै ही में वास कियौ, तऊ न उदास भये, चबे को चबाइयै।।
देखे सब भोग, मैं न देखे एक, देखे स्याम, तातें तजि काम, तन सेवा में लगाइयै।
रात तें ज्यौं प्रात होत, ऐसे तम जात भयौ, दयौ लै सरूप, प्रभु गयौ हिये आइयै।। ५८९।।

आये निसि घर, हरिसेवा पधराय चाय, मन को लगाय, वही टहल सुहाई है।
कहूँ जात आवत न, भावत मिलाप कहूँ, आप नृप पूछे, द्विज कहाँ? सुधि आई है।।
बोल्यौ कोऊ जन, धाम स्याम संग पागे सुनि, अति अनुरागे वेगि, खबर मँगाई है।
कहौ तुम जाय, ईश इहाँई असीस करौं, कही भूप आयौ हिये, चाह उपजाई है।। ५९०।।

देखी नृप प्रीति, रीति पूछी, सब बात कही, नैंन अश्रुपात, वह रँगी स्याम रंग में।
बरजत आयौ भूप, जायके लिवाय ल्याऊँ, पाऊँ जोपै भाग, मेरे बढ़ी चाह अंग मे।।
कालिन्दी के तीर ठाढ़ी, नीर दृग भूप लखी, रूप कछु औरै, कहा कहैं वे उमंग में।
कियौ मने लाख बेर, ऐपै अभिलाष राजा, कीनी कुटी आये, देश भीजे सो प्रसंग में।।५६१।।

नवाह परायण अष्टम विश्राम

श्रीखंगसेनजी कायस्थ

गोविन्दचन्द गुन ग्रथन को, खर्गसेन वानी विशद्।।
गोपी ग्वाल पितु मातु, नाम निरनै कियौ भारी।
दान केलि दीपक, प्रचुर अति बुद्धि उचारी।।
सखा सखी गोपाल, काल लीला में बितयौ।
कायथकुल उद्धार, भक्ति दृढ़ अनत न चितयौ।।
गोतमी तन्त्र उर ध्यान धरि, तन त्याग्यो मण्डल शरद्।
गोविन्दचन्द गुन ग्रथन को, खर्गसेन वानी विशद्।।१६१।।

ग्वालियर वास, सदा रास कौ समाज करैं, सरद उजारी अति, रंग चढ़्यौ भारी है।
भाव की बढ़नि, दृग रूप की चढ़नि, ततथेई की रढ़नि, जोरी सुन्दर निहारी है।।
खेलत में जाय मिले, त्यागि तन भावना सौं, झेलत अपार सुख, रीझि देह वारी है।
प्रेम की सचाई, ताकी रीति लै दिखाई भई, भावुकनि सरसाई, बात लागी प्यारी है।।५६२।।

श्रीगंगग्वालजी

सखा श्याम मन भावतौ, गंगग्वाल गम्भीर मति।।
श्यामा जू की सखी, नाम आगम विधि पायौ।
ग्वाल गाय ब्रज गाँव, पृथक् नीके करि गायौ।।
कृष्ण केलि सुखसिन्धु, अघट उर अन्तर धरई।
ता रस में नित मगन, असद् आलाप न करई।।
ब्रजवास आस ब्रजनाथ गुरू, भक्त चरणरज अननि गति।
सखा श्याम मन भावतौ, गंगग्वाल गम्भीर मति।।१६२।।

पृथ्वीपति आयौ, वृन्दावन मन चाह, भई सारँग सुनावै कोऊ, जोरावरी ल्याये हैं।
वल्लभ हूँ संग, सुर भरत ही छायौ रंग, अति ही रिझायौ, दृग अँसुवा बहाये हैं।।
ठाढ़ौ कर जोरि, विनै करी पै न धरी हियै, जियै ब्रजभूमि ही सो, वचन सुनाये हैं।
कैद करि साथ लिये, दिल्ली ते छुटाय दिये, हरीदास तूँवर नै, आये प्रान पाये हैं।। ५६३।।

श्रीसोतीजी

सोती श्लाघ्य सन्तनि सभा, दुतिय दिवाकर जानियो।।
परम भक्ति परताप, धर्मध्वज नेजा धारी।
सीतापति को सुजस, वदन शोभित अति भारी।।
जानकी जीवन चरण, शरण थाती थिर पाई।
नरहरि गुरू परसाद, पूत पोते चलि आई।।
राम उपासक छाप दृढ़, और न कछु उर आनियो।
सोती श्लाघ्य सन्तनि सभा, दुतिय दिवाकर जानियो।। १६३।।

श्रीलालदासजी

जीवत जस पुनि परमपद, लालदास दोनों लही।।
हृदै हरीगुन खानि, सदा सत्संग अनुरागी।
पद्मपत्र ज्यौं रह्यौ, लोभ की लहर न लागी।।
विष्णुरात सम रीति, बँधेरे त्यौं तन त्याज्यो।
भक्त बरातीवृन्द, मध्य दूलह ज्यौं राज्यो।।
खरी भक्ति हरिषांपुरे, गुरुप्रताप गाढ़ी गही।
जीवत जस पुनि परमपद, लालदास दोनों लही।। १६४।।

श्रीमाधवग्वालजी

भक्तनि हित भगवत रची, देही माधवग्वाल की।।
निसिदिन यहै विचार, दास जिहि विधि सुख पावैं।
तिलक दाम सौं प्रीति, हृदै अति हरिजन भावैं।।

परमारथ सौं काज, हिये स्वारथ नहीं जानैं।
दशधा मत्त मराल, सदा लीला गुण गानै।।
आरत हरिगुण शील सम, प्रीति रीति प्रतिपाल की।
भक्तनि हित भगवत् रची, देही माधवग्वाल की।। १६५।।

श्रीप्रयागदासजी

"श्रीअगर" सुगुरु परपात ते, पूरी परी प्रयाग की।।
मानस वाचक काय, राम चरणनि चित दीनौ।
भक्तनि सौं अति प्रेम, भावना करि सिर लीनौ।।
रास मध्य निर्जान, देह दुतिदसा दिखाई।
आड़ौ बलियौ अंक, महोच्छौ पूरी पाई।।
क्यारे कलस औली ध्वजा, विदुष श्लाघा भाग की।
"श्रीअगर" सुगुरू परताप तें, पूरी परी प्रयाग की।। १६६।।

श्रीप्रेमनिधिजी

प्रगट अमित गुन प्रेमनिधि, धन्य विप्र जिन नाम धर्‌यौ।।
सुन्दर शील सुभाव, मधुर वानी मंगल करू।
भक्तनि कौं सुख दैन, फल्यौ बहुधा दसधा तरू।।
सदन बसत निर्वेद, सारभुक जगत् असंगी।
सदाचार ऊदार, नेम हरिदास प्रसंगी।।
दयादृष्टि बसि आगरैं, कथा लोक पावन कर्‌यौ।।
प्रगट अमित गुन प्रेमनिधि, धन्य विप्र जिन नाम धर्‌यौ।। १६७।।

प्रेमनिधि नाम, करैं सेवा अभिराम स्याम आगरौ शहर निसि, शेष जल ल्याइयै।
बरखा सु रितु, जित तित अति कीच भई, भई चित चिन्ता, कैसे अपरस आइयै।।

जोपै अन्धकार ही मैं, चलौं तो बिगार होत, चले यों विचारि, नीच छुवै न सुहाइयै।
निकसत द्वार, जब देख्यौ सुकुमार एक, हाथ में मशाल याके, पाछे चले जाइयै।। ५६४।।

जानी यहै बात, पहुँचाये कहूँ जात यह, अबहीं विलात भले, चैन कोऊ घरी है।
जमुना लौं आयौ, अचरज सो लगायौ मन, तन अन्हवायौ मति, वाही रूप हरी है।।
घट भरि धर्‌यौ सीस, पट वह आय गयौ, आय गयौ घर, नहीं देखी कहा करी है।
लागी चटपटी–अटपटी न समझि परै, भटभटी भई नई, नैंन नीर झरी है।। ५६५।।

कथा ऐसी कहैं, जामें गहैं मन भाव भरैं, करैं कृपादृष्टि, दुष्टजन दुख पायौ है।
जायकै सिखायौ, बादशाह उर दाह भयौ, कही तिया भली को, समूह घर छायौ है।।
आये चोबदार कहैं, चलौं एही बार वारि, झारी प्रभु आगे धर्‌यौ, चाहै शोर लायौ है।
चले तब संग, गये पूछै नृप रंग कहा?, तियनि प्रसंग करौ?, कहिकै सुनायौ है।। ५६६।।

कान्ह भगवान् ही की, बात सो बखानि कहौं, आनि बैठें नारी–नर, लागी कथा प्यारी है।
काहू कौं बिडारैं, झिरकारैं नेकु टारैं, विषैदृष्टि कै निहारैं, ताकौं लागै दोष भारी है।।
कही तुम भली, तेरी गली ही के लोग मोसौं, आयकै जताई वह, रीति कछु न्यारी है।
बोल्यौ याहि राखौ सब, करौं निरधार नीके, चले चोबदार लैकै, रोके प्रभु धारी है।। ५६७।।

सोयौ बादशाह निसि, आयकै सुपन दियौ, कियौ वाकौ इष्टभेष, कही प्यास लागी है।
पीवौ जल कही, आबखाने लै बखाने तब, अति ही रिसाने, को पियावै कोऊ रागी है।।
फेर मारी लात, अरे सुनी नहीं बात मेरी, आप फुरमावौ जोई, प्यावै बड़भागी है।
सो तौ तैं लैं कैद कर्‌यौ, सुनि अरबर्‌यौ डर्‌यौ, भर्‌यौ हिये भाव, मति, सोवत तें जागी है।। ५६८।।

दौरे नर ताही समै, वेगि दै लिवाय ल्याये, देखि लपटाये पाँय, नृप दृग भीजे हैं।
साहिब तिसाये जाय, अबही पियावौ नीर, और पै न पीवैं, एक तुमही पै रीझे हैं।।
लेवौ देश गाँव सदा, पांव हीं सो लग्यौ रहौं, गहौं नहीं नेकु, धन पाय बहु छीजे हैं।
संग दै मशाल, ताही काल में पठाये यों, कपाट जाल खुले, लाल प्यायो जल धीजे हैं।। ५६९।।

श्रीराघवदासजी दूबलो

दूबरो जाहि दुनियाँ कहै, सो भक्त भजन मोटौ महन्त।।
सदाचार गुरु शिष्य, त्याग विधि प्रगट दिखाई।
बाहर भीतर विशद्, लगी नहिं कलियुग काई।।

राघौ रुचिर सुभाव, असद् आलाप न भावै।
कथा कीर्त्तन नेम, मिलैं सन्तनि गुन गावै।।
ताय तोलि पूरौ, निकष ज्यौं घन, अहरनि हीरौ सहन्त।
दूबरो जाहि दुनियाँ कहै, सो भक्त भजन, मोटौ महन्त।। १६८ ।।

दासनि के दासत्व कौ, चौकस चौकी ये मड़ी।।
हरि नारायण नृपति, पद्म बेरछे विराजैं।
गाँव हुसंगाबाद, अटल ऊधौ भल छाजैं।।
भेलै तुलसीदास, भट ख्यात देवकल्याने।
बोहिथवीरा रामदास, सुहेलैं परम सुजाने।।
औली परमानन्द कै, ध्वजा सबल धर्म की गड़ी।
दासनि के दासत्व की, चौकस चौकी ये मड़ी।। १६९ ।।

अबला शरीर साधन सबल, ये बाई हरिभजन बल।
देमा प्रगट सब दुनी, रामाबाई वीराँ हीरामनि।
लाली नीरा लक्ष्मि, जुगुल पार्वती जगत् धनि।।
खीचनि केसी धना, गोमती भक्त उपासिनी।
बाँदररानी विदित, गंगा जमुना रैदासिनि।।
जेवा हरिषां जोइसिनि, कुँवरिराय कीरति अमल।
अबला शरीर साधन सबल, ये बाई हरिभजन बल।। १७० ।।

श्रीकान्हरदासजी

कान्हरदास सन्तनि कृपा, हरि हिरदै लाहौ लह्यौ।।
श्रीगुरू शरणै आय, भक्ति मारग सत जान्यौ।
संसारी धर्महिं छाँड़ि, झूठ अरु साँच पिछान्यौ।।

ज्यौं साखा द्रुम चन्द, जगत् सौं इहि विधि न्यारौ।
सर्वभूत समदृष्टि, गुननि गम्भीर अति भारौ।।
भक्त भलाई वदन नित, कुवचन कबहूँ नहीं कह्यौ।
कान्हरदास सन्तनि कृपा, हरि हिरदै लाहौ लह्यौ।।१७१।।

श्रीकेशवलटेरा, श्रीपरशुरामजी

लट्यौ लटेरा आन विधि, परम धरम अति पीन तन।।
कहनी रहनी एक, एक प्रभुपद अनुरागी।
जस वितान जग तन्यौ, सन्त सम्मत बड़भागी।।
तैसोइ पूत सपूत, नूत फल जैसोइ परसा।
हरि हरिदासनि टहल, कवित रचना पुनि सरसा।।
(श्री) सुरसुरानन्द सम्प्रदाय दृढ़, केसव अधिक उदार मन।
लट्यौ लटेरा आन विधि, परम धरम अति पीन तन।।१७२।।

श्रीकेवलरामजी

केवलराम कलियुग्ग के, पतित जीव पावन किये।।

भक्ति भागवत विमुख, जगत् गुरू नाम न जानैं।
ऐसे लोक अनेक, ऐंचि सनमारग आनैं।।
निर्मल रति निहकाम, अजा तें सदा उदासी।
तत्वदरसी तमहरन, शील करूना की रासी।
तिलक दाम नवधारतन, कृष्ण कृपा करि दृढ़ दिये।
केवलराम कलियुग्ग के, पतित जीव पावन किये।।१७३।।

घर–घर जाय कहैं, यहै दान दीजै मोकौं, कृष्ण सेवा कीजै, नाम लीजै चित लायकै।
देखे भेषधारी, दस बीस कहूँ, अनाचारी दये प्रभु सेवनि कौं, रीति दी सिखायकै।।

करुणानिधान कोऊ, सुने नहीं कान कहूँ, बैल के लगायौ साँटौ, लोटे दया आयकै।
उपट्यो प्रगट तन, मन की सचाई अहो, भये तदाकार कहौं, कैसे समुझायकै।। ६००।।

श्रीआशकरणजी

(श्री) मोहन मिश्रित पद कमल, आसकरन जस विस्तर्यौ।।
धर्मशील गुनसींव, महा भागवत राजरिषि।
पृथीराज कुलदीप, भीम सुत विदित कील्ह सिषि।।
सदाचार अति चतुर, विमल वानी रचना पद।
सूरधीर ऊदार, विनै भलपन भक्तनि हद।।
सीतापति राधासुवर, भजन नेम कूरम धर्यौ।
(श्री) मोहन मिश्रित पद कमल, आसकरन जस विस्तर्यौ।। १७४।।

नरवर पुर ताकौ, राजा नरवर जानौ, मोहन जू धरि हियें, सेवा नीके करी है।
घरी दस मन्दिर में रहैं, रहै चौकी द्वार, पावत न जान कोऊ, ऐसी मति हरी है।।
पर्यो कोऊ काम, आय अबहिं लिवाय ल्यावौ, कहै पृथीपति, लोग कान में न धरी है।
आई फौज भारी, सुधि दीजिये हमारी सुनि, बहू बात टारी, परी अति खरबरी है।। ६०१।।

कहिकै पठाई कहौ, कीजियै लराई सुनि, रुचि उपजाई चलि, पृथीपति आयौ है।
पर्यौ सोच भारी, तब बात यों विचारी, कही आप एक जावौ, गयौ अचरज पायौ है।।
सेवा करि सिद्धि, साष्टांग ह्वैकै भूमि परे, देखि बड़ी बेर, पाँव खड्ग लगायौ है।
कटि गई एड़ी, एपै टेढ़िहू न भौंह करी, करी नित नेम रीति, धीरज दिखायौ है।। ६०२।।

उठि चिक डारि तब, पाछें सो निहारि कियौ, मुजरा विचारि, बादशाह अति रीझे हैं।
हित की सचाई यहै, नेकु न कचाई होत, चरचा चलाई भाव, सुनि–सुनि भीजे हैं।।
बीते दिन कोऊ, नृप भक्त सो समायौ, पृथीपति दुख पायौ, सुनि भोग हरि छीजे हैं।
करैं विप्र सेवा, तिन्हें गाँव लिखि न्यारे दिये, वाके प्रान न्यारे, लाड़ करौ कहि धीजे हैं।। ६०३।।

मास परायण अट्ठाईसवाँ विश्राम

श्रीहरिवंशजी

निहिकिंचन भक्तनि भजैं, हरि प्रतीति हरिवंश के।।
कथा कीर्तन प्रीति, सन्तसेवा अनुरागी।
खरिया खुरपा रीति, ताहि ज्यौं सर्वसु त्यागी।।
सन्तोषी सुठि शील, असद् आलाप न भावै।
काल वृथा नहिं जाय, निरन्तर गोविन्द गावै।।
सिष सपूत श्री रंग को, उदित पारषद अंस के।
निहिकिंचन भक्तनि भजैं, हरि प्रतीति हरवंश के।। १७५।।

श्रीकल्याणजी

हरिभक्ति भलाई गुन गम्भीर, बाँटे परी कल्यान के।।
नवलकिशोर दृढ़व्रत, अनन्य मारग इक धारा।
मधुर वचन मन हरन, सुखद जानत संसारा।।
पर उपकार विचार, सदा करुना की रासी।
मन वच सर्वसु रूप, भक्तपद रेनु उपासी।।
धर्मदास सुत शील सुठि, मन मान्यौ कृष्ण सुजान के।
हरिभक्ति भलाई गुन गम्भीर, बाँटे परी कल्यान के।। १७६।।

श्रीबीठलदासजी

बीठलदास हरिभक्ति के, दुहूँ हाथ लाडू लिये।।
आदि अन्त निर्वाह, भक्तपद रज व्रतधारी।
रह्यौ जगत् सौं ऐंड़, तुच्छ जाने संसारी।।
प्रभुता पति की पधति, प्रगट कुल दीप प्रकासी।
महत् सभा में मान, जगत् जानै रैदासी।।
पद पढ़त भई परलोक गति, गुरू गोविन्द जुग फल दिये।
बीठलदास हरिभक्ति के, दुहूँ हाथ लाडू लिये।। १७७।।

भगवन्त रचे भारी भगत, भक्तनि के सनमान को।।
क्वाहब श्रीरँग सुमति, सदानन्द सर्वसु त्यागी।
श्यामदास लघुलम्ब, अननि लाखै अनुरागी।।
मारू मुदित कल्यान, परस वंसी नारायन।
चेता ग्वाल गोपाल, शंकर लीला पारायन।।
सन्तसेय कारज किया, तोषत श्याम सुजान को।
भगवन्त रचे भारी भगत, भक्तनि के सनमान को।।१७८।।

श्रीहरीदासजी

तिलक दाम पर काम कौं, हरीदास हरि निर्मयो।।
सरनागत कौं सिविर दान, दधीचि टेक बलि।
परमधर्म प्रह्लाद, सीस देन जगदेव कलि।
बीकावत बानैत, भक्तपन धर्मधुरन्धर।
तूँवर कुलदीपक, सन्तसेवा नित अनुसर।।
पारथपीठ अचरज कौन, सकल जगत् में जस लियो।
तिलक दाम पर काम कौं, हरीदास हरि निर्मयो।।१७९।।

प्रह्लाद आदि भक्त, गाये गुन भागवत, सब, इकठौर आये, देखे हरिदास में।
रीझि जगदेव सो यों, कहिकै बखान कियौ, जानत न कोऊ सुनौ, कर्‌यौ ले प्रकास में।।
रहै एक नटी, शक्तिरूप गुन जटी गावै, लागै चटपटी, मोह पावै मृदुहास में।
राजा रिझवार, करै देवे को विचार, पै न पावै सार, काटै सीस, राख्यौ तेरे पास में।।६०४।।

दियौ कर दाहिनो में, यासौं नहीं जाचौं कहूँ, सुनि एक राजा, भेदभाव सौं बुलाई है।
नृत्य करि गाई, रीझि लेवौ कही, आई देहु ओड्‌यौ बाँयों हाथ, रिस भरिकै सुनाई है।।
इतौ अपमान, पानि दच्छिन लै दियौ अहो, नृप जगदेव जू कौं, ऐसी कहा पाई है।
तासौं दसगुनी लीजै, मोकौं सो दिखाय दीजै, दई नहीं जाय, काहु मोहिये सुहाई है।।६०५।।

कितौ समुझावै, ल्यावौ कहै यहै जक लागी, गई बड़भागी पास, वस्तु मेरी दीजियै।
काटि दियो सीस, तन रहै ईश शक्ति लखो, ल्याई बकसीस, थार ढाँपि देखि लीजियै।

खोलिकै दिखायो नृप, मूरछा गिरायो तन, धन की न बात, अब याकौ कहा कीजियै।
मै जु दीनौ हाथ जानि, आनि ग्रीवा जोरि दई, लई वही रीझि पद, तन सुनि जीजियै।। ६०६।।

सुनी जगदेव रीति, प्रीति नृपराज सुता, पिता सौं बखानि कही, वाही कौ लै दीजियै।
तबतौ बुलाये, समुझाये बहुभाँति खोलि, वचन सुनाये, अजू बेटी मेरी लीजियै।।
नट्यौ सतबार जब, कही डारौ मारि, चले मारिवे कौं बोली, वह मारौ मत भीजियै।
दृष्टि सौं न देखैं, कही ल्यावौ काटि मूँड़ लाये, चाहै सीस आँखिन को, गयौ फिरि रीझियै।।६०७।।

निष्ठा रिझवार रीति, कीनी विसतार यह, सुनौ साधुसेवा, हरीदास जू ने करी है।
परदा न सन्त सौं है, देत हैं अनन्त सुख, रह्यौ सुख जानि, भक्तसुता चित धरी है।।
दोऊ मिलि सोवैं रितु, ग्रीषम की छात पर, गात पर गात सोये, सुधि नही परी है।
दातुन के करिवे को, चढ़े निसि शेष आप, चादर उढ़ाय, नीचे आये ध्यान हरी है।। ६०८।।

जागि परे दोऊ, अरबरे देखि चादर कौं, पेखि पहिचानी सुता, पिता ही की जानी है।
सन्त दृग नये, चले, बैठे मग पग लये, गये लै एकान्त में, यों, विनती बखानी है।।
नेकु सावधान ह्वैकै, कीजिये निशंक काज, दुष्टराज छिद्र पाय, कहैं कटु वानी है।
तुमको जु नांव धरैं, जरै सुनि हियौ मेरौ, डरैं निन्दा आपनी न, होत सुखदानी है।। ६०९।।

इतनी जतावनी में, भक्ति कौं कलंक लगै, ऐपै शंक वही, साधु घटती न भाइयै।
भई लाज भारी, विषै बास धोय डारी, नीके जीके दुखरासि, चाहै कहूँ उठि जाइयै।।
निपट मगन किये, नानाविधि सुख दिये, दिये पै न जान, मिलि लालन लड़ाइयै।
गोविन्द अनुज जाके, बाँसुरी कौ साँचोपन, मन में न ल्यायौ नृप इहि विधि गाइयै।। ६१०।।

(किसी प्रति में यह एक अतिरिक्त छप्पय भी प्राप्त है)

श्रीगोविन्ददासजी

टेक एक वंशी तनी, जन गोविन्द की निर्वही।।
युगुलचन्द किरपाल, तासु को दास कहावै।
बादशाह सौं पैज, हुकुम नहिं वेनु बजावै।।
बीकावत बानैत, भक्त पाण्डव अवतारी।
कपि ज्यौं बीरा लियो, सीस अम्बर कै झारी।।

पीठ परीक्षित सारका, सभा शाष सन्तन कही।
टेक एक वंशी तनी, जन गोविन्द की निर्वही।।

श्रीकृष्णदासजी

नन्दकुँवर कृष्णदास कौं, निज पग तें नूपुर दियौ।।
तान मान सुर ताल, सुलय सुन्दरि सुठि सोहै।
सुधा अंग भ्रूभंग, गान उपमा को कोहै।।
रत्नाकर संगीत, रागमाला रँगरासी।
रिझये राधालाल, भक्तपद रेनु उपासी।।
स्वर्णकार खरगू सुवन, भक्त भजनपन दृढ़ लियौ।
नन्दकुँवर कृष्णदास कौं, निज पग तें नूपुर दियौ।।१८०।।

कृष्णदास ये सुनार, राधाकृष्ण सुखसार, लियो सेवा पाछे, नृत्य–गान बिसतारियै।
ह्वै करि मगन काहू, दिन तन सुधि भूली, एक पग नूपुर सो, गिर्‌यौ न सँभारियै।।
लाल अति रंग भरे, जानी गति भंग भई, पाँय निज खोलि, आप बाँध्यौ सुख भारियै।
फेरि सुधि आई, देखि धारा लै बहाई नैंन, कीरति यों छाई, जग भक्ति लागी प्यारियै।।६११।।

परमधर्म पोषक संन्यासी भक्तजी

परमधर्म प्रति पोषकौं, संन्यासी ए मुकुटमनि।।
चित्‌सुख टीकाकार, भक्ति सर्वोपरि राखी।
श्रीदामोदर तीर्थ, रामअर्चन विधि भाखी।।
चन्द्रोदय हरिभक्ति, नरसिंहारन कीनी।
माधौ मधुसूदन सरस्वती, परमहंस कीरति लीनी।।
प्रबोधानन्द रामभद्र, जगदानन्द कलिजुग्ग धनि।
परमधर्म प्रति पोषकौं, संन्यासी ए मुकुटमनी।।१८१।।

श्रीप्रबोधानन्दजी

श्रीप्रबोधानन्द बड़े, रसिक आनन्दकन्द, श्रीचैतन्यचन्द्र जू के, पारषद प्यारे हैं।
श्रीराधाकृष्ण कुँजकेलि, निपट नवेलि कही, झेलि रसरूप दोऊ, किये दृग तारे हैं।।
वृन्दावन वास कौ, हुलास लै प्रकास कियौ, दियौ सुखसिन्धु, कर्म धर्म सब टारे हैं।
ताहि सुनि–सुनि कोटि–कोटिजन, रंग पायौ, विपिन सुहायौ बसे, तन मन वारे हैं।। ६१२।।

श्रीद्वारकादासजी

अष्टांगयोग तन त्यागियौ, द्वारकादास जानै दुनि।।
सरिता कूकस गाँव, सलिल में ध्यान धर्‍यौ मन।
राम चरण अनुराग, सुदृढ़ जाके साँचौ पन।।
सुत कलत्र धन धाम, ताहि सौं सदा उदासी।
कठिन मोह कौ फंद, तरकि तोरी कुल फाँसी।।
कील्ह कृपा बल भजन के, ज्ञान खड्‌ग माया हनी।
अष्टांगयोग तन त्यागियौ, द्वारकादास जानै दुनि।। १८२।।

श्रीपूर्णजी

पूरन प्रगट महिमा अनन्त, करिहै कौन बखान।।
उदै अस्त, परवत गहिर मधि, सरिता भारी।
जोग जुगति विश्वास, तहाँ दृढ़ आसन धारी।।
व्याघ्र सिंघ गुँजैं, खरा कछु शंक न मानै।
अर्द्ध न जातैं पौन, उलटि ऊरध कौं आनै।।
साखि शब्द निर्मल, कहा, कथिया पद निर्वान।
पूरन प्रगट महिमा अनन्त, करिहै कौन बखान।। १८३।।

श्रीलक्ष्मणभट्‌टजी

श्रीरामानुज पद्धति प्रताप, भट्‌ट लक्ष्मन अनुसर्‍यौ।।

सदाचार मुनिवृत्ति, भजन भागवत उजागर।
भक्तनि सौं अति प्रीति, भक्ति दशधा कौ आगर।।
सन्तोषी सुठि शील, ह्दै स्वारथ नहिं लेसी।
परमधर्म प्रतिपाल, सन्त मारग उपदेसी।।
श्रीभागवत बखानिकै, नीर क्षीर विवरन कर्‍यो।
श्रीरामानुज पद्धति प्रताप, भट्ट लक्षमन अनुसर्‍यौ।।१८४।।

स्वामी श्रीकृष्णदासजी पयहारी

दधीचि पाछें दूसरि करी, कृष्णदास कलि जीति।।
कृष्णदास कलि जीति, न्यौति नाहर पल दीयौ।
अतिथि धर्म प्रतिपालि, प्रगट जस जग में लीयौ।।
उदासीनता अवधि, कनक कामिनी नहिं रात्यो।
राम चरण मकरन्द, रहत निसिदिन मद मात्यो।।
गल तें गलित, अमित गुण सदाचार सुठि नीति।
दधीचि पाछें दूसरि करी, कृष्णदास कलि जीति।।१८५।।

बैठे हे गुफा में, देखि सिंह द्वार आय गयौ, लयौ यों विचारि, हो अतिथि आज आयौ है।
दई जाँघ काटि, डारि कीजियै अहार अजू, महिमा अपार, धर्म कठिन बतायौ है।।
दियौ दरसन आय, साँच में रह्यौ न जाय, निपट सचाई दुख, जान्यौ न बिलायौ है।
अन्न–जल देवे ही कौ, झींखत जगत् नर, करि कौन सकै, जन मन भरमायौ है।।६१३।।

श्रीगदाधरदासजी

भलीभाँति निर्वही भगति, सदा गदाधरदास की।।
लालविहारी जपत, रहत निसिवासर फूल्यौ।
सेवा सहज सनेह, सदा आनन्द रस झूल्यौ।।
भक्तनि सौं अति प्रीति, रीति सबही मन भाई।
आशय अधिक उदार, रसन हरि कीरति गाई।।

हरि विश्वास हिय आनिकै, सुपनेहुँ आन न आस की।
भलीभाँति निर्वही भगति, सदा गदाधरदास की।। १८६।।

बुरहानपुर ढिंग, बाग तामें बैठे आय, करि अनुराग गृह, त्याग पागे स्याम सौं।
गाँव में न जात लोग, किते हा-हा खात सुख, मानि लियौ गात नहीं, काम और काम सौं।।
पर्‌यौ अति मेह, देह वसन भिजाय डारे, तब हरिप्यारे बोले, स्वर अभिराम सौं।
रहै एक शाह, भक्त कही जाय ल्यावौ उन्हें, मन्दिर करावौ तेरौ, भर्‌यौ घर दाम सौं।। ६१४।।

नीठि-नीठि ल्याये, हरि वचन सुनाये जब, तब करवायौ ऊँचौ, मन्दिर सँवारिकै।
प्रभु पधराये, नाम लाल औ विहारी स्याम, अति अभिराम रूप, रहत निहारिकै।।
करैं साधुसेवा, जामें निपट प्रसन्न होत, बासी न रहत अन्न, सोवैं पात्र झारिकै।
करत रसोई जोई, राखी ही छिपाय सामा, आयै घर सन्त आप, कही जिंवावौ प्यारिकै।। ६१५।।

बोल्यौ प्रभु भूखे रहें, ताके लिये राख्यौ कछु, भाष्यो तब आप काढौ, भोर और आवैगौ।
करिकै प्रसाद दियौ, लियौ सुख पायौ सब, सेवा रीति देखि कही, जग जस गावैगौ।।
प्रात भये भूखे हरि, गये तीन जाम ढरि, रहे क्रोध भरि, कहें कब धौं छुटावैगौ।
आयौ कोऊ ताही समैं, दो सत रूपैया धरे, बोले गुरु सीस, लैकै मारौ कितौ मारैगौ।। ६१६।।

डर्‌यौ वह शाह, मति मोपै कछु कोप कियौ, कियौ समाधान सब, बात समुझाई है।
तबतौ प्रसन्न भयौ, अन्न लगै जितौ जितौ, देत सेवासुख लेत, साधु रूचि उपजाई है।।
रहे कोऊ दिन, पुनि मधुपुरी वास लियौ, पियौ ब्रजरस लीला, अति सुखदाई है।
लाल लै लड़ाये, सन्त नीके भुगताये गुन, जाने जिते गाये मति सुन्दर लगाई है।। ६१७।।

श्रीनारायणदासजी

हरिभजन सींव स्वामी सरस, श्रीनारायणदास अति।।
भक्ति जोग जुत सुदृढ़, देह निज वश करि राखी।
हिये स्वरूपानन्द, लाल जस रसना भाखी।।
परिचै प्रचुर प्रताप, जानमनि रहस सहायक।
श्रीनारायण प्रगट, मनौ लोगनि सुखदायक।।
नित सेवत सन्तनि सहित, दाता उत्तर देसगति।
हरिभजन सींव स्वामी सरस, श्रीनारायणदास अति।। १८७।।

आये बद्रीनाथ जू तें, मथुरा निहारि नैंन, चैन भयौ रहैं, जहाँ केसौ जू कौ द्वार है।।
आवैं दरसनी लोग, जूतनि कौ सोग हिये, रूप कौ न भोग, होत कियौ यों विचार है।।
करैं रखवारी, सुख पावत हैं भारी, कोऊ जानै न प्रभाव, उर भाव सो अपार है।
आयौ एक दुष्ट, पोट पुष्ट सो तौ सीस दई, लई चले मग, ऐसौ धीरज कौ सार है।। ६१८।।

कोऊ बड़ो नर, देखि मग पहिचानि लिये, किये परनाम भूमि, परि भरि नेह कौ।
जानिकै प्रभाव, पाँव लीने महादुष्ट हूँ नै, कष्ट अति पायो, छूट्यौ अभिमान देह कौ।।
बोले आप चिन्ता जिनि, करौ तेरौ काम होत, नैंन नीर सोत, मुख देखौं नही गेह कौ।
भयौ उपदेस, भक्ति देस, उन जान्यौ साधु, शक्ति कौ विशेष, इहाँ जानौ भाव मेह कौ।। ६१६।।

श्रीभगवानदासजी

भगवानदास श्रीसहित नित, सुहृद् शील सज्जन सरस।।
भजन भाव आरूढ़, गूढ़ गुन बलित ललित जस।
श्रोता श्रीभागवत, रहसि ज्ञाता अक्षर रस।।
मथुरापुरी निवास, आस पद सन्तनि इक चित।
श्रीजुत खोजी श्याम, धाम सुखकर अनुचर हित।।
अति गम्भीर सुधीर मति, हुलसत मन जाके दरस।
भगवानदास श्री सहित नित, सुहृद् शील सज्जन सरस।।१८८।।

जानिवे कौं पन, पृथीपति मन आई यों, दुहाई लै दिवाई, माला तिलक न धारियै।
मानि आनि प्रान लोभ, केतिकनि त्याग दिये, छिपे नहीं जात, जानी वेगि मारि डारियै।।
भगवानदास उर, भक्ति सुखरासि भर्‌यौ, कर्‌यौ लै सुदेश, देश रीति लागी प्यारियै।
रीझ्यौ नृप, देखि रीझि मथुरा निवास पायौ, मन्दिर करायौ, हरिदेव सौं निहारियै।। ६२०।।

श्रीकल्याणदासजी

भक्तपक्ष उद्दारता, यह निवही कल्यान की।।
जगन्नाथ कौ दास, निपुन अति प्रभु मन भायौ।
परम पारषद समुझि, जानि प्रिय निकट बुलायौ।।

प्रान पयानौ करत, नेह रघुपति सौं जोर्‍यौ।
सुत दारा धन धाम, मोह तिनका ज्यौं तोर्‍यौ।।
कौंधनी ध्यान उर में बस्यौ, राम नाम मुख जानकी।
भक्तपक्ष उद्‌दारता, यह निवही कल्यान की।। १८६।।

श्रीसन्तदासजी, श्रीमाधवदासजी

सोदर सोभूराम के, सुनौं सन्त तिनकी कथा।।
सन्तदास सद्‌वृत्ति, जगत् छोई करि डार्‍यौ।
महिमा महा प्रवीन, भक्तवित धर्म विचार्‍यो।।
बहुर्‍यो माधवदास, भजन बल परचौ दीनौ।
करि जोगिन सौं वाद, वसन पावक प्रति लीनौ।।
परम धर्म विस्तार हित, प्रगट भये नाहिन तथा।
सोदर सोभूराम के, सुनौ सन्त तिनकी कथा।। १६०।।

श्रीजसवन्तजी

बूड़िये विदित कन्हर कृपाल, आत्माराम आगम दरसि।।
कृष्ण भक्ति को थम्भ, ब्रह्मकुल परम उजागर।
क्षमा शील गम्भीर, सर्व लच्छन कौ आगर।।
सर्वसु हरिजन जानि, हृदै अनुराग प्रकासै।
असन वसन सनमान, करत अति उज्ज्वल आसै।।
सोभूराम प्रसाद तें, कृपादृष्टि सब पर बरसि।
बूड़िये विदित कन्हर कृपाल, आत्माराम आगम दरसि।। १६१।।

श्रीगोविन्ददासजी ''भक्तमाली''

भक्तरत्न माला सुधन, गोविन्द कण्ठ विकास किय।।

रुचिर शील घन नील, लील रुचि सुमति सरित पति।
विविध भक्त, अनुरक्त व्यक्त, बहु चरित चतुर अति।
लघु दीरघ सुर, शुद्ध वचन अविरुद्ध उचारन।
विश्व वास विश्वास, दास परिचय विस्तारन।।
जानि जगत् हित सब गुननि, सु सम नारायनदास दिय।
भक्तरत्न माला सुधन, गोविन्द कण्ठ विकास किय।। १६२।।

श्रीजगत्सिंहजी

भक्तेश भक्त भवतोष कर, सन्त नृपति वासो कुँवर।।
श्रीयुत् नृप मनि जगतसिंह, दृढ़भक्ति परायन।
परम प्रीति किये सुवश, शील लक्ष्मी नारायन।।
जासु सुजस सहज ही कुटिल, कलि कल्प जु घायक।
आज्ञा अटल सुप्रगट, सुभट कटकनि सुखदायक।।
अति प्रचण्ड मारतण्ड सम, तम खण्डन दोरदण्ड वर।
भक्तेश भक्त भवतोष कर, सन्त नृपति वासो कुँवर।। १६३।।

जगता कौ तन, मन, सेवा श्रीनारायन जू भयौ ऐसौ परायन रहै डोला संग ही।
लरिवे कौं चलै आगै, आगै सदा पाछे रहै, ल्यावै जल सीस, ईश भर्‌यौ हियौ रंग ही।।
सुनि जसवन्त, जयसिंह कै हुलास भयौ, देख्यौ दिल्ली माँझ, नीर ल्यावत अभंग ही।
भूमि परि विनै, करी, धरी देह तुमहिं नै, जातै पायौ नेह, भींजि गये यों प्रसंग ही।। ६२१।।

नृपति जयसिंह जू सौं, बोल्यौ कहा नेह मेरे? तेरे जो बहिन, ताकी गन्ध को न पाऊँ मैं।
नाम दीपकुँवरि, सो बड़ी भक्तिमान् जानि, वह रसखानि ऐपै, कछुक लड़ाऊँ मैं।।
सुनि सुख भयौ भारी, हुती रिस वासौं टारी, लिये गाँव काढ़ि, फेरि दिये हरि ध्याऊँ मैं।
लिखिकै पठाई बाई, करैं सो करन दीजै, लीजै साधुसेवा करि, निसिदिन गाऊँ मैं।। ६२२।।

श्रीगिरिधरग्वालजी

गिरिधरन ग्वाल गोपाल कौं सखा साँचलौ संग कौ।।

प्रेमी भक्त प्रसिद्ध, गान अति गद्गद वानी।
अन्तर प्रभु सौं प्रीति, प्रगट रहै नाहिन छानी।।
नृत्य करत आमोद, विपिन तन वसन बिसारै।
हाटक पट हित दान, रीझि तत्काल उतारै।।
मालपुरै मंगल करन, रास रच्यौ रसरंग कौ।
गिरिधरन ग्वाल गोपाल कौं, सखा साँचलौ संग कौ।।१६४।।

गिरिधर ग्वाल साधुसेवा ही कौ ख्याल जाके, देखि यों निहाल होत, प्रीति साँची पाई है।
सन्त तन छूटेहूँ ते, लेत चरनामृत जो, और अब रीति कहौ, कापै जात गाई है।।
भये द्विज पंच, इकठौरे सो प्रपंच मान्यौ, आन्यो सभा माँझ, कहें छोड़ौ न सुहाई है।
जाके हो अभाव, मत लेवौ मैं प्रभाव जानौं, मृतक यों बुद्धि ताकौ, वारो सुनि भाई है।।६२३।।

श्रीगोपालीजी

गोपाली जनपोषकौं, जगत् जसोदा अवतरी।।
प्रगट अंग में प्रेम, नेम सौं मोहन सेवा।
कलियुग कलुष न लग्यौ, दास तें कबहुँ न छेवा।।
वानी सीतल सुखद, सहज गोविन्द धुनि लागी।
लक्षन कला गँभीर, धीर सन्तनि अनुरागी।।
अन्तर शुद्ध सदाँ रहै, रसिक भक्ति निज उर धरी।
गोपाली जनपोषकौं, जगत् जसोदा अवतरी।। १६५।।

श्रीरामदासजी

श्रीरामदास रसरीति सौं, भलीभाँति सेवत भगत।।
सीतल परम सुशील, वचन कोमल मुख निकसै
भक्त उदित रवि देखि, हृदै बारिज जिमि विकसै।।

अति आनन्द मन उमँगि, सन्त परिचर्य्या करई।
चरण धोय दण्डौत, विविध भोजन विस्तरई।।
बछवन निवास विस्वास हरि, जुगल चरण उर जगमगत।
श्रीरामदास रसरीति सौं, भलीभाँति सेवत भगत।। १६६।।

सुनि एक साधु आयौ, भक्तिभाव देखिवे कौं, बैठें रामदास पूछै, रामदास कौन है।
उठे आप, धोये पाँव, आवै रामदास अब, रामदास कहाँ? मेरे चाह और गौन है।।
चलौ जू प्रसाद लीजै, दीजै रामदास आनि, यही रामदास, पग धारौ निज भौन है।
लपटानौ पाँयनि सौं, चायनि समात नाहिं, भायनि सौं भर्‌यौ हिये, छाई जस जौन्ह है।। ६२४।।

बेटी कौ विवाह घर, बड़ौ उतसाह भयौ, किये पकवान नाना, कोठे माँझ धरे है।
करैं रखवारी सुत, नाती दिये तारौ रहें, और ही लगाई तारी, खोल्यौ नहीं डरे हैं।।
आये गृह सन्त, तिन्हें पोट बँधवाय दई, पायौ यों अनन्त सुख, ऐसे भाव भरे हैं।
सेवा श्रीविहारीलाल, गाई पाक शुद्धताई, मेरे मनभाई सब साधु उर हरे हैं।। ६२५।।

मास परायण उन्तीसवाँ विश्राम

श्रीरामरायजी

विप्र सारसुत घर जनम, रामराय हरि रति करी।।
भक्ति ज्ञान वैराग, जोग अन्तरगति पाग्यौ।
काम क्रोध मद लोभ, मोह मत्सर सब त्याग्यौ।।
कथा कीरतन मगन, सदा आनन्द रस झूल्यौ।
सन्त निरखि मन मुदित, उदित रवि पंकज फूल्यौ।।
बैर भाव जिन द्रोह किय, तासु पाग खसि भ्वैं परी।
विप्र सारसुत घर जनम, रामराय हरि रति करी।। १६७।।

श्रीभगवन्तमुदितजी

भगवन्तमुदित उदार जस, रस रसना आस्वाद किय।।

कुँजविहारी केलि, सदा अभ्यन्तर भासैं।
दम्पति सहज सनेह, प्रीति परमिति परकासै।।
अननि भजन रसरीति, पुष्ट मारग करि देखी।
विधि निषेध बल त्यागि, पागि रति हृदय विशेखी।।
माधव सुत सम्मत रसिक, तिलक दाम धरि सेव लिय।
भगवन्तमुदित उदार जस, रस रसना आस्वाद किय।। १६८।।

सूजा के दिवान, भगवन्त रसवन्त भये, वृन्दावन–वासिन की, सेवा ऐसी करी है।
विप्र कै गुसाँई, साधु कोई ब्रजवासी जाहु, देत बहु धन, एक प्रीति मति हरी है।।
सुनी गुरूदेव, अधिकारी श्रीगोविन्ददेव, नाम हरिदास जाय, देखैं चित धरी है।
जोग्यताई सीवाँ, प्रभु दूध–भात माँगि लियौ, कियौ उतसाह तऊ, पेखैं अरबरी है।। ६२६।।

सुनी गुरु आवत, अमावत न किहूँ अंग, रंग भरि तिया सौ यों, कही कहा कीजियै।
बोली घरबार पट, सम्पति भण्डार सब, भेट करि दीजै, एक धोती धारी लीजियै।।
रीझे सुनि वानी, साँची भक्ति तैं ही जानी मेरे, अति मनमानी कहि, आँखैं जल भीजियै।
यही बात, परी कान, श्रीगुसाँई लई जान, आये फिरे वृन्दावन, पन मति धीजियै।। ६२७।।

रह्यौ उतसाह, उर दाह कौ न पारावार, कियौ लै विचार आज्ञा माँगि वन आये हैं।
रहे सुख लहे, नाना पद रचि कहे, एकरस निर्वहे, ब्रजवासी जा छुटाये हैं।।
कीनी घर चोरी, तऊ नेकु नासा मोरी नाहिं, बोरी मति रंग, लाल प्यारी दृग छाये हैं।
बड़े बड़भागी, अनुरागी रति जागी जग, माधव रसिक बात, सुनौ पिता पाये हैं।। ६२८।।

आयौ अन्तकाल जानि, बेसुधि पिछानि सब आगरे तें लैकै चले, वृन्दावन जाइयै।
आये आधी दूर, सुधि आई बोले चूर ह्वैकै, कहाँ लिये जात कूर? कही जोई ध्याइयै।।
कहयौ फेरो तन, वन जाइवे कौ पात्र नाहीं, जरै बास आवै, प्रिया पिय को न भाइयै।
जानहारौ होई सोई, जायगौ जुगल पास, ऐसे भावरासि, ताही ठौर चलि आइयै।। ६२६।।

श्रीलालमतीजी

दुर्लभ मानुष देह कौ, लालमती लाहौ लियौ।।

गौर स्याम सौं प्रीति, प्रीति जमुना कुँजनि सौं।
वंशीवट सौं प्रीति, प्रीति ब्रजरज पुंजनि सौं।।
गोकुल गुरुजन प्रीति, प्रीति घन बारह वन सौं।
पुर मथुरा सौं प्रीति, प्रीति गिरि गोवर्द्धन सौं।।
वास अटल वृन्दाविपिन, दृढ़करि सो नागरि कियौ।
दुर्लभ मानुष देह कौ, लालमती लाहौ लियौ।। १९९।।

भक्त–परत्व

कविजन करत विचार, बड़ौ कोउ ताहि भनिज्जै।
कोउ कह अवनी बड़ी, जगत् आधार फनिज्जै।।
सो धारी सिर शेष, शेष शिव भूषन कीनौ।
शिव आसन कैलास, भुजा भरी रावन लीनौ।।
रावन जीत्यौ बालि, बालि राघो इक सायक दँड़े।
''अगर'' कहैं त्रैलोक में, हरि उर धरें तेई बड़े।। २००।।

हरि सुजस प्रीति हरिदास कैं, त्यौ भावै हरिदास जस।।
नेह परसपर अघट, निबहि चारौं जुग आयौ।
अनुचर कौ उत्कर्ष, स्याम अपने मुख गायौ।।
ओत–प्रोत अनुराग, प्रीति सबही जग जानैं।
पुर प्रवेश रघुवीर, भृत्य कीरति जु बखानैं।।
''अगर'' अनुग गुन बरनते, सीतापति नित होयँ बस।
हरि सुजस प्रीति हरिदास कैं, त्यौ भावै हरिदास जस।।२०१।।

सन्त–उत्कर्ष

उत्कर्ष सुनत सन्तनि कौं, अचरज कोऊ जिनि करौ।।

दुर्वासा प्रति स्याम, दास बसता हरि भाषी।
ध्रुव गज पुनि, प्रह्लाद राम शबरी फल साखी।।
राजसूय जदुनाथ, चरण धोय जूंठ उठाई।
पाण्डव विपति निवारि, दियौ विष विषया पाई।।
कलि विशेष परचौ प्रगट, आस्तिक ह्वैके चित धरौ।
उत्कर्ष सुनत सन्तनि कौं अचरज कोऊ जिनि करौ।।२०२।।

●

अन्तिम मंगलाचरण

प्रार्थना

दोहा
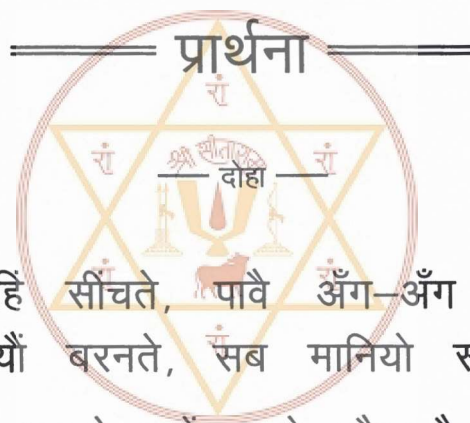
पादप पीड़हिं सींचते, पावै अँग–अँग पोष।
पूरबजा जयौं बरनते, सब मानियो सन्तोष॥२०३॥

भक्त जिते भू–लोक में, कथे कौन पै जायँ।
समुद्र पान श्रद्धा करै, कहँ चिरि पेट समायँ॥२०४॥

श्रीमूरति सब वैष्णव, (लघु) दीरघ गुणनि अगाध।
आगे पीछे बरनते, जिनि मानौ अपराध॥२०५॥

फल की शोभा लाभ तरू, तरू शोभा फल होय।
गुरु शिष्य की कीर्ति में, अचरज नाहीं कोय॥२०६॥

चारि जुगन में भगत जे, तिनके पद की धूरि।
सर्वसु सिर धरि राखिहौं, मेरी जीवन मूरि॥२०७॥

कथन–श्रवण की महिमा

जग कीरति मंगल उदै, तीनों ताप नसायँ।
हरिजन को गुण बरनते, हरि हृदि अटल बसायँ ॥२०८॥

हरिजन को गुण बरनते, जो करै असूया आय।
इहाँ उदर बाढ़ै विथा, औ परलोक नसाय ॥२०६॥

जौं हरि प्राप्ति की आस है, तौ हरिजन गुन गाय।
नतरू सुकृत भुजे बीज ज्यौं, जनम–जनम पछिताय ॥२१०॥

भक्तदाम संग्रह करै, कथन स्रवन अनुमोद।
सो प्रभु प्यारौ पुत्र ज्यौं, बैठे हरि की गोद ॥२११॥

अच्युतकुल जस बेर यक, जाकी मति अनुरागि।
उनकी भक्ति भजन को, निहचैं होय विभागि ॥२१२॥

भक्तदाम जिन–जिन कथी, तिनकी जूँठनि पाय।
मों मतिसार अक्षर द्वै, कीनौं सिलौ बनाय ॥२१३॥

काहू के बल जोग जज्ञ, कुल करनी की आस।
भक्तनाम माला ''अगर'', उर (बसौ) नारायणदास ॥२१४॥

।। इति श्रीनाभाजी कृत मूल–भक्तमाल सम्पूर्ण ।।

•

(टीकाकर्त्ता–श्रीप्रियादासजी अपने श्रीगुरुदेवजी का वर्णन करते हैं)

रसिकाई कविताई, जाहि दीनी तिनि पाई, भई सरसाई हिये, नव–नव चाय हैं।
उर रंगभवन में, राधिकारवन बसैं, लसैं ज्यौं मुकुर मध्य, प्रतिबिम्ब भाय हैं।।
रसिक समाज में, विराज रसराज कहैं, चहैं मुख सब फूलैं, सुख समुदाय हैं।
जन मन हरि लाल, मनोहर नांव पायो, उनहूँ को मन हरि लीनौ, यातो राय हैं।। ६३०।।

इनहीं के दास–दास–दास प्रियादास जानौं, तिन लै बखानौं, मानौं टीका सुखदाई है।
गोवर्द्धननाथ जू कें, हाथ मन पर्‌यौ जाको, कर्‌यौ वास वृन्दावन, लीला मिलि गाई है।।
मति उनमान कह्यौ, लह्यौ मुख सन्तनि के, अन्त कौन पावै, जोई गावै हिय आई है।
घट बढ़ जानि, अपराध मेरौ क्षमा कीजै, साधु गुनग्राही, यह मानि मैं सुनाई है।। ६३१।।

कीनी भक्तमाल, सुरसाल नाभा स्वामी जू ने तरे, जीव जाल, जग जन मन मोहनी।
भक्तिरसाबोधिनी सो, टीका मति सोधिनी है, बाँचत कहत अर्थ, लागै अति सोहनी।।
जोपै प्रेम लक्षना की, चाह अवगाहि याहि, मिटै उर दाह, नेकु नैननि हूँ जोहनी।
टीका अरु मूल नाम, भूल जात सुनै जब, रसिक अनन्य मुख, होत विश्वमोहनी।। ६३२।।

टीका का उपसंहार

नाभा जू कौ अभिलाष, पूरन लै कियौ मैं तौ, ताकी साखी प्रथम सुनाई, नीके गाइकै।
भक्ति विसवास जाके, ताही कौं प्रकास कीजै, भीजै रंग हियो लीजै, सन्तनि लड़ाइकै।।
सम्वत् प्रसिद्ध दस, सात सत उन्हत्तर, फालगुन मास वदी, सप्तमी बिताइकै।
"नारायणदास" सुखरासि भक्तमाल लैकै, "प्रियादास" दास उर, बसौ रहौ छाइकै।। ६३३।।

टीकाकार की विज्ञप्ति

अगिनि जरावौ लैकै जल में बुड़ावौ, भावे सूली पै चढ़ावौ, घोरि गरल पिवायबी।
बीछू कटवावौ, कोटि साँप लपटावौ, हाथी आगे डरवावौ, ईति भीति उपजायबी।।
सिंह पै खवावौ, चाहौ भूमि गड़वावौ, तीखी अनी विंधवावौ, मोहिं दुख नही पायबी।
ब्रजजन प्रान, कान्ह बात यह कान करौ, भक्त सौं विमुख ताको, मुख न दिखायबी।। ६३४।।

मास परायण तीस विश्राम
नवाह परायण नवमां विश्राम
सप्ताह परायण सप्त विश्राम

।। श्रीप्रियादासजी कृत भक्तिरसबोधिनी टीका समाप्त।।

●

छन्द–प्रमाणिका

नमामि भक्तमाल को

पढ़ै जो आदि अन्त लौ बढ़ै जो पर्म तन्त लौं। दहैं अनन्त साल को नमामि भक्तमाल को।।१।।
कथा करै जो याहि की व्यथा रहै न ताहि की। मिलै सो रामलाल को नमामि भक्तमाल को।।२।।
प्रकार नौ कि भक्ति जो सो अंग होत शक्ति सौं। कहै गिरा रसाल को नमामि भक्तमाल को।।३।।
गहै अनन्य भाव है लहै सुभक्ति भाव है। यही प्रमाण भाल को नमामि भक्तमाल को।।४।।
अभक्त भक्ति को लहै न भूलि मुक्ति को चहै। गनै सो तुच्छ काल को नमामि भक्तमाल को।।५।।
करैं जो पाठ प्रात में सरै सुकाज गात में। हरैहि कर्मजाल को नमामि भक्तमाल को।।६।।
मिलाय दुग्ध तक्र ते जु होत सर्पि चक्र ते। तथा सुबुद्धि बाल को नमामि भक्तमाल को।।७।।
बहूपमा कहौं कहा कहे न पार को लहा। बखान सूर्य ख्याल को नमामि भक्तमाल को।।८।।

श्रीनाभाजी की प्रार्थना

बातन ही हौ पतितपावन।
मोते काम परे जानहुगे बिन रन सूर कहावन।।

सतयुग त्रेता द्वापर हू के पतितन को गति आपी।
उन्हे हमें बहुतै अन्तर है हम कलियुग के पापी।।
कोउ टाँक द्वै टाँक पौसेरा बड़ी बड़ाई सेर।
हौं पूरन पतिताई ऐसो ज्यौं पाषाननि मेर।।
हौ दिन मनि खद्योत आन खल अविद्या को जु उजागर।
गोपद पावन के न सरवरै हौं दुरमति जल सागर।।
पतितपावन है विरद् तिहारो सोइ करौ परमान।
पाहन नाव पार करौ "नाभा" के हरि पकरौ कान।।

।।श्रीभक्तमालजी की आरती।।

इस धन्य नाभा भारती की,
आरती आरती हरै।
यह भक्त भगवत् की कथा,
सब विश्व का मंगल करै।।
नर जाति जब माया विवश,
अज्ञान तम में पग गई।
जन भारती आभा तभी,
जग जग गई जग मग गई।।
अज्ञान माया मोह तम की,
कालिमा कलई धुली।
सत्प्रेम समता सत्य सुख शुचि,
कंज कलिकायें खिलीं।।
उल्लूक खल कलिमल सकल,
उडगन प्रभाहत हो गये।

तब सब पथिक सुन्दर सुखद,
हरिभक्ति पथ को पा गये।।
इस भक्त माला के सकल,
हरि भक्तजन दाया करो।
सच्ची अहिंसा भक्तिमय,
विज्ञान दै माया हरो।।